।। श्रीहरिः ।।

464

गीता-ज्ञान-प्रवेशिका



गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR

स्वामी रामसुखदास

॥ श्रीहरिः ॥

गीता-ज्ञान-प्रवेशिका

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

स्वामी रामसुखदास

॥ श्रीहरिः ॥

तृतीय संस्करणका नम्र निवेदन

श्रीमद्भगवद्गीता सच्चिदानन्दघन सर्वलोकमहेश्वर प्रेमस्वरूप भक्तवत्सल भक्तभक्तिमान् स्वयं भगवान्‌की दिव्य वाणी है। भारतीय अध्यात्म-जगत्‌में तो गीताका अद्वितीय स्थान है ही, अखिल भूमण्डलके विद्वानों तथा विचारकोंके हृदयोंपर भी गीताका अनुपम प्रभाव है। विशेषता यह है कि गीतामें सभी परमार्थ-पथिक महानुभावों एवं लोकपथ-प्रदर्शक आचार्योंको अपने सिद्धान्तका समर्थन दृष्टिगोचर होता है। यहाँतक कि राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रमें काम करनेवाले भी गीतासे विशुद्ध प्रकाश प्राप्त करते हैं। ऐसी महान विश्वकल्याणकारिणी गीताके अगाध रसज्ञान सागरमें जितना गोता लगाया जाय, उतना ही सौभाग्य है और गोता लगानेवालोंको उतने ही अमूल्य रत्न उपलब्ध होते हैं।

हमारे श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज भी गीताज्ञानार्णवमें गोता लगानेवाले हैं और नित्य लगाते ही रहते हैं। इनको गीताने बहुमूल्य अमूल्य रत्न प्रदान किये हैं और अब भी ये नये-नये रत्नोंके लिये प्रयत्नशील हैं। इनकी विशेषता यह है कि ये सर्वजनहिताय उनका यथायोग्य परंतु मुक्तहस्तसे वितरण भी करते रहते हैं। इनकी इस सहज उदारताका प्रमाण है—प्रायः बारहों महीने प्रतिदिन अधिकारियोंमें गीताके गुह्य, गुह्यतर, गुह्यतम सिद्धान्तोंका प्रकाश करना और सरल हृदयके भावुकोंको मधुर गीताप्रसादका सरल भाषामें स्वाद चखाते रहना। यही इनका काम है—गीतासे लेना और गीतागायकके सेवार्थ गीताभक्तोंको देते रहना।

यह 'गीता-ज्ञान-प्रवेशिका' भी श्रीस्वामीजीका सरल मधुर गीताप्रसाद है, जो गीता-शिक्षार्थियोंको गीता समझनेकी सुविधाके लिये प्रस्तुत किया गया है। इसमें बड़ी सरलताके साथ श्रीमद्भगवद्गीताके प्रत्येक अध्यायमें आये हुए प्रधान विषयोंका संक्षिप्त वर्णन किया गया है। आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्णने अपने प्रिय सखा अर्जुनके प्रति किस अध्यायके किन श्लोकोंमें किस-किस विषयपर क्या उपदेश किया है—इस पुस्तकमें इसपर तथा अन्यान्य आवश्यक उपयोगी

विषयोंपर संक्षेपमें पूरा प्रकाश डाला गया है। भाषा और लिखनेकी शैली ऐसी है कि जिससे गीताध्ययनका आरम्भ करनेवाले नवीन जिज्ञासुजन भी अच्छी तरह समझकर हृदयंगम कर सकें।

श्रीस्वामीजीके इस कल्याणकार्यसे सभी लोग यथायोग्य लाभ उठावें—यह मेरा नम्र निवेदन है।

आश्विन शुक्ल १। २०२५ वि० —हनुमानप्रसाद पोद्दार

(नवरात्रारम्भ)

आठवें संस्करणका नम्र निवेदन

इस पुस्तकका प्रथम संस्करण 'गीताका विषय-दिग्दर्शन' नामसे, तृतीय संस्करण 'गीता-ज्ञान-प्रवेशिका' नामसे और चतुर्थ संस्करण 'गीता-परिचय' नामसे प्रकाशित किया गया था। अब इस पुस्तकका आठवाँ संस्करण पुनः 'गीता-ज्ञान-प्रवेशिका' नामसे प्रकाशित किया जा रहा है। परमश्रद्धेय स्वामीजीने इस नवीन संस्करणमें आवश्यक परिवर्तन और परिवर्धन करके पुस्तककी उपयोगिताको और बढ़ा दिया है। आशा है, गीताके विद्यार्थी इस पुस्तकसे अधिकाधिक लाभान्वित होंगे।

गीताकी पादानुक्रमणिका और शब्दानुक्रमणिका—ये दो विषय यद्यपि परमश्रद्धेय स्वामीजीके लिखे हुए नहीं हैं, तथापि उपयोगी समझकर इस पुस्तकमें दे दिये हैं।

गीता-सम्बन्धी व्याकरण और छन्दोंका विषय 'गीता-दर्पण' नामक ग्रन्थमें विस्तारसे दिया गया है; अतः उसे इस पुस्तकमें नहीं लिया गया है।

गीताके मार्मिक भावोंको जाननेके लिये जिज्ञासुओंको परमश्रद्धेय स्वामीजीके दो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ—'साधक-संजीवनी' 'गीताकी टीका' तथा 'गीता-दर्पण' का भी अवश्य अध्ययन-मनन करना चाहिये।

—प्रकाशक



॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
१-गीताके सम्बन्धमें कुछ ज्ञातव्य बातें	...... ७
२-गीता-पाठकी विधियाँ	...... १९
३-गीता-पाठके विश्राम-स्थल	...... २७
४-गीताके प्रधान और सूक्ष्म विषय	...... २९
५-गीताके प्रत्येक अध्यायका नाम, श्लोक, पद एवं अक्षर	...... ६७
६-गीतामें विभिन्न वक्ताओंद्वारा कथित श्लोकोंकी संख्या	...... ६८
७-गीतामें 'उवाच'	...... ६९
८-गीतामें अर्जुनके द्वारा किये गये प्रश्नोंके स्थल	...... ७०
९-गीतामें भगवान्‌के चालीस सम्बोधनात्मक नाम और उनके अर्थ	...... ७१
१०-गीतामें अर्जुनके बाईस सम्बोधनात्मक नाम और अर्थ	...... ७४
११-गीतामें सञ्जय, धृतराष्ट्र और द्रोणाचार्यके सम्बोधनात्मक नाम	...... ७६
१२-गीतामें आये सम्बोधनात्मक पदोंकी अध्यायक्रमसे तालिका	...... ७७
१३-गीताभ्यासकी विधि	...... ९१
१४-गीताकी श्लोक-संख्या कण्ठस्थ रखनेके लिये तीन तालिकाएँ	...... ९५
१५-गीताके मननके लिये कतिपय प्रश्न	...... ११५
१६-मूल गीता	...... १२२
१७-श्रीमद्भगवद्गीता-पादानुक्रमणिका	...... १५३
१८-गीताकी शब्दानुक्रमणिका	...... १९९

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

प्रपन्नपारिजाताय तोत्रवेत्रैकपाणये।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृतदुहे नमः॥
वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥
मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥

श्रीभगवान्‌की वाङ्मयी मूर्ति—गीता

वक्त्राणि पञ्च जानीहि पञ्चाध्यायाननुक्रमात्।
दशाध्याया भुजाश्चैकमुदरं द्वे पदाम्बुजे॥
एवमष्टादशाध्यायी वाङ्मयी मूर्तिरीश्वरी।
जानीहि ज्ञानमात्रेण महापातकनाशिनी॥

गीताके अठारह नाम

गीता गङ्गा च गायत्री सीता सत्या सरस्वती।
ब्रह्मविद्या ब्रह्मवल्ली त्रिसन्ध्या मुक्तिगेहिनी॥
अर्धमात्रा चिदानन्दा भवघ्नी भयनाशिनी।
वेदत्रयी परानन्ता तत्त्वार्थज्ञानमञ्जरी॥
इत्येतानि जपेन्नित्यं नरो निश्चलमानसः।
ज्ञानसिद्धिं लभेच्छीघ्रं तथान्ते परमं पदम्॥



।। श्रीहरिः ।।

गीता-ज्ञान-प्रवेशिका

१. गीताके सम्बन्धमें कुछ ज्ञातव्य बातें

१—गीताके वक्ता भगवान् श्रीकृष्ण हैं, श्रोता उनके प्रिय सखा अर्जुन हैं, संकलनकर्ता महर्षि श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यासजी हैं और लेखक बुद्धिप्रदायक श्रीगणेशजी हैं। भगवान् श्रीकृष्णने अपने उपदेशमें प्रमाणरूपसे बहुत-सी श्रुतियाँ कही थीं, उनको तथा जो उन्होंने गद्यमें कहा था उसे भी श्रीव्यासजीने स्वयं श्लोकबद्ध कर लिया तथा अर्जुन, सञ्जय और धृतराष्ट्रके वचनोंको भी अपनी भाषामें श्लोकबद्ध कर लिया। वही श्रीकृष्णार्जुनसंवादके रूपमें अठारह अध्यायोंमें विभक्त सात सौ श्लोकोंका यह ग्रन्थरत्न— श्रीमद्भगवद्गीता है।

२—गीता साक्षात् भगवान् श्रीकृष्णके मुखारविन्दसे निकली हुई दिव्य वाणी है। जैसे प्रमुख स्मृतियाँ अठारह ही हैं, पुराण भी अठारह ही हैं, भागवतके श्लोक भी अठारह हजार ही हैं, महाभारतके पर्व भी अठारह ही हैं, कौरव-पाण्डवोंकी सेना भी अठारह अक्षौहिणी ही थी, युद्ध भी अठारह दिन ही हुआ, वैसे ही गीतामें भी अठारह अध्याय हैं।

यदि कहें कि 'गीतामें भगवान्‌का उपदेश तो दूसरे अध्यायसे प्रारम्भ हुआ है, तब पहले अध्यायको गीतामें क्यों शामिल किया गया?' तो इसका उत्तर यह है कि पहले अध्यायमें भी भगवान्‌के वचन हैं—

उवाच पार्थ पश्यैतान् समवेतान् कुरूनिति॥

(१। २५ का उत्तरार्ध)

अगर ये वचन नहीं होते तो गीताका उपदेश ही नहीं होता। गीतोपदेशके होनेमें भगवान्‌की अतिशय कृपा संनिहित है। अन्यथा अर्जुनने तो रथ खड़ा करनेको कहा था, भगवान् बीचमें कहीं भी रथको खड़ा कर देते तो गीता प्रारम्भ ही नहीं होती। किंतु भगवान्‌ने रथको खड़ा भी किया पितामह भीष्म और द्रोणाचार्यके सम्मुख तथा अर्जुनसे कहा—'इन कौरवोंको देख।' भगवान् यदि उक्त श्लोकमें '**कुरून्**' न कहकर '**उवाच पार्थ पश्यैतान् धार्तराष्ट्रान् समानिति**' इस प्रकार धृतराष्ट्रके पुत्रोंको देखनेको कहते तो भी अर्जुनको शोक नहीं होता और गीताका उपदेश आरम्भ नहीं होता; क्योंकि युद्धके इच्छुक धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे तो युद्ध करनेको वह तैयार था ही।

दूसरी बात यह है कि पहले अध्यायमें इकतीसवेंसे चौवालीसवेंतक अर्जुनका जो कथन है, उसका भगवान्‌ने अगले अध्यायोंमें समाधान किया है।* इससे भी सिद्ध होता है कि पहले अध्यायका गीतासे घनिष्ठ सम्बन्ध है। महाभारतके भीष्मपर्वमें पचीसवें अध्यायसे ही भगवद्गीता प्रारम्भ होती है, जो कि भगवद्गीताका पहला अध्याय है।

३—गीता कुरुक्षेत्रमें महाभारत-युद्धारम्भके समय कही गयी। व्यूह बनाकर खड़े हुए कौरव और पाण्डव—दोनों दलोंके समक्ष अर्जुनकी इच्छाके अनुसार उसके सारथि बने हुए परम पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनको यह उपदेश सुनाया था।

यदि कहें कि 'जब युद्धकी तैयारी थी, ऐसे अल्प समयमें गीताका सुनाया जाना सम्भव नहीं था, अनुमानतः भगवान्‌ने थोड़ी-सी बातें कही थीं जिनका श्रीव्यासजीने विस्तार कर दिया होगा।' तो इसका उत्तर यह है कि तबतक युद्ध प्रारम्भ नहीं हुआ था,

* देखें 'गीता-दर्पण'में 'गीतामें अर्जुनकी युक्तियाँ और उनका समाधान' शीर्षक लेख।

गीता सुनानेके बाद ही युद्ध आरम्भ हुआ है; क्योंकि महाभारतमें भीष्मपर्वके पचीसवेंसे बयालीसवें अध्यायतक गीता है, इसके बाद तैंतालीसवें अध्यायमें युधिष्ठिरने पितामह भीष्म आदिके पास जाकर उनको नमस्कार करके उनसे युद्धके लिये आज्ञा माँगी है एवं आज्ञा मिलनेपर यह घोषणा की है कि कोई वीर हमारे पक्षमें आना चाहे तो आ सकता है। यह सुनकर युयुत्सु डंका पीटता हुआ पाण्डवोंके पक्षमें आया भी है (महाभारत भीष्म ४३। ९४—१००)*। इसके बाद युद्ध आरम्भ हुआ है। इसलिये वहाँ गीता सुनानेमें समय अल्प नहीं था, पर्याप्त था।

४—कुछ लोग कहते हैं कि भगवान्‌ने अर्जुनसे युद्ध करानेके लिये ही गीता सुनायी थी। परंतु ऐसी बात नहीं है। भगवान्‌ने अर्जुनसे युद्ध नहीं कराया है, प्रत्युत उनको अपने कर्तव्यका ज्ञान कराया है। युद्ध तो अर्जुनको कर्तव्यरूपसे स्वतः प्राप्त हुआ था। अतः युद्धका विचार तो अर्जुनका खुदका ही था (गीता १। २०-२२)। वे स्वयं ही युद्धमें प्रवृत्त हुए थे, तभी वे भगवान्‌को निमन्त्रण देकर लाये थे। परन्तु शोक-मोहसे अभिभूत होनेके कारण वे युद्धसे विमुख हो रहे थे अर्थात् अपने कर्तव्यके पालनसे हट रहे थे। इसपर भगवान्‌ने कहा कि यह जो तू युद्ध नहीं करना चाहता, यह तेरा मोह है। अतः समयपर जो कर्तव्य स्वतः प्राप्त हुआ है, उसका त्याग करना उचित नहीं है।

कोई बद्रीनारायण जा रहा था; परन्तु रास्तेमें उसे दिशाभ्रम हो गया अर्थात् उसने दक्षिणको उत्तर और उत्तरको दक्षिण समझ

* भीष्मपर्वका यह तैंतालीसवाँ अध्याय गीताके सब अध्यायोंसे बड़ा (कुल १०९ श्लोकोंका) है।

लिया। अतः वह बद्रीनारायणकी तरफ न चलकर उलटा चलने लग गया। सामनेसे उसको एक आदमी मिल गया। उस आदमीने पूछा कि 'भाई! कहाँ जा रहे हो?' वह बोला—'बद्रीनारायण।' वह आदमी बोला कि 'भाई! बद्रीनारायण इधर नहीं है, उधर है। आप तो उलटे जा रहे हैं!' अतः वह आदमी उसको बद्रीनारायण भेजनेवाला नहीं है; किन्तु उसको दिशाका ज्ञान कराकर ठीक रास्ता बतानेवाला है। ऐसे ही भगवान्‌ने अर्जुनको अपने कर्तव्यका ज्ञान कराया है, युद्ध नहीं कराया है।

स्वजनोंको देखनेसे मोहवश अर्जुनके मनमें यह बात आयी थी कि मैं युद्ध नहीं करूँगा—'**न योत्स्ये**' (गीता २। ९), पर भगवान्‌का उपदेश सुननेपर अर्जुनने ऐसा नहीं कहा कि मैं युद्ध करूँगा, प्रत्युत ऐसा कहा कि मैं आपकी आज्ञाका पालन करूँगा—'**करिष्ये वचनं तव**' (१८। ७३) अर्थात् अपने कर्तव्यका पालन करूँगा। अर्जुनके इन वचनोंसे यही सिद्ध होता है कि भगवान्‌ने अर्जुनको अपने वर्तमान कर्तव्यका ज्ञान कराया है।

वास्तवमें युद्ध होना अवश्यम्भावी था, क्योंकि सबकी आयु समाप्त हो चुकी थी। इसको कोई भी टाल नहीं सकता था। स्वयं भगवान्‌ने विश्वरूप-दर्शनके समय अर्जुनसे कहा है कि 'मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सबका संहार करनेके लिये यहाँ आया हूँ। अतः तेरे युद्ध किये बिना भी ये विपक्षमें खड़े योद्धालोग बचेंगे नहीं' (गीता ११। ३२)। इसलिये यह नरसंहार अवश्यम्भावी होनहार ही था*। यह नरसंहार अर्जुन युद्ध न करते, तब भी होता। अगर

* श्रीवेदव्यासजीने धृतराष्ट्रसे कहा है—
दिष्टमेतत्पुरा चैव नानुशोचितुमर्हसि। न चैव शक्यं संयन्तुं यतो धर्मस्ततो जयः॥
(महा० भीष्म० २। १४)

अर्जुन युद्ध नहीं करते तो जिन्होंने माँकी आज्ञासे द्रौपदीके साथ अपनेसहित पाँचों भाइयोंका विवाह करना स्वीकार कर लिया था, वे युधिष्ठिर तो माँकी युद्ध करनेकी आज्ञासे अवश्य ही युद्ध करते*। भीमसेन भी युद्धसे कभी पीछे नहीं हटते; क्योंकि उन्होंने कौरवोंको मारनेकी प्रतिज्ञा कर रखी थी†। द्रौपदीने तो यहाँतक कह दिया था कि अगर मेरे पति (पाण्डव) कौरवोंसे युद्ध नहीं करेंगे तो मेरे वृद्ध पिता (द्रुपद), भाई (धृष्टद्युम्न) और मेरे पाँचों पुत्र तथा अभिमन्यु कौरवोंसे युद्ध करेंगे।

यदि भीमार्जुनौ कृष्ण कृपणौ सन्धिकामुकौ।
पिता मे योत्स्यते वृद्धः सह पुत्रैर्महारथैः॥
पञ्च चैव महावीर्याः पुत्रा मे मधुसूदन।
अभिमन्युं पुरस्कृत्य योत्स्यन्ते कुरुभिः सह॥

(महा० उद्योग० ८२। ३७-३८)

'नरश्रेष्ठ! यह दैवका विधान है। इसे कोई मिटा नहीं सकता। अतः इसके लिये तुम्हें शोक नहीं करना चाहिये। जहाँ धर्म है, वहीं विजय है।'

* माता कुन्तीकी आज्ञा थी—

युद्ध्यस्व राजधर्मेण मा निमज्जीः पितामहान्।
मा गमः क्षीणपुण्यस्त्वं सानुजः पापिकां गतिम्॥

(महा० उद्योग० १३२। ३४)

'तुम राजधर्मके अनुसार युद्ध करो। कायर बनकर अपने बाप-दादोंका नाम मत डुबाओ और भाइयोंसहित पुण्यसे वञ्चित होकर पापमयी गतिको मत प्राप्त होओ।'

एतद् धनञ्जयो वाच्यो नित्योद्युक्तो वृकोदरः।
यदर्थं क्षत्रिया सूते तस्य कालोऽयमागतः॥

(महा उद्योग १३७। ९-१०)

'तुम अर्जुनसे तथा युद्धके लिये सदा उद्यत रहनेवाले भीमसे यह कहना कि जिस कार्यके लिये क्षत्रिय माता पुत्र उत्पन्न करती है, अब उसका समय आ गया है।'

† धार्तराष्ट्रान् रणे हत्वा मिषतां सर्वधन्विनाम्।
शमं गन्तास्मि नचिरात् सत्यमेतद् ब्रवीमि ते॥

(महा० सभा० ७७। २२)

यदि अर्जुन युद्धभीरु होता, तब तो उसे युद्धमें प्रवृत्त करनेके लिये भगवान्‌का कथन उचित होता; किन्तु अर्जुन युद्धभीरु नहीं था, प्रत्युत धर्मभीरु था। वह मरनेसे नहीं, प्रत्युत मारनेसे डरता था। वह इस बातसे भयभीत था कि मेरेद्वारा कहीं अधर्म न हो जाय, जिससे मेरे कल्याणमें बाधा लग जाय! इसलिये भगवान्‌ने युद्ध करानेके लिये ही अर्जुनको गीता सुनायी—ऐसा मानना उचित नहीं है।

५—कई लोग कहते हैं कि गीतामें केवल कर्मयोगका ही वर्णन है। युद्धभीरु अर्जुनको युद्धरूप कर्ममें लगानेके लिये ही गीता सुनायी गयी थी। अतः गीता कर्मप्रधान है, ज्ञान और भक्तिके वर्णन तो उसमें प्रसङ्गोपात्त हैं। किंतु यह बात नहीं है। अर्जुन अपना वास्तविक निश्चित श्रेय (कल्याण) चाहता था। उसने स्वयं कहा है—

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे।

(गीता २।७ का तीसरा चरण)

तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।

(गीता ३।२ का उत्तरार्ध)

यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।

(गीता ५।१ का उत्तरार्ध)

इसके उत्तरमें भगवान्‌ने श्रेय (कल्याण) करनेवाले जो-जो साधन हो सकते हैं, उन सबको गीतामें कहा है। इसलिये गीता केवल कर्मयोगप्रधान नहीं है। हाँ, इतनी बात अवश्य है कि कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग—तीनों ही दृष्टियोंसे किस प्रकार कर्म किये

'मैं सत्य कह रहा हूँ; शीघ्र ही वह समय आनेवाला है जब समस्त धनुर्धरोंके देखते-देखते मैं युद्धमें धृतराष्ट्रके सभी पुत्रोंका वध करके शान्ति प्राप्त करूँगा।'

जायँ—यह बताते हुए कर्म करनेपर जोर जरूर है, पर केवल कर्मयोगपर नहीं; क्योंकि गीतामें परमात्माके साकार-निराकार, सगुण-निर्गुण स्वरूप तथा ध्यानयोग, प्राणायाम आदि बहुत-से विषय आये हैं। यदि केवल युद्ध कराना ही अभिप्रेत होता तो प्राणायाम आदिके कथनकी आवश्यकता नहीं थी। इन सबका कथन होनेसे यह सिद्ध होता है कि गीतामें केवल कर्मयोगका वर्णन ही नहीं है, अन्य साधनोंका भी वर्णन है। भगवान्ने स्वयं कहा है—

एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे।

(गीता ४। ३२का पूर्वार्ध)

ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक्।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः॥

(गीता १३। ४)

तथा गीतामें एकान्तमें करनेके और कार्यकालमें करनेके—दोनों तरहके साधन बताये गये हैं। जैसे—

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः॥

(गीता ६। १०)

विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि।

(गीता १३। १०का पूर्वार्ध)

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः।

(गीता १८। ५२का पूर्वार्ध)

ये एकान्तके साधन हैं। यदि केवल युद्ध कराना ही अभीष्ट होता तो एकान्तके साधन बतानेकी आवश्यकता नहीं थी। अतएव

भगवान्‌का न तो युद्धमें लगानेमें तात्पर्य है, न कर्म करानेमें ही। तात्पर्य है जीवमात्रके कल्याणमें। उसीके लिये अनेक साधन बतलाये हैं। अतः गीता हर एक परिस्थितिमें अपना कल्याण करनेकी अद्भुत कला सिखाती है।

६—यदि कहें कि 'भगवान् तो प्रायः हरदम ही अर्जुनके साथ रहते थे। गीतामें अर्जुन कहते हैं—

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्॥

(११।४२)

भागवतमें भी कहा है—

शय्यासनाटनविकत्थनभोजनादि-
ष्वैक्याद् वयस्य ऋतवानिति विप्रलब्धः।
सख्युः सखेव पितृवत्तनयस्य सर्वं
सेहे महान् महितया कुमतेरघं मे॥

(१।१५।१९)

प्रायः सदा साथ रहनेवालेको किसी समय भी उपदेश नहीं किया। अब युद्धका समय ही कौन-सा एकान्त समय था कि गीताका उपदेश उस समय किया।' तो इसका उत्तर यह है कि पहले अर्जुन इस प्रकार घबराकर कभी भगवान्‌के उन्मुख नहीं हुए थे तथा इस प्रकार शरण होकर कल्याणकी जिज्ञासा नहीं की थी। उपदेश तभी दिया जाता है और तभी सार्थक होता है जब श्रोता पात्र होकर उपदेशके लिये उन्मुख हो जाता है।

७—गीता-ग्रन्थकी रचना विक्रम-संवत्‌से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्वकी मानी जाती है। यह मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशीको कही गयी; इसलिये इसी दिन 'गीता-जयन्ती'का उत्सव मनाया जाता है।

८—गीता साक्षात् भगवान्‌का हृदय है। स्वयं भगवान्‌ने कहा है—**'गीता मे हृदयं पार्थ।'**

९—गीता एक सार्वभौम धर्म-ग्रन्थ है। सभी धर्म, सम्प्रदाय और मत-मतान्तरके लोग इसका आदर करते हैं; क्योंकि इसमें किसीके धर्मका खण्डन नहीं है। इसलिये प्रायः सभी प्रमुख सम्प्रदायोंकी इसपर टीकाएँ मिलती हैं।

१०—गीता सम्पूर्ण शास्त्रोंका सार है। यही एक छोटा-सा ऐसा ग्रन्थरत्न है, जिसमें संक्षेपतः धर्म, कर्म, भक्ति और ज्ञान-विज्ञानका तत्त्व-सार पूर्णतया संनिहित है। गीता अपने-अपने वर्ण, आश्रम तथा धर्मको कर्तव्य समझकर निष्कामभावसे उसका अनुष्ठान करनेपर उसीके द्वारा भगवत्प्राप्ति बतलाती है और उसमें परिवर्तनकी जरूरत नहीं मानती, किंतु परिमार्जनकी जरूरत मानती है।

११—वैदिक धर्मावलम्बी भारतवासियोंके आत्मोद्धारके लिये प्रस्थानत्रय कल्याणके राजपथ माने जाते हैं। इन तीनोंपर श्रीशंकर, श्रीरामानुज, श्रीवल्लभ, श्रीमध्व और श्रीनिम्बार्कने टीकाएँ लिखी हैं, इसीसे आस्तिक लोग उनका आचार्यत्व मानकर उन्हें आदर देते हैं। ये तीन प्रस्थान हैं—१. वैदिक प्रस्थान, जिसे 'उपनिषद्' कहते हैं, २.दार्शनिक प्रस्थान, जिसे 'ब्रह्मसूत्र' कहते हैं, ३.स्मार्त प्रस्थान, जिसे भगवद्गीता कहते हैं, जो कि कौरव-पाण्डवोंके सच्चे इतिहास-ग्रन्थ महाभारतके अन्तर्गत है। यह श्लोकोंके रूपमें है और भगवान्‌की वाणी होनेके कारण वेद-ऋचाओंके समान मन्त्ररूप है। सरल होनेपर भी आशय गम्भीर होनेसे यह सूत्ररूपसे है। परंतु भगवान्‌ने कृपा करके इसे इतिहासमें कहा है, इसलिये इसके अधिकारी स्त्री-शूद्र आदि सभी हो सकते हैं। वेदोंके अधिकारी सभी नहीं होते। दर्शनोंके अधिकारी भी पण्डित विद्वान् ही हो सकते हैं। किंतु इसके सभी

मनुष्य अधिकारी हो सकते हैं (गीता ९। ३०—३३)। इस प्रकार गीता वेदों और दर्शनोंके समान है।

१२—सारे शास्त्र वेदोंके सिद्धान्तको लेकर ही बने हैं। वेद भगवान्‌के निःश्वास हैं—'**यस्य निःश्वसितं वेदाः।**' श्वास अप्रयत्न सिद्ध होता है। इसी प्रकार गीतामें भगवान्‌ने अपने ऐकान्तिक प्रिय मित्र और भक्त अर्जुनको अपने हृदयकी रहस्यमयी गुप्त बातें खोल-खोलकर बतायी हैं और कहा है कि ये हर एक व्यक्तिको बतलानेकी नहीं है। इसलिये इसे वेदोंसे भी बढ़कर कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी।

१३—कुछ लोग कहते हैं कि भगवान्‌ने गीतामें आत्मश्लाघा—अपनी बड़ाई की है। परंतु यह बात सर्वथा गलत है। जहाँ-जहाँ भगवान्‌ने अपनी भगवत्ता प्रकट की है, वहाँ-वहाँ उन्होंने रहस्य (४। ३), गुह्यतर (१८। ६३), गुह्यतम (९। १, १५। २०), सर्वगुह्यतम (१८। ६४) आदि शब्दोंसे उस विषयको अत्यन्त गोपनीय और किसीको न सुनानेके लिये कहा है तथा अर्जुनको अनघ, अनसूयु बतलाकर '**कुरुष्व**' (९। २७), '**भजस्व**' (९। ३३) आदि—यों आत्मनेपदका प्रयोग करते हुए आज्ञा दी है। जहाँ उभयपदी धातुमें आत्मनेपद होता है वहाँ क्रियाका फल कर्ताको मिलता है—'**कर्त्रभिप्राये क्रियाफले आत्मनेपदम्।**' जब सर्वसमर्पणका फल समर्पकको ही मिलता है, तब वह अपनी प्रशंसा कहाँ रही? भगवान्‌ने तो अर्जुनके कल्याणके लिये ही यह कहा है कि तू ऐसा करेगा तो तेरा भला होगा। वह भी इसलिये कहा कि अर्जुन अनघ (३। ३; १४। ६; १५। २०) और अनसूयु (९। १) था। यदि कोई पापी और दोषदृष्टिवाला इसे सुनता तो उसका अन्तःकरण मलिन होनेके कारण उसपर असर अच्छा नहीं पड़ता। अघ—पापोंके कारण और असूया दोष—अशुद्ध अन्तःकरणके कारण ही ऐसी शंका हुआ

करती है। अतः अपना भला चाहनेवाले मनुष्यको श्रीभगवानके वचनोंमें आत्मश्लाघा नहीं माननी चाहिये।

१४—'**गीता सुगीता कर्तव्या**'—परम पुरुषोत्तम, देवकीनन्दन भगवान् श्रीकृष्णके मुखारविन्दसे निस्सृत समस्त उपनिषत्साररूप अद्वितीय शास्त्र—श्रीमद्भगवद्गीताको सुगीता करना चाहिये—उसका भलीभाँति गान करना चाहिये अर्थात् उसके भावोंको हृदयङ्गम करके अपने जीवनमें उतारना चाहिये।

१५—गीता एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है। इसका प्रचारक भगवान्को अत्यन्त प्रिय है। भगवान्ने अठारहवें अध्यायके उनहत्तरवें श्लोकमें स्वयं कहा है—'उसके समान मेरा अत्यन्त प्रिय कार्य करनेवाला मनुष्योंमें कोई भी नहीं है तथा पृथ्वीभरमें उसके समान मेरा प्रियतर दूसरा कोई होगा भी नहीं।'

१६—गीताका खास प्रतिपाद्य विषय है—भगवान्की शरणागति। अर्जुनके भगवत्-शरणागत होनेसे ही गीतोपदेश आरम्भ हुआ है। शरणागतिकी पूर्णताके विषयमें भगवान्ने अर्जुनसे कहा—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

(गीता १८। ६६)

अर्जुनने उत्तरमें '**करिष्ये वचनं तव**' (१८। ७३) कहकर उसे स्वीकार किया, तब गीताका उपदेश समाप्त हुआ।

१७—कुछ लोगोंकी धारणा है कि गीता केवल संन्यासियोंके लिये ही है और गीता पढ़नेवाला संन्यासी हो जाता है। अतः वे बालकोंको गीता पढ़ानेमें डरते भी हैं। परंतु यह बात नहीं है; क्योंकि गीता-वक्ता और गीता-श्रोता दोनों गृहस्थ-आश्रममें ही थे और गृहस्थ-आश्रममें ही रहे। जब गीता सुननेके बाद भी अर्जुनने घोररूप

दीखनेवाला युद्ध-जैसा कर्म ही किया, तब उसका आशय संन्यास—सर्वथा कर्मत्यागमें कैसे हो सकता है? प्रत्युत गीता तो किंकर्तव्यविमूढ़ मनुष्यकी विमूढ़ता मिटाकर उसके लिये कर्तव्यरूप उचित पथका प्रदर्शन करनेवाली है।

१८—सम्पूर्ण वेदोंका सार उपनिषद् हैं और उपनिषदोंका सार गीता है। उपनिषदोंका सार होनेपर भी गीता बहुत अलौकिक ग्रन्थ है। जैसे आमके वृक्षमें जड़से लेकर पत्तोंतक रस विद्यमान रहता है, पर जो रस उसके फलमें है, वह टहनी, पत्ते आदिमें नहीं है, ऐसे ही सम्पूर्ण शास्त्रों, वेदों एवं उपनिषदोंका सार होते हुए भी जो विलक्षणता गीतामें है, वह शास्त्र, वेद, उपनिषद् आदिमें नहीं है। इसलिये गीता एक स्वतन्त्र ग्रन्थ है। इसका सिद्धान्त शास्त्रोंके परतन्त्र नहीं है। अतः शास्त्रोंको पढ़कर कोई गीताके भावोंको समझना चाहे तो वह समझ नहीं सकेगा। शास्त्रोंका विशेष ज्ञान होनेपर गीताके भावोंको समझनेमें बाधा लगेगी, गीताके भाव ठीक समझमें नहीं आयेंगे। कारण कि पहले शास्त्र, सम्प्रदाय आदिके जो संस्कार पड़ जाते हैं, जो धारणा बन जाती है, वह जल्दी बदलती नहीं। गीता विद्वत्ता (पण्डिताई) की दृष्टिसे नहीं कही गयी है, प्रत्युत केवल जीवके कल्याणकी दृष्टिसे कही गयी है। भगवान्‌ने भी कोरी विद्वत्ताके लिये अर्जुनको फटकारा है—'**प्रज्ञावादांश्च भाषसे**' (गीता २। ११)। अतः गीताको समझनेमें केवल कल्याणकी इच्छा काम आती है, शास्त्रज्ञान, योग्यता, बुद्धिमत्ता आदि काम नहीं आते। अगर गीताको समझना हो तो किसी ग्रन्थ, सम्प्रदाय आदिका आग्रह छोड़कर, बिलकुल अनजान होकर और केवल भगवत्कृपाका आश्रय लेकर गीताका अध्ययन करना चाहिये।



२. गीता-पाठकी विधियाँ

मनुष्यका यह स्वभाव है कि वह जब अति रुचिपूर्वक कोई कार्य करता है, तब वह उस कार्यमें तल्लीन, तत्पर, तत्स्वरूप हो जाता है। ऐसा स्वभाव होनेपर भी वह प्रकृति और उसके कार्य-(पदार्थों, भोगों)-के साथ अभिन्न नहीं हो सकता; क्योंकि वह इनसे सदासे ही भिन्न है। परंतु परमात्माके नामका जप, परमात्माका चिन्तन, उसके सिद्धान्तोंका मनन आदिके साथ मनुष्य ज्यों-ज्यों अति रुचिपूर्वक सम्बन्ध जोड़ता है, त्यों-ही-त्यों वह इनके साथ अभिन्न हो जाता है, इनमें तल्लीन, तत्पर, तत्स्वरूप हो जाता है; क्योंकि वह परमात्माके साथ सदासे ही स्वतः अभिन्न है। अतः मनुष्य भगवच्चिन्तन करे; भगवद्विषयक ग्रन्थोंका पठन-पाठन करे; गीता, रामायण, भागवत आदि ग्रन्थोंका पाठ, स्वाध्याय करे, तो अति रुचिपूर्वक तत्परतासे करे, तल्लीन होकर करे, उत्साहपूर्वक करे। यहाँ गीताका पाठ करनेकी विधि बतायी जाती है।

गीताका पाठ करनेके लिये कुशका, ऊनका अथवा टाटका आसन बिछाकर उसपर पूर्व अथवा उत्तरकी ओर मुख करके बैठना चाहिये।

गीता-पाठके आरम्भमें इन मन्त्रोंका उच्चारण करे—

ॐ अस्य श्रीमद्भगवद्गीतामालामन्त्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीकृष्णः परमात्मा देवता। अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे इति बीजम्। सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज इति शक्तिः। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच इति कीलकम्॥

इन मन्त्रोंकी व्याख्या इस प्रकार है—

जैसे मालामें अनेक मणियाँ अथवा पुष्प पिरोये जाते हैं, ऐसे

ही भगवान्‌के गाये हुए जितने श्लोक अर्थात् मन्त्र हैं, वे सभी श्रीमद्भगवद्गीतारूपी मालाकी मणियाँ हैं। इस श्रीमद्भगवद्गीतारूपी मालाके मन्त्रोंके द्रष्टा अर्थात् सबसे पहले इन मन्त्रोंका साक्षात्कार करनेवाले ऋषि भगवान् वेदव्यास हैं—**ॐ अस्य श्रीमद्भगवद्गीता मालामन्त्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिः।'**

श्रीमद्भगवद्गीतामें अनुष्टुप् छन्द ही ज्यादा हैं। इसका आरम्भ (**धर्मक्षेत्रे**......) और अन्त (**यत्र योगेश्वरः**......) तथा उपदेशका भी आरम्भ (**अशोच्यानन्वशोचस्त्वं**......) और अन्त (**सर्वधर्मान् परित्यज्य**......) अनुष्टुप् छन्दमें ही हुआ है। अतः इसका छन्द अनुष्टुप् है—**'अनुष्टुप् छन्दः।'**

जो मनुष्यमात्रके परम प्रापणीय हैं, परम ध्येय हैं वे परमात्मा श्रीकृष्ण इसके देवता (अधिपति) हैं—**'श्रीकृष्णः परमात्मा देवता।'**

मात्र उपदेश अज्ञानियोंको ही दिये जाते हैं और अज्ञानी ही उपदेशके अधिकारी होते हैं। अर्जुन भी बातें तो धर्मकी कर रहे थे, पर अपने कुटुम्बके मोहके कारण शोक कर रहे थे। जब वे शोकके कारण अपने कर्तव्य-कर्मरूप धर्मका निर्णय नहीं कर पाते, तब वे भगवान्‌की शरण हो जाते हैं। भगवान् अर्जुनका शोक दूर करनेके लिये उपदेश आरम्भ करते हैं, जो गीताका बीज है—**'अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे इति बीजम्।'**

भगवान्‌के शरण होना सम्पूर्ण साधनोंका, सम्पूर्ण उपदेशोंका सार है; क्योंकि भगवान्‌की शरण होनेके समान दूसरा कोई सुगम, श्रेष्ठ और शक्तिशाली साधन नहीं है। अतः सम्पूर्ण साधनोंका आश्रय छोड़कर भगवान्‌के शरण हो जाना ही जीवकी सबसे बड़ी शक्ति, सामर्थ्य है—**'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज इति शक्तिः।'**

भगवान्‌ने यह बात प्रणपूर्वक, प्रतिज्ञापूर्वक कही है कि जो मेरे शरण हो जायगा, उसको मैं सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, उसका मैं उद्धार कर दूँगा। भगवान्‌की यह प्रतिज्ञा कभी इधर-उधर नहीं हो सकती; क्योंकि यह कीलक है—'**अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच इति कीलकम्।**'

—इस प्रकार '**ॐ अस्य श्रीमद्भगवद्गीतामालामन्त्रस्य**''' **इति कीलकम्**' का उच्चारण करनेके बाद 'न्यास' (करन्यास और हृदयादिन्यास) करना चाहिये।

शास्त्रमें आता है कि देवता होकर अर्थात् शुद्ध, पवित्र होकर देवताका पूजन, ग्रन्थका पठन-पाठन करना चाहिये—'**देवो भूत्वा यजेद्देवम्।**' वह देवतापन, शुद्धता, पवित्रता, दिव्यता आती है अपने अङ्गोंमें मन्त्रोंकी स्थापना करनेसे। जिस मन्त्रका, जिस स्तोत्रका पाठ करना हो, उसकी अपने अङ्गोंमें स्थापना करनी चाहिये; उसकी स्थापना करनेका नाम ही 'न्यास' (करन्यास और हृदयादिन्यास) है।

करन्यास—

दोनों हाथोंकी दस अङ्गुलियों और दोनों हाथोंके सामने तथा पीछेके भागोंको क्रमशः मन्त्रोच्चारणपूर्वक परस्पर स्पर्श करनेका नाम 'करन्यास' है; जैसे—

(१) '**नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः**'—ऐसा कहकर दोनों हाथोंके अङ्गुष्ठोंका परस्पर स्पर्श करे।

(२) '**न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत इति तर्जनीभ्यां नमः**'—ऐसा कहकर दोनों हाथोंकी तर्जनी अङ्गुलियोंका परस्पर स्पर्श करे।

(३) '**अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च इति मध्यमाभ्यां नमः**'—ऐसा कहकर दोनों हाथोंकी मध्यमा अङ्गुलियोंका परस्पर स्पर्श करे।

(४) '**नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातन इत्यनामिकाभ्यां नमः**'—ऐसा कहकर दोनों हाथोंकी अनामिका अङ्गुलियोंका परस्पर स्पर्श करे।

(५) '**पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रश इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः**'—ऐसा कहकर दोनों हाथोंकी कनिष्ठिका अङ्गुलियोंका परस्पर स्पर्श करे।

(६) '**नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**'—ऐसा कहकर दोनों हाथोंकी हथेलियों और उनके पृष्ठभागोंका स्पर्श करे।

हृदयादिन्यास—

दाहिने हाथकी पाँचों अङ्गुलियोंसे क्रमशः मन्त्रोच्चारणपूर्वक हृदय आदिका स्पर्श करनेका नाम 'हृदयादिन्यास' है; जैसे—

(१) '**नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक इति हृदयाय नमः**'—ऐसा कहकर दाहिने हाथकी पाँचों अङ्गुलियोंसे हृदयका स्पर्श करे।

(२) '**न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत इति शिरसे स्वाहा**'—ऐसा कहकर दाहिने हाथकी पाँचों अङ्गुलियोंसे मस्तकका स्पर्श करे।

(३) '**अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च इति शिखायै वषट्**'—ऐसा कहकर दाहिने हाथकी पाँचों अङ्गुलियोंसे शिखा-(चोटी-)का स्पर्श करे।

(४) '**नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातन इति कवचाय हुम्**'—ऐसा कहकर दाहिने हाथकी पाँचों अङ्गुलियोंसे बायें कंधेका और बायें हाथकी पाँचों अङ्गुलियोंसे दाहिने कंधेका स्पर्श करे।

(५) '**पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रश इति नेत्रत्रयाय**

वौषट्'—ऐसा कहकर दाहिने हाथकी पाँचों अङ्गुलियोंके अग्रभागसे दोनों नेत्रोंका तथा ललाटके मध्यभागका अर्थात् वहाँ गुप्तरूपसे स्थित रहनेवाले तृतीय नेत्र-(ज्ञाननेत्र-)का स्पर्श करे।

(६) '**नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च इति अस्त्राय फट्**'—ऐसा कहकर दाहिने हाथको सिरके ऊपरसे उलटा अर्थात् बायीं तरफसे पीछेकी ओर ले जाकर दाहिनी तरफसे आगेकी ओर ले आये तथा तर्जनी और मध्यमा अङ्गुलियोंसे बायें हाथकी हथेलीपर ताली बजाये।

करन्यास और हृदयादिन्यास करनेके बाद बोले—'**श्रीकृष्ण-प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः**' अर्थात् मैं यह जो गीताका पाठ करना चाहता हूँ, इसका उद्देश्य केवल भगवान्‌की प्रसन्नता ही है।

गीताका पाठ करनेके तीन प्रकार हैं—सृष्टिक्रम, संहारक्रम और स्थितिक्रम। गीताके पहले अध्यायके पहले श्लोकसे लेकर अठारहवें अध्यायके अन्तिम श्लोकतक सीधा पाठ करना अथवा प्रत्येक अध्यायके पहले श्लोकसे लेकर उसी अध्यायके अन्तिम श्लोकतक सीधा पाठ करना '**सृष्टिक्रम**' कहलाता है। अठारहवें अध्यायके अन्तिम श्लोकसे लेकर पहले अध्यायके पहले श्लोकतक उलटा पाठ करना अथवा प्रत्येक अध्यायके अन्तिम श्लोकसे लेकर उसी अध्यायके पहले श्लोकतक उलटा पाठ करना '**संहारक्रम**' कहलाता है। छठे अध्यायके पहले श्लोकसे लेकर अठारहवें अध्यायके अन्तिम श्लोकतक सीधा पाठ करना और पाँचवें अध्यायके अन्तिम श्लोकसे लेकर पहले अध्यायके पहले श्लोकतक उलटा पाठ करना '**स्थितिक्रम**' कहलाता है। ब्रह्मचारी सृष्टिक्रमसे, संन्यासी संहारक्रमसे और गृहस्थ स्थितिक्रमसे पाठ कर सकते हैं। परन्तु यह कोई नियम नहीं है। वास्तवमें किसी भी प्रकारसे गीताका पाठ किया जाय, उससे लाभ-ही-लाभ है।

गीताका पाठ सम्पुटसे, सम्पुटवल्लीसे अथवा बिना सम्पुटके भी किया जाता है। गीताके जिस श्लोकका सम्पुट देना हो, पहले उस श्लोकका पाठ करके फिर अध्यायके एक श्लोकका पाठ करे। फिर सम्पुटके श्लोकका पाठ करके अध्यायके दूसरे श्लोकका पाठ करे। इस तरह सम्पुट लगाकर पूरी गीताका सीधा या उलटा पाठ करना '**सम्पुट-पाठ**' कहलाता है। सम्पुटके श्लोकका दो बार पाठ करके फिर अध्यायके एक श्लोकका पाठ करे। फिर सम्पुटके श्लोकका दो बार पाठ करके अध्यायके दूसरे श्लोकका पाठ करे। इस तरह सम्पुट लगाकर पूरी गीताका सीधा या उलटा पाठ करना '**सम्पुटवल्ली-पाठ**' कहलाता है। गीताके पूरे श्लोकोंका सम्पुट अथवा सम्पुटवल्लीसे पाठ करनेसे एक विलक्षण शक्ति आती है, गीताका विशेष मनन होता है, अन्तःकरण शुद्ध होता है, शान्ति मिलती है और परमात्मप्राप्तिकी योग्यता आ जाती है।

सम्पुट न लगाकर पाठ करना 'बिना सम्पुटका पाठ' कहलाता है। मनुष्य प्रतिदिन बिना सम्पुट अठारह अध्यायोंका पाठ करे अथवा नौ-नौ अध्याय करके दो दिनमें अथवा छः-छः अध्याय करके तीन दिनमें अथवा तीन-तीन अध्याय करके छः दिनमें अथवा दो-दो अध्याय करके नौ दिनमें गीताका पाठ करे। यदि पंद्रह दिनमें गीताका पाठ पूरा करना हो तो प्रतिपदासे एकादशीतक एक-एक अध्यायका, द्वादशीको बारहवें और तेरहवें अध्यायका, त्रयोदशीको चौदहवें और पंद्रहवें अध्यायका, चतुर्दशीको सोलहवें और सत्रहवें अध्यायका तथा अमावस्या और पूर्णिमाको अठारहवें अध्यायका पाठ करे। किसी पक्षमें तिथि घटती हो, तो सातवें और आठवें अध्यायका एक साथ पाठ कर ले। इसी तरह किसी पक्षमें तिथि बढ़ती हो तो सोलहवें और सत्रहवें इन दोनों अध्यायोंका अलग-अलग दो दिनमें पाठ कर ले।

यदि पूरी गीता कण्ठस्थ हो तो क्रमशः प्रत्येक अध्यायके पहले श्लोकका पाठ करते हुए पूरे अठारहों अध्यायोंके पहले श्लोकोंका पाठ करे। फिर क्रमशः अठारहों अध्यायोंके दूसरे श्लोकोंका पाठ करे। इस प्रकार पूरी गीताका सीधा पाठ करे। इसके बाद अठारहवें अध्यायका अन्तिम श्लोक, फिर सत्रहवें अध्यायका अन्तिम श्लोक—इस तरह प्रत्येक अध्यायके अन्तिम श्लोकका पाठ करे। फिर अठारहवें अध्यायका उपान्त्य (अन्तिम श्लोकसे पीछेका) श्लोक, फिर सत्रहवें अध्यायका उपान्त्य श्लोक—इस तरह प्रत्येक अध्यायके उपान्त्य श्लोकका पाठ करे। इस प्रकार पूरी गीताका उलटा पाठ करे।

संस्कृत भाषाका शुद्ध उच्चारण करनेकी विधि

शब्दका जैसा रूप है, उसको बीचमेंसे तोड़कर न पढ़े एवं लघु और गुरुका, विसर्गों और अनुस्वारोंका तथा श, ष, स का लक्ष्य रखकर पढ़े तो संस्कृत भाषाका उच्चारण शुद्ध हो जाता है।

१—उच्चारणमें इ, उ, ऋ—इन तीन अक्षरोंके लघु और गुरुका ध्यान विशेष रखना चाहिये। क्योंकि अ और आ का उच्चारण-भेद तो स्पष्ट स्वतः ही हो जाता है और ऌ का उच्चारण बहुत कम आता है तथा वह दीर्घ होता ही नहीं। ऐसे ही ए, ऐ, ओ, औ—ये अक्षर लघु होते ही नहीं।

२—संयोगके आदिका, विसर्गोंके आदिका स्वर गुरु हो जाता है; क्योंकि संयोगका उच्चारण करनेसे पिछले स्वरपर जोर लगेगा ही तथा विसर्ग जो कि आधे 'ह' की तरह बोले जाते हैं, उनके उच्चारणसे भी स्वरपर जोर लगता ही है, जिससे पीछेवाला स्वर गुरु हो जाता है। व्यञ्जनोंका उच्चारण बिना स्वरके सुखपूर्वक होता नहीं और व्यञ्जनके आगे दूसरा व्यञ्जन आ जानेसे पीछेवाले

स्वरके अधीन ही उसका उच्चारण रहेगा; इसलिये पीछेवाला स्वर गुरु होता है।

३—अनुस्वार और विसर्ग किसी-न-किसी स्वरके ही आश्रित होते हैं; स्वरके बाद उच्चारित होनेसे ही उनकी अनुस्वार और विसर्ग संज्ञा होती है। अतः इनका उच्चारण करनेसे स्वाभाविक ही पिछला स्वर गुरु हो जाता है। यहाँ अनुस्वारके विषयमें यह ध्यान देनेकी बात है कि उसका उच्चारण आगेवाले व्यञ्जनके अनुरूप होता है अर्थात् आगेका व्यञ्जन जिस वर्गका होगा, उस वर्गके पञ्चम अक्षरके अनुसार अनुस्वारका उच्चारण होगा। जैसे क, ख, ग, घ, ङ परे होनेपर अनुस्वारका उच्चारण 'ङ्' की तरह, च, छ, ज, झ, ञ, परे होनेपर 'ञ' की तरह, ट, ठ, ड, ढ, ण परे होनेपर 'ण्' की तरह, त, थ, द, ध, न परे होनेपर 'न्' की तरह, प, फ, ब, भ, म, परे होनेपर 'म्' की तरह करना चाहिये। यह नियम केवल इन पचीस अक्षरोंके लिये ही है। य, र, ल, व, श, ष, स, ह—ये आठ अक्षर परे होनेपर शुद्ध अनुस्वारका ही उच्चारण करना चाहिये, जो कि केवल नासिकासे होता है।

४—श, ष, स—इन तीनोंका उच्चारण-भेद समझते हुए, इनको निम्नलिखित रीतिसे पढ़ना चाहिये—

मूर्धासे ऊँचे तालुमें जीभ लगाकर 'श' का उच्चारण करनेसे तालव्य शकारका ठीक उच्चारण होगा तथा उससे दाँतोंकी तरफ थोड़ा नीचे लगाकर 'ष' का उच्चारण करनेसे मूर्धन्य षकारका ठीक उच्चारण होगा एवं दोनों दाँतोंको मिलाकर 'स' का उच्चारण करनेसे स्वाभाविक ही जीभ दाँतोंके लगेगी, तब दन्त्य सकारका ठीक उच्चारण होगा।

३. गीता-पाठके विश्राम-स्थल

पाक्षिक पाठ

प्रतिदिन एक अध्यायका पाठ करें। उसमें प्रतिपदासे एकादशीतक एक-एक अध्यायका, द्वादशीको बारहवें और तेरहवें अध्यायका, त्रयोदशीको चौदहवें और पंद्रहवें अध्यायका, चतुर्दशीको सोलहवें और सत्रहवें अध्यायका तथा अमावस्या और पूर्णिमाको अठारहवें अध्यायका पाठ करें। किसी पक्षमें तिथि-क्षय हो तो सातवें और आठवें अध्यायका एक साथ पाठ कर लें। इसी प्रकार किसी पक्षमें तिथि-वृद्धि हो तो सोलहवें और सत्रहवें—इन दोनों अध्यायोंका अलग-अलग दो दिनमें पाठ कर लें।

चौदह दिनमें पूरा पाठ

(प्रतिदिन ५० श्लोक)

पहले	**दिन**	**दूसरे**	**अध्यायके**	**तीसरे**	**श्लोकतक**
दूसरे	,,	,,	,,	**तिरपनवें**	,,
तीसरे	,,	**तीसरे**	,,	**इकतीसवें**	,,
चौथे	,,	**चौथे**	,,	**अड़तीसवें**	,,
पाँचवें	,,	**छठे**	,,	**सत्रहवें**	,,
छठे	,,	**सातवें**	,,	**बीसवें**	,,
सातवें	,,	**नवें**	,,	**बारहवें**	,,
आठवें	,,	**दसवें**	,,	**अट्ठाईसवें**	,,
नवें	,,	**ग्यारहवें**	,,	**छत्तीसवें**	,,
दसवें	,,	**तेरहवें**	,,	**ग्यारहवें**	,,

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
४—६	दुर्योधनद्वारा पाण्डवसेनाके मुख्य-मुख्य सत्रह महारथियोंके नामोंका कथन
७	अपने सेनानायकोंको जाननेके लिये दुर्योधनकी द्रोणाचार्यसे प्रार्थना
८	दुर्योधनद्वारा अपनी सेनाके प्रधान-प्रधान सात महारथियोंके नामोंका कथन
९	दुर्योधनद्वारा अपने हितैषी शूरवीरोंकी महत्ताका वर्णन
१०	दुर्योधनके मनमें अपनी सेनाकी न्यूनताका और पाण्डवसेनाकी महत्ताका चिन्तन
११	अपने शूरवीरोंसे भीष्मकी रक्षा करनेके लिये दुर्योधनकी प्रेरणा
१२	दुर्योधनकी प्रसन्नताके लिये भीष्मका गरजकर शंख बजाना
१३	कौरवसेनाके अनेक बाजोंका बजना
१४-१५	श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेनके द्वारा शंखोंका बजाया जाना
१६	युधिष्ठिर, नकुल और सहदेवके द्वारा शंख-वादन
१७-१८	पाण्डवसेनाके अनेक महारथियोंका शंख बजाना
१९	पाण्डवसेनाकी भयंकर शंख-ध्वनिसे कौरवोंका हृदय विदीर्ण होना
२०-२१	कौरवसेनाको देखकर अर्जुनका धनुष उठाना और दोनों सेनाओंके मध्यमें रथ खड़ा करनेके लिये भगवान्‌को आज्ञा देना

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
२२	अर्जुनद्वारा विपक्षियोंको देखनेकी इच्छा प्रकट करना
२३	अर्जुनद्वारा दुर्योधनका प्रिय करनेवालोंको देखनेकी इच्छा प्रकट करना
२४-२५	भगवान्‌द्वारा भीष्म-द्रोणके सामने रथको खड़ा करना और कुरुवंशियोंको देखनेके लिये अर्जुनको आज्ञा देना
२६—२८	दोनों सेनाओंमें स्थित स्वजनोंको देखकर अर्जुनका मोहित होना और विषादयुक्त वचन बोलना
२९-३०	अर्जुनकी कायरताके आठ लक्षण
३१	शकुनोंको विपरीत देखकर अर्जुनका युद्धके परिणाममें अपना हित न देखना
३२	अर्जुनद्वारा विजय, राज्य आदिको प्राप्त करनेकी अनिच्छा प्रकट करना
३३	स्वजनोंके बिना राज्य आदिको निरर्थक बताना
३४-३५	स्वयंके मारे जानेपर अथवा त्रिलोकीका राज्य मिलनेपर भी स्वजनोंको मारनेका निषेध
३६	आततायियोंको मारनेसे पापकी प्राप्ति बताना
३७	युद्ध करनेका सर्वथा अनौचित्य बताना
३८-३९	दुर्योधनादिका युद्धमें प्रवृत्त होनेका और अपना युद्धसे निवृत्त होनेका कारण बताना
४०	कुलके नाशसे सनातन कुलधर्मोंका नष्ट होना और अधर्मका बढ़ना
४१	अधर्म बढ़नेसे स्त्रियोंका दूषित होना और वर्णसंकर पैदा होना

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
४२	वर्णसंकरसे कुल और कुलघातियोंका नरकोंमें जाना और पितरोंका पतन होना
४३	वर्णसंकरकारक दोषोंसे कुलधर्मों और जातिधर्मोंका नाश होनेका कथन
४४	नष्ट हुए कुलधर्मोंवाले मनुष्योंका नरकोंमें वास होनेका कथन
४५	स्वजनोंको मारनेके लिये प्रवृत्त होनेके लिये अर्जुनका पश्चात्ताप करना
४६	अर्जुनका युद्धसे उपरत होकर स्वजनोंद्वारा मारे जानेमें भी अपना कल्याण देखना
४७	सञ्जयद्वारा शोकाविष्ट अर्जुनकी अवस्थाका वर्णन

दूसरा अध्याय

कर्मयोग, सांख्ययोग, भक्तियोग आदि सभी साधनोंमें विवेककी बड़ी आवश्यकता है। सांख्ययोगमें इस विवेककी मुख्यता है और सांख्ययोगसे ही भगवान्‌ने अपना उपदेश आरम्भ किया है; अतः इस अध्यायका नाम '**सांख्ययोग**' रखा गया है।

श्लोक-संख्या	**प्रधान विषय**
१—१०	**अर्जुनकी कायरताके विषयमें सञ्जयद्वारा भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुनके संवादका वर्णन**
११—३०	**सांख्ययोगका वर्णन**
३१—३८	**क्षात्रधर्मकी दृष्टिसे युद्ध करनेकी आवश्यकताका प्रतिपादन**
३९—५३	**कर्मयोगका वर्णन**
५४—७२	**स्थितप्रज्ञके लक्षणों आदिका वर्णन**

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१	सञ्जयद्वारा अर्जुनके विषादका प्रतिपादन
२-३	भगवान्‌द्वारा विषादका अनौचित्य बताकर अर्जुनको युद्धके लिये आज्ञा देना
४	अर्जुनका भीष्म और द्रोणको मारना अनुचित बताना
५	अर्जुनका युद्ध न करनेमें श्रेय देखना
६	युद्ध करने तथा न करनेमें और विजय होने तथा न होनेमें अर्जुनद्वारा संदेह प्रकट करना
७	कर्तव्य-निर्णयके लिये अर्जुनद्वारा भगवान्‌का शिष्यत्व स्वीकार करना और उनके शरण होना
८	अर्जुनद्वारा सांसारिक भोगोंसे शोक-निवृत्तिका उपाय न देखना
९-१०	युद्ध न करनेका निश्चय प्रकट करके अर्जुनका चुप होना और मुसकराते हुए भगवान्‌द्वारा उपदेश आरम्भ करना
११	भगवान्‌द्वारा शोकका अनौचित्य बताना
१२-१३	शरीरीकी नित्यताका वर्णन
१४-१५	विषय-पदार्थोंकी अनित्यता और उनसे व्यथित न होनेकी महिमा
१६	सत् और असत्‌की परिभाषा
१७-१८	सत्-असत्‌की व्याख्या और युद्ध करनेके लिये आज्ञा
१९	देहीके अकर्तृत्व और अविनाशित्वका कथन
२०	देहीकी निर्विकारताका कथन
२१	देहीके अकर्तृत्वको जाननेकी महिमा
२२	वस्त्रके दृष्टान्तसे देहीकी निर्विकारताका वर्णन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
२३—२५	देहीकी अविनाशिता, नित्यता और निर्विकारताका वर्णन
२६-२७	दूसरोंकी मान्यताके अनुसार भी देहीके लिये शोक करनेको अनुचित बताना
२८	शरीरोंकी अनित्यताका वर्णन
२९	शरीरीकी अलौकिकताका वर्णन
३०	शरीरीकी नित्यताका वर्णन
३१-३२	स्वधर्मरूप कर्तव्यका पालन करनेकी श्रेष्ठता और लाभका वर्णन
३३—३६	स्वधर्मरूप कर्तव्यका पालन न करनेसे होनेवाली हानियोंका कथन
३७-३८	युद्धरूप कर्तव्यका पालन करनेसे लाभ बताते हुए युद्धके लिये आज्ञा देना
३९	कर्मयोगकी दृष्टिसे समबुद्धिको सुननेकी आज्ञा
४०	समबुद्धिके अनुष्ठानकी महिमा
४१	व्यवसायात्मिका बुद्धिकी एकताका और अव्यवसायी मनुष्योंकी बुद्धिकी अनेकताका निरूपण
४२—४४	अव्यवसायी मनुष्योंकी व्यवसायात्मिका बुद्धि न होनेके हेतुका कथन
४५	अर्जुनको निष्काम होनेके लिये आज्ञा देना
४६	निष्कामताका निरूपण
४७	कर्तव्य-कर्म करनेकी विधि
४८	कर्तव्य-कर्म करनेकी विधिको अनुष्ठानमें लानेका प्रकार
४९	सकाम कर्मकी अपेक्षा समबुद्धिकी श्रेष्ठता बताकर समबुद्धिका आश्रय लेनेकी आज्ञा देना

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
५०	समबुद्धिके आश्रयका फल बताकर योगमें लगनेकी आज्ञा देना
५१	समबुद्धिकी विशेष महिमाका कथन
५२-५३	बुद्धिके मोहकलिलको तरनेपर वैराग्य प्राप्त होने और बुद्धिके अटल तथा निश्चल होनेपर योग प्राप्त होनेका कथन
५४	स्थितप्रज्ञके विषयमें अर्जुनके चार प्रश्न
५५	कामनाओंके त्यागसे स्वरूपमें स्थिति होनेका कथन
५६-५७	स्थितप्रज्ञके भावपरक भाषणका वर्णन
५८-५९	कछुएके दृष्टान्तसे स्थितप्रज्ञके संयमका और उसके भीतर रहनेवाली रसबुद्धिकी निवृत्तिका वर्णन
६०	रसबुद्धिकी निवृत्ति न होनेसे हानि
६१	रसबुद्धिकी निवृत्तिके लिये भगवत्परायणताकी आवश्यकताका कथन
६२-६३	रसबुद्धिके रहनेसे होनेवाले पतनका क्रम
६४-६५	राग-द्वेषसे रहित एवं अपने वशीभूत इन्द्रियोंके द्वारा विषयोंका सेवन करनेपर भी स्थितप्रज्ञता होनेका कथन
६६	असंयमी पुरुषकी व्यवसायात्मिका बुद्धि और भावना न होनेका तथा उसको सुख और शान्ति प्राप्त न होनेका कथन
६७	असंयमी साधकके मनकी प्रबलताका कथन
६८	इन्द्रिय-संयमसे स्थितप्रज्ञताकी प्राप्तिका कथन
६९	संयमी पुरुषकी महिमा
७०	समुद्रके दृष्टान्तसे स्थितप्रज्ञकी पूर्णताका कथन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
७१	कामना, स्पृहा, ममता और अहंताके त्यागसे शान्तिकी प्राप्ति
७२	कामना आदिसे रहित होनेकी विशेष महिमाका वर्णन

तीसरा अध्याय

इस अध्यायका नाम '**कर्मयोग**' है; क्योंकि कर्मयोगका जितना विशद वर्णन इस अध्यायमें है, उतना गीताके अन्य अध्यायोंमें नहीं है।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—८	सांख्ययोग और कर्मयोगकी दृष्टिसे कर्तव्य-कर्म करनेकी आवश्यकताका निरूपण
९—१९	यज्ञ और सृष्टिचक्रकी परम्परा सुरक्षित रखनेके लिये कर्तव्य-कर्म करनेकी आवश्यकताका निरूपण
२०—२९	लोकसंग्रहके लिये कर्तव्य-कर्म करनेकी आवश्यकताका निरूपण
३०—३५	राग-द्वेषरहित होकर स्वधर्मके अनुसार कर्तव्य-कर्म करनेकी प्रेरणा
३६—४३	पापोंके कारणभूत 'काम'को मारनेकी प्रेरणा

सूक्ष्म विषय

१-२	भगवान्के वचनोंके स्पष्टीकरणके लिये अर्जुनकी प्रार्थना
३	भगवान्के द्वारा अधिकारी-भेदसे दो प्रकारकी लौकिक निष्ठाओंका वर्णन
४	कर्मोंके त्यागमात्रसे सिद्धिका अभाव
५	कर्मोंका सर्वथा त्याग असम्भव बतलाना
६	बाहरी क्रियाओंके त्यागको मिथ्याचार बतलाना

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
७	इन्द्रियोंसे अनासक्तभावपूर्वक कर्तव्य-कर्म करनेवालेकी प्रशंसा
८	कर्म न करनेकी अपेक्षा कर्म करनेकी श्रेष्ठता
९	अपने लिये किये गये कर्मको बन्धनकारक बतलाते हुए अनासक्तभावसे कर्म करनेकी आज्ञा
१०-११	प्रजापति ब्रह्माजीकी आज्ञाके अनुसार यज्ञार्थ-कर्मकी आवश्यकताका कथन
१२	केवल अपने स्वार्थके लिये कर्म करनेवालेकी निन्दा
१३	अपने लिये कर्म न करनेसे मुक्ति और अपने लिये कर्म करनेसे बन्धन
१४-१५	सृष्टिचक्रकी सुरक्षाके लिये कर्तव्य-कर्म करनेकी आवश्यकताका कथन
१६	सृष्टिचक्रके अनुसार न चलनेवालेकी निन्दा
१७	सिद्ध कर्मयोगीके लिये कोई कर्तव्य न होनेका कथन
१८	सिद्ध कर्मयोगीका किसीसे भी कोई प्रयोजन न होनेका कथन
१९	अनासक्तभावसे कर्म करनेकी आज्ञा और उसका फल
२०	जनकादिका उदाहरण देकर अनासक्तभावसे कर्म करनेकी प्रेरणा
२१	लोकसंग्रहकी शिक्षा
२२	भगवान्‌के द्वारा लोकसंग्रह
२३-२४	भगवान्‌के द्वारा कर्म न करनेसे होनेवाली हानिका वर्णन
२५-२६	ज्ञानी महापुरुषको स्वयं कर्म करने तथा दूसरोंसे करवानेकी प्रेरणा

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
२७	अज्ञानी मनुष्यके कर्मका प्रकार
२८	ज्ञानी महापुरुषके कर्मका प्रकार
२९	ज्ञानीके लिये अज्ञानी मनुष्योंको कर्मोंसे विचलित न करनेका कथन
३०	भगवन्निष्ठाके अनुसार कर्म करनेकी विधि
३१	भगवान्‌के सिद्धान्तका पालन करनेसे होनेवाला लाभ
३२	भगवान्‌के सिद्धान्तका पालन न करनेसे होनेवाली हानि
३३	प्रकृतिकी परवशता
३४	प्रकृतिकी परवशतासे छूटनेका उपाय
३५	स्वधर्म और परधर्मका वर्णन
३६	पापोंमें प्रवृत्तिका हेतु जाननेके लिये अर्जुनका प्रश्न
३७	भगवान्‌के द्वारा पापोंके कारणभूत कामका वर्णन
३८	कामके द्वारा ज्ञानको ढके जानेका कथन
३९	कामकी दुष्पूरता
४०	कामके निवास-स्थान
४१	इन्द्रिय-संयम करके कामको मारनेकी प्रेरणा
४२-४३	अपनेद्वारा अपने-आपको वशमें करके कामको मारनेकी प्रेरणा

चौथा अध्याय

तत्त्वज्ञानकी प्राप्तिके लिये कर्मयोग और सांख्ययोगका वर्णन होनेसे इस अध्यायका नाम '**ज्ञानकर्मसन्न्यासयोग**' है।

१—१५	कर्मयोगकी परम्परा और भगवान्‌के जन्मों तथा कर्मोंकी दिव्यताका वर्णन
१६—३२	कर्मोंके तत्त्वका और तदनुसार यज्ञोंका वर्णन
३३—४२	ज्ञानयोग और कर्मयोगकी प्रशंसा तथा प्रेरणा

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१	कर्मयोगकी परम्पराका वर्णन
२	कर्मयोगके लुप्तप्राय होनेका कथन
३	भगवान्‌के द्वारा अपना रहस्य प्रकट करना
४	भगवान्‌के विषयमें अर्जुनकी जिज्ञासा
५	भगवान्‌के द्वारा अपनी सर्वज्ञताका वर्णन
६	भगवान्‌के जन्मकी विलक्षणता
७	भगवान्‌के अवतारका अवसर
८	भगवान्‌के अवतारका प्रयोजन
९	भगवान्‌के जन्म-कर्मकी दिव्यताको जाननेका माहात्म्य
१०	भगवान्‌के जन्म-कर्मको तत्त्वसे जाननेका फल
११	भक्तोंके भावोंके अनुसार भगवान्‌का बर्ताव
१२	अन्य देवताओंकी उपासनामें हेतु
१३-१४	भगवान्‌के कर्मोंकी दिव्यता
१५	मुमुक्षुओंका उदाहरण देकर कर्म करनेकी प्रेरणा
१६	कर्म-तत्त्वके वर्णनका उपक्रम
१७	कर्म-तत्त्वको जाननेकी प्रेरणा
१८	कर्मोंका तत्त्व और उसे जाननेवाले मनुष्यकी प्रशंसा
१९	कर्म-तत्त्वको जाननेवाले महापुरुषकी प्रशंसा
२०	कर्म-तत्त्वको जाननेवाले महापुरुषकी कर्मोंसे असंगता
२१	निवृत्ति-परायण कर्मयोगीकी कर्मोंसे निर्लिप्तता
२२	प्रवृत्ति-परायण कर्मयोगीकी कर्मोंसे निर्लिप्तता
२३	यज्ञार्थ-कर्म करनेसे सम्पूर्ण कर्मोंका विलीन होना
२४	ब्रह्मयज्ञका वर्णन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
२५	भगवदर्पणरूप दैवयज्ञका और ब्रह्मके साथ स्वयंकी एकतारूप यज्ञका वर्णन
२६	इन्द्रियसंयमरूप यज्ञका और विषय-हवनरूप (अनासक्तिपूर्वक विषयसेवनरूप) यज्ञका वर्णन
२७	आत्मसंयम-(समाधि-)रूप यज्ञका वर्णन
२८	द्रव्ययज्ञ, तपोयज्ञ, योगयज्ञ और स्वाध्यायरूप ज्ञानयज्ञका वर्णन
२९-३०	प्राणायामरूप यज्ञका तथा स्तम्भवृत्ति-प्राणायामरूप यज्ञका वर्णन और यज्ञ करनेवालोंकी महिमा
३१	यज्ञ करनेसे होनेवाला लाभ और न करनेसे होनेवाली हानि
३२	कर्म-तत्त्वके वर्णनका उपसंहार
३३	द्रव्यमय यज्ञकी अपेक्षा ज्ञानयज्ञकी श्रेष्ठता
३४	ज्ञानप्राप्तिकी शास्त्रीय प्रणालीका वर्णन
३५	ज्ञानप्राप्तिके बाद पुनः मोह न होनेका कथन
३६	ज्ञानरूप नौकासे सम्पूर्ण पापोंको तरनेका कथन
३७	ज्ञानरूप अग्निसे सम्पूर्ण कर्मोंके भस्म होनेका कथन
३८	ज्ञानकी महिमा और कर्मयोगसे ज्ञानकी स्वतःसिद्धिका कथन
३९	ज्ञानप्राप्तिके पात्रका कथन
४०	विवेकहीन संशयात्माका पतन
४१	संशयरहित कर्मयोगीका कर्मोंसे निर्लिप्त रहना
४२	कर्मयोगके अनुष्ठानकी आज्ञा

पाँचवाँ अध्याय

कर्मयोग और सांख्ययोग—दोनोंका वर्णन होनेसे इस अध्यायका नाम '**कर्मसन्न्यासयोग**' है।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—६	सांख्ययोग तथा कर्मयोगकी एकताका प्रतिपादन और कर्मयोगकी प्रशंसा
७—१२	सांख्ययोग और कर्मयोगके साधनका प्रकार
१३—२६	फलसहित सांख्ययोगका विषय
२७—२९	ध्यान और भक्तिका वर्णन

सूक्ष्म विषय

१	सांख्ययोग और कर्मयोगकी श्रेष्ठताके विषयमें अर्जुनका प्रश्न
२	भगवान्‌के द्वारा सांख्ययोगकी अपेक्षा कर्मयोगको श्रेष्ठ बताना
३	कर्मयोगके द्वारा सुखपूर्वक मुक्त होनेका कथन
४	सांख्ययोग और कर्मयोगको भिन्न-भिन्न फलवाले बतानेवालोंको अज्ञ कहना
५	सांख्ययोग और कर्मयोगके फलमें एकता देखनेवालोंको बुद्धिमान् कहना
६	सांख्ययोगकी अपेक्षा कर्मयोगको शीघ्र सिद्धि देनेवाला बताना
७	कर्मोंके होनेमें कर्मयोगीकी निर्लिप्तताका कथन
८-९	कर्मोंके होनेमें सांख्ययोगीकी निर्लिप्तताका कथन
१०	कर्मोंके होनेमें भक्तियोगीकी निर्लिप्तताका कथन
११	कर्मयोगीके कर्म करनेका प्रकार

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१२	निष्कामभावसे मुक्ति और सकामभावसे बन्धन
१३	सांख्ययोगीमें कर्म करने और करवानेके भावके अभावका कथन
१४	कर्तृत्व, कर्म और कर्मफलसंयोगमें जीवोंके स्वभावको हेतु बताना
१५	पाप और पुण्यमें चेतन-तत्त्वकी निर्लिप्तता तथा जीवोंका अज्ञानसे मोहित होना
१६	सूर्यके दृष्टान्तसे तत्त्वज्ञानकी महिमाका वर्णन
१७	सांख्ययोगका साधन तथा फल
१८	ज्ञानी महापुरुषकी समदर्शिता
१९	समताकी विशेष महिमाका वर्णन
२०	सांख्ययोगका साधन और सिद्धके लक्षणोंका वर्णन
२१	ब्रह्ममें स्वाभाविक स्थितिका अनुभव और अक्षय सुखकी प्राप्ति
२२	संयोगजन्य सुखोंकी निन्दा
२३	काम-क्रोधको जीतनेवाले मनुष्यकी महिमाका वर्णन
२४	निवृत्तिपूर्वक सांख्ययोगकी साधना और सिद्धि
२५	प्रवृत्तिपूर्वक सांख्ययोगकी साधना और सिद्धि
२६	निर्वाण ब्रह्मको प्राप्त मनुष्यका अनुभव
२७-२८	फलसहित ध्यानयोगका संक्षिप्त वर्णन
२९	फलसहित भक्तियोगका संक्षिप्त वर्णन

छठा अध्याय

आत्मसंयम अर्थात् मनका संयमन करनेसे ध्यानयोगीको योग (समता) का अनुभव हो जाता है; अतः इस अध्यायका नाम **'आत्मसंयमयोग'** रखा गया है।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—४	कर्मयोगका विषय और योगारूढ़ मनुष्यके लक्षण
५—९	आत्मोद्धारके लिये प्रेरणा और सिद्ध कर्मयोगीके लक्षण
१०—१५	आसनकी विधि और फलसहित सगुण-साकारके ध्यानका वर्णन
१६—२३	नियमोंका और फलसहित स्वरूपके ध्यानका वर्णन
२४—२८	फलसहित निर्गुण-निराकारके ध्यानका वर्णन
२९—३२	सगुण और निर्गुणके ध्यानयोगियोंका अनुभव
३३—३६	मनके निग्रहका विषय
३७—४७	योगभ्रष्टकी गतिका वर्णन और भक्तियोगीकी महिमा

सूक्ष्म विषय

१-२	कर्मयोगकी प्रशंसा
३-४	योगारूढ़ होनेका उपाय और योगारूढ़के लक्षण
५-६	अपनेद्वारा अपना उद्धार करनेकी प्रेरणा
७—९	सिद्ध कर्मयोगीके लक्षण
१०	ध्यानयोगके लिये प्रेरणा
११—१३	बिछाने और बैठनेके आसनकी विधि
१४	सगुण-साकारके ध्यानका प्रकार
१५	सगुण-साकारके ध्यानका फल
१६-१७	योगीके लिये अन्वय-व्यतिरेकसे नियमोंका वर्णन
१८	स्वरूपके ध्यानयोगीकी स्थितिका वर्णन
१९	दीपकके दृष्टान्तसे योगीके चित्तकी अवस्थाका वर्णन
२०	चित्तके उपराम होनेपर योगीको अपने स्वरूपका अनुभव होना

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
२१-२२	आत्यन्तिक सुखकी प्राप्ति और दुःखोंके अभावका वर्णन
२३	साध्यरूप योग (समता-)का वर्णन और ध्यानयोगके लिये प्रेरणा
२४-२५	निर्गुण-निराकारके ध्यानकी विधि
२६	ध्यानके लिये अभ्यासका कथन
२७-२८	पहले सात्त्विक सुखकी प्राप्तिका, उसके बाद अक्षय सुखकी प्राप्तिका वर्णन
२९	स्वरूपके ध्यानयोगीका अनुभव
३०-३१	सगुण-साकारके ध्यानयोगीका अनुभव और लक्षण
३२	निर्गुण-निराकारके ध्यानयोगीका अनुभव
३३-३४	मनकी चंचलताके विषयमें अर्जुनकी मान्यता
३५-३६	मनके निग्रहके उपाय और संयतात्मा मनुष्यकी महिमा
३७-३८	योगभ्रष्टकी गतिके विषयमें अर्जुनका सन्देह
३९	सन्देह दूर करनेके लिये भगवान्‌से प्रार्थना
४०	योगभ्रष्टका पतन तथा दुर्गति न होनेका कथन
४१	शिथिल प्रयत्नवाले योगभ्रष्टका स्वर्गादिमें सुख भोगनेके बाद श्रीमानोंके घरमें जन्म लेनेका कथन
४२-४३	वैराग्यवान् योगभ्रष्टका योगियोंके कुलमें जन्म लेनेका और तत्परतासे पुनः साधनमें लगनेका कथन
४४-४५	श्रीमानोंके घरमें जन्म लेनेवाले योगभ्रष्टका साधनमें खिंचनेका और परमगतिको प्राप्त होनेका वर्णन
४६	योगीकी महिमा और अर्जुनको योगी होनेकी आज्ञा
४७	भक्तियोगीकी विशेष महिमाका वर्णन

सातवाँ अध्याय

इस अध्यायमें ज्ञान और विज्ञानका वर्णन किया गया है। भगवान् इस सम्पूर्ण जगत्‌के महाकारण हैं—ऐसा दृढ़तापूर्वक मानना 'ज्ञान' है। ऐसे ही भगवान्‌के सिवाय कुछ भी नहीं है—ऐसा अनुभव हो जाना 'विज्ञान' है। ज्ञान और विज्ञानसे परमात्माके साथ नित्ययोगका अनुभव हो जाता है अर्थात् 'मैं भगवान्‌का हूँ और भगवान् मेरे हैं', इस परम प्रेमरूप नित्य-सम्बन्धकी जागृति हो जाती है। इसलिये इस अध्यायका नाम '**ज्ञानविज्ञानयोग**' रखा गया है।

श्लोक-संख्या	**सूक्ष्म विषय**
१—७	भगवान्‌के द्वारा समग्ररूपके वर्णनकी प्रतिज्ञा करना और अपरा-परा प्रकृतियोंके संयोगसे प्राणियोंकी उत्पत्ति बताकर अपनेको सबका मूल कारण बताना
८—१२	कारणरूपसे भगवान्‌की विभूतियोंका वर्णन
१३—१९	भगवान्‌के शरण होनेवालोंका और शरण न होने-वालोंका वर्णन
२०—२३	अन्य देवताओंकी उपासनाओंका फलसहित वर्णन
२४—३०	भगवान्‌के प्रभावको न जाननेवालोंकी निन्दा और जाननेवालोंकी प्रशंसा तथा भगवान्‌के समग्ररूपका वर्णन

सूक्ष्म विषय

१	भगवान्‌के द्वारा समग्ररूपको सुननेके लिये आज्ञा
२	विज्ञानसहित ज्ञानको जाननेका माहात्म्य
३	भगवत्तत्त्वको जाननेवालेकी दुर्लभताका वर्णन
४-५	अपरा और परा प्रकृतिका वर्णन
६	अपरा और परा प्रकृतिसे प्राणियोंकी उत्पत्ति बताकर

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
	भगवान्‌द्वारा अपनेको सबका महाकारण बताना
७	भगवान्‌के सिवाय अन्य कारणका निषेध और कारणरूपसे भगवान्‌की व्यापकताका कथन
८—१२	कारणरूपसे भगवान्‌की सत्रह विभूतियोंका कथन
१३	तीनों गुणोंसे मोहित प्राणियोंके द्वारा भगवान्‌को न जाननेका कथन
१४	गुणमयी दुरत्यय दैवी मायासे तरनेका उपाय शरणागतिको बताना
१५	दुष्कृती और मूढ़ मनुष्योंका भगवान्‌के शरण न होनेका कथन
१६	चार प्रकारके सुकृती मनुष्योंका भगवान्‌के शरण होनेका कथन
१७—१९	ज्ञानी (प्रेमी) भक्तकी महिमा और दुर्लभताका कथन
२०	कामनाओंसे मोहित प्राणियोंद्वारा अन्य देवताओंकी उपासनाका कथन
२१	भगवान्‌के द्वारा देवताओंमें श्रद्धा दृढ़ करनेका कथन
२२-२३	उपासनाके अनुसार गतिका वर्णन
२४-२५	भगवान्‌को न जाननेवालोंके सामने भगवान्‌का प्रकट न होना
२६	भगवान्‌की सर्वज्ञताका वर्णन
२७	प्राणियोंका द्वन्द्वोंसे मोहित होनेका कथन
२८	द्वन्द्वमोहसे रहित मनुष्योंका वर्णन
२९-३०	भगवान्‌के समग्ररूपको जाननेका फलसहित वर्णन

आठवाँ अध्याय

'अक्षर' और 'ब्रह्म' शब्द परमात्माके निर्गुण-निराकार, सगुण-निराकार और सगुण-साकार—इन तीनों स्वरूपोंके वाचक हैं। इन तीनोंमेंसे किसी भी स्वरूपका चिन्तन करनेसे परमात्माके साथ योग (सम्बन्ध) हो जाता है। अतः इस अध्यायका नाम '**अक्षरब्रह्मयोग**' रखा गया है।

श्लोक-संख्या	**प्रधान विषय**
१—७	अर्जुनके सात प्रश्न और भगवान्‌के द्वारा उनका उत्तर देते हुए सब समयमें अपना स्मरण करनेकी आज्ञा देना
८—१६	सगुण-निराकार, निर्गुण-निराकार और सगुण- साकारकी उपासनाका फलसहित वर्णन
१७—२२	ब्रह्मलोकतककी अवधिका और भगवान्‌की महत्ता तथा भक्तिका वर्णन
२३—२८	शुक्ल और कृष्ण—गतिका वर्णन और उसको जाननेवाले योगीकी महिमा

सूक्ष्म विषय

१-२	अर्जुनके सात प्रश्न
३—५	भगवान्‌के द्वारा अर्जुनके सात प्रश्नोंका उत्तर
६	अन्तकालीन स्मरणके विषयमें सामान्य न्यायका वर्णन
७	सब समयमें भगवान्‌का स्मरण करते हुए कर्तव्य-पालन करनेवालेको भगवत्प्राप्तिका कथन
८—१०	सगुण-निराकार परमात्माकी उपासनाका फलसहित वर्णन
११—१३	निर्गुण-निराकार परमात्माकी उपासनाका फलसहित वर्णन
१४—१६	सगुण-साकार परमात्माकी उपासनाका फलसहित वर्णन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१७—१९	ब्रह्माजीके रात-दिनकी अवधिका वर्णन
२०	परमात्मतत्त्वकी श्रेष्ठताका वर्णन
२१	सम्पूर्ण उपासनाओंके फलकी एकताका वर्णन
२२	अनन्यभक्तिसे भगवत्प्राप्ति होनेका कथन
२३	शुक्ल और कृष्ण-मार्गके वर्णनका उपक्रम
२४	शुक्ल-मार्गका वर्णन
२५	कृष्ण-मार्गका वर्णन
२६	दोनों मार्गोंको शाश्वत बताते हुए प्रकरणका उपसंहार
२७	भगवान्‌के द्वारा दोनों मार्गोंको जाननेका फल बताकर अर्जुनको योगयुक्त होनेकी आज्ञा देना
२८	योगीकी महिमाका वर्णन

नवाँ अध्याय

इस अध्यायमें भगवान्‌ने जो '**मया ततमिदं सर्वम्**' आदि उपदेश दिया है; वह सब विद्याओंका राजा है; और जो भगवान्‌ने अपने-आपको प्रकट करके अर्जुनको अपने शरण होने और अपनेमें मन लगानेके लिये कहा है, वह सम्पूर्ण गोपनीय भावोंका राजा है। इन दोनों (राजविद्या और राजगुह्य) को तत्त्वसे समझ लेनेपर 'योग' (नित्ययोग) का अनुभव हो जाता है। अतः इस अध्यायका नाम '**राजविद्याराजगुह्ययोग**' रखा गया है।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—६	प्रभावसहित विज्ञानका वर्णन
७—१०	महासर्ग और महाप्रलयका वर्णन
११—१५	भगवान्‌का तिरस्कार करनेवाले एवं आसुरी, राक्षसी और मोहिनी प्रकृतिका आश्रय लेनेवालोंका कथन तथा

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
	दैवी प्रकृतिका आश्रय लेनेवाले भक्तोंके भजनका वर्णन
१६—१९	कार्य-कारणरूपसे भगवत्स्वरूप विभूतियोंका वर्णन
२०—२५	सकाम और निष्काम उपासनाका फलसहित वर्णन
२६—३४	पदार्थों और क्रियाओंको भगवदर्पण करनेका फल बताकर भक्तिके अधिकारियोंका और भक्तिका वर्णन

सूक्ष्म विषय

१	फलसहित ज्ञान-विज्ञान कहनेकी प्रतिज्ञा
२	ज्ञान-विज्ञानकी महिमाका वर्णन
३	ज्ञान-विज्ञानपर श्रद्धा न रखनेवालोंके बार-बार जन्मने-मरनेका कथन
४-५	व्याप्य-व्यापकरूपसे भगवान्‌के स्वरूप और प्रभावका वर्णन
६	भगवान्‌के द्वारा वायु और आकाशका दृष्टान्त देकर सम्पूर्ण प्राणियोंकी स्थितिको अपने अधीन बताना
७-८	प्रकृतिके परवश प्राणियोंका महाप्रलयमें लीन होने और महासर्गमें उत्पन्न होनेका वर्णन
९-१०	भगवान्‌का सृष्टि-रचनारूप कर्मसे निर्लिप्त रहनेका कथन
११-१२	भगवान्‌से विमुख हुए प्राणियोंका आसुरी, राक्षसी और मोहिनी प्रकृतिका आश्रय लेनेका कथन
१३-१४	दैवी प्रकृतिका आश्रय लेनेवाले भक्तोंके भजनका प्रकार
१५	भिन्न-भिन्न उपासनाओंका वर्णन
१६—१९	कार्य-कारणरूपसे यज्ञ और संसार-सम्बन्धी सैंतीस विभूतियोंका कथन
२०-२१	सकामभावसे यज्ञ करनेवालोंके आवागमनका वर्णन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
२२	भगवान्‌के द्वारा अनन्य भक्तोंका योगक्षेम वहन करनेका कथन
२३	देवताओंको भगवान्‌से अलग मानकर किये गये देवपूजनको भगवान्‌का अविधिपूर्वक पूजन बताना
२४-२५	भगवान्‌को सम्पूर्ण यज्ञोंका भोक्ता और मालिक मानने और न माननेवालोंकी गतियोंका वर्णन
२६	भगवान्‌के द्वारा भक्तोंके प्रेमपूर्वक दिये गये उपहारको ग्रहण करना
२७	सम्पूर्ण क्रियाओंको भगवान्‌के अर्पण करनेका कथन
२८	पदार्थों और क्रियाओंको भगवान्‌के अर्पण करनेका फल
२९	भगवान्‌की समता और भक्तिका प्रभाव
३०-३१	दुराचारीके द्वारा भी एक निश्चयपूर्वक भगवान्‌के सम्मुख होनेका फल बताना
३२	भगवान्‌का आश्रय लेनेवाले पापयोनियों, स्त्रियों, वैश्यों और शूद्रोंको परमगतिकी प्राप्ति बताना
३३	भगवान्‌के द्वारा पवित्र ब्राह्मण और क्षत्रिय भक्तोंकी विशेषता बताकर अर्जुनको भगवद्भजनकी आज्ञा देना
३४	भगवद्भजनका स्वरूप

दसवाँ अध्याय

जहाँ-कहीं जो कुछ भी विशेषता दीखती है, वह सब भगवान्‌की ही विभूति है—ऐसा माननेसे भगवान्‌के साथ योग-(सम्बन्ध-)का अनुभव हो जाता है। इसलिये इस अध्यायका नाम '**विभूतियोग**' है।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—७	भगवान्‌की विभूति और योगका कथन तथा उनको जाननेकी महिमा

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
८—११	फलसहित भगवद्भक्ति और भगवत्कृपाका प्रभाव
१२—१८	अर्जुनद्वारा भगवान्‌की स्तुति और योग तथा विभूतियोंको कहनेके लिये प्रार्थना
१९—४२	भगवान्‌के द्वारा अपनी विभूतियोंका और योगका वर्णन

	सूक्ष्म विषय
१	अर्जुनके हितके लिये भगवान्‌द्वारा पुनः महत्त्वपूर्ण वचन कहनेकी प्रतिज्ञा
२	भगवान्‌के प्राकट्यको जाननेमें देवताओं और महर्षियोंकी असमर्थता
३	भगवान्‌को तत्त्वसे जाननेका फल
४-५	भावरूपसे बीस विभूतियोंका कथन
६	व्यक्तिरूपसे पचीस विभूतियोंका कथन
७	विभूति और योगको तत्त्वसे जाननेका फल—अविचल भक्ति
८	भगवान्‌के प्रभावको जानकर भजन करनेका वर्णन
९	भक्तोंके द्वारा होनेवाले भजनका प्रकार
१०-११	कृपाके परवश हुए भगवान्‌द्वारा भक्तोंको बुद्धियोग देना और उनके अज्ञानजन्य अन्धकारका नाश करना
१२—१५	अर्जुनद्वारा भगवान्‌की स्तुति
१६—१८	योग और विभूतियोंको विस्तारपूर्वक कहनेके लिये अर्जुनकी प्रार्थना
१९	अर्जुनकी प्रार्थनाके अनुसार विभूतियोंको कहनेके लिये भगवान्‌द्वारा स्वीकृति और उपक्रम
२०—३९	भगवान्‌द्वारा अपनी बयासी विभूतियोंका कथन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
४०	भगवान्‌द्वारा अपनी दिव्य विभूतियोंकी अनन्तता बताना
४१	भगवान्‌द्वारा अपनी योगशक्तिका वर्णन
४२	भगवान्‌द्वारा सम्पूर्ण जगत्‌को अपने एक अंशसे व्याप्त बताना

ग्यारहवाँ अध्याय

अर्जुनने भगवान्‌से दिव्यदृष्टि प्राप्त करके भगवान्‌के जिस विश्वरूपके दर्शन किये थे, उसके वर्णनको पढ़-सुनकर भगवान्‌के प्रभावको मान लेनेसे भगवान्‌के साथ योग-(सम्बन्ध-) का अनुभव हो जाता है। अतः इस अध्यायका नाम '**विश्वरूपदर्शनयोग**' है।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—८	विराट्‌रूपको दिखानेके लिये अर्जुनकी प्रार्थना और भगवान्‌के द्वारा अर्जुनको दिव्यचक्षु प्रदान करना
९—१४	सञ्जयद्वारा धृतराष्ट्रके प्रति विराट्‌रूपका वर्णन
१५—३१	अर्जुनके द्वारा विराट्‌रूपको देखना और उसकी स्तुति करना
३२—३५	भगवान्‌के द्वारा अपने अत्युग्र विराट्‌रूपका परिचय और युद्धकी आज्ञा
३६—४६	अर्जुनके द्वारा विराट्‌रूप भगवान्‌की स्तुति-प्रार्थना
४७—५०	भगवान्‌के द्वारा विराट्‌रूपके दर्शनकी दुर्लभता बताना और भयभीत अर्जुनको आश्वासन देना
५१—५५	भगवान्‌के द्वारा चतुर्भुजरूपकी महत्ता और उसके दर्शनका उपाय बताना

सूक्ष्म विषय

१-२	अर्जुनके द्वारा परम गोपनीय अध्यात्मतत्त्वकी महिमाका कथन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
३-४	अर्जुनके द्वारा विराट्‌रूप-दर्शनके लिये विनम्र प्रार्थना
५—७	भगवान्‌के द्वारा अर्जुनको विराट्‌रूप देखनेकी आज्ञा
८	भगवान्‌के द्वारा अर्जुनको दिव्यचक्षु प्रदान करना
९	सञ्जयके द्वारा अर्जुनको विराट्‌रूप दिखाये जानेका कथन
१०-११	विराट्‌रूपकी दिव्यताका वर्णन
१२	विराट्‌रूपके अतुलनीय प्रकाशका वर्णन
१३	सञ्जयद्वारा भगवान्‌के शरीरके एक देशमें सम्पूर्ण विराट्‌रूपका कथन
१४	अर्जुनकी दशाका वर्णन
१५	अर्जुनके द्वारा विराट्‌रूपमें दिव्य त्रिलोकीका वर्णन
१६	विराट्‌रूप भगवान्‌के अनन्त अवयवोंका वर्णन
१७	सभी दिव्य आयुधोंसहित विराट्‌रूपके तेजका वर्णन
१८	विराट्‌रूप भगवान्‌के समग्ररूपका वर्णन
१९-२०	अनन्त, असीम और उग्र विराट्‌रूपका वर्णन
२१-२२	महर्षियोंके द्वारा विराट्‌रूप भगवान्‌की स्तुति करने और देवता, यक्ष, असुर आदिके विस्मित होनेका कथन
२३—२५	विराट्‌रूपके अत्युग्र स्तरको देखकर अर्जुनका व्यथित होना
२६—२९	नदियों और पतंगोंके दृष्टान्तसे दोनों सेनाओंका भगवान्‌के मुखोंमें प्रविष्ट होनेका वर्णन
३०	अत्युग्र विराट्‌रूप भगवान्‌के द्वारा जीभसे चाटते हुए सबका ग्रसन करनेका कथन
३१	अर्जुनके द्वारा अत्युग्र विराट्‌रूप भगवान्‌से परिचय पूछना
३२	विराट्‌रूप भगवान्‌के द्वारा कालरूपसे अपना परिचय देना

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
३३-३४	भगवान्‌के द्वारा अर्जुनको निमित्तमात्र बनकर युद्ध करनेकी आज्ञा
३५	भगवान्‌की स्तुति करनेके लिये अर्जुनका तैयार होना
३६-३७	विराट्‌रूपकी महत्ताका कथन
३८—४०	विराट्‌रूपकी अनन्तरूपता और अनन्त सामर्थ्यका कथन
४१-४२	अर्जुनके द्वारा अपने पूर्वकृत तिरस्कारके लिये भगवान्‌से क्षमा-प्रार्थना
४३	विराट्‌रूप भगवान्‌के प्रभावका वर्णन
४४	अर्जुनके द्वारा भगवान्‌से अपमान सहन करनेके लिये प्रार्थना
४५-४६	अर्जुनके द्वारा भगवान्‌से चतुर्भुजरूप दिखानेके लिये प्रार्थना
४७—४९	भगवान्‌के द्वारा विराट्‌रूप-दर्शनकी महिमा और दुर्लभता बताकर चतुर्भुजरूप देखनेकी आज्ञा
५०	भगवान्‌के द्वारा चतुर्भुजरूप दिखाकर सौम्य द्विभुजरूप हो जाना
५१	भगवान्‌का द्विभुजरूप देखकर अर्जुनका शान्तचित्त हो जाना
५२-५३	चतुर्भुजरूपके दर्शनकी दुर्लभता
५४	अनन्यभक्तिसे भगवत्प्राप्तिकी सुलभता
५५	अनन्यभक्तिके साधन

बारहवाँ अध्याय

इस अध्यायमें अनेक प्रकारके साधनों-सहित भगवद्भक्तिका वर्णन करके भक्तोंके लक्षण बताये गये हैं और इस अध्यायका उपक्रम

तथा उपसंहार भी भगवद्भक्तिमें ही हुआ है। केवल तीसरे, चौथे और पाँचवें—तीन श्लोकोंमें ज्ञानके साधनका वर्णन है, पर वह भी भक्ति और ज्ञानकी परस्पर तुलना करके भक्तिको श्रेष्ठ बतानेके लिये ही है। इसीलिये इस अध्यायका नाम '**भक्तियोग**' रखा गया है।

श्लोक-संख्या	**प्रधान विषय**
१—१२	सगुण और निर्गुण उपासकोंकी श्रेष्ठताका निर्णय और भगवत्प्राप्तिके चार साधनोंका वर्णन
१३—२०	सिद्ध भक्तोंके उन्तालीस लक्षणोंका वर्णन

सूक्ष्म विषय

१	सगुण और निर्गुण उपासकोंमें कौन श्रेष्ठ है—यह जाननेके लिये अर्जुनका प्रश्न
२	सगुण उपासकोंकी श्रेष्ठता
३-४	निर्गुण-तत्त्वका स्वरूप और निर्गुण-उपासनाका फल
५	निर्गुण-उपासनाकी कठिनाई
६	अनन्यप्रेमी सगुण-उपासकोंके लक्षण
७	भगवान्‌के द्वारा अपने अनन्यप्रेमी भक्तोंके शीघ्र उद्धारका कथन
८	समर्पणयोगरूप साधनका कथन
९	अभ्यासयोगरूप साधनका कथन
१०	भगवदर्थकर्मरूप साधनका कथन
११	सर्वकर्मफलत्यागरूप साधनका कथन
१२	सर्वकर्मफलत्यागकी श्रेष्ठता तथा उसके फलका वर्णन
१३-१४	सिद्ध भक्तके बारह लक्षणोंका पहला प्रकरण
१५	सिद्ध भक्तके छः लक्षणोंका दूसरा प्रकरण
१६	सिद्ध भक्तके छः लक्षणोंका तीसरा प्रकरण

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१७	सिद्ध भक्तके पाँच लक्षणोंका चौथा प्रकरण
१८-१९	सिद्ध भक्तके दस लक्षणोंका पाँचवाँ प्रकरण
२०	सिद्ध भक्तके लक्षणोंको आदर्श मानकर साधन करनेवाले श्रद्धालु और भगवत्परायण भक्तोंकी प्रशंसा

तेरहवाँ अध्याय

इस अध्यायमें क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके विभागका वर्णन किया गया है। क्षेत्र अलग है और क्षेत्रज्ञ अलग है—ऐसा अनुभव हो जानेसे क्षेत्रज्ञका परमात्माके साथ योग हो जाता है, जो कि नित्य है। इसलिये इस अध्यायका नाम '**क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग**' रखा गया है।

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१—१८	क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ (जीवात्मा), ज्ञान और ज्ञेय (परमात्मा) का भक्तिसहित विवेचन
१९—३४	ज्ञानसहित प्रकृति-पुरुषका विवेचन

	सूक्ष्म विषय
१-२	क्षेत्र-क्षेत्रज्ञके स्वरूपका कथन और क्षेत्रज्ञकी परमात्माके साथ एकता तथा ज्ञानका लक्षण
३	विकारसहित क्षेत्र और प्रभावसहित क्षेत्रज्ञके स्वरूपको सुननेकी आज्ञा
४	क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके विषयमें ऋषि, वेद और ब्रह्मसूत्रका प्रमाण
५	क्षेत्रके स्वरूपका कथन
६	क्षेत्रके विकारोंका कथन
७—११	ज्ञान-(बोध-) प्राप्तिके बीस उपायोंका कथन
१२	प्रतिज्ञापूर्वक ज्ञेयके निर्गुण-निराकार रूपका वर्णन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१३	ज्ञेयके सगुण-निराकार रूपका वर्णन
१४	ज्ञेयके सगुण-निर्गुण स्वरूपकी एकताका वर्णन
१५	ज्ञेयकी सर्वव्यापकताका वर्णन
१६	ज्ञेय तत्त्वकी ब्रह्मा-विष्णु-महेशके साथ एकता
१७	ज्ञेयके परम प्रकाशमय स्वरूपका कथन
१८	क्षेत्र, ज्ञान और ज्ञेयको तत्त्वसे जाननेका फल
१९	प्रकृति-पुरुषकी अनादिता एवं प्रकृतिसे विकारों एवं गुणोंकी उत्पत्ति
२०	कर्तृत्वमें प्रकृतिको और भोक्तृत्वमें पुरुषको हेतु बताना
२१	पुरुषका प्रकृति एवं गुणोंके साथ संग होनेका फल
२२	पुरुषके स्वरूपका वर्णन
२३	प्रकृति और पुरुषको तत्त्वसे जाननेका फल
२४-२५	परमात्मतत्त्वकी प्राप्तिके चार साधनोंका कथन
२६	चराचर जगत्‌की उत्पत्तिका हेतु
२७	परमात्माको सबमें समरूपसे स्थित देखनेवालेकी महिमा
२८	परमात्माको सबमें समरूपसे देखनेका फल
२९	आत्माको अकर्ता देखनेवालेकी प्रशंसा
३०	ब्रह्मप्राप्तिका उपाय
३१	पुरुषके कर्तृत्व-भोक्तृत्वसे रहित स्वरूपका वर्णन
३२	दृष्टान्तसहित पुरुष (आत्मा)का अभोक्तृत्व
३३	दृष्टान्तसहित पुरुषका अकर्तृत्व
३४	क्षेत्रके साथ माने हुए सम्बन्धका विच्छेद करनेका फल

चौदहवाँ अध्याय

इस अध्यायमें सत्त्व, रज और तम—इन तीनों गुणोंका विभागपूर्वक वर्णन किया गया है। इन तीनों गुणोंसे अतीत होनेपर, इनका सम्बन्ध छूटनेपर परमात्माके साथ नित्ययोगका अनुभव हो जाता है। इसलिये इस अध्यायका नाम '**गुणत्रयविभागयोग**' रखा गया है।

श्लोक-संख्या	**प्रधान विषय**
१—४	ज्ञानकी महिमा और प्रकृति-पुरुषसे जगत्‌की उत्पत्ति
५—१८	सत्त्व, रज और तम—इन तीनों गुणोंका विवेचन
१९—२७	भगवत्प्राप्तिका उपाय एवं गुणातीत मनुष्यके लक्षण

सूक्ष्म विषय

१-२	परमज्ञानके कथनकी प्रतिज्ञा एवं उसकी महिमा
३-४	सम्पूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्तिका कथन
५	तीनों गुणोंके द्वारा बन्धन
६—८	तीनों गुणोंका स्वरूप एवं उनके बाँधनेका प्रकार
९	तीनों गुणोंके द्वारा मनुष्यपर विजय करनेका प्रकार
१०	दो गुणोंको दबाकर प्रत्येक गुणके बढ़नेका कथन
११—१३	तीनों गुणोंकी वृद्धिके अलग-अलग लक्षण
१४-१५	तीनों गुणोंकी वृद्धिके समय मरनेवालोंकी अलग-अलग गतिका वर्णन
१६	सात्त्विक, राजस और तामस कर्मका फल
१७	तीनों गुणोंकी मुख्य वृत्तियोंका वर्णन
१८	तीनों गुणोंकी प्रधानतावाले मनुष्योंकी अलग-अलग गतिका वर्णन
१९-२०	गुणातीत होनेका उपाय एवं फल
२१	गुणातीत मनुष्यके विषयमें अर्जुनके तीन प्रश्न

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
२२-२३	गुणातीत मनुष्यके लक्षण
२४-२५	गुणातीत मनुष्यके आचरण
२६	गुणातीत होनेका उपाय
२७	भगवत्स्वरूपकी महिमा

पंद्रहवाँ अध्याय

इस अध्यायमें कहे हुए विषयको यथार्थरूपसे समझ लेनेपर पुरुषोत्तम (भगवान्)के साथ नित्ययोगका अनुभव हो जाता है। इसलिये इस अध्यायका नाम '**पुरुषोत्तमयोग**' रखा गया है।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—६	संसार-वृक्षका तथा उसका छेदन करके भगवान्के शरण होनेका और भगवद्धामका वर्णन
७—११	जीवात्माका स्वरूप तथा उसे जाननेवाले और न जाननेवालेका वर्णन
१२—१५	भगवान्के प्रभावका वर्णन
१६—२०	क्षर, अक्षर और पुरुषोत्तमका वर्णन तथा अध्यायका उपसंहार

सूक्ष्म विषय

१—२	अश्वत्थ-वृक्षरूपसे संसारका वर्णन
३-४	संसार-वृक्षका छेदन करके भगवान्के शरण होनेकी विधि
५	परमपदको प्राप्त होनेवाले महापुरुषोंके लक्षण
६	भगवान्के परमधामका वर्णन
७	जीवात्माका स्वरूप
८	जीवात्माद्वारा एक शरीरसे दूसरे शरीरमें जानेका प्रकार
९	जीवात्माद्वारा विषयोंको भोगनेकी रीति

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१०	जीवात्माके स्वरूपको जाननेवाले और न जाननेवाले मनुष्योंका वर्णन
११	जीवात्माके स्वरूपको जाननेवालोंकी विशेषता और न जाननेवालोंकी कमीका वर्णन
१२	भगवान्‌के तेजरूपका वर्णन
१३	भगवान्‌के ओज और रसरूप (सोम) का वर्णन
१४	भगवान्‌के वैश्वानररूपका वर्णन
१५	भगवान्‌को अन्तर्यामीरूपसे सबके हृदयमें स्थित बताकर उनको स्मृति आदिका कारण, वेदोंद्वारा जानने-योग्य, वेदोंको जाननेवाला और वेदान्तका कर्ता बताना
१६	क्षर और अक्षरका स्वरूप
१७	पुरुषोत्तमका स्वरूप
१८	भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा अपने-आपको पुरुषोत्तम बताकर अपना गोपनीय रहस्य प्रकट करना
१९	भगवान्‌को पुरुषोत्तम जाननेवालेकी महिमा
२०	पंद्रहवें अध्यायका माहात्म्य

सोलहवाँ अध्याय

इस अध्यायका नाम '**दैवासुरसम्पद्विभागयोग**' है; क्योंकि इस अध्यायमें जो दोनों सम्पत्तियोंका वर्णन हुआ है, वह परस्पर एक-दूसरेसे बिलकुल विरुद्ध है अर्थात् दैवी सम्पत्ति कल्याण करनेवाली है और आसुरी सम्पत्ति बाँधनेवाली तथा नीच योनियों और नरकोंमें ले जानेवाली है। जो साधक इन दोनों विभागोंको ठीक रीतिसे जान लेगा, वह आसुरी सम्पत्तिका सर्वथा त्याग कर देगा। आसुरी

सम्पत्तिका सर्वथा त्याग होते ही दैवी सम्पत्ति स्वतः प्रकट हो जायगी। दैवी सम्पत्ति प्रकट होते ही एकमात्र परमात्मासे सम्बन्ध रह जायगा।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—५	फलसहित दैवी और आसुरी सम्पत्तिका वर्णन
६—८	सत्कर्मोंसे विमुख हुए आसुरी सम्पत्तिवाले मनुष्योंकी मान्यताओंका कथन
९—१६	आसुरी सम्पत्तिवाले मनुष्योंके दुराचारों और मनोरथोंका फलसहित वर्णन
१७—२०	आसुरी सम्पत्तिवाले मनुष्योंके दुर्भाव और दुर्गतिका वर्णन
२१—२४	आसुरी सम्पत्तिके मूलभूत दोष काम, क्रोध और लोभसे रहित होकर शास्त्रविधिके अनुसार कर्म करनेकी प्रेरणा

	सूक्ष्म विषय
१—३	दैवी सम्पत्तिके छब्बीस लक्षणोंका वर्णन
४	आसुरी सम्पत्तिके छः लक्षणोंका वर्णन
५	दैवी और आसुरी सम्पत्तिका क्रमशः मुक्ति और बन्धनरूप सामान्य फल
६	आसुरी सम्पत्तिका विस्तारसे वर्णन सुननेकी आज्ञा
७	आसुरी सम्पदावाले मनुष्योंके विवेकरहित आचारका वर्णन
८	आसुरी प्रकृतिवाले मनुष्योंकी मान्यताओंका वर्णन
९—१२	नास्तिक दृष्टि, दुष्पूर काम और अपार चिन्ताओंका आश्रय लेनेवाले मनुष्योंके मोहजनित दुराचारोंका वर्णन
१३—१५	क्रमशः लोभ, क्रोध, और अभिमानको लेकर किये जानेवाले मनोरथोंका वर्णन
१६	आसुरी सम्पदावाले मनुष्योंके दुराचारोंका फल घोर नरककी प्राप्ति बताना

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१७	अभिमान और दम्भपूर्वक नाममात्रका यज्ञ करनेवालोंका वर्णन
१८	दुर्भावोंके आश्रित रहनेवाले तथा परमात्माके साथ द्वेष एवं दोषदृष्टि रखनेवालोंका वर्णन
१९-२०	द्वेष करनेवाले क्रूरकर्मा नराधमोंको भगवान्‌की प्राप्ति न होकर बार-बार आसुरी योनि और उससे भी अधम गति—नरकोंकी प्राप्तिका वर्णन
२१-२२	आसुरी सम्पदाके मूलभूत दोष—काम, क्रोध और लोभका तथा इनके त्यागका महत्त्व
२३	मनमाने ढंगसे कर्म करनेवालेको सिद्धि, सुख तथा परमगतिकी प्राप्ति न होनेका कथन
२४	शास्त्रके अनुसार कर्म करनेकी प्रेरणा

सत्रहवाँ अध्याय

इस अध्यायमें श्रद्धाके तीन विभाग किये गये हैं—सात्त्विकी, राजसी और तामसी। इस विभागको जो ठीक-ठीक जान लेगा, वह सात्त्विकी श्रद्धाका ग्रहण और राजसी-तामसी श्रद्धाका त्याग कर देगा। राजसी-तामसी श्रद्धाका त्याग करते ही (सात्त्विकी श्रद्धासे) भगवान्‌के साथ स्वतःसिद्ध नित्य-सम्बन्धका अनुभव हो जायगा, इसलिये इस अध्यायका नाम '**श्रद्धात्रयविभागयोग**' रखा गया है।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—६	तीन प्रकारकी श्रद्धाका और आसुर निश्चयवाले मनुष्योंका वर्णन
७—१०	सात्त्विक, राजस और तामस आहारीकी रुचिका वर्णन
११—२२	यज्ञ, तप और दानके तीन-तीन भेदोंका वर्णन

२३—२८	'ॐ तत्सत्' के प्रयोगकी व्याख्या और असत्-कर्मका वर्णन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
१	शास्त्रविधिको न जाननेवाले श्रद्धायुक्त मनुष्योंकी निष्ठा (श्रद्धा)-के विषयमें अर्जुनका प्रश्न
२-३	तीन प्रकारकी श्रद्धाका कथन
४	पूज्यके अनुसार पूजककी श्रद्धाकी पहचान
५-६	शास्त्रविधिका विरोधपूर्वक त्याग करके घोर तप करनेवालोंके आसुर निश्चयका वर्णन
७	आहार और यज्ञ, तप तथा दानके भेद सुननेके लिये आज्ञा
८—१०	क्रमशः सात्त्विक, राजस और तामस आहारकी रुचिसे आहारीकी श्रद्धाकी पहचान
११—१३	क्रमशः सात्त्विक, राजस और तामस यज्ञका वर्णन
१४—१६	क्रमशः शारीरिक, वाचिक और मानसिक तपका वर्णन
१७—१९	क्रमशः सात्त्विक, राजस और तामस तपका वर्णन
२०—२२	क्रमशः सात्त्विक, राजस और तामस दानका वर्णन
२३	'ॐ, तत्, और सत्,' की महिमा
२४	'ॐ' के प्रयोगकी व्याख्या
२५	'तत्' के प्रयोगकी व्याख्या
२६-२७	'सत्' के प्रयोगकी व्याख्या
२८	अश्रद्धासे किये गये कर्मोंको 'असत्' बताना

अठारहवाँ अध्याय

जिसमें मोक्षका भी संन्यास अर्थात् त्याग हो जाता है, ऐसी भगवद्भक्तिका वर्णन मुख्य होनेके कारण इस अध्यायका नाम **'मोक्षसन्न्यासयोग'** रखा गया है।

श्लोक-संख्या	प्रधान विषय
१—१२	संन्यास और त्यागके विषयमें मतान्तर और कर्मयोगका वर्णन
१३—४०	विचारप्रधान सांख्ययोगका वर्णन
४१—४८	कर्मयोगका भक्तिसहित वर्णन
४९—५५	ध्यानप्रधान सांख्ययोगका वर्णन
५६—६६	भगवद्भक्तिका वर्णन
६७—७८	श्रीमद्भगवद्गीताकी महिमा

सूक्ष्म विषय

१	संन्यास और त्यागके विषयमें अर्जुनकी जिज्ञासा
२-३	भगवान्‌के द्वारा दूसरे विद्वानोंके चार मतोंका वर्णन
४—६	भगवान्‌के द्वारा अपने निश्चित मतका वर्णन
७—९	क्रमशः तामस, राजस और सात्त्विक त्यागका वर्णन
१०—१२	त्यागी मनुष्यके लक्षण
१३—१५	सांख्य-सिद्धान्तमें कर्मोंकी सिद्धि होनेमें पाँच हेतुओंका वर्णन
१६—१८	आत्माको कर्ता माननेवालोंकी निन्दा और कर्ता न माननेवालोंकी प्रशंसा
१९	भगवान्‌के द्वारा ज्ञान, कर्म और कर्ताके तीन-तीन भेद सुननेकी आज्ञा
२०—२२	क्रमशः सात्त्विक, राजस और तामस ज्ञानका वर्णन
२३—२५	क्रमशः सात्त्विक, राजस और तामस कर्मका वर्णन
२६—२८	क्रमशः सात्त्विक, राजस और तामस कर्ताके लक्षण
२९	भगवान्‌के द्वारा बुद्धि और धृतिके तीन-तीन भेद सुननेकी आज्ञा

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
३०—३२	क्रमशः सात्त्विकी, राजसी और तामसी बुद्धिके लक्षण
३३—३५	क्रमशः सात्त्विकी, राजसी और तामसी धृतिके लक्षण
३६	भगवान्‌के द्वारा सुखके तीन-तीन भेद सुननेकी आज्ञा
३७—३९	सात्त्विक, राजस और तामस सुखका वर्णन
४०	बीसवेंसे उन्तालीसवें श्लोकमें आये गुणोंके प्रकरणका उपसंहार
४१	चारों वर्णोंके स्वाभाविक कर्मोंके प्रकरणका उपक्रम
४२	ब्राह्मणके स्वाभाविक कर्मोंका वर्णन
४३	क्षत्रियके स्वाभाविक कर्मोंका वर्णन
४४	वैश्य और शूद्रके स्वाभाविक कर्मोंका वर्णन
४५—४८	अपने स्वाभाविक कर्मोंके द्वारा परमात्माका पूजन करनेसे परमात्मप्राप्तिका कथन
४९	सांख्ययोगके अधिकारीका वर्णन
५०	सांख्ययोगके अधिकारीद्वारा परमसिद्धिको प्राप्त करनेके प्रकारका वर्णन
५१—५३	सांख्ययोगके साधनोंका वर्णन
५४-५५	पराभक्तिकी प्राप्ति और उसके फलस्वरूप परमात्म-तत्त्वको जानने और प्राप्त होनेका वर्णन
५६	भगवन्निष्ठको भगवान्‌के आश्रयसे भगवत्प्राप्ति होनेका कथन
५७	अर्जुनको भगवन्निष्ठ होनेकी आज्ञा
५८-५९	भगवन्निष्ठ होनेसे लाभ और न होनेसे हानिका वर्णन
६०	स्वभावकी परवशताका वर्णन
६१	स्वभावकी परवशतामें ईश्वरकी प्रेरणाका कथन

श्लोक-संख्या	सूक्ष्म विषय
६२	फलसहित अन्तर्यामी ईश्वरकी शरणागतिका वर्णन
६३	उपदेशका उपसंहार
६४	सर्वगुह्यतम वचन सुननेकी आज्ञा
६५-६६	फलसहित भगवत्-शरणागतिका वर्णन
६७	सर्वगुह्यतम वचन सुननेके अनधिकारियोंका वर्णन
६८-६९	भगवद्भक्तोंमें गीताका प्रचार करनेवालेकी विशेष महिमाका वर्णन
७०	गीता पढ़नेकी महिमाका वर्णन
७१	गीता सुननेकी महिमाका वर्णन
७२-७३	गीता-श्रवणके विषयमें भगवान्‌का प्रश्न और अर्जुनका उत्तर
७४	सञ्जयके द्वारा श्रीकृष्णार्जुन-संवादकी महिमाका वर्णन
७५—७७	व्यासजीकी कृपासे प्राप्त भगवान्‌के उपदेश और विराट्‌रूपको याद कर-करके सञ्जयके बार-बार हर्षित होनेका वर्णन
७८	सञ्जयके द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुनके पक्षकी विशेष महिमाका वर्णन

५. गीताके प्रत्येक अध्यायका नाम, श्लोक, पद एवं अक्षर

अध्याय	अध्यायका नाम	श्लोक	पद	अक्षर
१	अर्जुनविषादयोग	४७	५८६	१,५९६
२	साङ्ख्ययोग	७२	९८७	२,५००
३	कर्मयोग	४३	५६६	१,४५४
४	ज्ञानकर्मसन्न्यासयोग	४२	५३३	१,४२१
५	कर्मसन्न्यासयोग	२९	३७२	९९६
६	आत्मसंयमयोग	४७	५९९	१,५९०
७	ज्ञानविज्ञानयोग	३०	४२४	१,०२२
८	अक्षरब्रह्मयोग	२८	३९७	१,०११
९	राजविद्याराजगुह्ययोग	३४	४६४	१,१७७
१०	विभूतियोग	४२	५७८	१,४१७
११	विश्वरूपदर्शनयोग	५५	८८९	२,३२०
१२	भक्तियोग	२०	२६४	७०५
१३	क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग	३४	४२६	१,१५५
१४	गुणत्रयविभागयोग	२७	३४४	९४३
१५	पुरुषोत्तमयोग	२०	३०६	७६२
१६	दैवासुरसम्पद्विभागयोग	२४	३०५	८३४
१७	श्रद्धात्रयविभागयोग	२८	३५८	९६८
१८	मोक्षसन्न्यासयोग	७८	१,०१३	२,५७६
		७००	९,४११	२४,४४७

६ गीतामें विभिन्न वक्ताओंद्वारा कथित श्लोकोंकी संख्या

अध्याय	धृतराष्ट्र	सञ्जय	अर्जुन	श्रीभगवान्	पूर्ण-संख्या
१	१	२५	२१	×	४७
२		३	६	६३	७२
३			३	४०	४३
४			१	४१	४२
५			१	२८	२९
६			५	४२	४७
७			×	३०	३०
८			२	२६	२८
९			×	३४	३४
१०			७	३५	४२
११		८	३३	१४	५५
१२			१	१९	२०
१३			×	३४	३४
१४			१	२६	२७
१५			×	२०	२०
१६			×	२४	२४
१७			१	२७	२८
१८		५	२	७१	७८
	१	४१	८४	५७४	=७००

७. गीतामें 'उवाच'

अध्याय	धृतराष्ट्र	सञ्जय	अर्जुन	श्रीभगवान
१	१	३	२	×
२	×	२	२	३
३	×	×	२	२
४	×	×	१	२
५	×	×	१	१
६	×	×	२	३
७	×	×	×	१
८	×	×	१	१
९	×	×	×	१
१०	×	×	१	२
११	×	३	४	४
१२	×	×	१	१
१३	×	×	×	१
१४	×	×	१	२
१५	×	×	×	१
१६	×	×	×	१
१७	×	×	१	१
१८	×	१	२	१
	१	९	२१	२८

८. गीतामें अर्जुनके द्वारा किये गये प्रश्नोंके स्थल

अध्याय	श्लोक	प्रश्न
२	७	१
२	५४	४
३	१-२	१
३	३६	१
४	४	१
५	१	१
६	३३-३४	१
६	३७-३८-३९	२
८	१	५
८	२	२
१०	१७	२
११	३१	२
१२	१	१
१४	२१	३
१७	१	१
१८	१	१
		२९

९. गीतामें भगवान्‌के चालीस सम्बोधनात्मक नाम और उनके अर्थ

[श्रीमद्भगवद्गीतामें कुल २४९ सम्बोधनात्मक पद हैं, जिनमें भगवान् श्रीकृष्णके लिये ७६, अर्जुनके लिये १६२, सञ्जयके लिये १, धृतराष्ट्रके लिये ८ और द्रोणाचार्यके लिये २ हैं।]

१ **अच्युत**=अपने स्वरूपसे कभी च्युत न होनेवाले अर्थात् अपनी महिमामें नित्य स्थित। (१। २१; ११। ४२; १८। ७३) =३

२ **अनन्त**=सीमारहित। (११। ३७) =१

३ **अनन्तरूप**=अनन्त रूपवाले। (११। ३८) =१

४ **अनन्तवीर्य**=अनन्त सामर्थ्यवाले। (११। ४०) =१

५ **अप्रतिमप्रभाव**=अतुलनीय प्रभाववाले। (११। ४३) =१

६ **अरिसूदन**=शत्रुओंका संहार करनेवाले! (२। ४) =१

७ **कमलपत्राक्ष**=कमलपत्रके सदृश नेत्रोंवाले। (११। २) =१

८ **कृष्ण**=श्रीकृष्ण (श्यामसुन्दर) अर्थात् सम्पूर्ण प्राणियोंको अपनी तरफ खींचनेवाले। (१। २८,३२,४१; ५। १; ६। ३४, ३७, ३९; ११। ४१; १७। १) =९

९ **केशव**=क=ब्रह्मा, अ=विष्णु, ईश=शंकर—ये तीनों जिनके व=वपु अर्थात् स्वरूप हैं, वे केशव हैं। (१। ३१; २। ५४; ३। १; १०। १४) =४

१० **केशिनिषूदन**=केशि नामक दैत्यको मारनेवाले अर्थात् भक्तोंके सम्पूर्ण विघ्नोंको दूर करनेवाले। (१८। १) =१

११ **गोविन्द**=वेदवाणीके द्वारा जिनके स्वरूपकी प्राप्ति हो, वे 'गोविन्द' हैं। (१। ३२) =१

१२ **जगत्पते**=समस्त संसारके स्वामी अर्थात् सम्पूर्ण चराचर जगत्का पालन-पोषण करनेवाले। (१०। १५) =१

१३ **जगन्निवास**=सम्पूर्ण जगत्के आश्रय। (११। २५, ३७, ४५) =३

१४ **जनार्दन**=सबकी याचना पूरी करनेवाले। (१। ३६, ३९, ४४; ३। १; १०। १८; ११। ५१) =६

१५ **देव**=प्रकाशमान विभु। (११। १५, ४४) =२

१६ **देवदेव**=देवताओंके भी स्वामी। (१०। १५) =१

१७ **देववर**=देवताओंमें सर्वश्रेष्ठ। (११। ३१) =१

१८ **देवेश**=देवताओंके प्रभु। (११। २५, ३७, ४५) =३

१९ **परमेश्वर**=सर्वोपरि सर्वैश्वर्यवान् स्वामी। (११। ३) =१

२० **पुरुषोत्तम**=समस्त पुरुषोंमें श्रेष्ठ। (८। १; १०। १५; ११। ३) =३

२१ **प्रभो**=सर्वसमर्थ। (११। ४; १४। २१) =२

२२ **भगवन्**=सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्यरूप छः दिव्य लक्षणोंसे सर्वदा सम्पन्न। (१०। १४, १७)=२

२३ **भूतभावन**=सम्पूर्ण प्राणियोंको उत्पन्न करनेवाले। (१०। १५) =१

२४ **भूतेश**=समस्त प्राणियोंके स्वामी। (१०। १५) =१

२५ **मधुसूदन**=मधु नामक दैत्यको मारनेवाले। (१। ३५; २। ४; ६। ३३; ८। २) =४

२६ **महात्मन्**=महान् स्वरूपवाले। (११। २०, ३७) =२

२७ **महाबाहो**=विशाल भुजाओंवाले अर्थात् सर्वसमर्थ। (६। ३८; ११। २३; १८। १) =३

२८ **माधव**=मा=लक्ष्मी, धव=पति अर्थात् लक्ष्मीपति। (१। ३७) =१
२९ **यादव**=यदुवंशमें अवतार लेनेवाले। (११। ४१) =१
३० **योगिन्**=स्वाभाविक ही सम्पूर्ण योगोंसे सदा सम्पन्न। (१०। १७) =१
३१ **योगेश्वर**=सब प्रकारके योगोंके स्वामी। (११। ४) =१
३२ **वार्ष्णेय**=वृष्णिवंशमें अवतार लेनेवाले। (१। ४१; ३। ३६) =२
३३ **विश्वमूर्ते**=विश्व जिनकी मूर्ति है, ऐसे विराट्-स्वरूप। (११। ४६) =१
३४ **विश्वरूप**=सम्पूर्ण संसार जिनका रूप है, ऐसे विराट्-स्वरूप। (११। १६) =१
३५ **विश्वेश्वर**=समस्त संसारके स्वामी। (११। १६) =१
३६ **विष्णो**=सर्वव्यापक। (११। २४; ३०) =२
३७ **सखे**=मित्र। (११। ४१) =१
३८ **सर्व**=सर्वरूप। (११। ४०) =१
३९ **सहस्रबाहो**=हजारों भुजाओंवाले। (११। ४६) =१
४० **हृषीकेश**=हृषीक=इन्द्रियाँ, ईश=स्वामी अर्थात् इन्द्रियोंके स्वामी अन्तर्यामी प्रभु। (११। ३६; १८। १) =२

७६

१०. गीतामें अर्जुनके बाईस सम्बोधनात्मक नाम और उनके अर्थ

१ **अनघ**=निष्पाप। (३। ३; १४। ६; १५।२०) =३

२ **अर्जुन**=शुद्ध अन्त:करण युक्त। (२। २, ४५; ३। ७; ४। ५, ९, ३७; ६। १६, ३२, ४६; ७। १६, २६; ८। १६, २७; ९। १९; १०। ३२, ३९, ४२; ११। ४७, ५४; १८। ९, ३४, ६१) =२२

३ **कुरुनन्दन**=कुरुकुलको आनन्द देनेवाला। (२। ४१; ६। ४३; १४। १३) =३

४ **कुरुप्रवीर**=कुरुवंशमें अतिश्रेष्ठ वीर। (११। ४८) =१

५ **कुरुश्रेष्ठ**=कुरुकुलमें श्रेष्ठ। (१०। १९) =१

६ **कुरुसत्तम**=कुरुकुलमें उत्पन्न उत्तम पुरुष। (४। ३१) =१

७ **कौन्तेय**=कुन्तीका पुत्र। (२। १४, ३७, ६०; ३। ९, ३९; ५। २२; ६। ३५; ७। ८; ८। ६, १६; ९। ७, १०, २३, २७, ३१; १३। १, ३१; १४। ४, ७; १६। २०, २२; १८। ४८, ५०, ६०) =२४

८ **गुडाकेश**=निद्राका स्वामी, निद्राजयी या घुँघराले केशोंवाला। (१०। २०; ११। ७) =२

९ **तात**=प्रिय। (६। ४०) =१

१० **देहभृतां वर**=देहधारियोंमें श्रेष्ठ। (८। ४) =१

११ **धनञ्जय**=राजाओंके धनको जीतनेवाला (२। ४८, ४९; ४। ४१; ७। ७; ९। ९; १२। ९; १८। २९, ७२) =८

१२ **परन्तप**=शत्रुको तपानेवाला। (२। ३; ४। २, ५, ३३; ७। २७, ९। ३; १०। ४०; ११। ५४; १८। ४१) =९

१३ **पाण्डव**=पाण्डुका पुत्र। (४। ३५; ६। २; ११। ५५; १४। २२; १६। ५) =५

१४ **पार्थ**=पृथा यानी कुन्तीका पुत्र। (१। २५; २। ३, २१, ३२, ३९, ४२, ५५, ७२; ३। १६, २२, २३; ४। ११, ३३; ६। ४०; ७। १, १०; ८। ८, १४, १९, २२, २७; ९। १३, ३२; १०। २४; ११। ५; १२। ७; १६। ४, ६; १७। २६, २८; १८। ६, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ७२) =३८

१५ **पुरुषर्षभ**=पुरुषोंमें श्रेष्ठ। (२। १५) =१

१६ **पुरुषव्याघ्र**=पुरुषोंमें सिंहके समान तेजस्वी वीर। (१८। ४)=१

१७ **भरतर्षभ**=भरतकुलमें श्रेष्ठ। (३। ४१; ७। ११, १६; ८। २३; १३। २६; १४। १२; १८। ३६) =७

१८ **भरतश्रेष्ठ**=भरतवंशमें श्रेष्ठ। (१७। १२) =१

१९ **भरतसत्तम**=भरतवंशमें अति उत्तम पुरुष। (१८। ४) =१

२० **भारत**=भरतवंशमें उत्पन्न। (२। १४, १८, २८, ३०; ३। २५; ४। ७, ४२; ७। २७; ११। ६; १३। २, ३३; १४। ३, ८, ९, १०; १५। १९, २०; १६। ३; १७। ३; १८। ६२) =२०

२१ **महाबाहो**=बड़ी और बलवान् भुजाओंवाला (शूरवीर) अथवा जिसके मित्र तथा भाई बड़े पुरुष हों। (२। २६, ६८; ३। २८, ४३; ५। ३, ६; ६। ३५; ७। ५; १०। १; १४। ५; १८। १३) =११

२२ **सव्यसाचिन्**=बायें हाथसे भी बाण चलानेमें निपुण। (११। ३३) =१

१६२

११. गीतामें सञ्जय, धृतराष्ट्र और द्रोणाचार्यके सम्बोधनात्मक नाम

सञ्जयके लिये सम्बोधन—

१	सञ्जय (१। १)	=१

धृतराष्ट्रके लिये सम्बोधन—

१	परन्तप (२। ९)	=१
२	पृथिवीपते (१। १८)	=१
३	भारत (१। २४; २। १०)	=२
४	महीपते (१। २१)	=१
५	राजन् (११। ९; १८। ७६, ७७)	=३
		८

द्रोणाचार्यके लिये सम्बोधन—

१	आचार्य (१। ३)	=१
२	द्विजोत्तम (१। ७)	=१
		२

१२. गीतामें आये सम्बोधनात्मक पदोंकी अध्यायक्रमसे तालिका

प्रथमोऽध्यायः

श्लोक	सम्बोधन	कौन-सी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
१	सञ्जय	१	१	सञ्जय	धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे
३	आचार्य	१	१	द्रोणाचार्य	पश्यैतां पाण्डुपुत्राणाम्
७	द्विजोत्तम	१	१	द्रोणाचार्य	अस्माकं तु विशिष्टा ये
१८	पृथिवीपते	१	१	धृतराष्ट्र	द्रुपदो द्रौपदेयाश्च
२१	महीपते	१	१	धृतराष्ट्र	हृषीकेशं तदा वाक्यम्
२१	अच्युत	१	३	श्रीभगवान्	,, ,,
२४	भारत	१	२	धृतराष्ट्र	एवमुक्तो हृषीकेशः
२५	पार्थ	१	३८	अर्जुन	भीष्मद्रोणप्रमुखतः
२८	कृष्ण	१	९	श्रीभगवान्	कृपया परयाविष्टः
३१	केशव	१	४	,,	निमित्तानि च पश्यामि
३२	कृष्ण	२	९	,,	न काङ्क्षे विजयं कृष्ण
३२	गोविन्द	१	१	,,	,, ,,
३५	मधुसूदन	१	४	,,	एतान्न हन्तुमिच्छामि
३६	जनार्दन	१	६	,,	निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः
३७	माधव	१	१	,,	तस्मान्नार्हा वयं हन्तुम्
३९	जनार्दन	२	६	,,	कथं न ज्ञेयमस्माभिः
४१	कृष्ण	३	९	,,	अधर्माभिभवात्कृष्ण
४१	वार्ष्णेय	१	२	,,	,, ,,
४४	जनार्दन	३	६	,,	उत्सन्नकुलधर्माणाम्

कुल	सञ्जयका	धृतराष्ट्रके	द्रोणाचार्यके	अर्जुनका	श्रीभगवान्के
१९	१	३	२	१	१२

द्वितीयोऽध्यायः

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
२	अर्जुन	१	२२	अर्जुन	कुतस्त्वा कश्मलमिदम्
३	पार्थ	२	३८	,,	क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ
३	परन्तप	१	९	,,	,, ,,
४	मधुसूदन	२	४	श्रीभगवान्	कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये
४	अरिसूदन	१	१	,,	,, ,,
९	परन्तप	१	१	धृतराष्ट्र	एवमुक्त्वा हृषीकेशम्
१०	भारत	२	२	,,	तमुवाच हृषीकेशः
१४	कौन्तेय	१	२४	अर्जुन	मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय
१४	भारत	१	२०	,,	,, ,,
१५	पुरुषर्षभ	१	१	,,	यं हि न व्यथयन्त्येते
१८	भारत	२	२०	,,	अन्तवन्त इमे देहाः
२१	पार्थ	३	३८	,,	वेदाविनाशिनं नित्यम्
२६	महाबाहो	१	११	,,	अथ चैनं नित्यजातम्
२८	भारत	३	२०	,,	अव्यक्तादीनि भूतानि
३०	भारत	४	२०	,,	देही नित्यमवध्योऽयम्
३२	पार्थ	४	३८	,,	यदृच्छया चोपपन्नम्
३७	कौन्तेय	२	२४	,,	हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम्
३९	पार्थ	५	३८	,,	एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये
४१	कुरुनन्दन	१	३	,,	व्यवसायात्मिका बुद्धिः
४२	पार्थ	६	३८	,,	यामिमां पुष्पितां वाचम्
४५	अर्जुन	२	२२	,,	त्रैगुण्यविषया वेदाः
४८	धनञ्जय	१	८	,,	योगस्थः कुरु कर्माणि
४९	धनञ्जय	२	८	,,	दूरेण ह्यवरं कर्म
५४	केशव	२	४	श्रीभगवान्	स्थितप्रज्ञस्य का भाषा

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
५५	पार्थ	७	३८	अर्जुन	प्रजहाति यदा कामान्
६०	कौन्तेय	३	२४	,,	यततो ह्यपि कौन्तेय
६८	महाबाहो	२	११	,,	तस्माद्यस्य महाबाहो
७२	पार्थ	८	३८	,,	एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ
कुल २८	धृतराष्ट्रके २		अर्जुनके २३		श्रीभगवान्के ३

तृतीयोऽध्यायः

१	जनार्दन	४	६	श्रीभगवान्	ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते
१	केशव	३	४	,,	,, ,,
३	अनघ	१	३	अर्जुन	लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा
७	अर्जुन	३	२२	,,	यस्त्विन्द्रियाणि मनसा
९	कौन्तेय	४	२४	,,	यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र
१६	पार्थ	९	३८	,,	एवं प्रवर्तितं चक्रम्
२२	पार्थ	१०	३८	,,	न मे पार्थास्ति कर्तव्यम्
२३	पार्थ	११	३८	,,	यदि ह्यहं न वर्तेयम्
२५	भारत	५	२०	,,	सक्ताः कर्मण्यविद्वांसः
२८	महाबाहो	३	११	,,	तत्त्ववित्तु महाबाहो
३६	वार्ष्णेय	२	२	श्रीभगवान्	अथ केन प्रयुक्तोऽयम्
३९	कौन्तेय	५	२४	अर्जुन	आवृतं ज्ञानमेतेन
४१	भरतर्षभ	१	७	,,	तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ
४३	महाबाहो	४	११	,,	एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा
कुल १४	अर्जुनके ११			श्रीभगवान्के ३	

चतुर्थोऽध्यायः

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
२	परन्तप	२	९	अर्जुन	एवं परम्पराप्राप्तम्
५	अर्जुन	४	२२	,,	बहूनि मे व्यतीतानि
५	परन्तप	३	९	,,	,, ,,
७	भारत	६	२०	,,	यदा यदा हि धर्मस्य
९	अर्जुन	५	२२	,,	जन्म कर्म च मे दिव्यम्
११	पार्थ	१२	३८	,,	ये यथा मां प्रपद्यन्ते
३१	कुरुसत्तम	१	१	,,	यज्ञशिष्टामृतभुजः
३३	परन्तप	४	९	,,	श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञात्
३३	पार्थ	१३	३८	,,	,, ,,
३५	पाण्डव	१	५	,,	यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहम्
३७	अर्जुन	६	२२	,,	यथैधांसि समिद्धोऽग्निः
४१	धनञ्जय	३	८	,,	योगसन्न्यस्तकर्माणम्
४२	भारत	७	२०	,,	तस्मादज्ञानसम्भूतम्
कुल १३	अर्जुनके १३				

पञ्चमोऽध्यायः

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
१	कृष्ण	४	९	श्रीभगवान्	सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण
३	महाबाहो	५	११	अर्जुन	ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी
६	महाबाहो	६	११	,,	सन्न्यासस्तु महाबाहो
२२	कौन्तेय	६	२४	,,	ये हि संस्पर्शजा भोगाः
कुल ४	श्रीभगवान्‌का १			अर्जुनके ३	

षष्ठोऽध्यायः

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
२	पाण्डव	२	५	अर्जुन	यं सन्न्यासमिति प्राहुः
१६	अर्जुन	७	२२	,,	नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति
३२	अर्जुन	८	२२	,,	आत्मौपम्येन सर्वत्र
३३	मधुसूदन	३	४	श्रीभगवान्	योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः
३४	कृष्ण	५	९	,,	चञ्चलं हि मनः कृष्ण
३५	महाबाहो	७	११	अर्जुन	असंशयं महाबाहो
३५	कौन्तेय	७	२४	,,	,, ,,
३७	कृष्ण	६	९	श्रीभगवान्	अयतिः श्रद्धयोपेतः
३८	महाबाहो	१	३	,,	कच्चिन्नोभयविभ्रष्टः
३९	कृष्ण	७	९	,,	एतन्मे संशयं कृष्ण
४०	पार्थ	१४	३८	अर्जुन	पार्थ नैवेह नामुत्र
४०	तात	१	१	,,	,, ,,
४३	कुरुनन्दन	२	३	,,	तत्र तं बुद्धिसंयोगम्
४६	अर्जुन	९	२२	,,	तपस्विभ्योऽधिको योगी
कुल	श्रीभगवान्के		अर्जुनके		
१४	५		९		

सप्तमोऽध्यायः

१	पार्थ	१५	३८	अर्जुन	मय्यासक्तमनाः पार्थ
५	महाबाहो	८	११	,,	अपरेयमितस्त्वन्याम्
७	धनञ्जय	४	८	,,	मत्तः परतरं नान्यत्
८	कौन्तेय	८	२४	,,	रसोऽहमप्सु कौन्तेय
१०	पार्थ	१६	३८	,,	बीजं मां सर्वभूतानाम्
११	भरतर्षभ	२	७	,,	बलं बलवतां चाहम्

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
१६	अर्जुन	१०	२२	,,	चतुर्विधा भजन्ते माम्
१६	भरतर्षभ	३	७	अर्जुन	,, ,,
२६	अर्जुन	११	२२	,,	वेदाहं समतीतानि
२७	भारत	८	२०	,,	इच्छाद्वेषसमुत्थेन
२७	परन्तप	५	९	,,	,, ,,
कुल	अर्जुनके				
११	११				

अष्टमोऽध्यायः

१	पुरुषोत्तम	१	३	श्रीभगवान्	किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मम्
२	मधुसूदन	४	४	,,	अधियज्ञः कथं कोऽत्र
४	देहभृतां वर	१	१	अर्जुन	अधिभूतं क्षरो भावः
६	कौन्तेय	९	२४	,,	यं यं वापि स्मरन्भावम्
८	पार्थ	१७	३८	,,	अभ्यासयोगयुक्तेन
१४	पार्थ	१८	३८	,,	अनन्यचेताः सततम्
१६	अर्जुन	१२	२२	,,	आब्रह्मभुवनाल्लोकाः
१६	कौन्तेय	१०	२४	,,	,, ,,
१९	पार्थ	१९	३८	,,	भूतग्रामः स एवायम्
२२	पार्थ	२०	३८	,,	पुरुषः स परः पार्थ
२३	भरतर्षभ	४	७	,,	यत्र काले त्वनावृत्तिम्
२७	पार्थ	२१	३८	,,	नैते सृती पार्थ जानन्
२७	अर्जुन	१३	२२	,,	,, ,,
कुल	श्रीभगवान्के		अर्जुनके		
१३	२		११		

नवमोऽध्यायः

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
३	परन्तप	६	९	अर्जुन	अश्रद्दधानाः पुरुषाः
७	कौन्तेय	११	२४	,,	सर्वभूतानि कौन्तेय
९	धनञ्जय	५	८	,,	न च मां तानि कर्माणि
१०	कौन्तेय	१२	२४	,,	मयाध्यक्षेण प्रकृतिः
१३	पार्थ	२२	३८	,,	महात्मानस्तु मां पार्थ
१९	अर्जुन	१४	२२	,,	तपाम्यहमहं वर्षम्
२३	कौन्तेय	१३	२४	,,	येऽप्यन्यदेवता भक्ताः
२७	कौन्तेय	१४	२४	,,	यत्करोषि यदश्नासि
३१	कौन्तेय	१५	२४	,,	क्षिप्रं भवति धर्मात्मा
३२	पार्थ	२३	३८	,,	मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य
कुल	अर्जुनके				
१०	१०				

दशमोऽध्यायः

१	महाबाहो	९	११	अर्जुन	भूय एव महाबाहो
१४	केशव	४	४	श्रीभगवान्	सर्वमेतदृतं मन्ये
१४	भगवन्	१	२	,,	,, ,,
१५	पुरुषोत्तम	२	३	,,	स्वयमेवात्मनात्मानम्
१५	भूतभावन	१	१	,,	,, ,,
१५	भूतेश	१	१	,,	,, ,,
१५	देवदेव	१	१	,,	,, ,,
१५	जगत्पते	१	१	,,	,, ,,
१७	योगिन्	१	१	,,	कथं विद्यामहं योगिन्
१७	भगवन्	२	२	,,	,, ,,
१८	जनार्दन	५	६	,,	विस्तरेणात्मनो योगम्

श्लोक	सम्बोधन	कौन-सी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
१९	कुरुश्रेष्ठ	१	१	अर्जुन	हन्त ते कथयिष्यामि
२०	गुडाकेश	१	२	,,	अहमात्मा गुडाकेश
२४	पार्थ	२४	३८	,,	पुरोधसां च मुख्यं माम्
३२	अर्जुन	१५	२२	,,	सर्गाणामादिरन्तश्च
३९	अर्जुन	१६	२२	,,	यच्चापि सर्वभूतानाम्
४०	परन्तप	७	९	,,	नान्तोऽस्ति मम दिव्यानाम्
४२	अर्जुन	१७	२२	,,	अथवा बहुनैतेन
कुल		श्रीभगवान्के		अर्जुनके	
१८		१०		८	

एकादशोऽध्यायः

२	कमलपत्राक्ष	१	१	श्रीभगवान्	भवाप्ययौ हि भूतानाम्
३	परमेश्वर	१	१	,,	एवमेतद्यथात्थ त्वम्
३	पुरुषोत्तम	३	३	,,	,, ,,
४	प्रभो	१	२	,,	मन्यसे यदि तच्छक्यम्
४	योगेश्वर	१	१	,,	,, ,,
५	पार्थ	२५	३८	अर्जुन	पश्य मे पार्थ रूपाणि
६	भारत	९	२०	,,	पश्यादित्यान्वसून्रुद्रान्
७	गुडाकेश	२	२	,,	इहैकस्थं जगत्कृत्स्नम्
९	राजन्	१	३	धृतराष्ट्र	एवमुक्त्वा ततो राजन्
१५	देव	१	२	श्रीभगवान्	पश्यामि देवांस्तव देव देहे
१६	विश्वेश्वर	१	१	,,	अनेक बाहूदरवक्त्रनेत्रम्
१६	विश्वरूप	१	१	,,	,, ,,
२०	महात्मन्	१	२	,,	द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि
२३	महाबाहो	२	३	,,	रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रम्
२४	विष्णो	१	२	,,	नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णम्
२५	देवेश	१	३	,,	दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि

श्लोक	सम्बोधन	कौन-सी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
२५	जगन्निवास	१	३	श्रीभगवान्	दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि
३०	विष्णो	२	२	,,	लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्तात्
३१	देववर	१	१	,,	आख्याहि मे को भवानुग्ररूपः
३३	सव्यसाचिन्	१	१	अर्जुन	तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
३६	हृषीकेश	१	२	श्रीभगवान्	स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
३७	महात्मन्	२	२	,,	कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
३७	अनन्त	१	१	,,	,, ,,
३७	देवेश	२	३	,,	,, ,,
३७	जगन्निवास	२	३	,,	,, ,,
३८	अनन्तरूप	१	१	,,	त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः
४०	सर्व	१	१	,,	नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
४०	अनन्तवीर्य	१	१	,,	,, ,,
४१	कृष्ण	८	९	,,	सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तम्
४१	यादव	१	१	,,	,, ,,
४१	सखे	१	१	,,	,, ,,
४२	अच्युत	२	३	,,	यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
४३	अप्रतिमप्रभाव	१	१	,,	पितासि लोकस्य चराचरस्य
४४	देव	२	२	,,	तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायम्
४५	देवेश	३	३	,,	अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा
४५	जगन्निवास	३	३	,,	,, ,,
४६	सहस्रबाहो	१	१	,,	किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तम्
४६	विश्वमूर्ते	१	१	,,	,, ,,
४७	अर्जुन	१८	२२	अर्जुन	मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदम्
४८	कुरुप्रवीर	१	१	,,	न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैः
५१	जनार्दन	६	६	श्रीभगवान्	दृष्ट्वेदं मानुषं रूपम्

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
५४	अर्जुन	१९	२२	अर्जुन	भक्त्या त्वनन्यया शक्य:
५४	परन्तप	८	९	,,	,, ,,
५५	पाण्डव	३	५	,,	मत्कर्मकृन्मत्परम:
कुल ४४	श्रीभगवान्के ३४		अर्जुनके ९		धृतराष्ट्रका १

द्वादशोऽध्याय:

७	पार्थ	२६	३८	अर्जुन	तेषामहं समुद्धर्त्ता
९	धनञ्जय	६	८	,,	अथ चित्तं समाधातुम्
कुल २	अर्जुनके २				

त्रयोदशोऽध्याय:

१	कौन्तेय	१६	२४	अर्जुन	इदं शरीरं कौन्तेय
२	भारत	१०	२०	,,	क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि
२६	भरतर्षभ	५	७	,,	यावत्सञ्जायते किञ्चित्
३१	कौन्तेय	१७	२४	,,	अनादित्वान्निर्गुणत्वात्
३३	भारत	११	२०	,,	यथा प्रकाशयत्येक:
कुल ५	अर्जुनके ५				

चतुर्दशोऽध्याय:

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
३	भारत	१२	२०	अर्जुन	मम योनिर्महद्ब्रह्म
४	कौन्तेय	१८	२४	,,	सर्वयोनिषु कौन्तेय
५	महाबाहो	१०	११	,,	सत्त्वं रजस्तम इति
६	अनघ	२	३	,,	तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्
७	कौन्तेय	१९	२४	,,	रजो रागात्मकं विद्धि
८	भारत	१३	२०	,,	तमस्त्वज्ञानजं विद्धि
९	भारत	१४	२०	,,	सत्त्वं सुखे सञ्जयति
१०	भारत	१५	२०	,,	रजस्तमश्चाभिभूय
१२	भरतर्षभ	६	७	,,	लोभः प्रवृत्तिरारम्भः
१३	कुरुनन्दन	३	३	,,	अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च
२१	प्रभो	२	२	श्रीभगवान्	कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतान्
२२	पाण्डव	४	५	अर्जुन	प्रकाशं च प्रवृत्तिं च
कुल	श्रीभगवान्का			अर्जुनके	
१२	१			११	

पञ्चदशोऽध्याय:

१९	भारत	१६	२०	अर्जुन	यो मामेवमसम्मूढः
२०	अनघ	३	३	,,	इति गुह्यतमं शास्त्रम्
२०	भारत	१७	२०	,,	,, ,,
कुल	अर्जुनके				
३	३				

षोडशोऽध्यायः

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
३	भारत	१८	२०	अर्जुन	तेजः क्षमा धृतिः शौचम्
४	पार्थ	२७	३८	,,	दम्भो दर्पोऽभिमानश्च
५	पाण्डव	५	५	,,	दैवी सम्पद् विमोक्षाय
६	पार्थ	२८	३८	,,	द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्
२०	कौन्तेय	२०	२४	,,	आसुरीं योनिमापन्ना:
२२	कौन्तेय	२१	२४	,,	एतैर्विमुक्तः कौन्तेय
कुल	अर्जुनके				
६	६				

सप्तदशोऽध्यायः

१	कृष्ण	९	९	श्रीभगवान्	ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य
३	भारत	१९	२०	अर्जुन	सत्त्वानुरूपा सर्वस्य
१२	भरतश्रेष्ठ	१	१	,,	अभिसन्धाय तु फलम्
२६	पार्थ	२९	३८	,,	सद्भावे साधुभावे च
२८	पार्थ	३०	३८	,,	अश्रद्धया हुतं दत्तम्
कुल	श्रीभगवान्का	अर्जुनके			
५	१	४			

अष्टादशोऽध्यायः

१	महाबाहो	३	३	श्रीभगवान्	सन्न्यासस्य महाबाहो
१	हृषीकेश	२	२	,,	,, ,,
१	केशिनिषूदन	१	१	,,	,, ,,
४	भरतसत्तम	१	१	अर्जुन	निश्चयं शृणु मे तत्र

श्लोक	सम्बोधन	कौनसी बार	कुल	किसके लिये	श्लोकका चरण
४	पुरुषव्याघ्र	१	१	अर्जुन	निश्चयं शृणु मे तत्र
६	पार्थ	३१	३८	,,	एतान्यपि तु कर्माणि
९	अर्जुन	२०	२२	,,	कार्यमित्येव यत्कर्म
१३	महाबाहो	११	११	,,	पञ्चैतानि महाबाहो
२९	धनञ्जय	७	८	,,	बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव
३०	पार्थ	३२	३८	,,	प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च
३१	पार्थ	३३	३८	,,	यया धर्ममधर्मं च
३२	पार्थ	३४	३८	,,	अधर्मं धर्ममिति या
३३	पार्थ	३५	३८	,,	धृत्या यया धारयते
३४	अर्जुन	२१	२२	,,	यया तु धर्मकामार्थान्
३४	पार्थ	३६	३८	,,	,, ,,
३५	पार्थ	३७	३८	,,	यया स्वप्नं भयं शोकम्
३६	भरतर्षभ	७	७	,,	सुखं त्विदानीं त्रिविधम्
४१	परन्तप	९	९	,,	ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्
४८	कौन्तेय	२२	२४	,,	सहजं कर्म कौन्तेय
५०	कौन्तेय	२३	२४	,,	सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म
६०	कौन्तेय	२४	२४	,,	स्वभावजेन कौन्तेय
६१	अर्जुन	२२	२२	,,	ईश्वरः सर्वभूतानाम्
६२	भारत	२०	२०	,,	तमेव शरणं गच्छ
७२	पार्थ	३८	३८	,,	कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ
७२	धनञ्जय	८	८	,,	,, ,,
७३	अच्युत	३	३	श्रीभगवान्	नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा
७६	राजन्	२	३	धृतराष्ट्र	राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य
७७	राजन्	३	३	,,	तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य

कुल	श्रीभगवान्‌के	अर्जुनके	धृतराष्ट्रके
२८	४	२२	२

इस प्रकार अठारहों अध्यायोंमें कुल २४९ सम्बोधन हैं—

श्रीभगवान्‌के	अर्जुनके	सञ्जयका	धृतराष्ट्रके	द्रोणाचार्यके
७६	१६२	१	८	२

श्रीमद्भगवद्गीतामें अपना उद्धार करनेकी ऐसी-ऐसी विलक्षण, सुगम और सरल युक्तियाँ बतायी गयी हैं, जिनको मनुष्यमात्र अपने आचरणोंमें ला सकता है। तात्पर्य यह है कि जो गीताका आदर करता है, ऐसा मनुष्य हिंदू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, पारसी, बौद्ध आदि किसी भी धर्मको माननेवाला क्यों न हो; किसी भी देश, वेश, वर्ण, आश्रम, सम्प्रदाय आदिका क्यों न हो; अपनी रुचिके अनुसार किसी भी शैली, उपाय, सिद्धान्त, साधनको माननेवाला क्यों न हो, वह यदि अपना किसी तरहका आग्रह न रखकर पक्षपात- विषमताको छोड़कर, किसी भी प्राणीको दुःख पहुँचानेवाली चेष्टाका त्याग करके, मनमें किसी भी लौकिक-पारलौकिक उत्पन्न और नष्ट होनेवाली वस्तुकी कामना न रखकर, अपना सम्प्रदाय, अपनी टोली बनानेका उद्देश्य न रखकर, केवल अपने कल्याणका उद्देश्य रखकर गीताके अनुसार चलता है (अकर्तव्यका सर्वथा त्याग करके प्राप्त परिस्थितिके अनुसार अपने कर्तव्यका लोकहितार्थ, निष्कामभावपूर्वक पालन करता है), तो वह भी जीविका-सम्बन्धी और खाना-पीना सोना-जागना आदि शरीर-सम्बन्धी सब काम करते हुए परमात्माकी प्राप्ति कर सकता है, महान् आनन्द महान् सुखको (गीता ६। २२) प्राप्त कर सकता है।

(साधक-संजीवनी नामक पुस्तकसे)

१३. गीताभ्यासकी विधि

क—कण्ठस्थ याद करनेके लिये—

(१) नित्य अठारह, नौ या छः अध्यायोंका नियमसे पाठ करें।

(२) छोटे बच्चे श्लोककी बार-बार आवृत्ति करके रटें।

(३) बड़ी अवस्थावाले व्यक्ति श्लोकोंके पदच्छेद, अर्थ और भावको पहले ध्यानमें लाकर फिर श्लोकोंकी आवृत्ति करें।

(४) पाठ करनेमें श्लोकोंका वाणीद्वारा उच्च स्वरसे स्पष्ट उच्चारण करें।

(५) जितने अध्याय कण्ठस्थ हो जायँ, उनका कण्ठस्थ यानी पुस्तक देखे बिना पाठ करें।

ख—श्लोक-संख्या याद करनेके लिये—

(६) जो अध्याय कण्ठस्थ हो जाय, उसका पुस्तक देखे बिना उलटा पाठ करें अर्थात् बारहवें अध्यायका पाठ करना है तो पहले बीसवाँ श्लोक, फिर उन्नीसवाँ, फिर अठारहवाँ—इस प्रकार पहले श्लोकतक पाठ करें।

(७) जो अध्याय कण्ठस्थ हो, उसका पुस्तक देखे बिना संख्याके सहित केवल प्रतीकमात्रका आनुपूर्वी पाठ करे अर्थात् बारहवें अध्यायका पाठ इस प्रकार करे कि पहला श्लोक—**एवं सततयुक्ताः**, दूसरा—**मय्यावेश्य**, तीसरा—**ये त्वक्षरम्**—इत्यादि।

(८) जो अध्याय कण्ठस्थ हो, उसका पुस्तकपर इस प्रकार पाठ करें—पहला श्लोक यह है, पाँचवाँ यह है, दसवाँ यह है—इस प्रकार पाँच-पाँचके अन्तरसे अध्यायका पूरा पाठ कर

जायँ। उसके बाद पुस्तक देखे बिना कण्ठस्थ क्रमशः पाठ करते हुए पहला श्लोक यह है, दूसरा यह है, तीसरा यह है—इस प्रकार बोलते हुए पाठ करें। इससे पाँच-पाँचके अन्तरसे पाठ किये जानेमें कोई भूल रही होगी तो वह इस बारके आनुपूर्वी पाठ करनेपर पाँचवीं, दसवीं संख्यावाले श्लोकके पाठपर पकड़ी जा सकती है।

(९) सम्पूर्ण गीता याद कर लेनेपर प्रत्येक अध्यायके पहले-पहले श्लोकोंका उच्चारण करते हुए अठारहों अध्यायोंके पहले श्लोकोंका पाठ कर लें; फिर दूसरे श्लोकोंका, फिर तीसरेका—इस प्रकार प्रत्येक बारमें अठारह-अठारह श्लोकोंका पाठ करते हुए सम्पूर्ण गीताका पाठ करें।

(१०) गीताके प्रधान विषयको याद कर लें। उसमें प्रत्येक प्रधान विषयके साथ दो श्लोकोंकी संख्या याद हो जायगी। जैसे बारहवें अध्यायमें 'पहलेसे बारहवेंतक सगुण और निर्गुण उपासकोंकी श्रेष्ठताका निर्णय और भगवत्प्राप्तिके चार साधनोंका विषय' है। इसको याद करनेसे पहले और बारहवें श्लोककी संख्या याद हो जायगी; उसके बाद यह देखे कि निर्णय किस-किसमें है, भगवत्प्राप्तिके उपाय किस-किसमें हैं। इस प्रकार अवान्तर विषयोंके आधारपर बारहों श्लोकोंकी संख्या याद कर लें। यह अर्थ और विषयसहित श्लोक-संख्या याद करनेका अच्छा प्रकार है।

(११) इसी पुस्तकमें पूर्वमें दिये हुए गीताके संक्षिप्त विषयपर उलटा पाठ करें अर्थात् बारहवें अध्यायका पाठ करते समय अन्तिम बीसवें श्लोकका संक्षिप्त विषय देखते हुए कण्ठस्थ बीसवाँ श्लोक उच्चारण करें और श्लोकके अर्थको संक्षिप्त विषयसे

मनसे मिलावें; इस प्रकार पूरे अध्यायका पाठ करें। पूरी गीता याद हो जानेपर यदि पाँच बार भी इस प्रकार संक्षिप्त विषयपर मूल गीताके श्लोक देखे बिना ही '**यत्र योगेश्वरः**' से '**धर्मक्षेत्रे**' तक अर्थका मिलान करते हुए उलटा पाठ कर लें तो इससे सम्पूर्ण गीताके भाव, अर्थ, विषय और श्लोक-संख्याका अच्छा मनन हो सकता है।

(१२) दो या अधिक गीताभ्यासी व्यक्ति मिलकर आपसमें पूछताछ करते हुए संख्या, अर्थ और भावोंका मनन करें।

(१३) आगे दी हुई गीताकी श्लोक-संख्याकी 'तालिका'के आधारपर कण्ठस्थ पाठ करें।

ग—अर्थ और भावोंके मननके लिये—

(१४) पाठ करते समय पहले श्लोकके अर्थका पाठ करके फिर उसी मूल श्लोकका पाठ शब्दार्थपर ध्यान देते हुए करें।

(१५) गीताप्रेससे प्रकाशित 'साधक-संजीवनी'के आधारपर अर्थ और भावोंका मनन करें। यथा—

१. प्रत्येक अध्यायके नामका कारणसहित मनन करें।

२. अध्यायोंके सम्बन्धका मनन करें।

३. प्रत्येक श्लोकसे दूसरे श्लोकके सम्बन्धका मनन करें।

४. श्लोकके अर्थ और भावोंका मनन करें।

(१६) सम्पूर्ण गीताके मुख्य-मुख्य विषयोंका मनन करें। जैसे—निष्काम कर्म, सकाम कर्मके श्लोक कौन-कौन हैं? देवोपासना, भगवदुपासनाका कहाँ-कहाँ वर्णन है? साधनके उपाय कहाँ हैं? सिद्धके लक्षण किन श्लोकोंमें हैं? जीवोंकी गति और गुणोंकी पहचान कहाँ बतलायी गयी है—इत्यादि।

घ—गीताका सर्वतोमुखी मनन करनेके लिये—

(१७) गीतापर पूर्वापरकी संगति बतलाते हुए श्रद्धालु श्रोताओंमें प्रवचन करें।

ङ—गीतामय जीवन बनानेके लिये—

(१८) गीताके सिद्धान्तोंको आचरणमें लाते हुए अठारहवें अध्यायके अड़सठवें-उनहत्तरवें श्लोकोंके अनुसार गीतागायकका अत्यन्त प्रेमी बन जानेका प्रयत्न करें!

भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन साथ-साथ ही रहते थे। साथ-साथ रहनेपर भी जबतक अर्जुनने भगवान्‌की शरण होकर अपने कल्याणकी बात नहीं पूछी, तबतक भगवान्‌ने उपदेश नहीं दिया। मनुष्य शरण कब होता है? जब मनुष्य सच्चे हृदयसे अपना कल्याण चाहता है, पर उसको अपने कल्याणका कोई रास्ता नहीं दीखता और उसका बल, बुद्धि, योग्यता आदि काम नहीं करते, तब वह गुरु, ग्रन्थ अथवा भगवान्‌की शरण होता है। अर्जुनकी भी ऐसी ही दशा थी। उनको क्षात्रधर्मकी दृष्टिसे तो युद्ध करना ठीक मालूम देता है, पर कुलनाशकी दृष्टिसे युद्ध न करना ही ठीक जँचता है। इसलिये युद्ध करना ठीक है अथवा न करना ठीक है—इसका वे निर्णय नहीं कर पाये। अगर भगवान्‌की सम्मतिसे युद्ध किया भी जाय तो हमारी विजय होगी अथवा पराजय होगी—इसका भी उन्हें पता नहीं और युद्धमें कुटुम्बियोंको मारकर वे जीना भी नहीं चाहते (२।६)। ऐसी अवस्थामें अर्जुन भगवान्‌की शरण होते हैं (२।७)।

(गीता-दर्पण नामक पुस्तकसे)

१४. गीताकी श्लोक-संख्या कण्ठस्थ रखनेके लिये तीन तालिकाएँ

तालिका नं-१

अध्याय	श्लोक-संख्या					
	९	१	१४	११	१६	१३
	८	५	३	७	१९	१२
	१७	६	२	१०	४	१५
१२, १५	—	—	—	—	१८	२०
१६	—	—	२३	२२	२१	२४
१४	—	—	—	२६	२५	२७
८, १७	—	—	—	—	—	२८
५	—	—	—	—	—	२९
७	—	—	—	—	—	३०
९, १३	—	—	३१	३३	३२	३४
	३८	३५	३९	३६	४०	३७
४, १०	—	—	—	—	४१	४२
३	—	—	—	—	—	४३
१, ६	—	—	४४	४६	४५	४७
	५१	४८	५४	५२	५०	५३
११	—	—	—	—	४९	५५
	६०	५६	६३	६८	७१	५७
	६७	६२	५८	७०	६६	५९
२	—	६५	६९	६१	६४	७२
१८	७६	७३	७७	७५	७४	७८

सम्पूर्ण गीता कण्ठस्थ हो जानेपर गीताके श्लोक संख्यासहित सदा ठीक याद रहें—इसके लिये उपर्युक्त तालिकापर अभ्यास करना चाहिये। इसमें १ से लेकर ७८ तकके अङ्क दिये गये हैं। बायीं ओर अध्याय हैं। तालिकामें जो-जो अध्याय जहाँ लिखे गये हैं, दायीं ओर वहाँतक उनके श्लोकोंकी संख्या पूरी हो जाती है। श्लोक-संख्याके अङ्कोंको बिना क्रमसे रखा गया है। आप स्वयं प्रश्न करें—गीताके बारहवें अध्यायका ९वाँ श्लोक कौन-सा है? फिर उस श्लोकको स्मरण करें, स्मरण न आये तो पुस्तक देख लें और इस तरह ध्यानमें ले आयें कि वह दूसरे दिन भूलने न पाये। पुनः उसी अध्यायके १, १४, ११, १६, १३, ८, ५, ३ आदि संख्यावाले श्लोकोंको स्मरण करें।

ऊपर तालिकामें दिये हुए क्रमसे २० वीं संख्यातकके श्लोकोंको कण्ठस्थ स्मरण करनेपर गीताका बारहवें अध्यायका पाठ पूरा हो जायगा; क्योंकि इस अध्यायमें २० ही श्लोक हैं। पुनः इसी क्रमसे पंद्रहवें अध्यायके श्लोकोंको २० वीं संख्यातक कण्ठस्थ स्मरण करनेपर १५ वें अध्यायका भी पाठ पूरा हो जायगा; इस अध्यायमें भी २० ही श्लोक हैं। पुनः इसी क्रमसे सोलहवें अध्यायके श्लोकोंको २४ वीं संख्यातक कण्ठस्थ स्मरण कर लेनेपर १६ वें अध्यायका पाठ पूरा हो जायगा; क्योंकि इसमें २४ ही श्लोक हैं। इसी क्रमसे इन्हीं अङ्कोंके श्लोकोंको कण्ठस्थ स्मरण करते हुए २७ वीं संख्यातक पहुँचनेपर चौदहवें अध्यायका, २८ वीं संख्यातक पहुँचनेपर आठवें और सत्रहवें अध्यायोंका, २९ वीं संख्यातक पहुँचनेपर पाँचवें अध्यायका, ३०वीं संख्यातक पहुँचनेपर सातवें अध्यायका, ३४ वीं संख्यातक पहुँचनेपर नवें और तेरहवें तेरहवें अध्यायोंका, ४२वीं

संख्यातक पहुँचनेपर चौथे और दसवें अध्यायोंका, ४३वीं संख्यातक पहुँचनेपर तीसरे अध्यायका, ४७वीं संख्यातक पहुँचनेपर पहले और छठे अध्यायोंका, ५५वीं संख्यातक पहुँचनेपर ग्यारहवें अध्यायका, ७२ वीं संख्यातक पहुँचनेपर दूसरे अध्यायका एवं ७८ वीं संख्यातक पहुँचनेपर अठारहवें अध्यायका पाठ पूरा हो जायगा। कुछ दिनोंतक इस क्रमसे अभ्यास करनेपर सम्पूर्ण गीता श्लोक-संख्यासहित कण्ठस्थ हो सकती है और फिर उसमें भूल होना सम्भव नहीं।

गीतामें जितने भी साधन बताये गये हैं, उन सबमें श्रेष्ठ और सुगम साधन भगवान्‌का आश्रय लेना ही है। जो भगवान्‌का आश्रय लेकर साधन करता है, उसके साधनकी सिद्धि बहुत शीघ्र और सुगमतापूर्वक हो जाती है। इस बातको भगवान्‌ने गीतामें स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि जो मेरे आश्रित होकर सम्पूर्ण कर्मोंको मेरेमें अर्पण करते हैं, उन भक्तोंका मैं मृत्युरूप संसार-समुद्रसे बहुत जल्दी उद्धार करनेवाला बन जाता हूँ (१२। ६—७)। जो मेरा आश्रय लेकर यत्न करते हैं, वे ब्रह्म, अध्यात्म और सम्पूर्ण कर्म तथा अधिभूत, अधिदैव और अधियज्ञ-सहित मेरेको जान जाते हैं अर्थात् मेरे समग्र रूपको जान जाते हैं (७। २९—३०)। अपना आश्रय लेनेवाले भक्तोंको भगवान्‌ने सम्पूर्ण योगियोंमें श्रेष्ठ बताया है (६। ४७)। अतः साधकको चाहिये कि वे जो भी साधन करें, भगवान्‌का आश्रय लेकर ही करें।

(गीता-दर्पण नामक पुस्तकसे)

तालिका नं २

सम्पूर्ण गीता कण्ठस्थ हो जानेपर गीताके श्लोक संख्यासहित सदा ठीक याद रहें—इसके लिये परस्पर एक-दूसरेसे पूछताछ करें कि अमुक अध्यायका अमुक श्लोक कौन-सा है। यदि दूसरे व्यक्तिकी अपेक्षा न करके स्वयं ही अपनेसे पूछते रहें, तब भी श्लोक संख्यासहित ठीक याद रह सकते हैं। उसीके लिये नीचे पूरे सात सौ श्लोकोंकी संख्याकी व्यतिक्रमसे तालिका दी जा रही है। इस तालिकापर अभ्यास करते समय श्लोकोंमें आये हुए सम्बोधनोंपर भी ध्यान देना चाहिये। सर्वप्रथम श्रीभगवान्‌के द्वारा कथित ५७४ श्लोक दिये गये हैं, जिनमें क्रम-संख्या १ से १४६ तक अर्जुनके एक सम्बोधनवाले १४६ श्लोक हैं तथा क्रम-संख्या १४७ से ५७४ तक श्रीभगवान्‌के द्वारा कथित शेष ४२८ श्लोक हैं; फिर क्रम-संख्या ५७५ से ६५८ तक अर्जुनद्वारा कथित ८४ श्लोक दिये गये हैं, जिनमें पहले श्रीभगवान्‌के एक सम्बोधनवाले ५१ श्लोक हैं, बादमें अर्जुनकथित शेष ३३ श्लोक हैं। उसके बाद क्रम-संख्या ६५९ से ६९९ तक सञ्जयद्वारा कथित ४१ श्लोक दिये गये हैं, जिनमें क्रमशः धृतराष्ट्रके सम्बोधनवाले ८ श्लोक, द्रोणाचार्यके सम्बोधनवाले २ श्लोक, बिना सम्बोधनके ३० और अर्जुनके सम्बोधनका १ श्लोक है। फिर धृतराष्ट्रद्वारा कथित १ श्लोक है। अन्तमें एकसे अधिक सम्बोधनवाले श्लोक दिये गये हैं।

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
	पार्थ	
१	१८	७२
२	२	३
३	१७	२८
४	८	२७
५	१८	३४
६	३	१६
७	४	३३
८	९	३२
९	८	१४
१०	१८	३०
११	८	१९
१२	३	२२
१३	८	८
१४	७	१
१५	२	४२
१६	३	२३
१७	९	१३
१८	७	१०
१९	१८	३१
२०	२	३९
२१	१६	६
२२	११	५
२३	४	११
२४	६	४०
२५	१८	३३
२६	२	५५

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
२७	१२	७
२८	१०	२४
२९	१८	३२
३०	२	३२
३१	८	२२
३२	१६	४
३३	१८	६
३४	२	७२
३५	१७	२६
३६	२	२१
३७	१८	३५
	कौन्तेय	
३८	२	१४
३९	१८	६०
४०	६	३५
४१	१६	२२
४२	७	८
४३	८	१६
४४	२	३७
४५	९	३१
४६	१८	५०
४७	१४	४
४८	९	२७
४९	२	६०
५०	१६	२०
५१	९	२३
५२	५	२२

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
५३	१४	७
५४	१३	३१
५५	९	१०
५६	३	३९
५७	१८	४८
५८	३	९
५९	८	६
६०	१३	१
६१	९	७
	अर्जुन	
६२	११	४७
६३	१८	९
६४	२	२
६५	४	९
६६	६	४६
६७	१०	३२
६८	४	५
६९	२	४५
७०	४	३७
७१	६	३२
७२	१०	३९
७३	११	५४
७४	६	१६
७५	१०	४२
७६	९	१९
७७	७	१६
७८	३	७

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
७९	७	२६	१०४	१४	५		**परन्तप**	
८०	१८	६१	१०५	१०	१	१२८	१८	४१
	भारत		१०६	७	५	१२९	१०	४०
८१	२	२८	१०७	५	६	१३०	९	३
८२	१८	६२	१०८	३	४३	१३१	४	२
८३	१५	१९	१०९	२	२६		**कुरुनन्दन**	
८४	१४	१०		**धनञ्जय**		१३२	६	४३
८५	३	२५	११०	१८	२९	१३३	२	४१
८६	७	२७	१११	२	४८	१३४	१४	१३
८७	१४	३	११२	१२	९		अनघ	
८८	१५	२०	११३	७	७	१३५	१४	६
८९	२	१८	११४	९	९	१३६	३	३
९०	१४	९	११५	४	४१		**गुडाकेश**	
९१	४	७	११६	२	४९	१३७	११	७
९२	११	६		**भरतर्षभ**		१३८	१०	२०
९३	१६	३	११७	७	११		**कुरुश्रेष्ठ**	
९४	१३	२	११८	१८	३६	१३९	१०	१९
९५	२	३०	११९	१३	२६		**कुरुप्रवीर**	
९६	४	४२	१२०	८	२३	१४०	११	४८
९७	१३	३३	१२१	१४	१२		**कुरुसत्तम**	
९८	१४	८	१२२	३	४१	१४१	४	३१
९९	१७	३		**पाण्डव**			**देहभृतां वर**	
	महाबाहो		१२३	१६	५	१४२	८	४
१००	१८	१३	१२४	६	२		**पुरुषर्षभ**	
१०१	२	६८	१२५	१४	२२	१४३	२	१५
१०२	५	३	१२६	११	५५		**पुरुषव्याघ्र**	
१०३	३	२८	१२७	४	३५	१४४	१८	४

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
भरतश्रेष्ठ			१६९	२	४४	१९६	३	१७
१४५	१७	१२	१७०	१८	५५	१९७	१८	२५
सव्यसाचिन्			१७१	७	२८	१९८	२	४३
१४६	११	३३	१७२	४	४०	१९९	१३	३२
बिना सम्बोधनके			१७३	१७	२५	२००	४	१६
१४७	१८	५९	१७४	५	२६	२०१	१७	२४
१४८	१४	१८	१७५	१६	१९	२०२	१८	२४
१४९	२	६७	१७६	६	१	२०३	४	३२
१५०	४	३६	१७७	१८	१९	२०४	५	२४
१५१	९	१	१७८	६	४५	२०५	१६	१६
१५२	७	२९	१७९	१४	२७	२०६	६	६
१५३	१३	७	१८०	१२	२०	२०७	१०	३८
१५४	३	४	१८१	१३	२०	२०८	९	२
१५५	१२	१५	१८२	३	३१	२०९	१२	१८
१५६	१०	२७	१८३	८	२५	२१०	१०	२९
१५७	५	१२	१८४	१८	५४	२११	८	२४
१५८	१७	२७	१८५	१५	१०	२१२	१८	१७
१५९	११	३२	१८६	२	६६	२१३	७	१४
१६०	६	३६	१८७	१३	३	२१४	३	५
१६१	८	२०	१८८	१८	२१	२१५	१५	९
१६२	१५	१७	१८९	७	२५	२१६	२	४७
१६३	१६	९	१९०	४	३४	२१७	१३	४
१६४	१५	६	१९१	५	२०	२१८	३	३२
१६५	२	११	१९२	१६	१८	२१९	१८	५३
१६६	१३	३४	१९३	६	४२	२२०	४	३०
१६७	३	१५	१९४	१०	४१	२२१	१७	२२
१६८	८	२६	१९५	१२	१९	२२२	५	२५

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
२२३	१६	२४	२५०	६	३०	२७७	४	३८
२२४	६	३	२५१	१०	२	२७८	१७	१३
२२५	१०	९	२५२	९	२८	२७९	१८	२६
२२६	१५	५	२५३	१२	५	२८०	५	१९
२२७	११	५२	२५४	१०	२३	२८१	१६	११
२२८	२	६२	२५५	१२	१३	२८२	६	४
२२९	१३	३०	२५६	१३	५	२८३	१३	६
२३०	८	२१	२५७	१८	६५	२८४	६	१८
२३१	१८	१६	२५८	१७	२	२८५	९	१७
२३२	७	२४	२५९	२	३३	२८६	३	३८
२३३	४	२९	२६०	५	१७	२८७	१८	४४
२३४	१७	४	२६१	१६	१२	२८८	७	४
२३५	५	१५	२६२	६	३१	२८९	४	२८
२३६	१६	१७	२६३	१०	३३	२९०	२	५०
२३७	६	४४	२६४	९	१२	२९१	१७	२३
२३८	१४	२६	२६५	१८	४९	२९२	५	२१
२३९	१०	३७	२६६	४	१७	२९३	१६	२३
२४०	९	२५	२६७	६	२५	२९४	६	४७
२४१	२	६१	२६८	९	१४	२९५	१८	५७
२४२	१३	१९	२६९	१०	७	२९६	६	१०
२४३	१८	४२	२७०	९	२०	२९७	१०	३६
२४४	४	३९	२७१	१३	२९	२९८	९	१५
२४५	१७	१७	२७२	८	१८	२९९	१०	५
२४६	१५	१३	२७३	१८	४०	३००	१२	६
२४७	२	३६	२७४	७	१२	३०१	१८	६४
२४८	५	२३	२७५	१५	७	३०२	७	३
२४९	१६	१५	२७६	२	५७	३०३	४	२७

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
३०४	१७	१०	३३१	२	५३	३५८	६	२८
३०५	१५	१५	३३२	३	३०	३५९	१०	३५
३०६	१३	२८	३३३	१३	१८	३६०	१२	१७
३०७	१८	४५	३३४	१८	६३	३६१	१३	९
३०८	१७	२१	३३५	४	३	३६२	२	२२
३०९	२	५९	३३६	१७	५	३६३	३	२९
३१०	५	२७	३३७	५	२८	३६४	८	१५
३११	६	९	३३८	१६	७	३६५	१८	७०
३१२	१०	२८	३३९	१८	५२	३६६	७	१५
३१३	९	६	३४०	६	५	३६७	१५	११
३१४	१२	१०	३४१	१०	३१	३६८	२	२०
३१५	१०	३	३४२	९	४	३६९	१८	१४
३१६	१५	१६	३४३	१२	१४	३७०	५	९
३१७	११	४९	३४४	१०	२२	३७१	१६	१३
३१८	२	१२	३४५	१०	४	३७२	१८	५१
३१९	१३	८	३४६	२	३८	३७३	४	१४
३२०	३	११	३४७	१३	२७	३७४	१६	८
३२१	८	१७	३४८	१८	७१	३७५	६	७
३२२	१८	६६	३४९	१८	४७	३७६	२	१३
३२३	७	२३	३५०	७	२२	३७७	१५	८
३२४	४	१५	३५१	४	६	३७८	१३	१७
३२५	१६	२	३५२	१५	४	३७९	३	१०
३२६	६	२९	३५३	२	४६	३८०	१८	२०
३२७	१०	१०	३५४	८	९	३८१	७	९
३२८	१४	२४	३५५	१८	११	३८२	४	२६
३२९	९	२१	३५६	४	१८	३८३	२	६३
३३०	१२	२	३५७	१६	२१	३८४	१८	३७

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
३८५	४	२०	४१२	१८	६९	४३९	२	१९
३८६	५	१४	४१३	७	६	४४०	३	२०
३८७	१६	१	४१४	४	२५	४४१	४	८
३८८	१८	२३	४१५	१७	१६	४४२	१७	९
३८९	१६	१०	४१६	५	८	४४३	१८	३८
३९०	१७	१४	४१७	९	५	४४४	९	२२
३९१	१३	२५	४१८	६	८	४४५	६	११
३९२	३	२७	४१९	१०	२६	४४६	१०	३०
३९३	१८	२७	४२०	२	६४	४४७	९	३४
३९४	२	६५	४२१	२	१७	४४८	१४	११
३९५	७	१८	४२२	१३	१६	४४९	६	१९
३९६	४	१३	४२३	३	३३	४५०	१०	२५
३९७	१७	२०	४२४	८	७	४५१	२	३१
३९८	५	१०	४२५	१८	३९	४५२	१३	११
३९९	१८	१८	४२६	४	१०	४५३	३	३४
४००	१६	१४	४२७	१७	१९	४५४	८	१३
४०१	६	२७	४२८	२	५१	४५५	१८	४३
४०२	१०	६	४२९	३	१२	४५६	७	२१
४०३	१४	१७	४३०	५	१६	४५७	४	२४
४०४	९	८	४३१	६	२६	४५८	१७	६
४०५	१२	४	४३२	१०	३४	४५९	१५	१२
४०६	१५	३	४३३	९	६	४६०	२	३५
४०७	११	३४	४३४	१४	२५	४६१	१३	२१
४०८	२	१६	४३५	१२	१६	४६२	३	१४
४०९	१३	१०	४३६	१३	२४	४६३	१८	५८
४१०	३	८	४३७	१८	६८	४६४	५	५
४११	८	२८	४३८	७	१९	४६५	६	४१

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
४६६	१३	२३	४९३	१२	३	५२०	९	३३
४६७	२	५२	४९४	६	१२	५२१	१२	८
४६८	३	२१	४९५	१४	१	५२२	१०	२१
४६९	८	५	४९६	२	२९	५२३	९	२९
४७०	१८	१५	४९७	१३	१३	५२४	१२	११
४७१	१५	२	४९८	३	३५	५२५	९	२६
४७२	२	२४	४९९	१८	५६	५२६	२	६९
४७३	१७	७	५००	४	२१	५२७	१३	२२
४७४	५	२९	५०१	१७	८	५२८	३	३७
४७५	६	२०	५०२	१५	१	५२९	१५	१४
४७६	१०	११	५०३	२	२५	५३०	१८	७
४७७	१८	२२	५०४	३	१९	५३१	४	१२
४७८	१२	१२	५०५	१८	१०	५३२	१७	१८
४७९	६	२४	५०६	७	२०	५३३	५	७
४८०	१४	२	५०७	५	११	५३४	६	२१
४८१	२	५८	५०८	६	२३	५३५	३	२४
४८२	३	१३	५०९	१४	१४	५३६	१८	१२
४८३	८	३	५१०	९	३०	५३७	१४	१६
४८४	१८	८	५११	१७	१५	५३८	९	२४
४८५	७	१३	५१२	२	५६	५३९	५	२
४८६	४	१	५१३	१३	१५	५४०	१०	८
४८७	२	२७	५१४	३	६	५४१	२	७१
४८८	३	२६	५१५	८	१२	५४२	१३	१२
४८९	१८	२	५१६	१८	२८	५४३	३	४०
४९०	४	१९	५१७	५	४	५४४	८	११
४९१	१७	११	५१८	६	१३	५४५	११	८
४९२	५	१८	५१९	१४	१५	५४६	२	४०

क्रम संख्या	अध्याय	श्लोक
५४७	१८	३
५४८	७	२
५४९	४	२२
५५०	६	१७
५५१	१४	२०
५५२	९	१८
५५३	१४	२३
५५४	९	११
५५५	६	१४
५५६	१३	१४
५५७	२	३४
५५८	३	१८
५५९	८	१०
५६०	१८	५
५६१	७	१७
५६२	४	२३
५६३	६	२२
५६४	१४	१९
५६५	१८	६७
५६६	५	१३
४६७	२	२३
५६८	१८	४६
५६९	६	१५
५७०	७	३०
५७१	३	४२
५७२	२	७०
५७३	११	५३

क्रम संख्या	अध्याय	श्लोक
५७४	१५	१८
	कृष्ण	
५७५	१	३२
५७६	६	३९
५७७	१७	१
५७८	११	४१
५७९	५	१
५८०	६	३४
५८१	१	४१
५८२	६	३७
५८३	१	२८
	जनार्दन	
५८४	३	१
५८५	१	४४
५८६	११	५१
५८७	१	३९
५८८	१०	१८
५८९	१	३६
	मधुसूदन	
५९०	८	२
५९१	१	३५
५९२	६	३३
५९३	२	४
	केशव	
५९४	१०	१४
५९५	२	५४
५९६	१	३१

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
	जगन्निवास	
५९७	११	४५
५९८	११	३७
५९९	११	२५
	पुरुषोत्तम	
६००	११	३
६०१	८	१
६०२	१०	१५
	महाबाहो	
६०३	१८	१
६०४	११	२३
६०५	६	३८
	अच्युत	
६०६	१८	७३
६०७	११	४२
	देव	
६०८	११	४४
६०९	११	१५
	प्रभो	
६१०	१४	२१
६११	११	४
	विष्णो	
६१२	११	२४
६१३	११	३०
	भगवन्	
६१४	१०	१७

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
	महात्मन्	
६१५	११	२०
	वार्ष्णेय	
६१६	३	३६
	हृषीकेश	
६१७	११	३६
	अनन्तवीर्य	
६१८	११	४०
	अनन्तरूप	
६१९	११	३८
	अप्रतिमप्रभाव	
६२०	११	४३
	कमलपत्राक्ष	
६२१	११	२
	देववर	
६२२	११	३१
	माधव	
६२३	१	३७
	विश्वमूर्ते	
६२४	११	४६
	विश्वरूप	
६२५	११	१६
	बिना सम्बोधनके	
६२६	१	२२
६२७	११	३९
६२८	१	४६
६२९	११	१

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
६३०	१	३४
६३१	११	२९
६३२	१	४३
६३३	११	१७
६३४	१	३३
६३५	११	२८
६३६	१२	१
६३७	१	४५
६३८	११	१८
६३९	२	५
६४०	१	२३
६४१	११	२६
६४२	४	४
६४३	१०	१६
६४४	२	६
६४५	१	४०
६४६	२	७
६४७	११	१९
६४८	१	३०
६४९	१०	१२
६५०	२	८
६५१	११	२१
६५२	१	३८
६५३	१०	१३
६५४	१	२९
६५५	११	२२
६५६	३	२

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
६५७	११	२७
६५८	१	४२
	राजन्	
६५९	१८	७७
६६०	११	९
६६१	१८	७६
	भारत	
६६२	१	२४
६६३	२	१०
	पृथिवीपते	
६६४	१	१८
	महीपते	
६६५	१	२१
	परन्तप	
६६६	२	९
	द्विजोत्तम	
६६७	१	७
	आचार्य	
६६८	१	३
	बिना सम्बोधनके	
६६९	२	१
६७०	१	४७
६७१	११	५०
६७२	१	२७
६७३	१	१२
६७४	१	२
६७५	११	१०

क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक	क्रम-संख्या	अध्याय	श्लोक
६७६	१	२६	६८५	१	६	६९४	११	३५
६७७	१८	७५	६८६	१	१०	६९५	१	५
६७८	१	१९	६८७	१	८	६९६	१८	७४
६७९	१	११	६८८	१	१६	६९७	१	९
६८०	११	१२	६८९	११	१४	६९८	१८	७८
६८१	१	१७	६९०	१	१३		**पार्थ**	
६८२	१	१५	६९१	१	४	६९९	१	२५
६८३	११	१३	६९२	११	११		**सञ्जय**	
६८४	१	१४	६९३	१	२०	७००	१	१

एक श्लोकमें एकसे अधिक जो सम्बोधन हैं, उनको ऊपरकी तालिकामें नहीं दिखलाया गया है; अतः उनको यहाँ लिखा जाता है—

श्रीभगवान्‌के

अच्युत	जगत्पते	भूतभावन	वार्ष्णेय
१—२१	१०—१५	१०—१५	१—४१
अनन्त	देवदेव	भूतेश	विश्वेश्वर
११—३७	१०—१५	१०—१५	११—१६
अरिसूदन	देवेश	महात्मन्	सखे
२—४	११—२५	११—३७	११—४१
केशव	११—३७	यादव	सर्व
३—१	११—४५	११—४१	११—४०
केशिनिषूदन	परमेश्वर	योगिन्	सहस्रबाहो
१८—१	११—३	१०—१७	११—४६
गोविन्द	भगवन्	योगेश्वर	हृषीकेश
१—३२	१०-१४	११—४	१८—१

अर्जुनके

अनघ

१५—२०

अर्जुन

८—१६

८—२७

१८—३४

तात

६—४०

धनञ्जय

१८—७२

परन्तप

२-३

४-५

४—३३

७—२७

११—५४

भरतर्षभ

७—१६

भरतसत्तम

१८—४

भारत

२—१४

महाबाहो

६—३५

श्रीमद्भगवद्गीताका उपदेश महान् अलौकिक है। इसपर कई टीकाएँ हो गयीं और कई टीकाएँ होती चली जा रही है, फिर भी सन्त-महात्माओं, विद्वानोंके मनमें गीताके नये-नये भाव प्रकट होते रहते हैं। इस गम्भीर ग्रन्थपर कितना ही विचार किया जाय, तो भी इसका कोई पार नहीं पा सकता। इसमें जैसे-जैसे गहरे उतरते जाते हैं, वैसे-ही-वैसे इसमेंसे गहरी बातें मिलती चली जाती हैं। जब एक अच्छे विद्वान् पुरुषके भावोंका भी जल्दी अन्त नहीं आता, फिर जिनका नाम, रूप आदि यावन्मात्र अनन्त है, ऐसे भगवान्‌के द्वारा कहे हुए वचनोंमें भरे हुए भावोंका अन्त आ ही कैसे सकता है?

(साधक-संजीवनी नामक पुस्तकसे)

तालिका नं ३

इस तालिकामें दिये हुए क्रम (ऊपरसे नीचे)के अनुसार गीताके श्लोकोंका स्मरण करें; जैसे पहले १८। १, फिर १७। १, फिर १८। २ आदि। ऐसा करनेसे गीताके सम्पूर्ण सात सौ श्लोकोंका स्मरण किया जा सकता है।

१८।१	१५।४	१२।४	१३।७	१०।६	३।१
१७।१	१६।५	१३।५	१४।८	११।७	४।२
१८।२	१७।६	१४।६	१५।९	१२।८	५।३
१६।१	१८।७	१५।७	१६।१०	१३।९ १००	६।४
१७।२	११।१	१६।८	१७।११	१४।१०	७।५
१८।३	१२।२	१७।९	१८।१२	१५।११	८।६
१५।१	१३।३	१८।१०	६।१	१६।१२	९।७
१६।२	१४।४	८।१	७।२	१७।१३	१०।८
१७।३	१५।५	९।२	८।३	१८।१४	११।९
१८।४	१६।६	१०।३	९।४	४।१	१२।१०
१४।१	१७।७	११।४	१०।५	५।२	१३।११
१५।२	१८।८	१२।५	११।६	६।३	१४।१२
१६।३	१०।१	१३।६	१२।७	७।४	१५।१३
१७।४	११।२	१४।७	१३।८	८।५	१६।१४
१८।५	१२।३	१५।८	१४।९	९।६	१७।१५
१३।१	१३।४	१६।९	१५।१०	१०।७	१८।१६
१४।२	१४।५	१७।१०	१६।११	११।८	२।१
१५।३	१५।६	१८।११	१७।१२	१२।९	३।२
१६।४	१६।७	७।१	१८।१३	१३।१०	४।३
१७।५	१७।८	८।२	५।१	१४।११	५।४
१८।६	१८।९	९।३	६।२	१५।१२	६।५
१२।१	९।१	१०।४	७।३	१६।१३	७।६
१३।२	१०।२	११।५	८।४	१७।१४	८।७
१४।३	११।३	१२।६	९।५	१८।१५	९।८

१०।९	४।५	१६।१८	९।२३	१।७	१६।२३
११।१०	५।६	१७।१९	१०।२४	२।८	१७।२४
१२।११	६।७	१८।२०	११।२५	३।९	१८।२५
१३।१२	७।८	१।४	१२।२६	४।१०	१।९
१४।१३	९।१०	२।५	१३।२७	५।११	२।१०
१५।१४	१०।११	३।६	१४।२८	६।१२	३।११
१६।१५	११।१२	४।७	१५।२९	७।१३	४।१२
१७।१६	१२।१३	५।८	१६।३०	८।१४	५।१३
१८।१७	१३।१४	६।९	१७।३१	९।१५	६।१४ १००
१।१	१४।१५	७।१०	१८।३२	१०।१६	७।१५
२।२	१५।१६	८।११	१।६	११।१७	८।१६
३।३	१६।१७	९।१२	२।७	१२।१८	९।१७
४।४	१७।१८	१०।१३	३।८	१३।१९	१०।१८
५।५	१८।१९	११।१४	४।९	१४।२०	११।१९
६।६	१।३	१२।१५	५।१०	१६।२२	१२।२०
७।७	२।४	१३।१६	६।११	१७।२३	१३।२१
८।८	३।५	१४।१७	७।१२	१८।२४	१४।२२
९।९	४।६	१५।१८	८।१३	१।८	१६।२४
१०।१०	५।७	१६।१९	९।१४	२।९	१७।२५
११।११	६।८	१७।२०	१०।१५	३।१०	१८।२६
१२।१२	७।९	१८।२१	११।१६	४।११	१।१०
१३।१३	८।१०	१।५	१२।१७	५।१२	२।११
१४।१४	९।११	२।६	१३।१८	६।१३	३।१२
१५।१५	१०।१२	३।७	१४।१९	७।१४	४।१३
१६।१६	११।१३	४।८	१५।२०	८।१५	५।१४
१७।१७	१२।१४ १००	५।९	१६।२१	९।१६	६।१५
१८।१८	१३।१५	६।१०	१७।२२	१०।१७	७।१६
१।२	१४।१६	७।११	१७।२२	११।१८	८।१७
२।३	१५।१७	८।१२	१८।२३	१२।१९	९।१८
३।४				१३।२०	१०।१९
				१४।२१	

११।२०	११।२२	१३।२६	२।१८	६।२४	१०।३०
१३।२२	१३।२४	१४।२७	३।१९	७।२५	११।३१
१४।२३	१४।२५	१८।३१	४।२०	८।२६	१३।३३
१७।२६	१७।२८	१।१५	५।२१	९।२७	१८।३८
१८।२७	१८।२९	२।१६	६।२२	१०।२८	१।२२
१।११	१।१३	३।१७	७।२३	११।२९	२।२३
२।१२	२।१४	४।१८	८।२४	१३।३१	३।२४
३।१३	३।१५	५।१९	९।२५	१८।३६	४।२५
४।१४	४।१६	६।२०	१०।२६	१।२०	५।२६
५।१५	५।१७	७।२१	११।२७	२।२१	६।२७
६।१६	६।१८	८।२२	१३।२९	३।२२	७।२८
७।१७	७।१९	९।२३	१८।३४	४।२३	९।३०
८।१८	८।२०	१०।२४	१।१८	५।२४	१०।३१
९।१९	९।२१	११।२५	२।१९	६।२५	११।३२
१०।२०	१०।२२	१३।२७	३।२०	७।२६	१३।३४
११।२१	११।२३	१८।३२	४।२१	८।२७	१८।३९
१३।२३	१३।२५	१।१६	५।२२	९।२८	१।२३
१४।२४	१४।२६	२।१७	६।२३	१०।२९	२।२४
१७।२७	१८।३०	४०० ३।१८	७।२४	११।३०	३।२५
१८।२८	१।१४	४।१९	८।२५	१३।३२	४।२६
१।१२	२।१५	५।२०	९।२६	१८।३७	५।२७
२।१३	३।१६	६।२१	१०।२७	१।२१	६।२८
३।१४	४।१७	७।२२	११।२८	२।२२	७।२९
४।१५	५।१८	८।२३	१३।३०	३।२३	९।३१
५।१६	६।१९	९।२४	१८।३५	४।२४	१०।३२
६।१७	७।२०	१०।२५	१।१९	५।२५	११।३३
७।१८	८।२१	११।२६	२।२०	६।२६	१८।४०
८।१९	९।२२	१३।२८	३।२१	७।२७	१।२४
९।२०	१०।२३	१८।३३	४।२२	८।२८	४०० २।२५
१०।२१	११।२४	१।१७	५।२३	९।२९	३।२६

४।२७	४।३०	२।३२	१।३५	३।४१	१।४५
५।२८	६।३२	३।३३	२।३६	४।४२	२।४६
६।२९	१०।३६	४।३४	३।३७	६।४४	११।५५
७।३०	११।३७	६।३६	४।३८	११।४९	१८।६२
९।३२	१८।४४	१०।४०	६।४०	१८।५६	१।४६
१०।३३	१।२८	११।४१	११।४५	१।४०	२।४७
११।३४	२।२९	१८।४८	१८।५२	२।४१	१८।६३
१८।४१	३।३०	१।३२	१।३६ ६००	३।४२	१।४७
१।२५	४।३१	२।३३	२।३७	६।४५	२।४८
२।२६	६।३३	३।३४	३।३८	११।५०	१८।६४
३।२७	१०।३७	४।३५	४।३९	१८।५७	२।४९
४।२८	११।३८	६।३७	६।४१	१।४१	१८।६५
५।२९	१८।४५	१०।४१	११।४६	२।४२	२।५०
६।३०	१।२९	११।४२	१८।५३	३।४३	१८।६६
९।३३	२।३०	१८।४९	१।३७	६।४६	२।५१
१०।३४	३।३१	१।३३	२।३८	११।५१	१८।६७
११।३५	४।३२	२।३४	३।३९	१८।५८	२।५२
१८।४२	६।३४	३।३५	४।४०	१।४२	१८।६८
१।२६	१०।३८	४।३६	६।४२	२।४३	२।५३
२।२७	११।३९	६।३८	११।४७	६।४७	१८।६९
३।२८	१८।४६	१०।४२	१८।५४	११।५२	२।५४
४।२९	१।३०	११।४३	१।३८	१८।५९	१८।७०
६।३१	२।३१	१८।५०	२।३९	१।४३	२।५५
९।३४	३।३२	१।३४	३।४०	२।४४	१८।७१
१०।३५	४।३३	२।३५	४।४१	११।५३	२।५६
११।३६	६।३५	३।३६	६।४३	१८।६०	१८।७२
१८।४३	१०।३९	४।३७	११।४८	१।४४	२।५७
१।२७	११।४०	६।३९	१८।५५	२।४५	१८।७३
२।२८	१८।४७	११।४४	१।३९	११।५४	२।५८
३।२९	१।३१	१८।५१	२।४०	१८।६१	१८।७४

२।५९	१८।७६	२।६२	२।६४	२।६७	२।७०
१८।७५	२।६१	१८।७८	२।६५	२।६८	२।७१
२।६०	१८।७७	२।६३	२।६६	२।६९	२।७२ ७००

गीता किसी वादको लेकर नहीं चली है, अर्थात् द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत, विशुद्धाद्वैत, अचिन्त्यभेदाभेद आदि किसी भी वादको, किसी एक सम्प्रदायके किसी एक सिद्धान्तको लेकर नहीं चली है। गीताका मुख्य लक्ष्य यह है कि मनुष्य किसी भी वाद, मत, सिद्धान्तको माननेवाला क्यों न हो, उसका प्रत्येक परिस्थितिमें कल्याण हो जाय, वह किसी भी परिस्थितिमें परमात्मप्राप्तिसे वञ्चित न रहे; क्योंकि जीवमात्रका मनुष्ययोनिमें जन्म केवल अपने कल्याणके लिये ही हुआ है। संसारमें ऐसी कोई भी परिस्थिति नहीं है, जिसमें मनुष्यका कल्याण न हो सकता हो। कारण कि परमात्मतत्त्व प्रत्येक परिस्थितिमें समानरूपसे विद्यमान है। अतः साधकके सामने और कोई भी और कैसी भी परिस्थिति आये, उसका केवल सदुपयोग करना है। सदुपयोग करनेका अर्थ है—दुःखदायी परिस्थिति आनेपर सुखकी इच्छाका त्याग करना; और सुखदायी परिस्थिति आनेपर सुखभोगका तथा 'वह बनी रहे' ऐसी इच्छाका त्याग करना और उसको दूसरोंकी सेवामें लगाना। इस प्रकार सदुपयोग करनेसे मनुष्य दुःखदायी और सुखदायी—दोनों परिस्थितयोंसे ऊँचा उठ जाता है अर्थात् उसका कल्याण हो जाता है।

(साधक-संजीवनी नामक पुस्तकसे)

१५. गीताके मननके लिये कतिपय प्रश्न

गीताभ्यास करनेवाले विद्यार्थीको गीता-सम्बन्धी निम्नलिखित प्रश्नोंपर मनन-विचार करना चाहिये (इनके उत्तर इसी पुस्तकके अन्तमें दिये हैं)—

१ गीतामें कुल कितने अध्याय हैं और उनके नाम क्या हैं?

२ गीताके प्रत्येक अध्यायमें कितने श्लोक हैं?

३ गीतामें कुल कितने श्लोक हैं?

४ गीतामें समान चरण कितनी बार, कहाँ-कहाँ और क्यों आये हैं?

५ गीतामें भगवान् और अर्जुनके सम्बोधन कितनी बार और कहाँ-कहाँ आये हैं?

६ गीतामें कितने उवाच हैं तथा किस-किस स्थलपर हैं?

७ गीताके अध्यायोंका (पिछले अध्यायसे) क्या सम्बन्ध है?

८ गीताके किस अध्यायको 'गुह्यतम शास्त्र' कहा गया है?

९ गीताके किस श्लोकमें भगवान्‌के सबसे अधिक सम्बोधन आये हैं?

१० गीतामें भगवान्‌का सर्वगुह्यतम उपदेश किस श्लोकमें आया है?

११ गीताका उपदेश कहाँसे कहाँतक आया है?

१२ गीतामें श्रीकृष्णार्जुनसंवाद कहाँसे कहाँतक आया है?

१३ गीतामें अर्जुन, दुर्योधन और ब्रह्माजीकी आज्ञाएँ किन श्लोकोंमें आयी हैं?

१४ गीतामें सबसे अधिक निवृत्तिपरक श्लोक कौन-सा है?

१५ गीतामें भगवान्‌ने किन श्लोकोंमें अपनेको सबके हृदयमें निवास करनेवाला बताया है?

१६ गीतामें सम्पूर्ण कर्मोंके होनेमें पाँच हेतु किस श्लोकमें बताये गये हैं?
१७ गीतामें तैंतीस कोटि (प्रकार) के देवताओंका उल्लेख किस श्लोकमें हुआ है?
१८ गीतामें जीवकी गतियोंका वर्णन कहाँ-कहाँ आया है?
१९ गीतामें सात्त्विक, राजस और तामस गुणोंका वर्णन कहाँ-कहाँ आया है?
२० गीतामें दैवी और आसुरी सम्पदाका वर्णन कहाँ आया है?
२१ गीतामें सृष्टिचक्रकी परम्पराका वर्णन किन श्लोकोंमें हुआ है?
२२ गीतामें यज्ञोंका वर्णन किन-किन श्लोकोंमें हुआ है?
२३ गीतामें भगवान्‌के जन्म और कर्मोंकी दिव्यताका वर्णन किन-किन श्लोकोंमें हुआ है?
२४ गीतामें निर्गुण-निराकार और सगुण-साकारके ध्यानका वर्णन किन श्लोकोंमें हुआ है?
२५ गीतामें भगवान्‌की सुलभताका तथा भगवान्‌में लगनेवालोंकी दुर्लभताका वर्णन कहाँ हुआ है?
२६ गीतामें योगभ्रष्टकी गतिका वर्णन कहाँ हुआ है?
२७ गीतामें भगवान्‌की विभूतियोंका वर्णन कहाँ-कहाँ हुआ है?
२८ गीतामें महासर्ग और महाप्रलयका वर्णन कहाँ आया है?
२९ गीतामें कर्तृत्व-भोक्तृत्वका निषेध किन-किन श्लोकोंमें किया गया है?
३० गीतामें प्रकृति, गुण, इन्द्रियाँ और स्वभावको किन-किन श्लोकोंमें कर्ता बताया गया है।
३१ गीतामें संसारवृक्षका वर्णन कहाँ आया है?
३२ गीतामें शरणागतिका वर्णन कहाँ-कहाँ आया है?

३३ गीतामें भगवान्ने कामको मारनेकी आज्ञा कहाँ दी है?
३४ गीतामें कितने चक्षुओंका वर्णन हुआ है और कहाँ हुआ है?
३५ गीतामें भगवान् और भगवत्प्राप्त महापुरुषकी सधर्मताका वर्णन कहाँ-कहाँ हुआ है?
३६ भगवान्के विराट्रूपमें देवरूप, उग्ररूप और अत्युग्ररूपका वर्णन किन श्लोकोंमें आया है?
३७ गीतामें कर्मयोगके साधनोंका वर्णन कहाँ आया है?
३८ गीतामें ज्ञानके साधनोंका वर्णन कहाँ आया है?
३९ गीतामें भक्तिके साधनोंका वर्णन कहाँ आया है?
४० गीतामें सिद्ध कर्मयोगी (स्थितप्रज्ञ)के लक्षणोंका वर्णन कहाँ आया है?
४१ गीतामें सिद्ध ज्ञानयोगी (गुणातीत) के लक्षणोंका वर्णन कहाँ आया है?
४२ गीतामें सिद्ध भक्तियोगीके लक्षणोंका वर्णन कहाँ आया है?
४३ गीतामें केवल कर्मयोगसे स्वतन्त्रतापूर्वक परमात्मतत्त्वकी प्राप्तिकी बात कहाँ आयी है?
४४ गीतामें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोगसे निर्वाण-पदकी प्राप्तिकी बात किन श्लोकोंमें आयी है?
४५ गीतामें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोगमें सम्पूर्ण पापोंके नाशकी बात किन श्लोकोंमें आयी है?
४६ गीतामें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोगसे शान्ति प्राप्त होनेकी बात किन श्लोकोंमें आयी है?
४७ गीतामें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोगमें अहंता-ममताके त्यागकी बात किन श्लोकोंमें आयी है?

४८ गीतामें कर्मयोगीके लिये 'संन्यासी' शब्द कहाँ आया है?
४९ गीतामें जीवात्माके लिये 'जगत्' शब्द कहाँ आया है?
५० गीतामें जीवात्माके लिये 'ईश्वर' शब्द कहाँ आया है?
५१ गीतामें शरीरके लिये 'आत्मा' शब्द कहाँ आया है?
५२ गीतामें सगुण-साकार भगवान्‌के लिये 'ब्रह्म' शब्द कहाँ आया है?
५३ गीतामें ब्रह्मज्ञानीके लिये 'ब्राह्मण' शब्द कहाँ आया है?
५४ गीतामें 'धृतराष्ट्र उवाच' और 'संजय उवाच' किसके वचन हैं?
५५ गीतामें कर्मयोगको ज्ञानयोगसे भी श्रेष्ठ कहाँ कहा है?
५६ गीतामें भक्तियोगीको सम्पूर्ण योगियोंसे श्रेष्ठ कहाँ कहा है?
५७ गीतामें मूर्तिपूजाकी बात कहाँ आयी है?
५८ गीतामें भगवन्नामकी बात कहाँ आयी है?
५९ गीतामें भक्तिको ज्ञानका साधन कहाँ बताया है?
६० गीतामें भक्तिको ज्ञानका फल कहाँ बताया है?
६१ गीतामें स्वाध्यायकी बात किन श्लोकोंमें आयी है?
६२ गीतामें ब्रह्मचर्यकी बात किन श्लोकोंमें आयी है?
६३ गीतामें अहिंसाकी बात किन श्लोकोंमें आयी है?
६४ गीतामें 'योग' शब्द कितने अर्थोंमें आया है?
६५ गीताके किस श्लोकमें 'अहम्' शब्द सबसे अधिक आया है?



ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

अथ ध्यानम्

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ करन्यासः

ॐ अस्य श्रीमद्भगवद्गीतामालामन्त्रस्य भगवान्वेदव्यास ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीकृष्णः परमात्मा देवता। अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे इति बीजम्॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज इति शक्तिः। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच इति कीलकम्॥ नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत इति तर्जनीभ्यां नमः॥ अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च इति मध्यमाभ्यां नमः॥ नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातन इत्यनामिकाभ्यां नमः॥ पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रश इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ इति करन्यासः॥

अथ हृदयादिन्यासः

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक इति हृदयाय नमः॥ न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत इति शिरसे स्वाहा॥ अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च इति शिखायै वषट्॥ नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातन इति कवचाय हुम्॥ पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रश इति नेत्रत्रयाय वौषट्॥ नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च इति अस्त्राय फट्॥ श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः॥

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं
व्यासेन ग्रथितां पुराणमुनिना मध्येमहाभारतम्।
अद्वैतामृतवर्षिणीं भगवतीमष्टादशाध्यायिनी-
मम्ब त्वामनुसन्दधामि भगवद्गीते भवद्वेषिणीम्॥ १॥

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे
फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारततैलपूर्णः
प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः॥ २॥

प्रपन्नपारिजाताय तोत्त्रवेत्रैकपाणये।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृतदुहे नमः॥ ३॥
वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥ ४॥
भीष्मद्रोणतटा जयद्रथजला गान्धारनीलोत्पला
शल्यग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला।
अश्वत्थामविकर्णघोरमकरा दुर्योधनावर्तिनी
सोत्तीर्णा खलु पाण्डवै रणनदी कैवर्तकः केशवः॥ ५॥
पाराशर्यवचःसरोजममलं गीतार्थगन्धोत्कटं
नानाख्यानककेसरं हरिकथासम्बोधनाबोधितम्।
लोके सज्जनषट्पदैरहरहः पेपीयमानं मुदा
भूयाद्भारतपङ्कजं कलिमलप्रध्वंसि नः श्रेयसे॥ ६॥
मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥ ७॥

अथ गीतामाहात्म्यम्

गीताशास्त्रमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतः पुमान्।
विष्णोः पदमवाप्नोति भयशोकादिवर्जितः॥ १॥
गीताध्ययनशीलस्य प्राणायामपरस्य च।
नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च॥ २॥
मलनिर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने।
सकृद्गीताम्भसि स्नानं संसारमलनाशनम्॥ ३॥
गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता॥ ४॥
भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वक्त्राद्विनिःसृतम्।
गीतागङ्गोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥ ५॥
सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥ ६॥
एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवो देवकीपुत्र एव।
एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा॥ ७॥

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

अथ प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय। १

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्। २
पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता। ३
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः। ४
धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः। ५
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः। ६
अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम। नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते। ७
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः। अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च। ८
अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः। ९
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्। पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्। १०
अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः। भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि। ११
तस्य सञ्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः। सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्। १२
ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः। सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्। १३
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ। माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः। १४
पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः। पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः। १५
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः। नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ। १६
काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः। धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः। १७
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते। सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक्। १८
स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्। नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्। १९
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः। प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः। २०
हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।

अर्जुन उवाच

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत। २१
यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्। कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे। २२
योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः। धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः। २३

सञ्जय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत। सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्। २४
भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्। उवाच पार्थ पश्यैतान् समवेतान्कुरूनिति। २५
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितृनथ पितामहान्। आचार्यान्मातुलान्भ्रातृन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा। २६
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि। तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्। २७
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम्। २८
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते। २९
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते। न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः। ३०
निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव। न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे। ३१
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च। किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा। ३२
येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च। त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च। ३३
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः। मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा। ३४
एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन। अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते। ३५
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन। पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः। ३६
तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्। स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव। ३७
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः। कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्। ३८
कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्। कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन। ३९
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः। धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत। ४०
अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः। स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः। ४१
सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च। पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः। ४२
दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः। उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः। ४३
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम। ४४
अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्। यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः। ४५
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः। धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत्। ४६

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः सङ्ख्ये रथोपस्थ उपाविशत्। विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः। ४७

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः ।। १ ।।

अथ द्वितीयोऽध्यायः

सञ्जय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्। विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः। १

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्। अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन। २
क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते। क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप। ३

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये द्रोणं च मधुसूदन। इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन। ४

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान्। ५
न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः। ६
कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्। ७
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद् यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्। ८

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परन्तप। न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह। ९
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत। सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः। १०

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे। गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः। ११
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः। न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्। १२
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति। १३
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः। आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत। १४
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ। समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते। १५
नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः। १६
अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्। विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति। १७
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः। अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत। १८
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्। उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते। १९

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे। २०
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्। कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्। २१
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही। २२
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः। २३
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च। नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः। २४
अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते। तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि। २५
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम्। तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि। २६
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि। २७
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत। अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना। २८
आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्। २९
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत। तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि। ३०
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि। धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते। ३१
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्। सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्। ३२
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि। ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि। ३३
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्। सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। ३४
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः। येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्। ३५
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः। निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्। ३६
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः। ३७
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ। ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि। ३८
एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु। बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि। ३९
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्। ४०
व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन। बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्। ४१
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः। वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः। ४२
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्। क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति। ४३
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्। व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते। ४४
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्। ४५
यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके। तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः। ४६
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि। ४७

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय । सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते । ४८
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय । बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः । ४९
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते । तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् । ५०
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः । जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् । ५१
यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति । तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च । ५२
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला । समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि । ५३

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव । स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् । ५४

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते । ५५
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते । ५६
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् । नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता । ५७
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता । ५८
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः । रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते । ५९
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः । इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः । ६०
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः । वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता । ६१
ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते । सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते । ६२
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति । ६३
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् । आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति । ६४
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते । प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते । ६५
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना । न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् । ६६
इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते । तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि । ६७
तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता । ६८
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी । यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः । ६९

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी । ७०

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः । निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति । ७१
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति । ७२

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे साङ्ख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन। तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव। १
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे। तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्। २

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ। ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्। ३
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते। न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति। ४
न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः। ५
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते। ६
यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन। कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते। ७
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः। शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः। ८
यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर। ९
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्। १०
देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ। ११
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः। १२
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्। १३
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः। १४
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्। १५
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः। अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति। १६
यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः। आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते। १७
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन। न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः। १८
तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः। १९
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः। लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि। २०
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते। २१
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन। नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि। २२
यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः। २३
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्। सङ्करस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः। २४
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत। कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम्। २५
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्। जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन्। २६
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते। २७

तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः । गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते । २८
प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु । तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् । २९
मयि सर्वाणि कर्माणि सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा । निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः । ३०
ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः । श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः । ३१
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् । सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः । ३२
सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति । ३३
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ । तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ । ३४
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् । स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः । ३५

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः । अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः । ३६

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः । महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् । ३७
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च । यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् । ३८
आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा । कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च । ३९
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते । एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् । ४०
तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ । पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् । ४१
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः । मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः । ४२
एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना । जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् । ४३

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् । विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् । १
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः । स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप । २
स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः । भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् । ३

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः । कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति । ४

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन । तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप। ५
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् । प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया। ६
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। ७
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे। ८
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः । त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन। ९
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः । बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः । १०
ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् । मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः । ११
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः । क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा । १२
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः । तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् । १३
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा । इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते । १४
एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः । कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् । १५
किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः । तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् । १६
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः । अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः । १७
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः । स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् । १८
यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः । १९
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः । कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः । २०
निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः । शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् । २१
यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः । समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते । २२
गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः । यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते । २३
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् । ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना । २४
दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते । ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति । २५
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति । शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति । २६
सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते । २७
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे । स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः । २८
अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे । प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः । २९
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति । सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः । ३०
यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् । नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम । ३१
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे । कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे । ३२
श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप । सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते । ३३

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः। ३४
यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव। येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि। ३५
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः। सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि। ३६
यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन। ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा। ३७
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति। ३८
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः। ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति। ३९
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति। नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः। ४०
योगसन्न्यस्तकर्माणं ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम्। आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय। ४१
तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः। छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत। ४२

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसन्न्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि। यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्। १

श्रीभगवानुवाच

सन्न्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ। तयोस्तु कर्मसन्न्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते। २
ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति। निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते। ३
साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः। एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्। ४
यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते। एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति। ५
सन्न्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः। योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति। ६
योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः। सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते। ७
नैव किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्। पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्। ८
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्। ९
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः। लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा। १०
कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि। योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये। ११
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्। अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते। १२
सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्यास्ते सुखं वशी। नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्। १३
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः। न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते। १४
नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः। अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः। १५
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः। तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्। १६

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः । गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः । १७
विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि । शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः । १८
इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः । निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः । १९
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् । स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः । २०
बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् । स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते । २१
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते । आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः । २२
शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् । कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः । २३
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः । स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति । २४
लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः । छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः । २५
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् । अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् । २६
स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ । २७
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः । २८
भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् । सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति । २९

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसन्न्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः । स सन्न्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः । १
यं सन्न्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव । न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन । २
आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते । योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते । ३
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते । सर्वसङ्कल्पसन्न्यासी योगारूढस्तदोच्यते । ४
उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् । आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः । ५
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः । अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् । ६
जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः । शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः । ७
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः । युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः । ८
सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु । साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते । ९
योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः । एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः । १०
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः । नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् । ११
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः । उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये । १२
समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः । सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् । १३

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः। मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः। १४
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः। शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति। १५
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः। न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन। १६
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा। १७
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते। निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा। १८
यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता। योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः। १९
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया। यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति। २०
सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्। वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः। २१
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः। यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते। २२
तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम्। स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा। २३
सङ्कल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः। मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः। २४
शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया। आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत्। २५
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्। ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्। २६
प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्। उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम्। २७
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः। सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते। २८
सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि। ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः। २९
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति। ३०
सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः। सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते। ३१
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन। सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः। ३२

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन। एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम्। ३३
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्। तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्। ३४

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते। ३५
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः। वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः। ३६

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः। अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति। ३७
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति। अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि। ३८
एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः। त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते। ३९

श्रीभगवानुवाच

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते। न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति। ४०
प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः। शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते। ४१

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्। एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्। ४२
तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्। यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन। ४३
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः। जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते। ४४
प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्। ४५
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः। कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन। ४६
योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना। श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः। ४७

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः। असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु। १
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः। यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते। २
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः। ३
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च। अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा। ४
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्। जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्। ५
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय। अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा। ६
मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय। मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव। ७
रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः। प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु। ८
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ। जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु। ९
बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्। बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्। १०
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्। धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ। ११
ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये। मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि। १२
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्। मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्। १३
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते। १४
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः। माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः। १५
चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन। आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ। १६
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते। प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः। १७
उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्। आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्। १८
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते। वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः। १९

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञाना: प्रपद्यन्तेऽन्यदेवता: । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियता: स्वया। २०
यो यो यां यां तनुं भक्त: श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्। २१
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते । लभते च तत: कामान्मयैव विहितान्हि तान्। २२
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् । देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि। २३
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धय: । परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्। २४
नाहं प्रकाश: सर्वस्य योगमायासमावृत: । मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्। २५
वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन । भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन। २६
इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत । सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप। २७
येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् । ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रता: । २८
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये । ते ब्रह्म तद्विदु: कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम्। २९
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदु: । प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतस: । ३०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्याय: ॥ ७ ॥

अथाष्टमोऽध्याय:

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम । अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते। १
अधियज्ञ: कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन । प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभि: । २

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते । भूतभावोद्भवकरो विसर्ग: कर्मसञ्ज्ञित: । ३
अधिभूतं क्षरो भाव: पुरुषश्चाधिदैवतम् । अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतांवर। ४
अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् । य: प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशय: । ५
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् । तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावित: । ६
तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च । मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् । ७
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना । परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्। ८

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्य: ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमस: परस्तात्। ९
प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्। १०

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये। ११

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च। मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्। १२
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्। १३
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः। १४
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्। नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः। १५
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन। मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते। १६
सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः। रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः। १७
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे। रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसञ्ज्ञके। १८
भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे। १९
परस्तस्मात्तुभावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः। यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति। २०
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्। यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। २१
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्। २२
यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः। प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ। २३
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः। २४
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्। तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते। २५
शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते। एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः। २६
नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन। तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन। २७

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्। २८

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

अथ नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे। ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्। १
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्। प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम्। २
अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप। अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि। ३
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना। मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः। ४

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् । भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः। ५
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् । तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय। ६
सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् । कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्। ७
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः । भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात्। ८
न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय । उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु। ९
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् । हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते। १०
अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् । परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्। ११
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः । राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः। १२
महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः । भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्। १३
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः । नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते। १४
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते । एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्। १५
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् । मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्। १६
पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः । वेद्यं पवित्रमोङ्कार ऋक्साम यजुरेव च। १७
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् । प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्। १८
तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च । अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन। १९

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्। २०
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते। २१

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्। २२
येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः । तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्। २३
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च । न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते। २४
यान्ति देवव्रता देवान्पितृन्यान्ति पितृव्रताः । भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्। २५
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति । तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः। २६
यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्। २७
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः । सन्न्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि। २८
समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः । ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्। २९
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् । साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः। ३०
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति । कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति। ३१
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः । स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्। ३२
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा । अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्। ३३

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु । मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः । ३४

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः । यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया । १
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः । अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः । २
यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् । असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते । ३
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः । सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च । ४
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः । भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः । ५
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा । मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः । ६
एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः । सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः । ७
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते । इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः । ८
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् । कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च । ९
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् । ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते । १०
तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः । नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता । ११

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् । १२
आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा । असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे । १३
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव । न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः । १४
स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम । भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते । १५
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः । याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि । १६
कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् । केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया । १७
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन । भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् । १८

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः । प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे । १९
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः । अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च । २०
आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् । मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी । २१

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः। इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना। २२
रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्। वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्। २३
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्। सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः। २४
महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्। यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः। २५
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः। गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः। २६
उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्। ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्। २७
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्। प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः। २८
अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्। पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम्। २९
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्। मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्। ३०
पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्। झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी। ३१
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन। अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम्। ३२
अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च। अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः। ३३
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्। कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा। ३४
बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्। मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः। ३५
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्। जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्। ३६
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः। मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः। ३७
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्। मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्। ३८
यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन। न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्। ३९
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप। एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया। ४०
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा। तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम्। ४१
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन। विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्। ४२

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः॥ १०॥

अथैकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसञ्ज्ञितम्। यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम। १
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया। त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम्। २
एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर। द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम। ३
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो। योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम्। ४

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः। नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च। ५
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा। बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत। ६
इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्। मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद् द्रष्टुमिच्छसि। ७
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा। दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्। ८

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः। दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम्। ९
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम्। अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्। १०
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्। सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम्। ११
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता। यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः। १२
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा। अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा। १३
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः। प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत। १४

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्। १५
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप। १६
किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्। १७
त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे। १८
अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्। १९
द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्। २०
अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः। २१
रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे। २२
रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम्। २३

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो। २४
दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास। २५
अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः। २६
वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः। २७
यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति।
तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति। २८
यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः।
तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः। २९
लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो। ३०
आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्। ३१

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः। ३२
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्। ३३
द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्। ३४

सञ्जय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य। ३५

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः। ३६
कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्। ३७

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप। ३८
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते। ३९
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः। ४०
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि। ४१
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्। ४२
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव। ४३
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्। ४४
अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास। ४५
किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते। ४६

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्। ४७
न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर। ४८
मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य। ४९

सञ्जय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।
आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा। ५०

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन। इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः। ५१

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम । देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः । ५२
नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया । शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा । ५३
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन । ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप । ५४
मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः । निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव । ५५

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः ।। ११ ।।

अथ द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते । ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः । १

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते । श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः । २
ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते । सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् । ३
सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः । ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः । ४
क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते । ५
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते । ६
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् । भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् । ७
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय । निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः । ८
अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् । अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय । ९
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव । मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि । १०
अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः । सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् । ११
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते । ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् । १२
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च । निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी । १३
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः । मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः । १४
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः । हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः । १५
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः । सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः । १६
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति । शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः । १७
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः । शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः । १८

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित् । अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः । १९
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते । श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः । २०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते । एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः । १
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत । क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम । २
तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत् । स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु । ३
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः । ४
महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च । इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः । ५
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं सङ्घातश्चेतना धृतिः । एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् । ६
अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् । आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः । ७
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहङ्कार एव च । जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् । ८
असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु । नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु । ९
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी । विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि । १०
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् । एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा । ११
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते । अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते । १२
सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् । सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति । १३
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् । असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च । १४
बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च । सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् । १५
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् । भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च । १६
ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते । ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् । १७
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः । मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते । १८
प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि । विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान् । १९
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते । पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते । २०
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान् । कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु । २१
उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः । परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः । २२

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह। सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते। २३
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना। अन्ये साङ्ख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे। २४
अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते। तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः। २५
यावत्सञ्जायते किञ्चित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम्। क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ। २६
समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्। विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति। २७
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्। न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्। २८
प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः। यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति। २९
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति। तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा। ३०
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः। शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते। ३१
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते। सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते। ३२
यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः। क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत। ३३
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा। भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्। ३४

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्। यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः। १
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः। सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च। २
मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्। सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत। ३
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः। तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता। ४
सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः। निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्। ५
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्। सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ। ६
रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम्। तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम्। ७
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्। प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत। ८
सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत। ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत। ९
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत। रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा। १०
सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत। ११
लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा। रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ। १२

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च । तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन । १३
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत् । तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते । १४
रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते । तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते । १५
कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् । रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् । १६
सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च । प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च । १७
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः । जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः । १८
नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति । गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति । १९
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् । जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते । २०

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो । किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते । २१

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव । न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति । २२
उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते । गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते । २३
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः । तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः । २४
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः । सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते । २५
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते । स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते । २६
ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च । शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च । २७

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् । छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् । १

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके । २
न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा ।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा । ३
ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी । ४

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसञ्ज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्। ५
न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। ६
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः। मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति। ७
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः। गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्। ८
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च। अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते। ९
उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्। विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः। १०
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्। यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः। ११
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्। १२
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा। पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः। १३
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्। १४
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्। १५
द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते। १६
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः। यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः। १७
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः। अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः। १८
यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत। १९
इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ। एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत। २०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः॥ १५॥

अथ षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्। १
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्। दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्। २
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता। भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत। ३
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च। अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्। ४
दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता। मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव। ५
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च। दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु। ६

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः। न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते। ७
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्। अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम्। ८
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः। प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः। ९
काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः। मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः। १०
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः। कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः। ११
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः। ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान्। १२
इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्। इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्। १३
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि। ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी। १४
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः। १५
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ। १६
आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः। यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्। १७
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः। मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः। १८
तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्। क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु। १९
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि। मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम्। २०
त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्। २१
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः। आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्। २२
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्। २३
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि। २४

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
दैवासुरसम्पद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः॥ १६॥

अथ सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः। तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः। १

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा। सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु। २
सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत। श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः। ३
यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः। प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः। ४
अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः। दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः। ५

कर्शयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः। मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्। ६
आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः। यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु। ७
आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः। ८
कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः। आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः। ९
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्। उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्। १०
अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते। यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः। ११
अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत्। इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम्। १२
विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्। श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते। १३
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्। ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते। १४
अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्। स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते। १५
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः। भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते। १६
श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः। अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते। १७
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्। क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम्। १८
मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः। परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्। १९
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे। देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्। २०
यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः। दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्। २१
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्य दीयते। असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्। २२
ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः। ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा। २३
तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः। प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्। २४
तदित्यनभिसन्धाय फलं यज्ञतपःक्रियाः। दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकांक्षिभिः। २५
सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते। प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते। २६
यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते। कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते। २७
अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्। असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह। २८

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

अथाष्टादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

सन्न्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम् । त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन। १

श्रीभगवानुवाच

काम्यानां कर्मणां न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः । सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः। २
त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः । यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे। ३
निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम । त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः। ४
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् । यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्। ५
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च । कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम्। ६
नियतस्य तु सन्न्यासः कर्मणो नोपपद्यते । मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः। ७
दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् । स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत्। ८
कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन । सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः। ९
न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते । त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः। १०
न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः । यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते। ११
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम् । भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु सन्न्यासिनां क्वचित्। १२
पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे । साङ्ख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम्। १३
अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् । विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्। १४
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः । न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः। १५
तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः । पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः। १६
यस्य नाहङ्कृतो भावो बुद्धिर्यस्य नलिप्यते । हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते। १७
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना । करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः। १८
ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः । प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि। १९
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते । अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्। २०
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान् । वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्। २१
यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम् । अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम्। २२
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् । अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते। २३
यत्तु कामेप्सुना कर्म साहङ्कारेण वा पुनः । क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम्। २४
अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम् । मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते। २५
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः । सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते। २६

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः । हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः। २७
अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धःशठोऽनैष्कृतिकोऽलसः। विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते। २८
बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु। प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनञ्जय। २९
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये । बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी। ३०
यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च। अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी। ३१
अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता। सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी। ३२
धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः । योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी। ३३
यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन। प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी। ३४
यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च। न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी। ३५
सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ। अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति। ३६
यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्। ३७
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् । परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम्। ३८
यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः। निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्। ३९
न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः। सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः। ४०
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप। कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः। ४१
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च। ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्। ४२
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्। दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्। ४३
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्। परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्। ४४
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु। ४५
यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्। स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः। ४६
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्। स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्। ४७
सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्। सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः। ४८
असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः। नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां सन्न्यासेनाधिगच्छति। ४९
सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे। समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा। ५०
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च। शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च। ५१
विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः। ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः। ५२
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम्। विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते। ५३
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति। समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्। ५४
भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः। ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्। ५५
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः। मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्। ५६

चेतसा सर्वकर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्परः। बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव। ५७
मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि। अथ चेत्त्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि। ५८
यदहङ्कारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे। मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति। ५९
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा। कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्। ६०
ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति। भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया। ६१
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत। तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्। ६२
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया। विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु। ६३
सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः। इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्। ६४
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे। ६५
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः। ६६
इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन। न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति। ६७
य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति। भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः। ६८
न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः। भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि। ६९
अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः। ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः। ७०
श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः। सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्। ७१
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा। कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय। ७२

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत। स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव। ७३

सञ्जय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः। संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्। ७४
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम्। योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्। ७५
राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम्। केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः। ७६
तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः। विस्मयो मे महान्राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः। ७७
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। ७८

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
मोक्षसन्न्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

आरती

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते।
हरि-हिय-कमल विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते॥ जय०
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्तिहरा।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि विद्या ब्रह्म परा॥ जय०
निश्चल-भक्ति-विधायिनि निर्मल मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि सब विधि सुखकारी॥ जय०
राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि, तारिणि, परमानन्दप्रदा॥ जय०
आसुर-भाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी।
दैवी सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी॥ जय०
समता, त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी॥ जय०
दया-सुधा बरसावनि मातु! कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै॥ जय०

१७. श्रीमद्भगवद्गीता-पादानुक्रमणिका

अ

अकर्तारं स पश्यति १३।२९
अकर्मणश्च बोद्धव्यम् ४।१७
अकर्मणि च कर्म यः ४।१८
अकीर्तिकरमर्जुन २।२
अकीर्तिं चापि भूतानि २।३४
अक्लेद्योऽशोष्य
एव च २।२४
अक्षरं ब्रह्म परमम् ८।३
अक्षराणामकारोऽ-
स्मि १०।३३
अक्षरादपि चोत्तमः १५।१८
अग्निर्ज्योतिरहः
शुक्लः ८।२४
अघायुरिन्द्रियारामः ३।१६
अचरं चरमेव च १३।१५
अचलोऽयं सनातनः २।२४
अचिरेणाधिगच्छति ४।३९
अच्छेद्योऽ-
यमदाह्योऽयम् २।२४
अजानता महिमानं
तवेदम् ११।४१
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं
पुराणः २।२०
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा ४।६
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च ४।४०
अज्ञानं
यदतोऽन्यथा १३।११
अज्ञानं चाभिजातस्य १६।४
अज्ञानं तमसः
फलम् १४।१६
अज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् ३।२६
अज्ञानेनावृतं ज्ञानम् ५।१५
अणोरणीयांस-
मनुस्मरेद्यः ८।९
अत ऊर्ध्वं न
संशयः १२।८
अतत्त्वार्थवदल्पं च १८।२२
अतीतो भवति प्रभो १४।२१
अतोऽस्मि लोके
वेदे च १५।१८
अत्यन्तं सुखमश्नुते ६।२८
अत्येति तत्सर्वमिदं
विदित्वा ८।२८
अत्र शूरा महेष्वासाः १।४
अथ केन
प्रयुक्तोऽयम् ३।३६
अथ चित्तं समाधातुम् १२।९
अथ चेत्त्वमहङ्कारात् १८।५८
अथ चेत्त्वमिमं
धर्म्यम् २।३३
अथ चैनं
नित्यजातम् २।२६
अथवा बहुनैतेन १०।४२
अथवा योगिनामेव ६।४२
अथ व्यवस्थितान्
दृष्ट्वा १।२०
अथैतदप्य-
शक्तोऽसि १२।११
अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि
दृष्ट्वा ११।४५
अदेशकाले
यद्दानम् १७।२२
अद्भुतं रोमहर्षणम् १८।७४
अद्रोहो नातिमानिता १६।३
अद्वेष्टा सर्व-
भूतानाम् १२।१३
अधर्मं धर्ममिति या १८।३२
अधर्माभिभवात्कृष्ण १।४१
अधर्मोऽभिभवत्युत १।४०
अधश्च मूलान्यनु
सन्ततानि १५।२
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य
शाखाः १५।२
अधिदैवं किमुच्यते ८।१
अधिभूतं क्षरो भावः ८।४

अधिभूतं च किं प्रोक्तम् ८।१
अधियज्ञः कथं कोऽत्र ८।२
अधियज्ञोऽहमेवात्र ८।४
अधिष्ठानं तथा कर्ता १८।१४
अधिष्ठाय मनश्चायम् १५।९
अधो गच्छन्ति तामसाः १४।१८
अध्यात्मं कर्म चाखिलम् ७।२९
अध्यात्मज्ञान-नित्यत्वम् १३।११
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः १५।५
अध्यात्मविद्या विद्यानाम् १०।३२
अध्येष्यते च य इमम् १८।७०
अनन्तं विश्वतोमुखम् ११।११
अनन्त देवेश जगन्निवास ११।३७
अनन्तबाहुं शशि-सूर्यनेत्रम् ११।१९
अनन्तविजयं राजा १।१६
अनन्तवीर्यामितविक्रम-स्त्वम् ११।४०
अनन्तश्चास्मि नागानाम् १०।२९
अनन्यचेताः सततम् ८।१४
अनन्याश्चिन्तयन्तो माम् ९।२२
अनन्येनैव योगेन १२।६
अनपेक्षः शुचिर्दक्षः १२।१६
अनवेक्ष्य च पौरुषम् १८।२५
अनहङ्कार एव च १३।८
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे ६।६
अनादित्वान्नि-र्गुणत्वात् १३।३१
अनादिमत्परं ब्रह्म १३।१२
अनादिमध्यान्त-मनन्तवीर्यम् ११।१९
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यम् २।२
अनाशिनोऽप्रमेयस्य २।१८
अनाश्रितः कर्मफलम् ६।१
अनिकेतः स्थिरमतिः १२।१९
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय ३।३६
अनित्यमसुखं लोकम् ९।३३
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च १८।१२
अनुतिष्ठन्ति मानवाः ३।३१
अनुद्वेगकरं वाक्यम् १७।१५
अनुबन्धं क्षयं हिंसाम् १८।२५
अनेकचित्तविभ्रान्ताः १६।१६
अनेकजन्मसंसिद्धः ६।४५
अनेकदिव्याभरणम् ११।१०
अनेकबाहूदरवक्त्र-नेत्रम् ११।१६
अनेकवक्त्रनयनम् ११।१०
अनेकाद्भुतदर्शनम् ११।१०
अनेन प्रसविष्यध्वम् ३।१०
अनेनैव स्वचक्षुषा ११।८
अन्तकाले च मामेव ८।५
अन्तरं ज्ञानचक्षुषा १३।३४
अन्तवत्तु फलं तेषाम् ७।२३
अन्तवन्त इमे देहाः २।१८
अन्नाद्भवन्ति भूतानि ३।१४
अन्यः प्रियतरो भुवि १८।६९
अन्ययावर्तते पुनः ८।२६
अन्यानि संयाति नवानि देही २।२२
अन्यायेनार्थसञ्चयान् १६।१२
अन्ये च बहवः शूराः १।९
अन्ये त्वेवमजानन्तः १३।२५
अन्ये साङ्ख्येन योगेन १३।२४
अपरं भवतो जन्म ४।४
अपरस्परसम्भूतम् १६।८

अपरे नियताहारा: ४।३०
अपरेयमितस्त्वन्याम् ७।५
अपर्याप्तं तदस्माकम् १।१०
अपश्यद् देव-
देवस्य ११।१३
अपात्रेभ्यश्च दीयते १७।२२
अपाने जुह्वति
प्राणम् ४।२९
अपि चेत्सुदुराचार: ९।३०
अपि चेदसि
पापेभ्य: ४।३६
अपि त्रैलोक्य-
राज्यस्य १।३५
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च १४।१३
अप्रतिष्ठो महाबाहो ६।३८
अप्राप्य मां निवर्तन्ते ९।३
अप्राप्य योग-
संसिद्धिम् ६।३७
अफलप्रेप्सुना कर्म १८।२३
अफलाकाङ्क्षि-
भिर्यज्ञ: १७।११
अफलाकाङ्क्षि-
भिर्युक्तै: १७।१७
अभयं सत्त्वसंशुद्धि: १६।१
अभिजातस्य भारत १६।३
अभिजातोऽसि
पाण्डव १६।५
अभितो ब्रह्म
निर्वाणम् ५।२६
अभिसन्धाय तु
फलम् १७।१२
अभ्यासयोगयुक्तेन ८।८
अभ्यासयोगेन तत: १२।९
अभ्यासाद्रमते यत्र १८।३६
अभ्यासेन तु कौन्तेय ६।३५
अभ्यासेऽप्य-
समर्थोऽसि १२।१०
अभ्युत्थानमधर्मस्य ४।७
अमलान्प्रतिपद्यते १४।१४
अमानित्वमदम्भित्वम् १३।७
अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य
पुत्रा: ११।२६
अमी हि त्वां सुरसङ्घा
विशन्ति ११।२१
अमृतं चैव मृत्युश्च ९।१९
अमृतस्याव्ययस्य च १४।२७
अयति: श्रद्धयोपेत: ६।३७
अयथावत्प्रजानाति १८।३१
अयनेषु च सर्वेषु १।११
अयुक्त: कामकारेण ५।१२
अयुक्त: प्राकृत:
स्तब्ध: १८।२८
अरतिर्जनसंसदि १३।१०
अरागद्वेषत: कृतम् १८।२३
अवजानन्ति मां मूढा: ९।११
अवशं प्रकृतेर्वशात् ९।८
अवाच्यवादांश्च बहून् २।३६
अवाप्य भूमावसपत्न-
मृद्धम् २।८
अविकार्योऽयमुच्यते २।२५
अविनाशि तु
तद्विद्धि २।१७
अविभक्तं
विभक्तेषु १८।२०
अविभक्तं च भूतेषु १३।१६
अव्यक्तं व्यक्ति-
मापन्नम् ७।२४
अव्यक्तनिधनान्येव २।२८
अव्यक्तं पर्युपासते १२।३
अव्यक्तादीनि भूतानि २।२८
अव्यक्ताद् व्यक्तय:
सर्वा: ८।१८
अव्यक्तासक्त-
चेतसाम् १२।५
अव्यक्ता हि
गतिर्दु:खम् १२।५
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्त: ८।२१
अव्यक्तोऽयम-
चिन्त्योऽयम् २।२५
अव्यक्तोऽव्यक्तात्-
सनातन: ८।२०
अशस्त्रं शस्त्रपाणय: १।४६
अशान्तस्य कुत:
सुखम् २।६६
अशास्त्रविहितं घोरम् १७।५
अशोच्यान-
न्वशोचस्त्वम् २।११
अश्नन्गच्छन्-
स्वपञ्श्वसन् ५।८
अश्नन्ति दिव्यान्दिवि
देवभोगान् ९।२०
अश्नामि प्रयतात्मन: ९।२६
अश्रद्दधाना: पुरुषा: ९।३

अश्रद्धया हुतं दत्तम् १७।२८
अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् २।१
अश्वत्थमेनं
सुविरूढमूलम् १५।३
अश्वत्थं प्राहुरव्ययम् १५।१
अश्वत्थः सर्व-
वृक्षाणाम् १०।२६
अश्वत्थामा विकर्णश्च १।८
अश्विनौ मरुतस्तथा ११।६
असंयतात्मना योगः ६।३६
असंशयं समग्रं माम् ७।१
असंशयं महाबाहो ६।३५
असक्तं सर्वभृच्चैव १३।१४
असक्तं तेषु कर्मसु ९।९
असक्तबुद्धिः सर्वत्र १८।४९
असक्तः स विशिष्यते ३।७
असक्तिरनभिष्वङ्गः १३।९
असक्तो ह्याचरन्कर्म ३।१९
असङ्गशस्त्रेण दृढेन
छित्त्वा १५।३
असत्कृतमवज्ञातम् १७।२२
असत्यमप्रतिष्ठं ते १६।८
असदित्युच्यते पार्थ १७।२८
असम्मूढः स
मर्त्येषु १०।३
असितो देवलो
व्यासः १०।१३

असौ मया हतः
शत्रुः १६।१४
अस्माकं तु
विशिष्टा ये १।७
अस्मिन् रणसमुद्यमे १।२२
अस्याधिष्ठानमुच्यते ३।४०
अहं वैश्वानरो भूत्वा १५।१४
अहं स च मम प्रियः ७।१७
अहं सर्वस्य प्रभवः १०।८
अहं हि सर्वयज्ञानाम् ९।२४
अहङ्कार इतीयं मे ७।४
अहङ्कारं बलम् दर्पम् १६।१८,
" " १८।५३
अहङ्कारविमूढात्मा ३।२७
अहं कृत्स्नस्य जगतः ७।६
अहं क्रतुरहं यज्ञः ९।१६
अहं त्वा सर्व-
पापेभ्यः १८।६६
अहमग्निरहं हुतम् ९।१६
अहमज्ञानजं तमः १०।११
अहमात्मा गुडाकेश १०।२०
अहमादिर्हि देवानाम् १०।२
अहमादिश्च मध्यं
च १०।२०
अहमेवंविधोऽर्जुन ११।५४
अहमेवाक्षयः कालः १०।३३
अहं बीजप्रदः पिता १४।४

अहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ८।१७
अहिंसा क्षान्ति-
रार्जवम् १३।७
अहिंसा सत्यमक्रोधः १६।२
अहिंसा समता तुष्टिः १०।५
अहो बत महत्पापम् १।४५

आ

आकाशं
नोपलिप्यते १३।३२
आख्याहि मे को
भवानुग्ररूपः ११।३१
आगमापा-
यिनोऽनित्याः २।१४
आचरत्यात्मनः
श्रेयः १६।२२
आचार्य महतीं चमूम् १।३
आचार्यमुपसङ्गम्य १।२
आचार्याः पितरः
पुत्राः १।३४
आचार्यान्मातुलान्-
भ्रातॄन् १।२६
आचार्योपासनं
शौचम् १३।७
आढ्योऽभि-
जनवानस्मि १६।१५
आतिष्ठोत्तिष्ठ भारत ४।४२
आत्मतृप्तश्च मानवः ३।१७

आत्मन्येव च सन्तुष्टः ३।१७
आत्मन्येव वशं नयेत् ६।२६
आत्मन्येवात्मना तुष्टः २।५५
आत्मन्येवावतिष्ठते ६।१८
आत्मबुद्धि-प्रसादजम् १८।३७
आत्मवन्तं न कर्माणि ४।४१
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा २।६४
आत्मसंयमयोगाग्नौ ४।२७
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा ६।२५
आत्मसम्भाविताः स्तब्धाः १६।१७
आत्मानं रहसि स्थितः ६।१०
आत्मानं केवलं तु यः १८।१६
आत्मानं परमेश्वर ११।३
आत्मानं मत्परायणः ९।३४
आत्मैव रिपुरात्मनः ६।५
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः ६।५
आत्मौपम्येन सर्वत्र ६।३२
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ८।९
आदित्यानामहं विष्णुः १०।२१
आदिदेवमजं विभुम् १०।१२
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय ५।२२
आपूर्यमाणमचल-प्रतिष्ठम् २।७०
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः ८।१६
आयुधानामहं वज्रम् १०।२८
आयुः सत्त्वबलारोग्य- १७।८
आरुरुक्षोर्मुनेर्योगम् ६।३
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ७।१६
आवृतं ज्ञानमेतेन ३।३९
आवृत्तिं चैव योगिनः ८।२३
आशापाशशतैर्बद्धाः १६।१२
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति २।२९
आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनम् २।२९
आश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः २।२९
आश्वासयामास च भीतमेनम् ११।५०
आसुरं पार्थ मे शृणु १६।६
आसुरं भावमाश्रिताः ७।१५
आसुरीं योनि-मापन्नाः १६।२०
आसुरीष्वेव योनिषु १६।१९
आस्थितः स हि युक्तात्मा ७।१८
आस्थिता जनकादयः ३।२०
आस्थितो योग-धारणाम् ८।१२
आहारस्त्वपि सर्वस्य १७।७
आहारा राजसस्येष्टाः १७।९
आहाराः सात्त्विक-प्रियाः १७।८
आहुस्त्वामृषयः सर्वे १०।१३

इ

इच्छाद्वेषसमुत्थेन ७।२७
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखम् १३।६
इच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव ११।४६
इज्यते भरतश्रेष्ठ १७।१२
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानम् १३।१८
इति गुह्यतमं शास्त्रम् १५।२०
इति ते ज्ञान-माख्यातम् १८।६३
इति मत्वा न सज्जते ३।२८
इति मत्वा भजन्ते माम् १०।८
इति मां योऽभिजानाति ४।१४

इत्यज्ञानविमोहिताः १६।१५
इत्यर्जुनं वासुदेव-
स्तथोक्त्वा ११।५०
इत्यहं वासुदेवस्य १८।७४
इदं वक्ष्याम्यशेषतः ७।२
इदं शरीरं कौन्तेय १३।१
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य १४।२
इदं तु ते गुह्यतमम् ९।१
इदं ते नातपस्काय १८।६७
इदमद्य मया
लब्धम् १६।१३
इदमस्तीदमपि मे १६।१३
इदमाह महीपते १।२१
इदमुक्तं मयानघ १५।२०
इदानीमस्मि संवृत्तः ११।५१
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे ३।३४
इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ४।२६
इन्द्रियाणां हि
चरताम् २।६७
इन्द्रियाणां
मनश्चास्मि १०।२२
इन्द्रियाणि दशैकं च १३।५
इन्द्रियाणि पराण्याहुः ३।४२
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि २।६०
इन्द्रियाणि मनो
बुद्धिः ३।४०
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः २।५८,
" " २।६८
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु ५।९
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा ३।६
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम् १३।८
इन्द्रियेभ्यः परं मनः ३।४२
इमं राजर्षयो विदुः ४।२
इमं विवस्वते योगम् ४।१
इमं प्राप्य भजस्व
माम् ९।३३
इमं प्राप्स्ये
मनोरथम् १६।१३
इमांस्त्वं व्याप्य
तिष्ठसि १०।१६
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि २।४
इष्टः स्यामिति
मे मतिः १८।७०
इष्टानिष्टोपपत्तिषु १३।९
इष्टान्भोगान्हि
वो देवाः ३।१२
इष्टोऽसि मे
दृढमिति १८।६४
इहैकस्थं
जगत्कृत्स्नम् ११।७
इहैव तैर्जितः सर्गः ५।१९

ई

ईक्षते योगयुक्तात्मा ६।२९
ईश्वरः सर्वभूतानाम् १८।६१
ईश्वरोऽहमहं भोगी १६।१४
ईहन्ते कामभोगार्थम् १६।१२

उ

उक्त्वा तूष्णीं बभूव ह २।९
उच्चैःश्रवसमश्वानाम् १०।२७
उच्छिष्टमपि
चामेध्यम् १७।१०
उत्क्रामन्तं स्थितं
वापि १५।१०
उत्तमः पुरुष-
स्त्वन्यः १५।१७
उत्तमौजाश्च वीर्यवान् १।६
उत्सन्नकुलधर्माणाम् १।४४
उत्साद्यन्ते
जातिधर्माः १।४३
उत्सीदेयुरिमे लोकाः ३।२४
उदाराः सर्व एवैते ७।१८
उदासीनवदासीनः १४।२३
उदासीनवदासीनम् ९।९
उदासीनो गतव्यथः १२।१६
उद्धरेदात्मनात्मानम् ६।५
उद्भवश्च
भविष्यताम् १०।३४
उन्मिषन्निमिषन्नपि ५।९
उपदेक्ष्यन्ति ते
ज्ञानम् ४।३४
उपद्रष्टानुमन्ता च १३।२२
उपविश्यासने
युञ्ज्याद् ६।१२
उपहन्यामिमाः प्रजाः ३।२४
उपैति शान्तरजसम् ६।२७
उभयोरपि दृष्टोऽन्तः २।१६
उभयोर्विन्दते फलम् ५।४

उभे सुकृतदुष्कृते २।५०
उभौ तौ न विजानीतः २।१९
उवाच पार्थ
पश्यैतान् १।२५
उवाच मधुसूदनः २।१
उषित्वा शाश्वतीः
समाः ६।४१

ऊ

ऊर्ध्वं गच्छन्ति
सत्त्वस्थाः १४।१८
ऊर्ध्वमूलमधःशाखम् १५।१

ऋ

ऋक्साम यजुरेव च ९।१७
ऋतूनां कुसुमाकरः १०।३५
ऋतेऽपि त्वां न
भविष्यन्ति सर्वे ११।३२
ऋषयः क्षीण-
कल्मषाः ५।२५
ऋषिभिर्बहुधा
गीतम् १३।४
ऋषींश्च सर्वानुरगांश्च
दिव्यान् ११।१५

ए

एकं सांख्यं च
योगं च ५।५
एकत्वेन पृथक्त्वेन ९।१५
एकभक्तिर्विशिष्यते ७।१७
एकमप्यास्थितः
सम्यक् ५।४
एकया यात्यनावृत्तिम् ८।२६
एकस्थमनुपश्यति १३।३०
एकांशेन स्थितो
जगत् १०।४२
एकाकी यतचित्तात्मा ६।१०
एकेह कुरुनन्दन २।४१
एकोऽथवाप्यच्युत
तत्समक्षम् ११।४२
एतच्छ्रुत्वा वचनं
केशवस्य ११।३५
एतज्ज्ञानमिति
प्रोक्तम् १३।११
एतत्क्षेत्रं समासेन १३।६
एतद्गुह्यमहं
परम् १८।७५
एतद्धि दुर्लभतरम् ६।४२
एतद्बुद्ध्वा बुद्धि-
मान्स्यात् १५।२०
एतद्योनीनि भूतानि ७।६
एतद्यो वेत्ति तं
प्राहुः १३।१
एतन्मे संशयं कृष्ण ६।३९
एतस्याहं न पश्यामि ६।३३
एतां विभूतिं योगं च १०।७
एतां दृष्टिमवष्टभ्य १६।९
एतान्न हन्तुमिच्छामि १।३५
एतान्यपि तु कर्माणि १८।६
एतावदिति
निश्चिताः १६।११
एतैर्विमुक्तः
कौन्तेय १६।२२
एतैर्विमोहयत्येषः ३।४०
एभिः सर्वमिदं
जगत् ७।१३
एवं यास्यसि पाण्डव ४।३५
एवं यो वेत्ति तत्त्वतः ४।९
एवंरूपः शक्य
अहं नृलोके ११।४८
एवं सततयुक्ता ये १२।१
एवं ज्ञात्वा
कृतं कर्म ४।१५
एवं ज्ञात्वा
विमोक्ष्यसे ४।३२
एवं त्रयीधर्म-
मनुप्रपन्ना ९।२१
एवमुक्तो हृषीकेशः १।२४
एवमुक्त्वा ततो राजन् ११।९
एवमुक्त्वार्जुनः
सङ्ख्ये १।४७
एवमुक्त्वा हृषीकेशम् २।९
एवमेतद्यथात्थ त्वम् ११।३
एवं परम्पराप्राप्तम् ४।२
एवं प्रवर्तितं चक्रम् ३।१६
एवं बहुविधा यज्ञाः ४।३२
एवं बुद्धेः परं
बुद्ध्वा ३।४३
एष तूद्देशतः
प्रोक्तः १०।४०

एष वोऽस्त्विष्ट-
कामधुक् ३।१०
एषा तेऽभिहिता
सांख्ये २।३९
एषा ब्राह्मी स्थिति:
पार्थ २।७२

ऐ

ऐरावतं गजेन्द्राणाम् १०।२७
ऐश्वरं पुरुषोत्तम ११।३

ओ

ॐ तत्सदिति
निर्देश: १७।२३
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ८।१३

क

कं घातयति हन्ति
कम् २।२१
कच्चिदज्ञानसम्मोह: १८।७२
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ १८।७२
कच्चिन्नोभयविभ्रष्ट: ६।३८
कट्वम्ललवणात्युष्ण- १७।९
कथं विद्यामहं
योगिन् १०।१७
कथं स पुरुष: पार्थ २।२१
कथं न ज्ञेयमस्माभि: १।३९
कथमेतद्विजानीयाम् ४।४
कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये २।४
कथयन्तश्च मां नित्यम् १०।९
कथयिष्यन्ति
तेऽव्ययाम् २।३४
करणं कर्म कर्तेति १८।१८
करणं च
पृथग्विधम् १८।१४
करिष्यस्यवशोऽपि
तत् १८।६०
करिष्ये वचनं तव १८।७३
कर्णं तथान्यानपि
योधवीरान् ११।३४
कर्तव्यानीति मे पार्थ १८।६
कर्ता तामस
उच्यते १८।२८
कर्ता सात्त्विक
उच्यते १८।२६
कर्ताहमिति मन्यते ३।२७
कर्तुं नेच्छसि
यन्मोहात् १८।६०
कर्तुं मद्योगमाश्रित: १२।११
कर्तुं व्यवसिता वयम् १।४५
कर्म कर्तुमिहार्हसि १६। २४
कर्म कारणमुच्यते ६।३
कर्म चैव
तदर्थीयम् १७।२७
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि २।५१
कर्मजान्विद्धि
तान्सर्वान् ४।३२
कर्म ज्यायो ह्यकर्मण: ३।८
कर्मण: सुकृतस्याहु: १४।१६
कर्मणामशम:
स्पृहा १४।१२
कर्मणैव हि
संसिद्धिम् ३।२०
कर्मणो नोपपद्यते १८।७
कर्मणो ह्यपि
बोद्धव्यम् ४।१७
कर्मण्यकर्म य:
पश्येत् ४।१८
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि ४।२०
कर्मण्येवाधिकारस्ते २।४७
कर्म प्रारभते नर: १८।१५
कर्म प्राहुर्मनीषिण: १८।३
कर्मबन्धं प्रहास्यसि २।३९
कर्म ब्रह्मोद्भवं
विद्धि ३।१५
कर्मभिर्न स बध्यते ४।१४
कर्मयोगेन चापरे १३।२४
कर्मयोगेन योगिनाम् ३।३
कर्मयोगो विशिष्यते ५।२
कर्मसङ्गिषु जायते १४।१५
कर्मसङ्गेन देहिनम् १४।७
कर्माणि
प्रविभक्तानि १८।४१
कर्मानुबन्धीनि
मनुष्यलोके १५।२
कर्मिभ्यश्चाधिको
योगी ६।४६
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य ३।६
कर्मेन्द्रियै: कर्मयोगम् ३।७
कर्शयन्त: शरीरस्थम् १७।६

कल्पक्षये पुनस्तानि ९ । ७
कल्पादौ विसृजाम्यहम् ९ । ७
कवयोऽप्यत्र मोहिता: ४ । १६
कविं पुराणमनु-
शासितारम् ८ । ९
कवीनामुशना कवि: १० । ३७
कश्चिदर्थव्यपाश्रय: ३ । १८
कश्चिद्यतति सिद्धये ७ । ३
कश्चिन्मां वेत्ति
तत्त्वत: ७ । ३
कश्चिन्मे प्रियकृत्तम: १८ । ६९
कस्माच्च ते न नमेरन्
महात्मन् ११ । ३७
काङ्क्षन्त: कर्मणां
सिद्धिम् ४ । १२
कां गतिं कृष्ण
गच्छति ६ । ३७
का प्रीति:
स्याज्जनार्दन १ । ३६
कामं क्रोधं च
संश्रिता: १६ । १८
कामं क्रोधं
परिग्रहम् १८ । ५३
काम एष क्रोध एष: ३ । ३७
कामक्रोधपरायणा: १६ । १२
कामक्रोधवियुक्तानाम् ५ । २६
काम: क्रोधस्तथा
लोभ: १६ । २१
कामक्रोधोद्भवं
वेगम् ५ । २३
काममाश्रित्य
दुष्पूरम् १६ । १०
कामरागबलान्विता: १७ । ५
कामरागविवर्जितम् ७ । ११
कामरूपं दुरासदम् ३ । ४३
कामरूपेण कौन्तेय ३ । ३९
कामसङ्कल्पवर्जिता: ४ । १९
कामात्क्रोधोऽ-
भिजायते २ । ६२
कामात्मान:
स्वर्गपरा: २ । ४३
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञाना: ७ । २०
कामोपभोगपरमा: १६ । ११
कामोऽस्मि
भरतर्षभ ७ । ११
काम्यानां कर्मणां
न्यासम् १८ । २
कायक्लेशभयात्त्यजेत् १८ । ८
कायेन मनसा
बुद्ध्या ५ । ११
कारणं गुणसङ्गोऽस्य १३ । २१
कारणानि निबोध
मे १८ । १३
कार्पण्यदोषो-
पहतस्वभाव: २ । ७
कार्यकरणकर्तृत्वे १३ । २०
कार्यं कर्म करोति य: ६ । १
कार्यं कर्म समाचर ३ । १९
कार्यं चाकार्यमेव
च १८ । ३१
कार्यते ह्यवश: कर्म ३ । ५
कार्यमित्येव यत्कर्म १८ । ९
कार्याकार्यव्यवस्थितौ १६ । २४
कार्याकार्ये
भयाभये १८ । ३०
कार्ये सक्तमहैतुकम् १८ । २२
काल:
कलयतामहम् १० । ३०
कालेनात्मनि
विन्दति ४ । ३८
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्
प्रवृद्ध: ११ । ३२
काशिराजश्च वीर्यवान् १ । ५
काश्यश्च परमेष्वास: १ । १७
किं कर्म किमकर्मेति ४ । १६
किं कर्म पुरुषोत्तम ८ । १
किञ्चिदस्ति धनंजय ७ । ७
किं ज्ञातेन तवार्जुन १० । ४२
किं तद् ब्रह्म
किमध्यात्मम् ८ । १
किं नो राज्येन
गोविन्द १ । ३२
किमकुर्वत सञ्जय १ । १
किमन्यत्कामहैतुकम् १६ । ८
किमाचार: कथं
चैतान् १४ । २१
किमासीत व्रजेत
किम् २ । ५४
किं पुनर्ब्राह्मणा:
पुण्या: ९ । ३३

किं भोगैर्जीवितेन वा १।३२
किरीटिनं गदिनं
चक्रहस्तम् ११।४६
किरीटिनं गदिनं
चक्रिणं च ११।१७
कीर्तिः श्रीर्वाक्च
नारीणाम् १०।३४
कुतस्त्वा कश्मलमिदम् २।२
कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ४।३१
कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः १।१६
कुरु कर्मैव
तस्मात्त्वम् ४।१५
कुरुवृद्धः पितामहः १।१२
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तः ३।२५
कुलक्षयकृतं
दोषम् १।३८, ३९
कुलक्षये प्रणश्यन्ति १।४०
कुलघ्नानां कुलस्य च १।४२
कुलधर्माश्च शाश्वताः १।४३
कुलधर्माः सनातनाः १।४०
कुले भवति धीमताम् ६।४२
कुर्वन्नपि न लिप्यते ५।७
कुर्वन्नाप्नोति
किल्बिषम् ४।२१, १८।४७
कुर्वन्सिद्धि-
मवाप्स्यसि १२।१०
कुर्वाणो मद्व्य-
पाश्रयः १८।५६
कुशले नानुषज्जते १८।१०
कूटस्थमचलं ध्रुवम् १२।३
कूटस्थोऽक्षर
उच्यते १५।१६
कूटस्थो विजितेन्द्रियः ६।८
कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः २।५८
कृतकृत्यश्च भारत १५।२०
कृताञ्जलिरभाषत ११।१४
कृताञ्जलिर्वेपमानः
किरीटी ११।३५
कृत्वापि न निबध्यते ४।२२
कृत्स्नं लोकमिमं
रविः १३।३३
कृत्स्नवित्र
विचालयेत् ३।२९
कृपणाः फलहेतवः २।४९
कृपया परयाविष्टः १।२८
कृपश्च समितिञ्जयः १।८
कृषिगौरक्ष्य-
वाणिज्यम् १८।४४
केचिदात्मान-
मात्मना १३।२४
केचिद्भीताः प्राञ्जलयो
गृणन्ति ११।२१
केचिद्विलग्ना
दशनान्तरेषु ११।२७
केवलैरिन्द्रियैरपि ५।११
केशवार्जुनयोः
पुण्यम् १८।७६
केषु केषु च भावेषु १०।१७
कैर्मया सह
योद्धव्यम् १।२२
कैर्लिङ्गैस्त्री-
न्गुणानेतान् १४।२१
कोऽन्योऽस्ति सदृशो
मया १६।१५
कौन्तेय प्रतिजानीहि ९।३१
कौमारं यौवनं जरा २।१३
क्रियते तदिह
प्रोक्तम् १७।१८
क्रियते बहुलायासम् १८।२४
क्रियन्ते मोक्ष-
काङ्क्षिभिः १७।२५
क्रियमाणानि
सर्वशः १३।२९
क्रियाविशेषबहुलाम् २।४३
क्रोधः पारुष्यमेव च १६।४
क्रोधाद्भवति
सम्मोहः २।६३
क्लेशोऽधिकतरस्तेषाम् १२।५
क्लैब्यं मा स्म
गमः पार्थ २।३
क्षत्रियस्य न विद्यते २।३१
क्षमा सत्यं दमः शमः १०।४
क्षयाय जगतोऽहिताः १६।९
क्षरश्चाक्षर एव च १५।१६
क्षरः सर्वाणि भूतानि १५।१६
क्षात्रं कर्म
स्वभावजम् १८।४३
क्षान्तिरार्जवमेव च १८।४२
क्षिपाम्य-
जस्रमशुभान् १६।१९

क्षिप्रं हि मानुषे लोके ४।१२
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा ९।३१
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ९।२१
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यम् २।३
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवम् १३।३४
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानम् १३।२
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् १३।२६
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नम् १३।३३
क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः १३।१
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि १३।२
क्षेत्रमित्यभिधीयते १३।१

ख

खं मनो बुद्धिरेव च ७।४

ग

गच्छन्त्यपुनरावृत्तिम् ५।१७
गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् १५।५
गतसङ्गस्य मुक्तस्य ४।२३
गतागतं कामकामा लभन्ते ९।२१
गतासूनगतासूंश्च २।११
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी ९।१८
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घाः ११।२२
गन्धर्वाणां चित्ररथः १०।२६
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे ११।३७
गहना कर्मणो गतिः ४।१७
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात् १।३०
गामाविश्य च भूतानि १५।१३
गायत्री छन्दसामहम् १०।३५
गिरामस्म्येकमक्षरम् १०।२५
गुडाकेशः परन्तप २।९
गुडाकेशेन भारत १।२४
गुणकर्मविभागयोः ३।२८
गुणकर्मविभागशः ४।१३
गुणतस्त्रिविधं शृणु १८।२९
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः १५।२
गुणाः गुणेषु वर्तन्ते ३।२८
गुणातीतः स उच्यते १४।२५
गुणानेतानतीत्य त्रीन् १४।२०
गुणाः प्रकृतिसम्भवाः १४।५
गुणा वर्तन्त इत्येव १४।२३
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति १४।१९
गुणैः कर्माणि सर्वशः ३।२७
गुणैर्यो न विचाल्यते १४।२३
गुरुणापि विचाल्यते ६।२२
गुरूनहत्वा हि महानुभावान् २।५
गुह्यमध्यात्मसञ्ज्ञितम् ११।१
गुह्याद् गुह्यतरं मया १८।६३
गृहीत्वैतानि संयाति १५।८
ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च १३।१६
ग्लानिर्भवति भारत ४।७

घ

घ्नतोऽपि मधुसूदन १।३५

च

चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ५।२७
चञ्चलं हि मनः कृष्ण ६।३४
चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम् ६।३३
चतुर्विधा भजन्ते माम् ७।१६
चत्वारो मनवस्तथा १०।६
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टम् ४।१३
चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम् ३।२५
चिन्तामपरिमेयां च १६।११
चिन्त्योऽसि भगवन्मया १०।१७
चेतसा नान्यगामिना ८।८
चेतसा सर्वकर्माणि १८।५७

चैलाजिनकुशोत्तरम् ६।११
छ
छन्दांसि यस्य पर्णानि १५।१
छन्दोभिर्विविधैः
पृथक् १३।४
छित्त्वैनं संशयं
योगम् ४।४२
छिन्नद्वैधा यतात्मानः ५।२५
छिन्नाभ्रमिव नश्यति ६।३८
छेत्ता न ह्युपपद्यते ६।३९
छेत्तुमर्हस्यशेषतः ६।३९
ज
जगतः शाश्वते मते ८।२६
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते
च ११।३६
जगदव्यक्तमूर्तिना ९।४
जगदाहुरनीश्वरम् १६।८
जगद्भासयतेऽ-
खिलम् १५।१२
जगद्विपरिवर्तते ९।१०
जघन्यगुणवृत्तिस्थाः १४।१८
जना न विदुरासुराः १६।७
जनानां पुण्यकर्मणाम् ७।२८
जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ७।१६
जन्म कर्म च मे
दिव्यम् ४।९
जन्मकर्मफलप्रदाम् २।४३
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः २।५१
जन्ममृत्युजरादुःखैः १४।२०
जन्ममृत्युजराव्याधि- १३।८
जन्मानि तव चार्जुन ४।५
जयोऽस्मि
व्यवसायोऽस्मि १०।३६
जरामरणमोक्षाय ७।२९
जहि शत्रुं महाबाहो ३।४३
जाग्रतो नैव चार्जुन ६।१६
जातस्य हि ध्रुवो
मृत्युः २।२७
जातु कर्मण्यतन्द्रितः ३।२३
जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ३।५
जानाति पुरुषोत्तमम् १५।१९
जायते वर्णसङ्करः १।४१
जिज्ञासुरपि योगस्य ६।४४
जितात्मनः प्रशान्तस्य ६।७
जितात्मा विगत-
स्पृहः १८।४९
जित्वा वा भोक्ष्यसे
महीम् २।३७
जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व
राज्यं समृद्धम् ११।३३
जीवनं सर्वभूतेषु ७।९
जीवभूतः सनातनः १५।७
जीवभूतां महाबाहो ७।५
जुह्वति ज्ञानदीपिते ४।२७
जोषयेत्सर्वकर्माणि ३।२६
ज्ञातव्यमवशिष्यते ७।२
ज्ञातुं द्रष्टुं
च तत्त्वेन ११।५४
ज्ञात्वा भूतादि-
मव्ययम् ९।१३
ज्ञात्वा मां
शान्तिमृच्छति ५।२९
ज्ञात्वा शास्त्र-
विधानोक्तम् १६।२४
ज्ञानं यदा तदा
विद्यात् १४।११
ज्ञानं लब्ध्वा परां
शान्तिम् ४।३९
ज्ञानं विज्ञान-
मास्तिक्यम् १८।४२
ज्ञानं विज्ञान-
सहितम् ९।१
ज्ञानं कर्म च
कर्ता च १८।१९
ज्ञानं ज्ञानवतामहम् १०।३८
ज्ञानं ज्ञेयं
ज्ञानगम्यम् १३।१७
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता १८।१८
ज्ञानदीपेन भास्वता १०।११
ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ५।१७
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानम् ७।२
ज्ञानमावृत्य तु तमः १४।९
ज्ञानमावृत्य देहिनम् ३।४०
ज्ञानयज्ञः परन्तप ४।३३
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये ९।१५
ज्ञानयज्ञेन तेनाहम् १८।७०
ज्ञानयोगव्यवस्थितिः १६।१

ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानाम् ३।३
ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ७।१९
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा ६।८
ज्ञानविज्ञाननाशनम् ३।४१
ज्ञानसङ्गेन चानघ १४।६
ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम् ४।४१
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम् ४।१९
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि ४।३७
ज्ञानाद्ध्यानं
विशिष्यते १२।१२
ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् १४।१
ज्ञानावस्थितचेतसः ४।२३
ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ४।३४
ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ३।३९
ज्ञानिभ्योऽपि
मतोऽधिकः ६।४६
ज्ञानी च भरतर्षभ ७।१६
ज्ञानी त्वात्मैव मे
मतम् ७।१८
ज्ञानेन तु तदज्ञानम् ५।१६
ज्ञाने परिसमाप्यते ४।३३
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि १३।१२
ज्ञेयं चोक्तं
समासतः १३।१८
ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी ५।३
ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ८।२
ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते ३।१
ज्योतिषां रवि-
रंशुमान् १०।२१
ज्योतिषामपि
तज्ज्योतिः १३।१७

झ

झषाणां मकरश्चास्मि १०।३१

त

तं यज्ञं विद्धि
राजसम् १७।१२
तं विद्याद्
दुःखसंयोग- ६।२३
तं तं नियममास्थाय ७।२०
तं तथा कृपयाविष्टम् २।१
तं तमेवैति कौन्तेय ८।६
त इमेऽवस्थिता युद्धे १।३३
तच्च संस्मृत्य
संस्मृत्य १८।७७
तज्ज्ञानं विद्धि
राजसम् १८।२१
तज्ज्ञानं विद्धि
सात्त्विकम् १८।२०
तत एव च
विस्तारम् १३।३०
ततः कुरु यतात्मवान्
१२।११
ततः पदं तत्परिमार्गि-
तव्यम् १५।४
ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च १।१३
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते १।१४
ततस्ततो नियम्यैतत् ६।२६
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च २।३३
ततः स
विस्मयाविष्टः ११।१४
ततो दुःखतरं नु किम् २।३६
ततो भवति भारत १४।३
ततो मां तत्त्वतो
ज्ञात्वा १८।५५
ततो याति परां
गतिम् ६।४५,
१३।२८, १६।२२
ततो युद्धाय युज्यस्व २।३८
ततो यान्त्यधमां
गतिम् १६।२०
ततो वक्ष्यामि ते
हितम् १८।६४
तत्किं कर्मणि घोरे
माम् ३।१
तत्कुरुष्व मदर्पणम् ९।२७
तत्क्षामये त्वामहम-
प्रमेयम् ११।४२
तत्क्षेत्रं यच्च
यादृक् च १३।३
तत्तत्प्राप्य
शुभाशुभम् १२।५७
तत्तदेवावगच्छ
त्वम् १०।४१
तत्तदेवेतरो जनः ३।२१
तत्तामसमुदाहृतम् १७।१९,
२२; १८।२२, ३९
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि ४।१६

तत्तेजो विद्धि-
मामकम् १५।१२
तत्ते पदं सङ्ग्रहेण
प्रवक्ष्ये ८।११
तत्परः संयतेन्द्रियः ४।३९
तत्प्रसादात्परां
शान्तिम् १८।६२
तत्र का परिदेवना २।२८
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिः ८।२५
तत्र तं बुद्धिसंयोगम् ६।४३
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ८।२४
तत्र श्रीर्विजयो भूतिः १८।७८
तत्र सत्त्वं
निर्मलत्वात् १४।६
तत्रापश्यत्स्थिता-
न्पार्थः १।२६
तत्रैकस्थं
जगत्कृत्स्नम् ११।१३
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा ६।१२
तत्रैवं सति कर्तारम् १८।१६
तत्रैवाव्यक्तसञ्ज्ञके ८।१८
तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् १३।११
तत्त्वमिच्छामि
वेदितुम् १८।१
तत्त्ववित्तु महाबाहो ३।२८
तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ९।२४
तत्समासेन मे शृणु १३।३
तत्सुखं राजसं
स्मृतम् १८।३८

तत्सुखं सात्त्विकं
प्रोक्तम् १८।३७
तत्स्वयं योगसंसिद्धः ४।३८
तथा तवामी नर-
लोकवीराः ११।२८
तथा तेनेदमावृतम् ३।३८
तथात्मा नोपलिप्यते १३।३२
तथा देहान्तरप्राप्तिः २।१३
तथान्तर्ज्योतिरेव यः ५।२४
तथापि त्वं महाबाहो २।२६
तथाप्नोति निबोध
मे १८।५०
तथा प्रलीनस्तमसि १४।१५
तथा मानापमानयोः ६।७;
१२।१८
तथा शरीराणि विहाय
जीर्णानि २।२२
तथा सर्वाणि भूतानि ९।६
तथैव च पितामहाः १।३४
तथैव नाशाय विशन्ति
लोकाः ११।२९
तदर्थं कर्म कौन्तेय ३।९
तदस्य हरति प्रज्ञाम् २।६७
तदहं भक्त्युपहृतम् ९।२६
तदा गन्तासि निर्वेदम् २।५२
तदात्मानं सृजाम्यहम् ४।७
तदा योगमवाप्स्यसि २।५३
तदित्यनभिसन्धाय १७।२५
तदेकं वद निश्चित्य ३।२

तदेव मे दर्शय
देवरूपम् ११।४५
तदेव मे रूपमिदं
प्रपश्य ११।४९
तदोत्तमविदां
लोकान् १४।१४
तद्दानं राजसं
स्मृतम् १७।२१
तद्दानं सात्त्विकं
स्मृतम् १७।२०
तद्धाम परमं मम ८।२१;
१५।६
तद्बुद्धयस्तदात्मानः ५।१७
तद्भवत्यल्पमेधसाम् ७।२३
तद्योगैरपि गम्यते ५।५
तद्राजसमुदाहृतम् १८।२४
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति
सर्वे २।७०
तद्विद्धि प्रणिपातेन ४।३४
तद्विद्धि भरतर्षभ १३।२६
तन्निबध्नाति कौन्तेय १४।७
तन्निबध्नाति भारत १४।८
तन्निष्ठास्तत्परायणाः ५।१७
तन्मे क्षेमतरं भवेत् १।४६
तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ५।१
तपश्चास्मि तपस्विषु ७।९
तपस्तत्त्रिविधं नरैः १७।१७
तपस्तप्तं कृतं
च यत् १७।२८

तपस्विभ्योऽधिको योगी ६।४६
तपाम्यहमहं वर्षम् ९।१९
तपो दम्भेन चैव यत् १७।१८
तपो दानं यशोऽयशः १०।५
तपो मानसमुच्यते १७।१६
तप्यन्ते ये तपो जनाः १७।५
तमसः परमुच्यते १३।१७
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि १४।८
तमस्येतानि जायन्ते १४।१३
तमः सत्त्वं रजस्तथा १४।१०
तमाहुः पण्डितं बुधाः ४।१९
तमाहुः परमां गतिम् ८।२१
तमुवाच हृषीकेशः २।१०
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये १५।४
तमेव शरणं गच्छ १८।६२
तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः १६।२२
तयापहृतचेतसाम् २।४४
तयोर्न वशमागच्छेत् ३।३४
तयोस्तु कर्मसन्न्यासात् ५।२
तव शिष्येण धीमता १।३
तव सौम्यं जनार्दन ११।५१
तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ११।२९
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते १६।२४
तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ ३।४१
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व ११।३३
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायम् ११।४४
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म ३।१५
तस्मात्सर्वाणि भूतानि २।३०
तस्मात्सर्वेषु कालेषु ८।७, २७
तस्मादज्ञानसम्भूतम् ४।४२
तस्मादपरिहार्येऽर्थे २।२७
तस्मादसक्तः सततम् ३।१९
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय २।३७
तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् १६।२१
तस्मादेवं विदित्वैनम् २।२५
तस्मादोमित्युदाहृत्य १७।२४
तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ५।१९
तस्माद्यस्य महाबाहो २।६८
तस्माद्युध्यस्व भारत २।१८
तस्माद्योगाय युज्यस्व २।५०
तस्माद्योगी भवार्जुन ६।४६
तस्मान्नार्हा वयं हन्तुम् १।३७
तस्मिन् गर्भं दधाम्यहम् १४।३
तस्य कर्तारमपि माम् ४।१३
तस्य कार्यं न विद्यते ३।१७
तस्य तस्याचलां श्रद्धाम् ७।२१
तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता २।५७, ५८, ६१, ६८
तस्य सञ्जनयन्हर्षम् १।१२
तस्यां जागर्ति संयमी २।६९
तस्याराधनमीहते ७।२२
तस्याहं सुलभः पार्थ ८।१४
तस्याहं न प्रणश्यामि ६।३०
तस्याहं निग्रहं मन्ये ६।३४
तांस्तथैव भजाम्यहम् ४।११
तांस्तितिक्षस्व भारत २।१४
तानकृत्स्नविदो मन्दान्३।२९
तानहं द्विषतः क्रूरान् १६।१९
तानि सर्वाणि संयम्य २।६१
तान्निबोध द्विजोत्तम १।७
तान्यहं वेद सर्वाणि ४।५
तान्विद्ध्यासुर-निश्चयान् १७।६
तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः १।२७

तामसं परिचक्षते १७।१३
तामसः परिकीर्तितः १८।७
तामसी चेति तां शृणु १७।२
तामेव विदधाम्यहम् ७।२१
तावान्सर्वेषु वेदेषु २।४६
तासां ब्रह्म महद्योनिः १४।४
तिष्ठन्तं परमेश्वरम् १३।२७
तीक्ष्णरूक्षविदाहिनः १७।९
तुमुलो व्यनुनादयन् १।१९
तुल्यनिन्दात्म-
संस्तुतिः १४।२४
तुल्यनिन्दास्तुति-
मौनी १२।१९
तुल्यप्रियाप्रियो धीरः १४।२४
तुल्यो मित्रारिपक्षयोः १४।२५
तुष्यन्ति च रमन्ति च १०।९
तृष्णासङ्गसमुद्भवम् १४।७
तेजः क्षमा धृतिः
शौचम् १६।३
तेजश्चास्मि विभावसौ ७।९
तेजस्तेजस्विनामहम् ७।१०,
१०।३६
तेजोभिरापूर्य
जगत्समग्रम् ११।३०
तेजोमयं विश्वमनन्त-
माद्यम् ११।४७
तेजोराशिं सर्वतो
दीप्तिमन्तम् ११।१७
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं
विशालम् ९।२१
ते देवा भावयन्तु वः ३।११
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता: ७।२८
तेन मुह्यन्ति जन्तवः ५।१५
तेनैव रूपेण
चतुर्भुजेन ११।४६
तेऽपि चातितरन्त्येव १३।२५
तेऽपि मामेव कौन्तेय ९।२३
तेऽपि यान्ति
परां गतिम् ९।३२
ते पुण्यमासाद्य
सुरेन्द्रलोकम् ९।२०
ते प्राप्नुवन्ति
मामेव १२।४
ते ब्रह्म तद्विदुः
कृत्स्नम् ७।२९
ते मे युक्ततमा मताः १२।२
तेऽवस्थिताः प्रमुखे
धार्तराष्ट्राः २।६
ते विदुर्युक्तचेतसः ७।३०
तेषां सततयुक्तानाम् १०।१०
तेषां के योगवित्तमाः १२।१
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्तः ७।१७
तेषां नित्या-
भियुक्तानाम् ९।२२
तेषां निष्ठा तु का
कृष्ण १७।१
तेषामहं समुद्धर्ता १२।७
तेषामादित्यवज्ज्ञानम् ५।१६
तेषामेवानुकम्पार्थम् १०।११
तेषां भेदमिमं शृणु १७।७
तेऽहोरात्रविदो जनाः ८।१७
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यः ३।१२
तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ३।३४
त्यक्तसर्वपरिग्रहः ४।२१
त्यक्तुं कर्माण्य-
शेषतः १८।११
त्यक्त्वा
कर्मफलासङ्गम् ४।२०
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म ४।९
त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ६।२४
त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप २।३
त्यजत्यन्ते कलेवरम् ८।६
त्यागः शान्तिर-
पैशुनम् १६।२
त्यागस्य च हृषीकेश १८।१
त्यागाच्छान्ति-
रनन्तरम् १२।१२
त्यागी सत्त्व-
समाविष्टः १८।१०
त्यागे भरतसत्तम १८।४
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र १८।४
त्याज्यं दोषवदित्येके १८।३
त्रायते महतो भयात् २।४०
त्रिधैव गुणभेदतः १८।१९

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः ७।१३
त्रिविधं कर्मणः
फलम् १८।१२
त्रिविधं नरकस्येदम् १६।२१
त्रिविधः
कर्मसङ्ग्रहः १८।१८
त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः १८।४
त्रिविधा कर्मचोदना १८।१८
त्रिविधा भवति
श्रद्धा १७।२
त्रिविधो भवति प्रियः १७।७
त्रिषु लोकेषु किञ्चन ३।२२
त्रीन्गुणानतिवर्तते १४।२१
त्रैगुण्यविषया वेदाः २।४५
त्रैविद्या मां सोमपाः
पूतपापाः ९।२०
त्वक् चैव परिदह्यते १।३०
त्वत्तः कमलपत्राक्ष ११।२
त्वत्प्रसादान्मयाच्युत १८।७३
त्वदन्यः संशयस्यास्य ६।३९
त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः २।१६
त्वमक्षरं परमं
वेदितव्यम् ११।१८
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं
यत् ११।३७
त्वमव्ययः शाश्वत-
धर्मगोप्ता ११।१८
त्वमस्य पूज्यश्च
गुरुर्गरीयान् ११।४३
त्वमस्य विश्वस्य परं
निधानम् ११।१८, ३८
त्वमादिदेवः पुरुषः
पुराणः ११।३८
त्वमादौ प्रोक्तवानिति ४।४
त्वया ततं विश्व-
मनन्तरूप ११।३८
त्वयैकाग्रेण चेतसा १८।७२
त्वां सदा
परिचिन्तयन् १०।१७

द

दंष्ट्राकरालानि च ते
मुखानि ११।२५
दंष्ट्राकरालानि
भयानकानि ११।२७
दण्डो दमयतामस्मि १०।३८
ददामि बुद्धियोगं
तम् १०।१०
दम्भमानमदान्विताः १६।१०
दम्भार्थमपि चैव
यत् १७।१२
दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः १७।५
दम्भेनाविधिपूर्वकम् १६।१७
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च १६।४
दया भूतेष्वलोलुप्त्वम् १६।२
दर्शयात्मानमव्ययम् ११।४
दर्शयामास पार्थाय ११।९
दातव्यमिति
यद्दानम् १७।२०
दानक्रियाश्च
विविधाः १७।२५
दानं दमश्च यज्ञश्च १६।१
दानमीश्वरभावश्च १८।४३
दानेषु यत्पुण्यफलं
प्रदिष्टम् ८।२८
दास्यन्ते यज्ञभाविताः ३।१२
दिवि देवेषु वा पुनः १८।४०
दिवि सूर्यसहस्रस्य ११।१२
दिव्यगन्धानुलेपनम् ११।११
दिव्यं ददामि ते
चक्षुः ११।८
दिव्यमाल्याम्बर-
धरम् ११।११
दिव्यानेकोद्यतायुधम् ११।१०
दिव्या ह्यात्म-
विभूतयः १०।१६, १९
दिव्यौ शङ्खौ
प्रदध्मतुः १।१४
दिशश्चानवलोकयन् ६।१३
दिशो न जाने न लभे
च शर्म ११।२५
दीप्तानलार्कद्युति-
मप्रमेयम् ११।१७
दीयते च
परिक्लिष्टम् १७।२१
दीयतेऽनुपकारिणे १७।२०
दुःखदोषानुदर्शनम् १३।८
दुःखमाप्तुमयोगतः ५।६

दुःखमित्येव यत्कर्म १८।८
दुःखयोनय एव ते ५।२२
दुःखशोकामयप्रदाः १७।९
दुःखान्तं च
निगच्छति १८।३६
दुःखालयमशाश्वतम् ८।१५
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः २।५६
दुर्गतिं तात गच्छति ६।४०
दुष्पूरेणानलेन च ३।३९
दुष्प्राप इति मे
मतिः ६।३६
दूरस्थं चान्तिके
च तत् १३।१५
दूरेण ह्यवरं कर्म २।४९
दृष्टवानसि मां यथा ११।५३
दृष्टवानसि यन्मम ११।५२
दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकम् १।२
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं
तवेदम् ११।२०
दृष्ट्वा रूपं घोर-
मीदृङ्ममेदम् ११।४९
दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथिता-
स्तथाहम् ११।२३
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथिता-
न्तरात्मा ११।२४
दृष्ट्वेदं मानुषं रूपम् ११।५१
दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण १।२८
दृष्ट्वैव कालानल-
सन्निभानि ११।२५
देवदत्तं धनंजय १।१५
देवदेव जगत्पते १०।१५
देवद्विजगुरुप्राज्ञ- १७।१४
देवर्षिर्नारदस्तथा १०।१३
देवर्षीणां च नारदः १०।२६
देवा अप्यस्य
रूपस्य ११।५२
देवानामस्मि
वासवः १०।२२
देवान्देवयजो यान्ति ७।२३
देवान्भावयतानेन ३।११
देशे काले च
पात्रे च १७।२०
देहवद्भिरवाप्यते १२।५
देहिनां सा स्वभावजा १७।२
देहिनोऽस्मिन्यथा
देहे २।१३
देही देहसमुद्भवान् १४।२०
देही नित्य-
मवध्योऽयम् २।३०
देहे देहभृतां वर ८।४
देहे देहिनमव्ययम् १४।५
देहे सर्वस्य भारत २।३०
देहेऽस्मिन्पुरुषः
परः १३।२२
देहेऽस्मिन्मधुसूदन ८।२
दैव आसुर एव च १६।६
दैवं चैवात्र
पञ्चमम् १८।१४
दैवमेवापरे यज्ञम् ४।२५
दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ९।१३
दैवी सम्पद्विमोक्षाय १६।५
दैवी ह्येषा गुणमयी ७।१४
दैवो विस्तरशः
प्रोक्तः १६।६
दोषैरेतैः
कुलघ्नानाम् १।४३
द्यावापृथिव्यो-
रिदमन्तरं हि ११।२०
द्यूतं छलयतामस्मि १०।३६
द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो
मयि ४।३५
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञाः ४।२८
द्रष्टुं त्वदन्येन
कुरुप्रवीर ११।४८
द्रष्टुमिच्छामि
ते रूपम् ११।३
द्रुपदश्च महारथः १।४
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च १।१८
द्रोणं च भीष्मं च
जयद्रथं च ११।३४
द्रोणं च मधुसूदन २।४
द्वन्द्वमोहेन भारत ७।२७
द्वन्द्वः सामासिकस्य
च १०।३३
द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ४।२२
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः
सुखदुःखसञ्ज्ञैः १५।५

द्वारं नाशनमात्मनः १६।२१
द्वाविमौ पुरुषौ
लोके १५।१६
द्वौ भूतसर्गौ
लोकेऽस्मिन् १६।६

ध

धनमानमदान्विताः १६।१७
धनुरुद्यम्य पाण्डवः १।२०
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे १।१
धर्मसंस्थापनार्थाय ४।८
धर्मस्यास्य परन्तप ९।३
धर्माविरुद्धो भूतेषु ७।११
धर्मे नष्टे कुलं
कृत्स्नम् १।४०
धर्म्यं संवाद-
मावयोः १८।७०
धर्म्याद्धि युद्धा-
च्छ्रेयोऽन्यत् २।३१
धाताहं विश्वतोमुखः १०।३३
धारयन्नचलं स्थिरः ६।१३
धारयाम्यहमोजसा १५।१३
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेः १।२३
धार्तराष्ट्रान्
कपिध्वजः १।२०
धार्तराष्ट्रान्
स्वबान्धवान् १।३७
धार्तराष्ट्रा
रणे हन्युः १।४६
धीरस्तत्र न मुह्यति २।१३
धूमेनाग्निरिवावृताः १८।४८
धूमेनाव्रियते वह्निः ३।३८
धूमो रात्रिस्तथा
कृष्णः ८।२५
धृतिं न विन्दामि
शमं च विष्णो ११।२४
धृतिः सा पार्थ
तामसी १८।३५
धृतिः सा पार्थ
राजसी १८।३४
धृतिः सा पार्थ
सात्त्विकी १८।३३
धृत्यात्मानं
नियम्य च १८।५१
धृत्या धारयतेऽर्जुन १८।३४
धृत्या यया
धारयते १८।३३
धृत्युत्साह-
समन्वितः १८।२६
धृष्टकेतुश्चेकितानः १।५
धृष्टद्युम्नो विराटश्च १।१७
धेनूनामस्मि
कामधुक् १०।२८
ध्यानयोगपरो
नित्यम् १८।५२
ध्यानात्कर्म-
फलत्यागः १२।१२
ध्यानेनात्मनि
पश्यन्ति १३।२४
ध्यायतो विषयान्पुंसः २।६२
ध्रुवं जन्म मृतस्य च २।२७
ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम १८।७८

न

न करोति न
लिप्यते १३।३१
न कर्तृत्वं न कर्माणि ५।१४
न कर्मणामनारम्भात् ३।४
न कर्मफलसंयोगम् ५।१४
न कर्मस्वनुषज्जते ६।४
न कश्चित्कर्तुमर्हति २।१७
न काङ्क्षे विजयं
कृष्ण १।३२
न किञ्चिदपि
चिन्तयेत् ६।२५
न कुर्यां कर्म
चेदहम् ३।२४
नकुलः सहदेवश्च १।१६
नक्षत्राणामहं
शशी १०।२१
न च क्रियाभिर्न
तपोभिरुग्रैः ११।४८
न च तत्प्रेत्य
नो इह १७।२८
न च तस्मान्मनुष्येषु १८।६९
न च मत्स्थानि भूतानि ९।५
न च मां तानि कर्माणि ९।९
न च मां योऽभ्य-
सूयति १८।६७

न च राज्यं सुखानि च १।३२
न च शक्नोम्यवस्थातुम् १।३०
न च श्रेयोऽनुपश्यामि १।३१
न च सन्न्यसनादेव ३।४
न चातिस्वप्नशीलस्य ६।१६
न चाभावयतः शान्तिः २।६६
न चायुक्तस्य भावना २।६६
न चाशुश्रूषवे वाच्यम् १८।६७
न चास्य सर्वभूतेषु ३।१८
न चाहं तेष्ववस्थितः ९।४
नचिरेणाधिगच्छति ५।६
न चैकान्तमनश्नतः ६।१६
न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयः २।६
न चैनं क्लेदयन्त्यापः २।२३
न चैव न भविष्यामः २।१२
न चैव सुकृतं विभुः ५।१५
न जायते म्रियते वा कदाचित् २।२०
न तदस्ति पृथिव्यां वा १८।४०
न तदस्ति विना यत्स्यात् १०।३९
न तद्भासयते सूर्यः १५।६
न तु मां शक्यसे द्रष्टुम् ११।८
न तु मामभिजानन्ति ९।२४
न तु सन्न्यासिनां क्वचित् १८।१२
न तेषु रमते बुधः ५।२२
न त्याज्यं कार्यमेव तत् १८।५
न त्याज्यमिति चापरे १८।३
न त्वं वेत्थ परन्तप ४।५
न त्वं शोचितुमर्हसि २।२७, ३०
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यः ११।४३
न त्वं नेमे जनाधिपाः २।१२
न त्वहं तेषु ते मयि ७।१२
न त्वेवाहं जातु नासम् २।१२
न दानेन न चेज्यया ११।५३
न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि १४।२२
न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म १८।१०
न निरग्निर्न चाक्रियः ६।१
न निवृत्तानि काङ्क्षति १४।२२
न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ३।८
न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य ५।२०
न बुद्धिभेदं जनयेत् ३।२६
नभश्च पृथिवीं चैव १।१९
नभः स्पृशं दीप्तमनेकवर्णम् ११।२४
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते ११।४०
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णम् ११।३५
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या ९।१४
न मां कर्माणि लिम्पन्ति ४।१४
न मां दुष्कृतिनो मूढाः ७।१५
न मे कर्मफले स्पृहा ४।१४
न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ९।२९
न मे पार्थास्ति कर्तव्यम् ३।२२
न मे भक्तः प्रणश्यति ९।३१
न मे विदुः सुरगणाः १०।२
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः ११।३९

नमोऽस्तु ते देववर
प्रसीद ११।३१
नमोऽस्तु ते सर्वत
एव सर्व ११।४०
न योत्स्य इति
गोविन्दम् २।९
न योत्स्य इति
मन्यसे १८।५९
नरकेऽनियतं वासः १।४४
नराणां च
नराधिपम् १०।२७
न रूपमस्येह
तथोपलभ्यते १५।३
नवद्वारे पुरे देही ५।१३
नवानि गृह्णाति
नरोऽपराणि २।२२
न विकम्पितुमर्हसि २।३१
न विमुञ्चति
दुर्मेधाः १८।३५
न वेदयज्ञाध्ययनैर्न
दानैः ११।४८
न शक्नोषि मयि
स्थिरम् १२।९
न शशाङ्को न पावकः १५।६
न शोचति न काङ्क्षति
१२।१७; १८।५४
न शोषयति मारुतः २।२३
न शौचं नापि
चाचारः १६।७
नश्यत्सु न
विनश्यति ८।२०
न श्रोष्यसि
विनङ्क्ष्यसि १८।५८
नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः १६।९
नष्टो मोहः
स्मृतिर्लब्धा १८।७३
न सत्तन्नासदुच्यते १३।१२
न सत्यं तेषु विद्यते १६।७
न स पश्यति दुर्मतिः १८।१६
न स भूयोऽ-
भिजायते १३।२३
न स सिद्धि-
मवाप्नोति १६।२३
न सुखं संशयात्मनः ४।४०
न सुखं न परां
गतिम् १६।२३
न हन्ति न
निबध्यते १८।१७
न हन्यते हन्यमाने
शरीरे २।२०
न हि कल्याण-
कृत्कश्चित् ६।४०
न हि कश्चित् क्षणमपि ३।५
न हि ज्ञानेन सदृशम् ४।३८
न हि ते
भगवन् व्यक्तिम् १०।१४
न हि देहभृता
शक्यम् १८।११
न हिनस्त्या-
त्मनात्मानम् १३।२८
न हि प्रजानामि तव
प्रवृत्तिम् ११।३१
न हि प्रपश्यामि
ममापनुद्यात् २।८
न ह्यसंन्यस्तसङ्कल्पः ६।२
नाकृतेनेह कश्चन ३।१८
नात्मानमवसादयेत् ६।५
नात्यश्नतस्तु
योगोऽस्ति ६।१६
नात्युच्छ्रितं
नातिनीचम् ६।११
नादत्ते कस्य-
चित्पापम् ५।१५
नानवाप्तमवाप्तव्यम् ३।२२
नानाभावान्
पृथग्विधान् १८।२१
नानावर्णाकृतीनि च ११।५
नानाविधानि
दिव्यानि ११।५
नानाशस्त्रप्रहरणाः १।९
नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ३।३२
नानुवर्तयतीह यः ३।१६
नानुशोचन्ति
पण्डिताः २।११
नानुशोचितुमर्हसि २।२५
नान्तं न मध्यं न
पुनस्तवादिम् ११।१६

नान्तो न चादिर्न
च सम्प्रतिष्ठा १५।३
नान्तोऽस्ति मम
दिव्यानाम् १०।४०
नान्यं गुणेभ्यः
कर्तारम् १४।१९
नान्यदस्तीति वादिनः २।४२
नाप्नुवन्ति महात्मानः ८।१५
नाभक्ताय कदाचन १८।६७
नाभावो विद्यते सतः २।१६
नाभिनन्दति न द्वेष्टि २।५७
नायं भूत्वा भविता
वा न भूयः २।२०
नायं लोकोऽस्ति
न परः ४।४०
नायं लोकोऽस्त्य-
यज्ञस्य ४।३१
नायं हन्ति न हन्यते २।१९
नायका मम सैन्यस्य १।७
नाशयाम्यात्म-
भावस्थः १०।११
नासतो विद्यते भावः २।१६
नासाभ्यन्तरचारिणौ ५।२७
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य २।६६
नास्त्यन्तो
विस्तरस्य मे १०।१९
नाहं वेदैर्न तपसा ११।५३
नाहं प्रकाशः सर्वस्य ७।२५

निगृहीतानि सर्वशः २।६८
निगृह्णाम्युत्सृजामि च ९।१९
निग्रहः किं करिष्यति ३।३३
नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ३।१५
नित्यं वा मन्यसे
मृतम् २।२६
नित्यं च सम-
चित्तत्वम् १३।९
नित्यतृप्तो निराश्रयः ४।२०
नित्यं दर्शन-
काङ्क्षिणः ११।५२
नित्ययुक्तस्य योगिनः ८।१४
नित्ययुक्ता उपासते ९।१४;
१२।२
नित्यस्योक्ताः
शरीरिणः २।१८
नित्यः सर्वगतः
स्थाणुः २।२४
निद्रालस्य-
प्रमादोत्थम् १८।३९
निधानं बीजमव्ययम् ९।१८
निन्दन्तस्तव
सामर्थ्यम् २।३६
निबद्धः स्वेन
कर्मणा १८।६०
निबध्नन्ति धनञ्जय ४।४१;
९।९
निबध्नन्ति महाबाहो १४।५

निबन्धायासुरी मता १६।५
निमित्तमात्रं भव
सव्यसाचिन् ११।३३
निमित्तानि च
पश्यामि १।३१
नियतं कुरु कर्म त्वम् ३।८
नियतं सङ्गरहितम् १८।२३
नियतं क्रियतेऽर्जुन १८।९
नियतस्य तु सन्न्यासः १८।७
नियम्य भरतर्षभ ३।४१
नियम्यारभतेऽर्जुन ३।७
नियोजयसि केशव ३।१
निराशीरपरिग्रहः ६।१०
निराशीर्निर्ममो भूत्वा ३।३०
निराशीर्यतचित्तात्मा ४।२१
निराहारस्य देहिनः २।५९
निरुद्धं योगसेवया ६।२०
निर्गुणं गुणभोक्तृ च १३।१४
निर्दोषं हि समं ब्रह्म ५।१९
निर्द्वन्द्वो नित्य-
सत्त्वस्थः २।४५
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो ५।३
निर्ममो निरहङ्कारः २।७१;
१२।१३
निर्मानमोहा
जितसङ्गदोषाः १५।५
निर्योगक्षेम
आत्मवान् २।४५

निर्वैरः सर्वभूतेषु ११।५५
निवसिष्यसि मय्येव १२।८
निवासः शरणं सुहृत् ९।१८
निश्चयं शृणु मे तत्र १८।४
निश्चितं मतमुत्तमम् १८।६
निःश्रेयसकरावुभौ ५।२
निष्ठा ज्ञानस्य
या परा १८।५०
निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन २।४५
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यः
६।१८
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः १।३६
नीतिरस्मि
जिगीषताम् १०।३८
नेङ्गते सोपमा
स्मृता ६।१९
नेहाभिक्रम-
नाशोऽस्ति २।४०
नैतत्त्वय्युपपद्यते २।३
नैति मामेति सोऽर्जुन ४।९
नैते सृती पार्थ जानन् ८।२७
नैनं छिन्दन्ति
शस्त्राणि २।२३
नैनं दहति पावकः २।२३
नैनं पश्यन्त्यचेतसः १५।११
नैनां प्राप्य
विमुह्यति २।७२
नैवं शोचितुमर्हसि २।२६
नैव किञ्चित्करोति
सः ४।२०
नैव किञ्चित्करोमीति ५।८
नैव कुर्वन्न कारयन् ५।१३
नैव तस्य कृतेनार्थः ३।१८
नैव त्यागफलं
लभेत् १८।८
नैवं पापमवाप्स्यसि २।३८
नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ३।४
नैष्कर्म्यसिद्धिं
परमाम् १८।४९
नोद्विजेत्प्राप्य
चाप्रियम् ५।२०
न्याय्यं वा
विपरीतं वा १८।१५

प

पचाम्यन्नं
चतुर्विधम् १५।१४
पञ्च चेन्द्रियगोचराः १३।५
पञ्चैतानि महाबाहो १८।१३
पञ्चैते तस्य हेतवः १८।१५
पणवानकगोमुखाः १।१३
पण्डिताः समदर्शिनः ५।१८
पतन्ति नरकेऽ-
शुचौ १६।१६
पतन्ति पितरो
ह्येषाम् १।४२
पत्रं पुष्पं फलं तोयम् ९।२६
पदं गच्छन्त्य-
नामयम् २।५१
पद्मपत्रमिवाम्भसा ५।१०
परं जन्म विवस्वतः ४।४
परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ३।३५;
१८।४७
परधर्मो भयावहः ३।३५
परं दृष्ट्वा निवर्तते २।५९
परमं पुरुषं दिव्यम् ८।८
परमं रूपमैश्वरम् ११।९
परमात्मायमव्ययः १३।३१
परमात्मा समाहितः ६।७
परमात्मेति
चाप्युक्तः १३।२२
परमात्मेत्युदाहृतः १५।१७
परमाप्नोति पूरुषः ३।१९
परं ब्रह्म परं धाम १०।१२
परं भावमजानन्तः ७।२४;
९।११
परं भूयः प्रवक्ष्यामि १४।१
परस्तस्मात्तु
भावोऽन्यः ८।२०
परस्परं भावयन्तः ३।११
परस्योत्सादनार्थं
वा १७।१९
परां सिद्धिमितो
गताः १४।१
परिचर्यात्मकं कर्म १८।४४

परिणामेऽमृतोपमम् १८।३७
परिणामे विषमिव १८।३८
परित्राणाय साधूनाम् ४।८
परिप्रश्नेन सेवया ४।३४
पर्जन्यादन्नसम्भवः ३।१४
पर्याप्तं त्विदमेतेषाम् १।१०
पवनः पवतामस्मि १०।३१
पवित्रमिदमुत्तमम् ९।२
पवित्रमिह विद्यते ४।३८
पवित्रं परमं भवान् १०।१२
पश्यञ्शृण्वन्स्पृश-
ञ्जिघ्रन् ५।८
पश्यत्यकृत-
बुद्धित्वात् १८।१६
पश्यन्ति ज्ञान-
चक्षुषः १५।१०
पश्यन्त्या-
त्मन्यवस्थितम् १५।११
पश्यन्नात्मनि
तुष्यति ६।२०
पश्य मे पार्थ
रूपाणि ११।५
पश्य मे योगमैश्वरम् ९।५;
११।८
पश्यादित्यान्वसून्-
रुद्रान् ११।६
पश्याद्य सचराचरम् ११।७
पश्यामि त्वां सर्वतोऽ-
नन्तरूपम् ११।१६
पश्यामि त्वां दीप्तहुताश-
वक्त्रम् ११।१९
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं
समन्तात् ११।१७
पश्यामि देवांस्तव
देव देहे ११।१५
पश्यामि विश्वेश्वर
विश्वरूप ११।१६
पश्याश्चर्याणि भारत ११।६
पश्यैतां पाण्डु-
पुत्राणाम् १।३
पाञ्चजन्यं हृषीकेशः १।१५
पाण्डवानां धनञ्जयः १०।३७
पापं चरति पूरुषः ३।३६
पापमेवाश्रयेदस्मान् १।३६
पापादस्मान्निवर्तितुम् १।३९
पाप्मानं प्रजहि ह्येनम् ३।४१
पार्थ नैवेह नामुत्र ६।४०
पार्थ सम्पदमासुरीम् १६।४
पार्थस्य च
महात्मनः १८।७४
पावनानि मनीषिणाम् १८।५
पितासि लोकस्य
चराचरस्य ११।४३
पिताहमस्य जगतः ९।१७
पितृणामर्यमा
चास्मि १०।२९
पितॄनथ पितामहान् १।२६
पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ९।२५
पितेव पुत्रस्य
सखेव सख्युः ११।४४
पीडया क्रियते तपः १७।१९
पुण्यो गन्धः
पृथिव्यां च ७।९
पुत्रदारगृहादिषु १३।९
पुत्रान्पौत्रान्सखीं-
स्तथा १।२६
पुनरावर्तिनोऽर्जुन ८।१६
पुनर्जन्म न विद्यते ८।१६
पुनर्योगं च शंससि ५।१
पुनश्च भूयोऽपि
नमो नमस्ते ११।३९
पुमांश्चरति निःस्पृहः २।७१
पुरा प्रोक्ता मयानघ ३।३
पुरुजित् कुन्तिभोजश्च १।५
पुरुषं शाश्वतं
दिव्यम् १०।१२
पुरुषः प्रकृतिस्थो
हि १३।२१
पुरुषं पुरुषर्षभ २।१५
पुरुषश्चाधिदैवतम् ८।४
पुरुषस्य विपश्चितः २।६०
पुरुषः स परः पार्थ ८।२२
पुरुषः सुख-
दुःखानाम् १३।२०
पुरोधसां च मुख्यं
माम् १०।२४
पुरोवाच प्रजापतिः ३।१०

पुष्णामि चौषधीः
सर्वाः १५।१३
पूजनं शौच-
मार्जवम् १७।१४
पूजार्हावरिसूदन २।४
पूता मद्भावमागताः ४।१०
पूति पर्युषितं
च यत् १७।१०
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ६।४४
पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ४।१५
पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ४।१५
पृच्छामि त्वां धर्म-
सम्मूढचेताः २।७
पृथक्केशिनिषूदन १८।१
पृथक्त्वेन तु
यज्ज्ञानम् १८।२१
पृथक्त्वेन धनञ्जय १८।२९
पौण्ड्रं दध्मौ
महाशङ्खम् १।१५
प्रकाश उपजायते १४।११
प्रकाशकमनामयम् १४।६
प्रकाशं च प्रवृत्तिं च १४।२२
प्रकाशयति तत्परम् ५।१६
प्रकाशयति भारत १३।३३
प्रकृतिं यान्ति
भूतानि ३।३३
प्रकृतिं यान्ति
मामिकाम् ९।७
प्रकृतिं विद्धि मे
पराम् ७।५
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय ४।६
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य ९।८
प्रकृतिं च
गुणैः सह १३।२३
प्रकृतिं पुरुषं चैव १३।१९
प्रकृतिं मोहिनीं
श्रिताः ९।१२
प्रकृतिस्त्वां
नियोक्ष्यति १८।५९
प्रकृतिस्थानि
कर्षति १५।७
प्रकृतेः
क्रियमाणानि ३।२७
प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः ३।२९
प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ३।३३
प्रकृत्या नियताः
स्वया ७।२०
प्रकृत्यैव च
कर्माणि १३।२९
प्रजनश्चास्मि
कन्दर्पः १०।२८
प्रजहाति यदा
कामान् २।५५
प्रजापतिस्त्वं
प्रपितामहश्च ११।३९
प्रज्ञावादांश्च
भाषसे २।११
प्रणम्य शिरसा
देवम् ११।१४
प्रणवः सर्ववेदेषु ७।८
प्रतिजाने प्रियोऽसि
मे १८।६५
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यम् ९।२
प्रत्यवायो न विद्यते २।४०
प्रथितः पुरुषोत्तमः १५।१८
प्रदुष्यन्ति
कुलस्त्रियः १।४१
प्रद्विषन्तोऽ-
भ्यसूयकाः १६।१८
प्रनष्टस्ते धनञ्जय १८।७२
प्रपद्यन्ते नराधमाः ७।१५
प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ७।२०
प्रपश्यद्भिर्जनार्दन १।३९
प्रभवं न महर्षयः १०।२
प्रभवत्यहरागमे ८।१९
प्रभवन्त्यहरागमे ८।१८
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः १६।९
प्रभवः प्रलयस्तथा ७।६
प्रभवः प्रलयः
स्थानम् ९।१८
प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ७।८
प्रमाथि बलवद्
दृढम् ६।३४
प्रमादमोहौ
तमसः १४।१७
प्रमादालस्य-
निद्राभिः १४।८
प्रमादे सञ्जयत्युत १४।९
प्रमादो मोह
एव च १४।१३

प्रयत्नाद्यतमानस्तु ६ । ४५
प्रयाणकाले च कथम् ८ । २
प्रयाणकालेऽपि
च माम् ७ । ३०
प्रयाणकाले
मनसाचलेन ८ । १०
प्रयाता यान्ति
तं कालम् ८ । २३
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन् ५ । ९
प्रलयं याति
देहभृत् १४ । १४
प्रलयान्ता-
मुपाश्रिता: १६ । ११
प्रलये न व्यथन्ति च १४ । २
प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ९ । १
प्रवदन्ति न पण्डिता: ५ । ४
प्रवदन्त्यविपश्चित: २ । ४२
प्रवर्तन्ते
विधानोक्ता: १७ । २४
प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रता: १६ । १०
प्रविभक्तमनेकधा ११ । १३
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च १६ । ७;
१८ । ३०
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते १ । २०
प्रवेष्टुं च परन्तप ११ । ५४
प्रशस्ते कर्मणि
तथा १७ । २६
प्रशान्तमनसं ह्येनम् ६ । २७
प्रशान्तात्मा
विगतभी: ६ । १४

प्रसक्ता:
कामभोगेषु १६ । १६
प्रसङ्गेन फला-
काङ्क्षी १८ । ३४
प्रसन्नचेतसो ह्याशु २ । ६५
प्रसादमधिगच्छति २ । ६४
प्रसादये त्वामहमीश-
मीड्यम् ११ । ४४
प्रसादे सर्व-
दु:खानाम् २ । ६५
प्रसीद देवेश
जगन्निवास ११ । २५, ४५
प्रहसन्निव भारत २ । १०
प्रह्लादश्चास्मि
दैत्यानाम् १० । ३०
प्राक्शरीरविमोक्षणात्
५ । २३
प्राणकर्माणि चापरे ४ । २७
प्राणांस्त्यक्त्वा
धनानि च १ । ३३
प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ४ । ३०
प्राणापानगती
रुद्ध्वा ४ । २९
प्राणापानसमायुक्त: १५ । १४
प्राणापानौ समौ
कृत्वा ५ । २७
प्राणायामपरायणा: ४ । २९
प्राणिनां देहमाश्रित:
१५ । १४
प्राणेऽपानं तथापरे ४ । २९

प्राधान्यत:
कुरुश्रेष्ठ १० । १९
प्राप्नुयात्पुण्य-
कर्मणाम् १८ । ७१
प्राप्य पुण्यकृतां
लोकान् ६ । ४१
प्राहुस्त्यागं
विचक्षणा: १८ । २
प्रिय: प्रियायार्हसि
देव सोढुम् ११ । ४४
प्रियो हि ज्ञानिनोऽ-
त्यर्थम् ७ । १७
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये १७ । ४
प्रोक्तवानहमव्ययम् ४ । १
प्रोच्यते गुण-
संख्याने १८ । १९
प्रोच्यमानमशेषेण १८ । २९

फ

फलं यज्ञतप:
क्रिया: १७ । २५
फलं त्यक्त्वा
मनीषिण: २ । ५१
फलमुद्दिश्य वा
पुन: १७ । २१
फले सक्तो
निबध्यते ५ । १२

ब

बन्धं मोक्षं च या
वेत्ति १८ । ३०
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य ६ । ६

बलं बलवतां चाहम् ७।११
बलं भीमाभिरक्षितम् १।१०
बलं भीष्माभिरक्षितम्
१।१०
बलादिव नियोजितः ३।३६
बहवो ज्ञानतपसा ४।१०
बहिरन्तश्च
भूतानाम् १३।१५
बहुधा विश्वतोमुखम् ९।१५
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च २।४१
बहूदरं बहुदंष्ट्रा-
करालम् ११।२३
बहूनां जन्मनामन्ते ७।१९
बहूनि मे व्यतीतानि ४।५
बहून्यदृष्टपूर्वाणि ११।६
बाह्यस्पर्शेष्व-
सक्तात्मा ५।२१
बिभर्त्यव्यय ईश्वरः १५।१७
बीजं तदहमर्जुन १०।३९
बीजं मां सर्व-
भूतानाम् ७।१०
बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् २।४१
बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् ६।२१
बुद्धिनाशात्प्रणश्यति २।६३
बुद्धिः पर्यवतिष्ठते २।६५
बुद्धिं मोहयसीव मे ३।२
बुद्धियुक्तो जहातीह २।५०
बुद्धियोगमुपाश्रित्य १८।५७
बुद्धियोगाद्धनञ्जय २।४९
बुद्धिरव्यक्तमेव च १३।५
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः १०।४
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि ७।१०
बुद्धिर्यस्य न लिप्यते
१८।१७
बुद्धियोगे त्विमां शृणु २।३९
बुद्धिर्व्यतितरिष्यति २।५२
बुद्धिः सा पार्थ
तामसी १८।३२
बुद्धिः सा पार्थ
राजसी १८।३१
बुद्धिः सा पार्थ
सात्त्विकी १८।३०
बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव १८।२९
बुद्धौ शरणमन्विच्छ २।४९
बुद्ध्या धृतिगृहीतया ६।२५
बुद्ध्या युक्तो
यया पार्थ २।३९
बुद्ध्या विशुद्धया
युक्तः १८।५१
बुधा भावसमन्विताः १०।८
बृहत्साम तथा
साम्नाम् १०।३५
बोद्धव्यं च
विकर्मणः ४।१७
बोधयन्तः परस्परम् १०।९
ब्रह्मकर्मसमाधिना ४।२४
ब्रह्मकर्मस्व-
भावजम् १८।४२
ब्रह्मचर्य-
महिंसा च १७।१४
ब्रह्मचारिव्रते
स्थितः ६।१४
ब्रह्मणस्त्रिविधः
स्मृतः १७।२३
ब्रह्मणो हि
प्रतिष्ठाहम् १४।२७
ब्रह्मण्याधाय
कर्माणि ५।१०
ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति २।७२
ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ८।२४
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा १८।५४
ब्रह्मभूतमकल्मषम् ६।२७
ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ५।२४
ब्रह्मभूयाय
कल्पते १४।२६; १८।५३
ब्रह्मविद् ब्रह्मणि
स्थितः ५।२०
ब्रह्म सम्पद्यते
तदा १३।३०
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव १३।४
ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ३।१५
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञम् ४।२५
ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा
हुतम् ४।२४
ब्रह्माणमीशं कमला-
सनस्थम् ११।१५
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः ४।२४

ब्रह्मैव तेन गन्तव्यम् ४।२४
ब्राह्मणक्षत्रियविशाम् १८।४१
ब्राह्मणस्य विजानतः २।४६
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च १७।२३
ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ५।१८

भ

भक्ता राजर्षयस्तथा ९।३३
भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः १२।२०
भक्तास्त्वां पर्युपासते १२।१
भक्तिमान्मे प्रियो नरः १२।१९
भक्तिमान्यः स मे प्रियः १२।१७
भक्तिं मयि परां कृत्वा १८।६८
भक्तियोगेन सेवते १४।२६
भक्तिरव्यभिचारिणी १३।१०
भक्तोऽसि मे सखा चेति ४।३
भक्त्या त्वनन्यया शक्यः ११।५४
भक्त्या मामभिजानाति १८।५५
भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव ८।१०
भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ८।२२
भजतां प्रीतिपूर्वकम् १०।१०
भजते मामनन्यभाक् ९।३०
भजत्येकत्वमास्थितः ६।३१
भजन्ते मां दृढव्रताः ७।२८
भजन्त्यनन्यमनसः ९।१३
भयं चाभयमेव च १०।४
भयाद्रणादुपरतम् २।३५
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे ११।४५
भर्ता भोक्ता महेश्वरः १३।२२
भवतीत्यनुशुश्रुम १।४४
भवतोऽज्ञानमेव च १४।१७
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य १८।१२
भवन्तः सर्व एव हि १।११
भवन्ति भावा भूतानाम् १०।५
भवन्ति सम्पदं दैवीम् १६।३
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च १।८
भवाप्ययौ हि भूतानाम् ११।२
भवामि नचिरात्पार्थ १२।७
भविता न च मे तस्मात् १८।६९
भविष्यति पुनर्धनम् १६।१३
भविष्याणि च भूतानि ७।२६
भवेद्युगपदुत्थिता ११।१२
भस्मसात्कुरुते तथा ४।३७
भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ४।३७
भावमव्ययमीक्षते १८।२०
भावसंशुद्धि-रित्येतत् १७।१६
भासस्तस्य महात्मनः ११।१२
भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ११।३०
भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ७।४
भीमकर्मा वृकोदरः १।१५
भीमार्जुनसमा युधि १।४
भीष्मद्रोणप्रमुखतः १।२५
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु १।११
भीष्मो द्रोणः सूत-पुत्रस्तथासौ ११।२६
भुङ्क्ते प्रकृति-जान्गुणान् १३।२१
भुञ्जते ते त्वघं पापाः ३।१३
भुञ्जानं वा गुणान्वितम् १५।१०
भुञ्जीय भोगान्रुधिर-प्रदिग्धान् २।५
भूतग्राममचेतसः १७।६
भूतग्राममिमं कृत्स्नम् ९।८
भूतग्रामः स एवायम् ८।१९
भूतप्रकृतिमोक्षं च १३।३४
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयम् १३।१६
भूतभावन भूतेश १०।१५

भूतभावोद्भवकरः ८।३
भूतभृन्न च भूतस्थः ९।५
भूतानामन्त एव च १०।२०
भूतानामस्मि
चेतना १०।२२
भूतानामीश्वरोऽपि
सन् ४।६
भूतानि यानि
भूतेज्याः ९।२५
भूत्वा पुनः सौम्य-
वपुर्महात्मा ११।५०
भूत्वा भूत्वा
प्रलीयते ८।१९
भूत्वा यास्यसि
लाघवम् २।३५
भूमिरापोऽनलो वायुः ७।४
भूय एव महाबाहो १०।१
भूयः कथय तृप्तिर्हि १०।१८
भोक्ता च प्रभुरेव च ९।२४
भोक्तारं यज्ञतपसाम् ५।२९
भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते १३।२०
भोगैश्वर्यगतिं प्रति २।४३
भोगैश्वर्यप्रसक्तानाम् २।४४
भोजनं तामसप्रियम्
१७।१०
भ्रमतीव च मे मनः १।३०
भ्रामयन्सर्वभूतानि १८।६१
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य
सम्यक् ८।१०

म

मंस्यन्ते त्वां
महारथाः २।३५
मच्चित्तः सततं
भव १८।५७
मच्चित्तः
सर्वदुर्गाणि १८।५८
मच्चित्ता
मद्गतप्राणाः १०।९
मता बुद्धिर्जनार्दन ३।१
मत्कर्मकृन्मत्परमः ११।५५
मत्कर्मपरमो भव १२।१०
मत्त एव पृथग्विधाः १०।५
मत्त एवेति तान्विद्धि ७।१२
मत्तः परतरं नान्यत् ७।७
मत्तः सर्वं प्रवर्तते १०।८
मत्तः स्मृतिर्ज्ञान-
मपोहनं च १५।१५
मत्प्रसादात्तरिष्यसि १८।५८
मत्प्रसादादवाप्नोति १८।५६
मत्संस्थामधिगच्छति ६।१५
मत्स्थानि सर्वभूतानि ९।४
मत्स्थानीत्युपधारय ९।६
मदनुग्रहाय परमम् ११।१
मदर्थमपि कर्माणि १२।१०
मदर्थे त्यक्तजीविताः १।९
मद्गतेनान्तरात्मना ६।४७
मद्भक्त एतद्विज्ञाय १३।१८
मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ११।५५

मद्भक्ता यान्ति
मामपि ७।२३
मद्भक्तिं लभते
पराम् १८।५४
मद्भक्तेष्वभिधास्यति
१८।६८
मद्भावं
सोऽधिगच्छति १४।१९
मद्भावा मानसा
जाताः १०।६
मद्भावायोपपद्यते १३।१८
मद्याजी मां नमस्कुरु
९।३४; १८।६५
मध्यं चैवाहमर्जुन १०।३२
मध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ६।९
मध्ये तिष्ठन्ति
राजसाः १४।१८
मनः प्रसादः
सौम्यत्वम् १७।१६
मनः प्राणेन्द्रिय-
क्रियाः १८।३३
मनश्चञ्चलमस्थिरम् ६।२६
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि १५।७
मनसस्तु परा बुद्धिः ३।४२
मनसैवेन्द्रियग्रामम् ६।२४
मनः संयम्य मच्चित्तः ६।१४
मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ४।१
मनुष्याणां सहस्रेषु ७।३
मनुष्याणां जनार्दन १।४४

मनुष्याः पार्थ सर्वशः ३।२३; ४।११
मनो दुर्निग्रहं चलम् ६।३५
मनो हृदि निरुध्य च ८।१२
मन्त्रहीनमदक्षिणम् १७।१३
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यम् ९।१६
मन्मना भव मद्भक्तः ९।३४; १८।६५
मन्मया मामुपाश्रिताः ४।१०
मन्यते तमसावृता १८।३२
मन्यते नाधिकं ततः ६।२२
मन्यन्ते मामबुद्धयः ७।२४
मन्यसे यदि तच्छक्यम् ११।४
मम तेजोंऽश-सम्भवम् १०।४१
मम देहे गुडाकेश ११।७
मम भूतमहेश्वरम् ९।११
मम माया दुरत्यया ७।१४
मम योनिर्महद्ब्रह्म १४।३
मम यो वेत्ति तत्त्वतः १०।७
मम वर्त्मानुवर्तन्ते ३।२३; ४।११
मम साधर्म्यमागताः १४।२
ममात्मा भूतभावनः ९।५
ममाव्ययमनुत्तमम् ७।२४
ममैवांशो जीवलोके १५।७
मया ततमिदं सर्वम् ९।४
मया द्रष्टुमिति प्रभो ११।४
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः ९।१०
मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ११।४१
मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदम् ११।४७
मया भूतं चराचरम् १०।३९
मया हतांस्त्वं जहि
मा व्यथिष्ठाः ११।३४
मयि चानन्ययोगेन १३।१०
मयि ते तेषु चाप्यहम् ९।२९
मयि बुद्धि निवेशय १२।८
मयि संन्यस्य मत्परः १८।५७
मयि संन्यस्य मत्पराः १२।६
मयि सर्वमिदं प्रोतम् ७।७
मयि सर्वाणि कर्माणि ३।३०
मयैव विहितान्हि तान् ७।२२
मयैवैते निहताः पूर्वमेव ११।३३
मय्यर्पितमनोबुद्धिः ८।७; १२।१४
मय्यावेशितचेतसाम् १२।७
मय्यावेश्य मनो ये माम् १२।२
मय्यासक्तमनाः पार्थ ७।१
मय्येव मन आधत्स्व १२।८
मरणादतिरिच्यते २।३४
मरीचिर्मरुतामस्मि १०।२१
महति स्यन्दने स्थितौ १।१४
महर्षयः सप्त पूर्वे १०।६
महर्षीणां च सर्वशः १०।२
महर्षीणां भृगुरहम् १०।२५
महात्मानस्तु मां पार्थ ९।१३
महाबाहो बहुबाहू-रुपादम् ११।२३
महाभूतान्यहङ्कारः १३।५
महायोगेश्वरो हरिः ११।९
महाशनो महापाप्मा ३।३७
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य ९।३२
मा कर्मफलहेतुर्भूः २।४७
मां च योऽ-व्यभिचारेण १४।२६
मां चैवान्तः-शरीरस्थम् १७।६
माता धाता पितामहः ९।१७

मातुलाः श्वशुराः
पौत्राः १।३४
मा ते व्यथा मा च
विमूढभावः ११।४९
मा ते सङ्गोऽस्त्व-
कर्मणि २।४७
मात्रास्पर्शास्तु
कौन्तेय २।१४
माधवः पाण्डवश्चैव १।१४
मानापमान-
योस्तुल्यः १४।२५
मानुषीं तनुमाश्रितम् ९।११
मां तु वेद न कश्चन ७।२६
मां ध्यायन्त उपासते १२।६
मा फलेषु कदाचन २।४७
मामकाः पाण्डवाश्चैव १।१
मामनुस्मर युध्य च ८।७
मामप्राप्यैव
कौन्तेय १६।२०
मामात्मपरदेहेषु १६।१८
मामाश्रित्य
यतन्ति ये ७।२९
मामिच्छाप्तुं धनंजय १२।९
मामुपेत्य तु कौन्तेय ८।१६
मामुपेत्य पुनर्जन्म ८।१५
मामेकं शरणं व्रज १८।६६
मामेभ्यः परमव्ययम् ७।१३
मामेव ये प्रपद्यन्ते ७।१४
मामेवानुत्तमां गतिम् ७।१८
मामेवैष्यत्यसंशयः १८।६८
मामेवैष्यसि
युक्त्वैवम् ९।३४
मामेवैष्यसि
सत्यं ते १८।६५
मामेवैष्यस्यसंशयम् ८।७
माययापहृतज्ञानाः ७।१५
मायामेतां तरन्ति ते ७।१४
मार्दवं ह्रीरचापलम् १६।२
मा शुचः सम्पदं
दैवीम् १६।५
मासानां मार्ग-
शीर्षोऽहम् १०।३५
माहात्म्यमपि
चाव्ययम् ११।२
मित्रद्रोहे च पातकम् १।३८
मिथ्याचारः स उच्यते ३।६
मिथ्यैष व्यवसायस्ते १८।५९
मुक्तसङ्गः समाचर ३।९
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी १८।२६
मुक्तो यः स च
मे प्रियः १२।१५
मुखं च परिशुष्यति १।२९
मुच्यन्ते तेऽपि
कर्मभिः ३।३१
मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ३।१३
मुनिर्मोक्षपरायणः ५।२८
मुनीनामप्यहं
व्यासः १०।३७
मूढग्राहेणात्मनो
यत् १७।१९
मूढयोनिषु जायते १४।१५
मूढा जन्मनि
जन्मनि १६।२०
मूढोऽयं
नाभिजानाति ७।२५
मूर्तयः सम्भवन्ति
याः १४।४
मूर्ध्न्याधायात्मनः
प्राणम् ८।१२
मृगाणां च
मृगेन्द्रोऽहम् १०।३०
मृत्युं श्रुतिपरायणाः १३।२५
मृत्युसंसारवर्त्मनि ९।३
मृत्युसंसारसागरात् १२।७
मृत्युः सर्वहरश्चाहम् १०।३४
मेधावी छिन्नसंशयः १८।१०
मेरुः
शिखरिणामहम् १०।२३
मैत्रः करुण एव च १२।१३
मोक्षयिष्यामि
मा शुचः १८।६६
मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ९।२८
मोघज्ञाना विचेतसः ९।१२
मोघं पार्थ स जीवति ३।१६
मोघाशा मोघकर्माणः ९।१२
मोहजालसमावृताः १६।१६
मोहनं सर्वदेहिनाम् १४।८

मोहमेव च पाण्डव १४।२२
मोहात्तस्य परित्यागः १८।७
मोहादारभ्यते कर्म १८।२५
मोहाद्गृहीत्वासद्-
ग्राहान् १६।१०
मोहितं नाभिजानाति ७।१३
मोहोऽयं विगतो मम ११।१
मौनं चैवास्मि
गुह्यानाम् १०।३८
मौनमात्मविनिग्रहः १७।१६

य

यं यं वापि स्मरन्भावम् ८।६
यं लब्ध्वा चापरं
लाभम् ६।२२
यं सन्न्यासमिति प्राहुः ६।२
यं हि न व्यथयन्त्येते २।१५
य आस्ते मनसा
स्मरन् ३।६
य इमं परमं गुह्यम् १८।६८
य एतेऽत्र समागताः १।२३
य एनं वेत्ति
हन्तारम् २।१९
य एनमजमव्ययम् २।२१
य एवं वेत्ति
पुरुषम् १३।२३
यक्षरक्षांसि राजसाः १७।४
यक्ष्ये दास्यामि
मोदिष्ये १६।१५
यच्चन्द्रमसि
यच्चाग्नौ १५।१२
यच्चान्यद्द्रष्टु-
मिच्छसि ११।७
यच्चापि
सर्वभूतानाम् १०।३९
यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः १५।८
यच्चावहासार्थ-
मसत्कृतोऽसि ११।४२
यच्छोकमुच्छोषण-
मिन्द्रियाणाम् २।८
यच्छ्रेय एतयोरेकम् ५।१
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं
ब्रूहि तन्मे २।७
यजन्त इह देवताः ४।१२
यजन्ते तामसा
जनाः १७।४
यजन्ते नामयज्ञैस्ते १६।१७
यजन्ते श्रद्धयान्विताः ९।२३; १७।१
यजन्ते सात्त्विका
देवान् १७।४
यजन्तो मामुपासते ९।१५
यजन्त्यविधिपूर्वकम् ९।२३
यज्जुहोषि ददासि
यत् ९।२७
यज्ज्ञात्वा न
पुनर्मोहम् ४।३५
यज्ज्ञात्वा नेह
भूयोऽन्यत् ७।२
यज्ज्ञात्वा मुनयः
सर्वे १४।१
यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते १३।१२
यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽ-
शुभात् ४।१६; ९।१
यज्ञः कर्मसमुद्भवः ३।१४
यज्ञक्षपितकल्मषाः ४।३०
यज्ञदानतपःकर्म १८।३, ५
यज्ञदानतपःक्रियाः १७।२४
यज्ञशिष्टामृतभुजः ४।३१
यज्ञशिष्टाशिनः
सन्तः ३।१३
यज्ञस्तपस्तथा
दानम् १७।७
यज्ञाद्भवति
पर्जन्यः ३।१४
यज्ञानां जप-
यज्ञोऽस्मि १०।२५
यज्ञायाचरतः
कर्म ४।२३
यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र ३।९
यज्ञाश्च विहिताः
पुरा: १६।२३
यज्ञे तपसि
दाने च १७।२७
यज्ञेनैवोपजुह्वति ४।२५
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं
प्रार्थयन्ते ९।२०
यज्ञो दानं तपश्चैव १८।५
यतचित्तेन्द्रियक्रियः ६।१२
यततामपि सिद्धानाम् ७।३
यतते च ततो भूयः ६।४३

यततो ह्यपि कौन्तेय २।६०
यतन्तश्च दृढव्रताः ९।१४
यतन्तोऽप्य-
कृतात्मानः १५।११
यतन्तो
योगिनश्चैनम् १५।११
यतः प्रवृत्तिः
प्रसृता पुराणी १५।४
यतः प्रवृत्तिर्भूतानाम् १८।४६
यतयः संशितव्रताः ४।२८
यतवाक्कायमानसः १८।५२
यतात्मा दृढनिश्चयः १२।१४
यतीनां यतचेतसाम् ५।२६
यतेन्द्रियमनोबुद्धिः ५।२८
यतो यतो निश्चरति ६।२६
यत्करोषि यदश्नासि ९।२७
यत्तज्ज्ञानं मतं मम १३।२
यत्तत्तामसमुच्यते १८।२५
यत्तत्सात्त्विक-
मुच्यते १८।२३
यत्तदग्रेऽमृतोपमम् १८।३८
यत्तदग्रे विषमिव १८।३७
यत्तपस्यसि कौन्तेय ९।२७
यत्तु कामेप्सुना
कर्म १८।२४
यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्
१८।२२
यत्तु प्रत्युपकारार्थम् १७।२१
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय १०।१
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन ११।१

यत्र काले
त्वनावृत्तिम् ८।२३
यत्र
चैवात्मनात्मानम् ६।२०
यत्र पार्थो
धनुर्धरः १८।७८
यत्र योगेश्वरः
कृष्णः १८।७८
यत्रोपरमते
चित्तम् ६।२०
यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते
स्थानम् ५।५
यथाकाशस्थितो
नित्यम् ९।६
यथा कुर्वन्ति भारत ३।२५
यथा ज्ञास्यसि
तच्छृणु ७।१
यथादर्शो मलेन च ३।३८
यथा दीपो
निवातस्थः ६।१९
यथा नदीनां बहवोऽ-
म्बुवेगाः ११।२८
यथा प्रकाशयत्येकः १३।३३
यथा प्रदीप्तं ज्वलनं
पतङ्गाः ११।२९
यथाभागमवस्थिताः १।११
यथावच्छृणु
तान्यपि १८।१९
यथा विन्दति
तच्छृणु १८।४५

यथा सर्वगतं
सौक्ष्म्यात् १३।३२
यथेच्छसि तथा
कुरु ८।६३
यथैधांसि
समिद्धोऽग्निः ४।३७
यथोक्तं पर्युपासते १२।२०
यथोल्बेनावृतो
गर्भः ३।३८
यदक्षरं वेदविदो
वदन्ति ८।११
यदग्रे चानुबन्धे च १८।३९
यदहङ्कारमाश्रित्य १८।५९
यदा ते मोह-
कलिलम् २।५२
यदादित्यगतं तेजः १५।१२
यदा द्रष्टानुपश्यति १४।१९
यदा भूत-
पृथग्भावम् १३।३०
यदा यदा हि धर्मस्य ४।७
यदा विनियतं
चित्तम् ६।१८
यदा संहरते चायम् २।५८
यदा सत्त्वे
प्रवृद्धे तु १४।१४
यदा स्थास्यति
निश्चला २।५३
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु ६।४
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं
चरन्ति ८।११

यदि भाः सदृशी
सा स्यात् ११।१२
यदि मामप्रतीकारम् १।४६
यदि ह्यहं न वर्तेयम् ३।२३
यदृच्छया चोपपन्नम् २।३२
यदृच्छालाभसन्तुष्टः ४।२२
यदेभिः स्या-
त्रिभिर्गुणैः १८।४०
यद्गत्वा न निवर्तन्ते १५।६
यद्यदाचरति श्रेष्ठः ३।२१
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वम् १०।४१
यद्यप्येते न पश्यन्ति १।३८
यद्राज्यसुखलोभेन १।४५
यद्वा जयेम यदि
वा नो जयेयुः २।६
यद्विकारि यतश्च यत् १३।३
यन्त्रारूढानि
मायया १८।६१
यन्मनोऽनुविधीयते २।६७
यन्मां वदसि
केशव १०।१४
यन्मे त्वदन्येन न
दृष्टपूर्वम् ११।४७
यः पश्यति
तथात्मानम् १३।२९
यः पश्यति स
पश्यति ५।५; १३।२७
यः प्रयाति
त्यजन्देहम् ८।१३
यः प्रयाति स मद्भावम् ८।५
यमः संयमतामहम् १०।२९
यं प्राप्य न निवर्तन्ते ८।२१
यया तु धर्म-
कामार्थान् १८।३४
यया धर्ममधर्मं च १८।३१
यया स्वप्नं भयं
शोकम् १८।३५
ययेदं धार्यते जगत् ७।५
यश्चैनं मन्यते हतम् २।१९
यः शास्त्रविधि-
मुत्सृज्य १६।२३
यष्टव्यमेवेति मनः १७।११
यः सदा मुक्त
एव सः ५।२८
यः स मामेति
पाण्डव ११।५५
यः सर्वत्रानभिस्नेहः २।५७
यः स सर्वेषु भूतेषु ८।२०
यस्तं वेद स वेदवित् १५।१
यस्तु कर्मफल-
त्यागी १८।११
यस्त्वात्मरतिरेव
स्यात् ३।१७
यस्त्विन्द्रियाणि मनसा ३।७
यस्मात्क्षरमती-
तोऽहम् १५।१८
यस्मान्नोद्विजते
लोकः १२।१५
यस्मिन्गता न
निवर्तन्ति भूयः १५।४
यस्मिन्स्थितो
न दुःखेन ६।२२
यस्य नाहङ्कृतो
भावः १८।१७
यस्य सर्वे समारम्भाः ४।१९
यस्यां जाग्रति भूतानि २।६९
यस्यान्तःस्थानि
भूतानि ८।२२
यातयामं गतरसम् १७।१०
याति नास्त्यत्र संशयः ८।५
याति पार्थानुचिन्तयन् ८।८
या निशा सर्व-
भूतानाम् २।६९
यानेव हत्वा न
जिजीविषामः २।६
यान्ति देवव्रता
देवान् ९।२५
यान्ति ब्रह्म सनातनम् ४।३१
यान्ति मद्याजिनोऽपि
माम् ९।२५
याभिर्विभूति-
भिर्लोकान् १०।१६
यामिमां पुष्पितां
वाचम् २।४२
यावत्सञ्जायते
किञ्चित् १३।२६
यावदेतान्निरीक्षेऽहम् १।२२
यावानर्थ उदपाने २।४६
यावान्यश्चास्मि
तत्त्वतः १८।५५

युक्त आसीत मत्परः २। ६१; ६। १४
युक्त इत्युच्यते तदा ६। १८
युक्त इत्युच्यते योगी ६। ८
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा ५। १२
युक्तचेष्टस्य कर्मसु ६। १७
युक्तस्वप्नावबोधस्य ६। १७
युक्ताहारविहारस्य ६। १७
युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ५। ८
युज्यते नात्र संशयः १०। ७
युञ्जतो योगमात्मनः ६। १९
युञ्जन्नेवं सदात्मानम् ६। १५, २८
युद्धाय कृतनिश्चयः २। ३७
युद्धे चाप्य-पलायनम् १८। ४३
युद्धे प्रियचिकीर्षवः १। २३
युधामन्युश्च विक्रान्तः १। ६
युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ११। ३४
युध्यस्व विगतज्वरः ३। ३०
युयुत्सुं समुपस्थितम् १। २८
युयुधानो विराटश्च १। ४
ये चाप्यक्षरमव्यक्तम् १२। १
ये चैव सात्त्विका भावाः ७। १२
ये जनाः पर्युपासते ९। २२
ये तु धर्म्यामृत-मिदम् १२। २०
ये तु सर्वाणि कर्माणि १२। ६
ये त्वक्षरम-निर्देश्यम् १२। ३
ये त्वेतदभ्यसूयन्तः ३। ३२
येन भूतान्यशेषेण ४। ३५
येन मामुपयान्ति ते १०। १०
येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ३। २
येन सर्वमिदं ततम् २। १७; ८। २२; १८। ४६
येनात्मैवात्मना जितः ६। ६
ये पचन्त्यात्म-कारणात् ३। १३
येऽपि स्युः पापयोनयः ९। ३२
येऽप्यन्यदेवता भक्ताः ९। २३
ये भजन्ति तु मां भक्त्या ९। २९
ये मे मतमिदं नित्यम् ३। ३१
ये यथा मां प्रपद्यन्ते ४। ११
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ११। ३२
ये विदुर्यान्ति ते परम् १३। ३४
ये शास्त्रविधि-मुत्सृज्य १७। १
येषां लोक इमाः प्रजाः १०। ६
येषां साम्ये स्थितं मनः ५। १९
येषां च त्वं बहुमतः २। ३५
येषां त्वन्तगतं पापम् ७। २८
येषां नाशितमात्मनः ५। १६
येषामर्थे काङ्क्षितं नः १। ३३
ये हि संस्पर्शजा भोगाः ५। २२
योगं तं विद्धि पाण्डव ६। २
योगं युञ्जन्मदाश्रयः ७। १
योगं योगेश्वरात् कृष्णात् १८। ७५
योगः कर्मसु कौशलम् २। ५०
योगक्षेमं वहाम्यहम् ९। २२
योगः प्रोक्तः पुरातनः ४। ३
योगभ्रष्टोऽभिजायते ६। ४१
योगमात्मविशुद्धये ६। १२
योगमायासमावृतः ७। २५
योगयज्ञास्तथापरे ४। २८
योगयुक्तो भवार्जुन ८। २७
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म ५। ६
योगयुक्तो विशुद्धात्मा ५। ७

योगसन्न्यस्तकर्माणम् ४।४१
योगस्थः कुरु
कर्माणि २।४८
योगाच्चलितमानसः ६।३७
योगारूढस्तदोच्यते ६।४
योगारूढस्य तस्यैव ६।३
योगिनं सुखमुत्तमम् ६।२७
योगिनः कर्म कुर्वन्ति ५।११
योगिनः पर्युपासते ४।२५
योगिनामपि सर्वेषाम् ६।४७
योगिनो यतचित्तस्य ६।१९
योगी नियतमानसः ६।१५
योगी परं स्थानमुपैति
चाद्यम् ८।२८
योगी प्राप्य निवर्तते ८।२५
योगी भवति कश्चन ६।२
योगी मुह्यति कश्चन ८।२७
योगी युञ्जीत सततम् ६।१०
योगी विगतकल्मषः ६।२८
योगी संशुद्ध-
किल्बिषः ६।४५
योगेनाव्यभि-
चारिण्या १८।३३
योगेश्वर ततो मे
त्वम् ११।४
योगो नष्टः परन्तप ४।२
योगोऽनिर्विण्ण-
चेतसा ६।२३
योगो भवति
दुःखहा ६।१७
योत्स्यमानान-
वेक्षेऽहम् १।२३
योद्धुकामान-
वस्थितान् १।२२
यो न द्वेष्टि न
काङ्क्षति ५।३
यो न हृष्यति
न द्वेष्टि १२।१७
योऽन्तःसुखोऽ-
न्तरारामः ५।२४
यो बुद्धेः परतस्तु
सः ३।४२
यो भुङ्क्ते स्तेन
एव सः ३।१२
यो मद्भक्तः स मे
प्रियः १२।१४, १६
यो मां पश्यति
सर्वत्र ६।३०
यो मां स्मरति
नित्यशः ८।१४
यो मामजमनादिं
च १०।३
यो मामेवम-
सम्मूढः १५।१९
यो मे भक्त्या
प्रयच्छति ९।२६
योऽयं योगस्त्वया
प्रोक्तः ६।३३
यो यच्छ्रद्धः स
एव सः १७।३
यो यो यां यां
तनुं भक्तः ७।२१
यो लोकत्रय-
माविश्य १५।१७
योऽवतिष्ठति
नेङ्गते १४।२३

र

रक्षांसि भीतानि दिशो
द्रवन्ति ११।३६
रजः कर्मणि भारत १४।९
रजसस्तु फलं
दुःखम् १४।१६
रजसि प्रलयं गत्वा १४।१५
रजसो लोभ एव
च १४।१७
रजस्तमश्चाभिभूय १४।१०
रजस्येतानि
जायन्ते १४।१२
रजः सत्त्वं
तमश्चैव १४।१०
रजोगुणसमुद्भवः ३।३७
रजो रागात्मकं
विद्धि १४।७
रथं स्थापय मेऽच्युत १।२१
रथोपस्थ उपाविशत् १।४७
रसनं घ्राणमेव च १५।९
रसवर्जं रसोऽप्यस्य २।५९
रसोऽहमप्सु कौन्तेय ७।८
रस्याः स्निग्धाः
स्थिरा हृद्याः १७।८

रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ४।३
राक्षसीमासुरीं चैव ९।१२
रागद्वेषवियुक्तैस्तु २।६४
रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ३।३३
रागद्वेषौ व्युदस्य च १८।५१
रागी कर्मफल-
प्रेप्सुः १८।२७
राजन्संस्मृत्य
संस्मृत्य १८।७६
राजविद्या राजगुह्यम् ९।२
राजसं चलम-
ध्रुवम् १७।१८
राजसः
परिकीर्तितः १८।२७
राजसास्तामसाश्च
ये ७।१२
राजा वचनमब्रवीत् १।२
राज्यं सुराणामपि
चाधिपत्यम् २।८
राज्यं भोगाः
सुखानि च १।३३
रात्रिं युगसहस्रान्ताम् ८।१७
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते ८।१८
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ ८।१९
रामः शस्त्र-
भृतामहम् १०।३१
रुद्राणां
शङ्करश्चास्मि १०।२३
रुद्रादित्या वसवो ये
च साध्याः ११।२२
रूपमत्यद्भुतं हरेः १८।७७
रूपं परं दर्शित-
मात्मयोगात् ११।४७
रूपं महत्ते बहुवक्त्र-
नेत्रम् ११।२३
रोमहर्षश्च जायते १।२९

ल

लभते च ततः
कामान् ७।२२
लभते पौर्वदेहिकम् ६।४३
लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणम् ५।२५
लभन्ते युद्धमीदृशम् २।३२
लाभालाभौ
जयाजयौ २।३८
लिप्यते न स पापेन ५।१०
लुप्तपिण्डोदकक्रियाः १।४२
लुब्धो हिंसात्मकोऽ-
शुचिः १८।२७
लेलिह्यसे ग्रसमानः
समन्तात् ११।३०
लोकत्रयं प्रव्यथितं
महात्मन् ११।२०
लोकत्रयेऽप्यप्रति-
मप्रभाव ११।४३
लोकसङ्ग्रहमेवापि ३।२०
लोकस्तदनुवर्तते ३।२१
लोकस्य सृजति
प्रभुः ५।१४
लोकान्नोद्विजते
च यः १२।१५
लोकान्समग्रान्वदनै-
र्ज्वलद्भिः ११।३०
लोकान्समाहर्तुमिह
प्रवृत्तः ११।३२
लोके जन्म
यदीदृशम् ६।४२
लोकेऽस्मिन्द्विविधा
निष्ठा ३।३
लोको
मामजमव्ययम् ७।२५
लोकोऽयं
कर्मबन्धनः ३।९
लोभः प्रवृत्ति-
रारम्भः १४।१२
लोभोपहतचेतसः १।३८

व

वक्तुमर्हस्यशेषेण १०।१६
वक्त्राणि ते त्वरमाणा
विशन्ति ११।२७
वक्ष्यामि भरतर्षभ ८।२३
वक्ष्यामि हित-
काम्यया १०।१
वदिष्यन्ति तवाहिताः २।३६
वरुणो याद-
सामहम् १०।२९
वर्णसङ्करकारकैः १।४३
वर्त एव च कर्मणि ३।२२
वर्तते कामकारतः १६।२३
वर्तते विदितात्मनाम् ५।२६
वर्तन्त इति धारयन् ५।९

वर्तमानापि चार्जुन ७ । २६
वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ६ । ६
वशे हि यस्येन्द्रियाणि २ । ६१
वश्यात्मना तु यतता ६ । ३६
वसूनां पावकश्चास्मि १० । २३
वाङ्मयं तप उच्यते १७ । १५
वादः प्रवदतामहम् १० । ३२
वायुर्गन्धानिवाशयात् १५ । ८
वायुर्नावमिवाम्भसि २ । ६७
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः
शशाङ्कः ११ । ३९
वायुः सर्वत्रगो महान् ९ । ६
वायोरिव सुदुष्करम् ६ । ३४
वासांसि जीर्णानि
यथा विहाय २ । २२
वासुदेवः सर्वमिति ७ । १९
विकारांश्च गुणांश्चैव १३ । १९
विगतेच्छाभयक्रोधः ५ । २८
विजितात्मा जितेन्द्रियः ५ । ७
विज्ञातुमिच्छामि
भवन्तमाद्यम् ११ । ३१
वितता ब्रह्मणो मुखे ४ । ३२
वित्तेशो यक्षरक्षसाम् १० । २३
विदुर्देवा न
दानवाः १० । १४
विद्धि नष्टानचेतसः ३ । ३२
विद्धि पार्थ
बृहस्पतिम् १० । २४
विद्धि पार्थ
सनातनम् ७ । १०
विद्धि प्रकृति-
सम्भवान् १३ । १९
विद्धि माम-
मृतोद्भवम् १० । २७
विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ४ । १३
विद्ध्यनादी
उभावपि १३ । १९
विद्ध्येनमिह
वैरिणम् ३ । ३७
विद्याविनयसम्पन्ने ५ । १८
विद्वान्युक्तः
समाचरन् ३ । २६
विधिदृष्टो य
इज्यते १७ । ११
विधिहीनमसृष्टान्नम् १७ । १३
विनश्यत्स्व-
विनश्यन्तम् १३ । २७
विनाशमव्ययस्यास्य २ । १७
विनाशस्तस्य विद्यते ६ । ४०
विनाशाय च
दुष्कृताम् ४ । ८
विनियम्य समन्ततः ६ । २४
विन्दत्यात्मनि
यत्सुखम् ५ । २१
विपरीतानि केशव १ । ३१
विभक्तमिव च
स्थितम् १३ । १६
विभूतिं च जनार्दन १० । १८
विभूतीनां परन्तप १० । ४०
विभूतेर्विस्तरो मया १० । ४०
विमुक्तो मामुपैष्यसि ९ । २८
विमुक्तोऽमृतमश्नुते १४ । २०
विमुच्य निर्ममः
शान्तः १८ । ५३
विमूढा नानुपश्यन्ति १५ । १०
विमूढो ब्रह्मणः पथि ६ । ३८
विमृश्यैतदशेषेण १८ । ६३
वियोगं योगसञ्ज्ञितम् ६ । २३
विवस्वान्मनवे प्राह ४ । १
विविक्तदेशसेवित्वम् १३ । १०
विविक्तसेवी
लघ्वाशी १८ । ५२
विविधाश्च
पृथक्चेष्टाः १८ । १४
विवृद्धं सत्त्वमित्युत १४ । ११
विवृद्धे कुरुनन्दन १४ । १३
विवृद्धे भरतर्षभ १४ । १२
विशते तदनन्तरम् १८ । ५५
विशन्ति नाशाय
समृद्धवेगाः ११ । २९
विशन्ति यद्यतयो
वीतरागाः ८ । ११
विशन्ति वक्त्राण्य-
भिविज्वलन्ति ११ । २८
विश्वेऽश्विनौ
मरुतश्चोष्मपाश्च ११ । २२
विषमे समुपस्थितम् २ । २
विषयानिन्द्रियैश्चरन् २ । ६४
विषयानुपसेवते १५ । ९
विषया विनिवर्तन्ते २ । ५९

विषयेन्द्रियसंयोगात् १८।३८
विषादं मदमेव च १८।३५
विषादी दीर्घसूत्री च १८।२८
विषीदन्तमिदं वचः २।१०
विषीदन्तमिदं वाक्यम् २।१
विषीदन्निदमब्रवीत् १।२८
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नम् १०।४२
विसर्गः कर्मसञ्ज्ञितः ८।३
विसृजामि पुनः पुनः ९।८
विसृज्य सशरं चापम् १।४७
विस्तरेणात्मनो योगम् १०।१८
विस्मयो मे महान् राजन् १८।७७
विहाय कामान्यः सर्वान् २।७१
विहारशय्यासन-भोजनेषु ११।४२
वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ११।२२
वीतरागभयक्रोधः २।५६
वीतरागभयक्रोधाः ४।१०
वृजिनं सन्तरिष्यसि ४।३६
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि १०।३७
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम ११।३८
वेत्ति यत्र न चैवायम् ६।२१
वेत्ति लोकमहेश्वरम् १०।३
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु १८।२१
वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम १०।१५
वेदवादरताः पार्थ २।४२
वेदानां साम-वेदोऽस्मि १०।२२
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् १५।१५
वेदाविनाशिनं नित्यम् २।२१
वेदाहं समतीतानि ७।२६
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव ८।२८
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः १५।१५
वेद्यं पवित्रमोङ्कारः ९।१७
वेपथुश्च शरीरे मे १।२९
वैनतेयश्च पक्षिणाम् १०।३०
वैराग्यं समुपाश्रितः १८।५२
वैराग्येण च गृह्यते ६।३५
वैश्यकर्म स्वभावजम् १८।४४
व्यक्तमध्यानि भारत २।२८
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वम् ११।४९
व्यवसायात्मिका बुद्धिः २।४१, ४४
व्यात्ताननं दीप्तविशाल-नेत्रम् ११।२४
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः ११।२०
व्यामिश्रेणेव वाक्येन ३।२
व्यासप्रसादा-च्छ्रुतवान् १८।७५
व्याहरन्मामनुस्मरन् ८।१३
व्यूढं दुर्योधनस्तदा १।२
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण १।३

श

शक्नोतीहैव यः सोढुम् ५।२३
शक्य एवंविधो द्रष्टुम् ११।५३
शक्योऽवाप्तु-मुपायतः ६।३६
शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् १।१२
शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक् १।१८
शठोऽनैष्कृति-कोऽलसः ८।२८
शतशोऽथ सहस्रशः ११।५
शनैः शनैरुपरमेत् ६।२५
शब्दः खे पौरुषं नृषु ७।८
शब्दब्रह्मातिवर्तते ६।४४

शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा १८।५१
शब्दादीन्विषयानन्ये ४।२६
शमः कारणमुच्यते ६।३
शमो दमस्तपः शौचम् १८।४२
शरीरं यदवाप्नोति १५।८
शरीरयात्रापि च ते ३।८
शरीरवाङ्मनोभिर्यत् १८।१५
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय १३।३१
शरीरे पाण्डवस्तदा ११।१३
शश्वच्छान्तिं निगच्छति ९।३१
शान्तिं निर्वाणपरमाम् ६।१५
शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ५।१२
शारीरं केवलं कर्म ४।२१
शारीरं तप उच्यते १७।१४
शाश्वतं पदमव्ययम् १८।५६
शाश्वतस्य च धर्मस्य १४।२७
शिखण्डी च महारथः १।१७
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् २।७
शीतोष्णसुखदुःखदाः २।१४
शीतोष्णसुखदुःखेषु ६।७; १२।१८
शुक्लकृष्णे गती ह्येते ८।२६
शुचीनां श्रीमतां गेहे ६।४१
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य ६।११
शुनि चैव श्वपाके च ५।१८
शुभाशुभपरित्यागी १२।१७
शुभाशुभफलैरेवम् ९।२८
शूद्रस्यापि स्वभावजम् १८।४४
शूद्राणां च परन्तप १८।४१
शृणु मे परमं वचः १०।१; १८।६४
शृणु मे भरतर्षभ १८।३६
शृणुयादपि यो नरः १८।७१
शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् १०।१८
शैब्यश्च नरपुङ्गवः १।५
शोकसंविग्नमानसः १।४७
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यम् १८।४३
श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा १।३४
श्वशुरान्सुहृदश्चैव १।२७
श्रद्दधाना मत्परमाः १२।२०
श्रद्धया परया तप्तम् १७।१७
श्रद्धया परयोपेताः १२।२
श्रद्धयार्चितुमिच्छति ७।२१
श्रद्धा भवति भारत १७।३
श्रद्धामयोऽयं पुरुषः १७।३
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तः ३।३१
श्रद्धावाननसूयश्च १८।७१
श्रद्धावान्भजते यो माम् ६।४७
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम् ४।३९
श्रद्धाविरहितं यज्ञम् १७।१३
श्रीमदूर्जितमेव वा १०।४१
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते २।५३
श्रुतौ विस्तरशो मया ११।२
श्रुत्वान्येभ्य उपासते १३।२५
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् २।२९
श्रेयः परमवाप्स्यथ ३।११
श्रेयान् द्रव्यमयाद्यज्ञात् ४।३३
श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः ३।३५; १८।४७
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके २।५
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात् १२।१२
श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च २।५२
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च १५।९
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये ४।२६

ष

षण्मासा उत्तरायणम् ८।२४
षण्मासा दक्षिणायनम् ८।२५

स

सङ्करस्य च कर्ता स्याम् ३।२४
सङ्करो नरकायैव १।४२
सङ्कल्पप्रभवान् कामान् ६।२४
सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ५।१०
सङ्गं त्यक्त्वात्म-शुद्धये ५।११
सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय २।४८
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव १८।९
सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च १८।६
सङ्गस्तेषूपजायते २।६२
सङ्गात्सञ्जायते कामः २।६२
सङ्ग्रामं न करिष्यसि २।३३
सङ्घातश्चेतना धृतिः १३।६
संयमाग्निषु जुह्वति ४।२६
संवादमिममद्भुतम् १८।७६
संवादमिममश्रौषम् १८।७४
संशयात्मा विनश्यति ४।४०
संसारेषु नराधमान् १६।१९
संसिद्धिं परमां गताः ८।१५
संसिद्धिं लभते नरः १८।४५
संसिद्धौ कुरुनन्दन ६।४३
संस्तभ्यात्मानमात्मना ३।४३
स एवायं मया तेऽद्य ४।३
स कालेनेह महता ४।२
स कृत्वा राजसं त्यागम् १८।८
सक्ताः कर्मण्य-विद्वांसः ३।२५
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तम् ११।४१
सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ११।३५
स गुणान् समतीत्यैतान् १४।२६
स घोषो धार्तराष्ट्राणाम् १।१९
स च मे न प्रणश्यति ६।३०
स च यो यत् प्रभावश्च १३।३
सचेताः प्रकृतिं गतः ११।५१
सच्छब्दः पार्थ युज्यते १७।२६
सज्जन्ते गुणकर्मसु ३।२९
सञ्ज्ञार्थं तान् ब्रवीमि ते १।७
सततं कीर्तयन्तो माम् ९।१४
सततं ब्रह्मवादिनाम् १७।२४
स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ८।१०
स तया श्रद्धया युक्तः ७।२२
सत्कारमानपूजार्थम् १७।१८
सत्यं प्रियहितं च यत् १७।१५
स त्यागः सात्त्विको मतः १८।९
स त्यागीत्यभिधीयते १८।११
सत्त्वं रजस्तम इति १४।५
सत्त्वं सत्त्ववतामहम् १०।३६
सत्त्वं सुखे सञ्जयति १४।९
सत्त्वं स्थावर-जङ्गमम् १३।२६
सत्त्वमाहो रजस्तमः १७।१
सत्त्वं प्रकृति-जैर्मुक्तम् १८।४०
सत्त्वं भवति भारत १४।१०
सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानम् १४।१७
सत्त्वानुरूपा सर्वस्य १७।३
सदसच्चाहमर्जुन ९।१९

सदसद्योनिजन्मसु १३।२१
सदा तद्भावभावित: ८।६
सदित्येतत्प्रयुज्यते १७।२६
सदित्येवाभिधीयते १७।२७
सदृशं चेष्टते स्वस्या: ३।३३
सदोषमपि न
त्यजेत् १८।४८
सद्भावे साधुभावे
च १७।२६
सनातनस्त्वं पुरुषो
मतो मे ११।१८
स निश्चयेन
योक्तव्य: ६।२३
सन्तुष्ट: सततं
योगी १२।१४
सन्तुष्टो येन
केनचित् १२।१९
सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरु-
त्तमाङ्गै: ११।२७
सन्नियम्येन्द्रियग्रामम् १२।४
सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा ३।३०
सन्न्यस्यास्ते
सुखं वशी ५।१३
सन्न्यास: कर्मयोगश्च ५।२
सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण ५।१
सन्न्यासं कवयो
विदु: १८।२
सन्न्यासयोगयुक्तात्मा ९।२८
सन्न्यासस्तु महाबाहो ५।६
सन्न्यासस्य महाबाहो १८।१
सन्न्यासेनाधिगच्छति १८।४९
स बुद्धिमान्मनुष्येषु ४।१८
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा ५।२१
समं सर्वेषु भूतेषु १३।२७
समग्रं प्रविलीयते ४।२३
समं कायशिरोग्रीवम् ६।१३
समत्वं योग उच्यते २।४८
समदु:खसुख: क्षमी १२।१३
समदु:खसुखं धीरम् २।१५
समदु:खसुख:
स्वस्थ: १४।२४
समबुद्धिर्विशिष्यते ६।९
समं पश्यति
योऽर्जुन ६।३२
समं पश्यन् हि
सर्वत्र १३।२८
समलोष्टाश्मकाञ्चन:
६।८; १४।२४
समवस्थितमीश्वरम् १३।२८
समवेतान् कुरूनिति १।२५
समवेता युयुत्सव: १।१
सम: शत्रौ च
मित्रे च १२।१८
सम: सङ्गविवर्जित: १२।१८
सम: सर्वेषु भूतेषु १८।५४
सम: सिद्धाव-
सिद्धौ च ४।२२
स महात्मा सुदुर्लभ: ७।१९
समाधाय स
सात्त्विक: १७।११
समाधावचला
बुद्धि: २।५३
समाधिस्थस्य केशव २।५४
समाधौ न विधीयते २।४४
समासेनैव कौन्तेय १८।५०
समुद्रमाप: प्रविशन्ति
यद्वत् २।७०
समुद्रमेवाभिमुखा
द्रवन्ति ११।२८
स मे युक्ततमो
मत: ६।४७
समोऽहं सर्वभूतेषु ९।२९
सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि ३।२०
सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं
स्वम् ६।१३
सम्भव:
सर्वभूतानाम् १४।३
सम्भवामि युगे युगे ४।८
सम्भवाम्यात्ममायया ४।६
सम्भावितस्य
चाकीर्ति: २।३४
सम्मोहात् स्मृति-
विभ्रम: २।६३
सम्यग्व्यवसितो
हि स: ९।३०
स यत्प्रमाणं कुरुते ३।२१
स याति परमां
गतिम् ८।१३
स युक्त: कृत्स्न-
कर्मकृत् ४।१८

स युक्तः स
सुखी नरः ५।२३
स योगी परमो मतः ६।३२
स योगी ब्रह्म-
निर्वाणम् ५।२४
स योगी मयि वर्तते ६।३१
सरसामस्मि सागरः १०।२४
सर्गाणामादिरन्तश्च १०।३२
सर्गेऽपि नोपजायन्ते १४।२
सर्गे यान्ति परन्तप ७।२७
सर्पाणामस्मि
वासुकिः १०।२८
सर्वं समाप्नोषि
ततोऽसि सर्वः ११।४०
सर्व एव महारथाः १।६
सर्वकर्मफलत्यागम्
१२।११; १८।२
सर्वकर्माणि मनसा ५।१३
सर्वकर्माण्यपि
सदा १८।५६
सर्वक्षेत्रेषु भारत १३।२
सर्वगुह्यतमं
भूयः १८।६४
सर्वं कर्माखिलं
पार्थ ४।३३
सर्वज्ञान-
विमूढांस्तान् ३।३२
सर्वं च मयि
पश्यति ६।३०
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव ४।३६
सर्वतः पाणिपादं
तत् १३।१३
सर्वतः श्रुति-
मल्लोके १३।१३
सर्वतः सम्प्लुतोदके २।४६
सर्वतोऽक्षि-
शिरोमुखम् १३।१३
सर्वत्रगमचिन्त्यं च १२।३
सर्वत्र समदर्शनः ६।२९
सर्वत्र समबुद्धयः १२।४
सर्वत्रावस्थितो
देहे १३।३२
सर्वथा वर्तमानोऽपि
६।३१; १३।२३
सर्वद्वाराणि संयम्य ८।१२
सर्वद्वारेषु
देहेऽस्मिन् १४।११
सर्वधर्मान्परित्यज्य १८।६६
सर्वपापैः प्रमुच्यते १०।३
सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ३।५
सर्वभावेन भारत
१५।१९; १८।६२
सर्वभूतस्थ-
मात्मानम् ६।२९
सर्वभूतस्थितं यो
माम् ६।३१
सर्वभूतहिते रताः
५।२५; १२।४
सर्वभूतात्मभूतात्मा ५।७
सर्वभूतानि कौन्तेय ९।७
सर्वभूतानि चात्मनि ६।२९
सर्वभूतानि सम्मोहम् ७।२७
सर्वभूताशयस्थितः १०।२०
सर्वभूतेषु येनैकम् १८।२०
सर्वमावृत्य तिष्ठति १३।१३
सर्वमेतदृतं मन्ये १०।१४
सर्वयोनिषु कौन्तेय १४।४
सर्वलोकमहेश्वरम् ५।२९
सर्वशः पृथिवीपते १।१८
सर्वसङ्कल्पसन्न्यासी ६।४
सर्वस्य चाहं हृदि
सन्निविष्टः १५।१५
सर्वस्य धातारमचिन्त्य-
रूपम् ८।९
सर्वांस्तथा भूत-
विशेषसङ्घान् ११।१५
सर्वाणीत्युपधारय ७।६
सर्वाणीन्द्रियकर्माणि ४।२७
सर्वान्पार्थ मनोगतान् २।५५
सर्वान्बन्धून-
वस्थितान् १।२७
सर्वारम्भपरित्यागी
१२।१६; १४।२५
सर्वारम्भा हि
दोषेण १८।४८
सर्वार्थान्विपरीतांश्च १८।३२
सर्वाश्चर्यमयं देवम् ११।११

सर्वे नमस्यन्ति च
सिद्धसङ्घाः ११।३६
सर्वेन्द्रिय
गुणाभासम् १३।१४
सर्वेन्द्रियविवर्जितम् १३।१४
सर्वेऽप्येते यज्ञविदः ४।३०
सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ४।३६
सर्वे युद्धविशारदाः १।९
सर्वे वयमतः परम् २।१२
सर्वेषां च महीक्षिताम् १।२५
सर्वे सहैवाव-
निपालसङ्घैः ११।२६
सविकारमुदाहृतम् १३।६
स शब्दस्तुमुलोऽ-
भवत् १।१३
स शान्तिमधिगच्छति २।७१
स शान्तिमाप्नोति
न कामकामी २।७०
स सन्न्यासी च
योगी च ६।१
स सर्वविद्भजति
माम् १५।१९
सहजं कर्म कौन्तेय १८।४८
सहयज्ञाः प्रजाः
सृष्ट्वा ३।१०
सहसैवाभ्यहन्यन्त १।१३
सहस्रबाहो भव
विश्वमूर्ते ११।४६
सहस्रयुगपर्यन्तम् ८।१७
सहास्मदीयैरपि
योधमुख्यैः ११।२६
साक्षात्कथयतः
स्वयम् १८।७५
साङ्ख्ययोगौ
पृथग्बालाः ५।४
साङ्ख्ये कृतान्ते
प्रोक्तानि १८।१३
सात्यकिश्चापराजितः १।१७
सात्त्विकं निर्मलं
फलम् १४।१६
सात्त्विकं परिचक्षते १७।१७
सात्त्विकी राजसी
चैव १७।२
साधिभूताधिदैवं
माम् ७।३०
साधियज्ञं च
ये विदुः ७।३०
साधुरेव स मन्तव्यः ९।३०
साधुष्वपि च पापेषु ६।९
सा निशा पश्यतो
मुनेः २।६९
साम्येन मधुसूदन ६।३३
साहङ्कारेण वा पुनः १८।२४
सिंहनादं विनद्योच्चैः १।१२
सिद्धये सर्व-
कर्मणाम् १८।१३
सिद्धानां कपिलो
मुनिः १०।२६
सिद्धिं विन्दति
मानवः १८।४६
सिद्धिं समधिगच्छति ३।४
सिद्धिं प्राप्तो
यथा ब्रह्म १८।५०
सिद्धिर्भवति कर्मजा ४।१२
सिद्धोऽहं
बलवान्सुखी १६।१४
सिद्ध्यसिद्ध्यो-
र्निर्विकारः १८।२६
सिद्ध्यसिद्ध्योः
समो भूत्वा २।४८
सीदन्ति मम
गात्राणि १।२९
सुखं वा यदि
वा दुःखम् ६।३२
सुखदुःखे समे
कृत्वा २।३८
सुखं त्विदानीं
त्रिविधम् १८।३६
सुखं दुःखं
भवोऽभावः १०।४
सुखप्रीतिविवर्धनाः १७।८
सुखमक्षयमश्नुते ५।२१
सुखमात्यन्तिकं
यत्तद् ६।२१
सुखं बन्धात् प्रमुच्यते ५।३
सुखं मोहनमात्मनः १८।३९
सुखसङ्गेन बध्नाति १४।६

सुखस्यैकान्तिकस्य
च १४।२७
सुखिनः क्षत्रियाः
पार्थ २।३२
सुखिनः स्याम माधव १।३७
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शम् ६।२८
सुखेषु विगतस्पृहः २।५६
सुघोषमणिपुष्पकौ १।१६
सुदुर्दर्शमिदं रूपम् ११।५२
सुसुखं कर्तुमव्ययम् ९।२
सुहृदं सर्वभूतानाम् ५।२९
सुहृन्मित्रार्युदासीनः ६।९
सूक्ष्मत्वात्तद-
विज्ञेयम् १३।१५
सूत्रे मणिगणा इव ७।७
सूयते सचराचरम् ९।१०
सेनयोरुभयोरपि १।२७
सेनयोरुभयोर्मध्ये १।२१,
२४; २।१०
सेनानीनामहं
स्कन्दः १०।२४
सोऽपि मुक्तः
शुभाँल्लोकान् १८।७१
सोऽमृतत्वाय
कल्पते २।१५
सोमो भूत्वा
रसात्मकः १५।१३
सोऽविकम्पेन योगेन १०।७
सौभद्रश्च महाबाहुः १।१८
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च १।६
सौमदत्तिस्तथैव च १।८
स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः
पुष्कलाभिः ११।२१
स्त्रियो वैश्यास्तथा
शूद्राः ९।३२
स्त्रीषु दुष्टासु
वार्ष्णेय १।४१
स्थानं प्राप्स्यसि
शाश्वतम् १८।६२
स्थाने हृषीकेश
तव प्रकीर्त्या ११।३६
स्थापयित्वा
रथोत्तमम् १।२४
स्थावराणां
हिमालयः १०।२५
स्थितधीः किं
प्रभाषेत २।५४
स्थितधीर्मुनिरुच्यते २।५६
स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते २।५५
स्थितप्रज्ञस्य का
भाषा २।५४
स्थितश्चलति तत्त्वतः ६।२१
स्थितिः सदिति
चोच्यते १७।२७
स्थितोऽस्मि
गतसन्देहः १८।७३
स्थित्वास्या-
मन्तकालेऽपि २।७२
स्थिरबुद्धिरसम्मूढः ५।२०
स्थिरमासनमात्मनः ६।११
स्थैर्यमात्मविनिग्रहः १३।७
स्पर्शान्कृत्वा
बहिर्बाह्यान् ५।२७
स्मरन्मुक्त्वा
कलेवरम् ८।५
स्मृतिभ्रंशाद्
बुद्धिनाशः २।६३
स्मृतिर्मेधा धृतिः
क्षमा १०।३४
स्रोतसामस्मि
जाह्नवी १०।३१
स्वकं रूपं दर्शयामास
भूयः ११।५०
स्वकर्मणा
तमभ्यर्च्य १८।४६
स्वकर्मनिरतः
सिद्धिम् १८।४५
स्वजनं हि कथं
हत्वा १।३७
स्वतेजसा विश्वमिदं
तपन्तम् ११।१९
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य २।३१
स्वधर्मे निधनं श्रेयः ३।३५
स्वधाहमहमौषधम् ९।१६
स्वभावजेन कौन्तेय १८।६०
स्वभावनियतं कर्म १८।४७
स्वभावप्रभवैर्गुणैः १८।४१

स्वभावस्तु प्रवर्तते ५।१४
स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ८।३
स्वयं चैव
ब्रवीषि मे १०।१३
स्वयमेवात्म-
नात्मानम् १०।१५
स्वर्गद्वारमपावृतम् २।३२
स्वल्पमप्यस्य
धर्मस्य २।४०
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षि-
सिद्धसङ्घाः ११।२१
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च ४।२८
स्वाध्यायस्तप
आर्जवम् १६।१
स्वाध्यायाभ्यसनं
चैव १७।१५
स्वे स्वे
कर्मण्यभिरतः १८।४५

ह

हतो वा प्राप्स्यसि
स्वर्गम् २।३७
हत्वापि स
इमाँल्लोकान् १८।१७
हत्वार्थकामांस्तु
गुरूनिहैव २।५
हत्वा स्वजनमाहवे १।३१
हत्वैतानाततायिनः १।३६
हनिष्ये चापरानपि १६।१४
हन्त ते कथयिष्यामि १०।१९
हन्तुं स्वजनमुद्यताः १।४५
हरन्ति प्रसभं मनः २।६०
हर्षशोकान्वितः
कर्ता १८।२७
हर्षामर्षभयोद्वेगैः १२।१५
हानिरस्योपजायते २।६५
हित्वा पापमवाप्स्यसि २।३३

हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ४।४२
हृदयानि व्यदारयत् १।१९
हृदि सर्वस्य
विष्ठितम् १३।१७
हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति १८।६१
हृषीकेशं तदा
वाक्यम् १।२१
हृष्टरोमा धनंजयः ११।१४
हृष्यामि च
पुनः पुनः १८।७७
हृष्यामि च मुहुर्मुहुः १८।७६
हे कृष्ण हे यादव
हे सखेति ११।४१
हेतुनानेन कौन्तेय ९।१०
हेतुः प्रकृतिरुच्यते १३।२०
हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः १३।४
हेतोः किं नु महीकृते १।३५
ह्रियते ह्यवशोऽपि सः ६।४४



१८. गीताकी शब्दानुक्रमणिका

(अकारादिवर्णानुक्रमः)

पदानि	अध्याय—श्लोक
अ०	
अकर्तारम्	४—१३; १३—२९
अकर्म	४—१६, १८
अकर्मकृत्	३—५
अकर्मणः	३—८, ८; ४—१७
अकर्मणि	२—४७; ४—१८
अकल्मषम्	६—२७
अकारः	१०—३३
अकार्यम्	१८—३१
अकीर्तिकरम्	२—२
अकीर्तिम्	२—३४
अकीर्तिः	२—३४
अकुर्वत	१—१
अकुशलम्	१८—१०
अकृतबुद्धित्वात्	१८—१६
अकृतात्मानः	१५—११
अकृतेन	३—१८
अकृत्स्नविदः	३—२९
अक्रियः	६—१
अक्रोधः	१६—२
अक्लेद्यः	२—२४
अक्षयम्	५—२१
अक्षयः	१०—३३
अक्षरसमुद्भवम्	३—१५
अक्षरम्	८—३, ११; १०—२५; ११—१८, ३७; १२—१, ३
अक्षरः	८—२१; १५—१६, १६
अक्षराणाम्	१०—३३
अक्षरात्	१५—१८
अखिलम्	४—३३; ७—२९; १५—१२
अगतासून्	२—११
अग्निः	४—३७; ८—२४; ९—१६; ११—३९; १८—४८
अग्नौ	१५—१२
अग्रे	१८—३७, ३८, ३९
अघम्	३—१३
अघायुः	३—१६
अङ्गानि	२—५८
अचरम्	१३—१५
अचलप्रतिष्ठम्	२—७०
अचलम्	६—१३; १२—३
अचलः	२—२४
अचला	२—५३
अचलाम्	७—२१
अचलेन	८—१०
अचापलम्	१६—२
अचिन्त्यरूपम्	८—९
अचिन्त्यम्	१२—३
अचिन्त्यः	२—२५
अचिरेण	४—३९
अचेतसः	३—३२; १५—११; १७—६
अच्छेद्यः	२—२४
अच्युत	१—२१; ११—४२; १८—७३
अजस्रम्	१६—१९
अजम्	२—२१; ७—२५; १०—३, १२
अजः	२—२०; ४—६
अजानता	११—४१
अजानन्तः	७—२४; ९—११; १३—२५
अज्ञः	४—४०
अज्ञानजम्	१०—११; १४—८
अज्ञानविमोहिताः	१६—१५
अज्ञानसम्भूतम्	४—४२
अज्ञानसम्मोहः	१८—७२
अज्ञानम्	५—१६; १३—११; १४—१६, १७; १६—४

पदानि	अध्याय—श्लोक
अज्ञानाम्	३—२६
अज्ञानेन	५—१५
अणीयांसम्	८—९
अणो:	८—९
अतत्त्वार्थवत्	१८—२२
अतन्द्रित:	३—२३
अतपस्काय	१८—६७
अत:	२—१२; ९—२४; १२—८; १३—११; १५—१८
अति	६—१६, १६; १८—७७
अतितरन्ति	१३—२५
अतिनीचम्	६—११
अतिरिच्यते	२—३४
अतिवर्तते	६—४४; १४—२१
अतीत:	१४—२१; १५—१८
अतीत्य	१४—२०
अतीन्द्रियम्	६—२१
अतीव	१२—२०
अत्यन्तम्	६—२८
अत्यर्थम्	७—१७
अत्यागिनाम्	१८—१२
अत्युच्छ्रितम्	६—११
अत्येति	८—२८
अत्र	१—४, २३, ४—१६; ८—२, ४, ५; १०—७; १८—१४
अथ	१—२०, २६; २—२६, ३३; ३—३६; ११—५, ४०; १२—९, ११; १८—५८
अथवा	६—४२; १०—४२; ११—४२
अथो	४—३५
अदक्षिणम्	१७—१३
अदम्भित्वम्	१३—७
अदाह्य:	२—२४
अदृष्टपूर्वम्	११—४५
अदृष्टपूर्वाणि	११—६
अदेशकाले	१७—२२
अद्भुतम्	११—२०; १८—७४, ७६, ७७
अद्य	४—३; ११—७; १६—१३
अद्रोह:	१६—३
अद्वेष्टा	१२—१३
अधमाम्	१६—२०
अधर्मस्य	४—७
अधर्मम्	१८—३१, ३२
अधर्म:	१—४०
अधर्माभिभवात्	१—४१
अध:	१४—१८; १५—२, २
अध:शाखम्	१५—१
अधिकतर:	१२—५
अधिकम्	६—२२
अधिक:	६—४६, ४६, ४६
अधिकार:	२—४७
अधिगच्छति	२—६४, ७१; ४—३९; ५—६, २४; ६—१५; १४—१९; १८—४९
अधिदैवतम्	८—४
अधिदैवम्	८—१
अधिभूतम्	८—१, ४
अधियज्ञ:	८—२, ४
अधिष्ठानम्	३—४०; १८—१४
अधिष्ठाय	४—६; १५—९
अध्यक्षेण	९—१०
अध्यात्मचेतसा	३—३०
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम्	१३—११
अध्यात्मनित्या:	१५—५
अध्यात्मविद्या	१०—३२
अध्यात्मसञ्ज्ञितम्	११—१
अध्यात्मम्	७—२९; ८—१, ३

पदानि	अध्याय—श्लोक
अध्येष्यते	१८—७०
अध्रुवम्	१७—१८
अनघ	३—३; १४—६; १५—२०
अनन्त	११—३७
अनन्तबाहुम्	११—१९
अनन्तरम्	१२—१२
अनन्तरूप	११—३८
अनन्तरूपम्	११—१६
अनन्तविजयम्	१—१६
अनन्तवीर्य	११—४०
अनन्तवीर्यम्	११—१९
अनन्तम्	११—११, ४७
अनन्तः	१०—२९
अनन्ताः	२—४१
अनन्यचेताः	८—१४
अनन्यभाक्	९—३०
अनन्यमनसः	९—१३
अनन्यया	८—२२; ११—५४
अनन्येन	१२—६
अनन्ययोगेन	१३—१०
अनन्याः	९—२२
अनपेक्षः	१२—१६
अनवेक्ष्य	१८—२५
अनभिष्वङ्गः	१३—९
अनभिसन्धाय	१७—२५
अनभिस्नेहः	२—५७

पदानि	अध्याय—श्लोक
अनयोः	२—१६
अनलः	७—४
अनलेन	३—३९
अनवलोकयन्	६—१३
अनवाप्तम्	३—२२
अनश्नतः	६—१६
अनसूयन्तः	३—३१
अनसूयवे	९—१
अनसूयः	१८—७१
अनहङ्कारः	१३—८
अनहंवादी	१८—२६
अनात्मनः	६—६
अनादित्वात्	१३—३१
अनादिमत्	१३—१२
अनादिमध्यान्तम्	११—१९
अनादिम्	१०—३
अनादी	१३—१९
अनामयम्	२—५१; १४—६
अनारम्भात्	३—४
अनार्यजुष्टम्	२—२
अनावृत्तिम्	८—२३, २६
अनाशिनः	२—१८
अनाश्रितः	६—१
अनिकेतः	१२—१९
अनिच्छन्	३—३६
अनित्यम्	९—३३

पदानि	अध्याय—श्लोक
अनित्याः	२—१४
अनियतम्	१—४४
अनिर्देश्यम्	१२—३
अनिर्विण्णचेतसा	६—२३
अनिष्टम्	१८—१२
अनीश्वरम्	१६—८
अनुविधीयते	२—६७
अनुकम्पार्थम्	१०—११
अनुचिन्तयन्	८—८
अनुतिष्ठन्ति	३—३१, ३२
अनुत्तमम्	७—२४
अनुत्तमाम्	७—१८
अनुद्विग्नमनाः	२—५६
अनुद्वेगकरम्	१७—१५
अनुपकारिणे	१७—२०
अनुपश्यति	१३—३०; १४—१९
अनुपश्यन्ति	१५—१०
अनुपश्यामि	१—३१
अनुप्रपन्नाः	९—२१
अनुबन्धम्	१८—२५
अनुबन्धे	१८—३९
अनुमन्ता	१३—२२
अनुरज्यते	११—३६
अनुवर्तते	३—२१
अनुवर्तन्ते	३—२३; ४—११
अनुवर्तयति	३—१६

पदानि	अध्याय—श्लोक
अनुशासितारम्	८—९
अनुशुश्रुम	१—४४
अनुशोचन्ति	२—११
अनुशोचितुम्	२—२५
अनुषज्जते	६—४; १८—१०
अनुसन्ततानि	१५—२
अनुस्मर	८—७
अनुस्मरन्	८—१३
अनुस्मरेत्	८—९
अनेकचित्तविभ्रान्ताः	१६—१६
अनेकजन्मसंसिद्धः	६—४५
अनेकदिव्याभरणम्	११—१०
अनेकधा	११—१३
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रम्	११—१६
अनेकवक्त्रनयनम्	११—१०
अनेकवर्णम्	११—२४
अनेकाद्भुतदर्शनम्	११—१०
अनेन	३—१०, ११; ९—१०; ११—८
अनैष्कृतिकः	१८—२८
अन्तकाले	२—७२; ८—५
अन्तगतम्	७—२८
अन्तरम्	११—२०; १३—३४
अन्तरात्मना	६—४७
अन्तराराम:	५—२४
अन्तरे	५—२७
अन्तर्ज्योतिः	५—२४
अन्तवत्	७—२३
अन्तवन्तः	२—१८
अन्तम्	११—१६
अन्तः	२—१६; १०—१९, २०, ३२, ४०; १३—१५; १५—३
अन्तःशरीरस्थम्	१७—६
अन्तःसुखः	५—२४
अन्तःस्थानि	८—२२
अन्तिके	१३—१५
अन्ते	७—१९; ८—६
अन्नसम्भवः	३—१४
अन्नम्	१५—१४
अन्नात्	३—१४
अन्यत्	२—३१, ४२; ७—२, ७; ११—७; १६—८
अन्यत्र	३—९
अन्यथा	१३—११
अन्यदेवताः	७—२०; ९—२३
अन्यया	८—२६
अन्यम्	१४—१९
अन्यः	२—२९, २९; ४—३१; ८—२०; ११—४३; १५—१७; १६—१५; १८—६९
अन्यानि	२—२२
अन्यान्	११—३४
अन्यायेन	१६—१२
अन्याम्	७—५
अन्ये	१—९; ४—२६, २६; ९—१५; १३—२४, २५; १७—४
अन्येभ्यः	१३—२५
अन्वशोचः	२—११
अन्विच्छ	२—४९
अन्विताः	९—२३; १७—१
अपनुद्यात्	२—८
अपरस्परसम्भूतम्	१६—८
अपरम्	४—४; ६—२२
अपरा	७—५
अपराजितः	१—१७
अपराणि	२—२२
अपरान्	१६—१४
अपरिग्रहः	६—१०
अपरिमेयाम्	१६—११

पदानि	अध्याय—श्लोक
अपरिहार्ये	२—२७
अपरे	४—२५, २५, २७, २८, २९, ३०; १३—२४; १८—३
अपर्याप्तम्	१—१०
अपलायनम्	१८—४३
अपश्यत्	१—२६; ११—१३
अपहृतचेतसाम्	२—४४
अपहृतज्ञाना:	७—१५
अपात्रेभ्य:	१७—२२
अपानम्	४—२९
अपाने	४—२९
अपावृतम्	२—३२
अपि	१—२७, ३५, ३५; २—५, ८, १६, २९, ३१, ३४, ४०, ५९, ६०, ७२; ३—५, ८, २०, ३१, ३३, ३६; ४—६, ६, १३, १५, १६, १७, २०, २२, ३०, ३६; ५—४, ५, ७, ९, ११; ६—९, २२, २५, ३१, ४४, ४४, ४६, ४७; ७—३, २३, ३०; ८—६; ९—१५, २३, २३, २५, २९, ३०, ३२, ३२; १०—३७, ३९; ११—२, २६, २९, ३२, ३४, ३७, ३९, ४१, ४२, ४३, ५२; १२—१, १०, १०, ११; १३—२, १७, १९, २२, २३, २५, ३१; १४—२; १५—८, १०, ११, १८; १६—७, १३, १४; १७—७, १०, १२; १८—६, १७, १९, ४३, ४४, ४८, ५६, ६०, ७१, ७१
अपुनरावृत्तिम्	५—१७
अपैशुनम्	१६—२
अपोहनम्	१५—१५
अप्रकाश:	१४—१३
अप्रतिमप्रभाव	११—४३
अप्रतिष्ठम्	१६—८
अप्रतिष्ठ:	६—३८
अप्रतीकारम्	१—४६
अप्रदाय	३—१२
अप्रमेयम्	११—१७, ४२
अप्रमेयस्य	२—१८
अप्रवृत्ति:	१४—१३
अप्राप्य	६—३७; ९—३; १६—२०
अप्रियम्	५—२०
अप्सु	७—८
अफलप्रेप्सुना	१८—२३
अफलाकाङ्क्षिभि:	१७—११, १७
अबुद्धय:	७—२४
अब्रवीत्	१—२, २८; ४—१
अभक्ताय	१८—६७
अभयम्	१०—४; १६—१
अभवत्	१—१३
अभावयत:	२—६६
अभाव:	२—१६; १०—४
अभाषत	११—१४
अभिक्रमनाश:	२—४०
अभिजनवान्	१६—१५
अभिजातस्य	१६—३, ४
अभिजात:	१६—५
अभिजानन्ति	९—२४
अभिजानाति	४—१४; ७—१३, २५; १८—५५
अभिजायते	२—६२; ६—४१; १३—२३
अभित:	५—२६

पदानि	अध्याय—श्लोक
अभिधास्यति	१८—६८
अभिधीयते	१३—१; १७—२७; १८—११
अभिनन्दति	२—५७
अभिप्रवृत्तः	४—२०
अभिभवति	१—४०
अभिभूय	१४—१०
अभिमानः	१६—४
अभिमुखाः	११—२८
अभिरक्षन्तु	१—११
अभिरतः	१८—४५
अभिविज्वलन्ति	११—२८
अभिसन्धाय	१७—१२
अभिहिता	२—३९
अभ्यधिकः	११—४३
अभ्यर्च्य	१८—४६
अभ्यसूयकाः	१६—१८
अभ्यसूयति	१८—६७
अभ्यसूयन्तः	३—३२
अभ्यहन्यन्त	१—१३
अभ्यासयोगयुक्तेन	८—८
अभ्यासयोगेन	१२—९
अभ्यासात्	१२—१२; १८—३६
अभ्यासे	१२—१०
अभ्यासेन	६—३५
अभ्युत्थानम्	४—७
अमलान्	१४—१४

पदानि	अध्याय—श्लोक
अमानित्वम्	१३—७
अमितविक्रमः	११—४०
अमी	११—२१, २६, २८
अमुत्र	६—४०
अमूढाः	१५—५
अमृतत्वाय	२—१५
अमृतस्य	१४—२७
अमृतम्	९—१९; १०—१८; १३—१२; १४—२०
अमृतोद्भवम्	१०—२७
अमृतोपमम्	१८—३७, ३८
अमेध्यम्	१७—१०
अम्बुवेगाः	११—२८
अम्भसा	५—१०
अम्भसि	२—६७
अयज्ञस्य	४—३१
अयतिः	६—३७
अयथावत्	१८—३१
अयनेषु	१—११
अयशः	१०—५
अयम्	२—१९, २०, २०, २४, २४, २४, २५, २५, २५, ३०, ५८; ३—९, ३६; ४—३, ३१, ४०; ६—२१, ३३;

पदानि	अध्याय—श्लोक
	७—२५; ८—१९; ११—१; १३—३१; १५—९; १७—३
अयुक्तस्य	२—६६, ६६
अयुक्तः	५—१२; १८—२८
अयोगतः	५—६
अरतिः	१३—१०
अरागद्वेषतः	१८—२३
अरिसूदन	२—४
अर्चितुम्	७—२१
अर्जुन	२—२, ४५; ३—७; ४—५, ९, ३७; ६—१६, ३२, ४६; ७—१६, २६; ८—१६, २७; ९—१९; १०—३२, ३९, ४२; ११—४७, ५४; १८—९, ३४, ६१
अर्जुनम्	११—५०
अर्जुनः	१—२१, २८, ४७; २—४, ५४; ३—१, ३६; ४—४; ५—१; ६—३३, ३७; ८—१; १०—१२; ११—१, १५, ३६, ५१;

पदानि अध्याय—श्लोक

१२—१; १४ २१; १७—१; १८—१, ७३
अर्थकामान् २—५
अर्थव्यपाश्रय: ३—१८
अर्थसञ्चयान् १६—१२
अर्थ: २—४६; ३—१८
अर्थार्थी ७—१६
अर्थे १—३३; २—२७; ३—३४
अर्पणम् ४—२४
अर्पितमनोबुद्धि: ८—७; १२—१४
अर्यमा १०—२९
अर्हति २—१७
अर्हसि २—२५, २६, २७, ३०, ३१; ३—२०; ६—३९; १०—१६; ११—४४; १६—२४
अर्हा: १—३७
अलस: १८—२८
अलोलुप्त्वम् १६—२
अल्पबुद्धय: १६—९
अल्पमेधसाम् ७—२३
अल्पम् १८—२२
अवगच्छ १०—४१

पदानि अध्याय—श्लोक

अवजानन्ति ९—११
अवज्ञातम् १७—२२
अवतिष्ठति १४—२३
अवतिष्ठते ६—१८
अवध्य: २—३०
अवनिपालसङ्घै: ११—२६
अवरम् २—४९
अवशम् ९—८
अवश: ३—५; ६—४४; ८—१९; १८—६०
अवशिष्यते ७—२
अवष्टभ्य ९—८; १६—९
अवसादयेत् ६—५
अवस्थातुम् १—३०
अवस्थितम् १५—११
अवस्थित: ९—४; १३—३२
अवस्थितान् १—२२, २७
अवस्थिता: १—११, ३३; २—६; ११—३२
अवहासार्थम् ११—४२
अवाच्यवादान् २—३६
अवाप्तव्यम् ३—२२
अवाप्तुम् ६—३६
अवाप्नोति १५—८; १६—२३; १८—५६
अवाप्य २—८

पदानि अध्याय—श्लोक

अवाप्यते १२—५
अवाप्स्यथ ३—११
अवाप्स्यसि २—३३, ३८, ५३; १२—१०
अविकम्पेन १०—७
अविकार्य: २—२५
अविज्ञेयम् १३—१५
अविद्वांस: ३—२५
अविधिपूर्वकम् ९—२३; १६—१७
अविनश्यन्तम् १३—२७
अविनाशि २—१७
अविनाशिनम् २—२१
अविपश्चित: २—४२
अविभक्तम् १३—१६; १८—२०
अवेक्षे १—२३
अवेक्ष्य २—३१
अव्यक्तनिधनानि २—२८
अव्यक्तमूर्तिना ९—४
अव्यक्तसञ्ज्ञके ८—१८
अव्यक्तम् ७—२४; १२—१, ३; १३—५
अव्यक्त: २—२५; ८—२०, २१
अव्यक्ता १२—५
अव्यक्तात् ८—१८, २०
अव्यक्तादीनि २—२८

पदानि	अध्याय—श्लोक
अव्यक्तासक्तचेतसाम्	१२—५
अव्यभिचारिणी	१३—१०
अव्यभिचारिण्या	१८—३३
अव्यभिचारेण	१४—२६
अव्ययस्य	२—१७; १४—२७
अव्ययम्	२—२१; ४—१, १३; ७—१३, २४, २५; ९—२, १३, १८; ११—२, ४; १४—५; १५—१, ५; १८—२०, ५६
अव्ययः	११—१८; १३—३१; १५—१७
अव्ययात्मा	४—६
अव्ययाम्	२—३४
अव्यवसायिनाम्	२—४१
अशक्तः	१२—११
अशमः	१४—१२
अशस्त्रम्	१—४६
अशान्तस्य	२—६६
अशाश्वतम्	८—१५
अशास्त्रविहितम्	१७—५
अशुचिव्रताः	१६—१०
अशुचिः	१८—२७
अशुचौ	१६—१६
अशुभात्	४—१६; ९—१
अशुभान्	१६—१९
अशुश्रूषवे	१८—६७
अशेषतः	६—२४, ३९; ७—२; १८—११
अशेषेण	४—३५; १०—१६; १८—२९, ६३
अशोच्यान्	२—११
अशोच्यः	२—२४
अश्नन्	५—८
अश्नतः	६—१६
अश्नन्ति	९—२०
अश्नामि	९—२६
अश्नासि	९—२७
अश्नुते	३—४; ५—२१; ६—२८; १३—१२; १४—२०
अश्रद्दधानः	४—४०
अश्रद्दधानाः	९—३
अश्रद्धया	१७—२८
अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्	२—१
अश्रौषम्	१८—७४
अश्वत्थम्	१५—१, ३
अश्वत्थः	१०—२६
अश्वत्थामा	१—८
अश्वानाम्	१०—२७
अश्विनौ	११—६, २२
अष्टधा	७—४
असक्तबुद्धिः	१८—४९
असक्तम्	९—९; १३—१४
असक्तः	३—७, १९, १९, २५
असक्तात्मा	५—२१
असक्तिः	१३—९
असङ्गशस्त्रेण	१५—३
असतः	२—१६
असत्	९—१९; ११—३७; १३—१२; १७—२८
असत्कृतम्	१७—२२
असत्कृतः	११—४२
असत्यम्	१६—८
असद्ग्राहान्	१६—१०
असपत्नम्	२—८
असमर्थः	१२—१०
असन्न्यस्तसङ्कल्पः	६—२
असम्मूढः	५—२०; १०—३; १५—१९
असम्मोहः	१०—४
असंयतात्मना	६—३६
असंशयम्	६—३५; ७—१; ८—७
असंशयः	१८—६८

पदानि — अध्याय—श्लोक

असि ४—३, ३६; ८—२; १०—१७; ११—३८, ४०, ४२, ४३, ५२, ५३; १२—१०, ११; १६—५; १८—६४, ६५
असितः १०—१३
असिद्धौ ४—२२
असुखम् ९—३३
असृष्टान्नम् १७—१३
असौ ११—२६; १६—१४
अस्ति २—४०, ४२, ६६; ३—२२; ४—३१, ४०; ६—१६; ७—७; ८—५; ९—२९; १०—१८, १९, ३९, ४०; ११—४३; १६—१३, १५; १८—४०
अस्तु २—४७; ३—१०; ११—३१, ३९, ४०
अस्थिरम् ६—२६
अस्मदीयैः ११—२६
अस्माकम् १—७, १०
अस्मात् १—३९
अस्मान् १—३६
अस्माभिः १—३९
अस्मि ७—८, ९, ९, १०, ११; १०—२१, २२, २२, २२, २२, २३, २३, २४, २५, २५, २८, २८, २८, २९, २९, ३०, ३१, ३१, ३१, ३३, ३६, ३६, ३६, ३७, ३८, ३८, ३८; ११—३२, ४५, ५१; १५—१८; १६—१५; १८—५५, ७३,
अस्मिन् १—२२; २—१३; ३—३; ८—२; १३—२२; १४—११; १६—६
अस्य २—१७, ४०, ५९, ६५, ६७; ३—१८, ३४, ४०; ६,—३९; ९—३, १७; ११—१८, ३८, ४३, ५२; १३—२१; १५—३
अस्याम् २—७२,
अस्वर्ग्यम् २—२
अहत्वा २—५
अहरागमे ८—१८, १९
अहम् १—२२, २३; २—४, ७, १२; ३—२, २३, २४, २७; ४—१, ५, ७, ११; ६—३०, ३३, ३४; ७—२, ६, ८, १०, ११, १२, १७, २१, २५, २६; ८—४, १४; ९—४, ७, १६, १६, १६, १६, १६, १६, १६, १६, १७, १९, १९, १९, २२, २४, २६, २९, २९; १०—१, २, ८, ११, १७, २०, २०, २१, २१, २३, २४, २५, २८, २९, २९, ३०, ३०, ३१, ३२, ३२, ३३, ३३, ३४, ३५, ३५, ३६, ३६, ३७, ३८, ३९, ४२; ११—२३, ४२, ४४, ४६, ४८, ५३, ५४; १२—७; १४—३, ४, २७; १५—१३, १४, १५, १५, १५, १८; १६—१४, १४, १४,

पदानि अध्याय—श्लोक

१९; १८—६६, ७०, ७४, ७५
अहङ्कारविमूढात्मा ३—२७
अहङ्कारम् १६—१८; १८—५३, ५९
अहङ्कारः ७—४; १३—५
अहङ्कारात् १८—५८
अहङ्कृतः १८—१७
अहः ८—१७, २४
अहिताः २—३६; १६—९
अहिंसा १०—५; १३—७; १६—२; १७—१४
अहैतुकम् १८—२२
अहो १—४५
अहोरात्रविदः ८—१७
अंशः १५—७
अंशुमान् १०—२१

आ

आकाशस्थितः ९—६
आकाशम् १३—३२
आख्यातम् १८—६३
आख्याहि ११—३१
आगच्छेत् ३—३४
आगताः ४—१०; १४—२

पदानि अध्याय—श्लोक

आगमापायिनः २—१४
आचरतः ४—२३
आचरति ३—२१; १६—२२
आचरन् ३—१९
आचारः १६—७
आचार्य १—३
आचार्यम् १—२
आचार्यान् १—२६
आचार्याः १—३४
आचार्योपासनम् १३—७
आज्यम् ९—१६
आढ्यः १६—१५
आततायिनः १—३६
आतिष्ठ ४—४२
आत्थ ११—३
आत्मकारणात् ३—१३
आत्मतृप्तः ३—१७
आत्मनः ४—४२; ५—१६; ६—५, ५, ६, ११, १९; ८—१२; १०—१८; १६—२१, २२; १७—१९; १८—३९
आत्मना २—५५; ३—४३; ६—५, ६, २०; १०—१५; १३—२४, २८

पदानि अध्याय—श्लोक

आत्मनि २—५५; ३—१७; ४—३५, ३८; ५—२१; ६—१८, २०, २६, २९; १३—२४; १५—११
आत्मपरदेहेषु १६—१८
आत्मबुद्धिप्रसादजम् १८—३७
आत्मभावस्थः १०—११
आत्ममायया ४—६
आत्मयोगात् ११—४७
आत्मरतिः ३—१७
आत्मवन्तम् ४—४१
आत्मवश्यैः २—६४
आत्मवान् २—४५
आत्मविनिग्रहः १३—७; १७—१६
आत्मविभूतयः १०—१६, १९
आत्मविशुद्धये ६—१२
आत्मशुद्धये ५—११
आत्मसम्भाविताः १६—१७
आत्मसंयमयोगाग्नौ ४—२७
आत्मसंस्थम् ६—२५
आत्मा ६—५, ५, ६, ६, ६; ७—१८; ९—५,

पदानि	अध्याय—श्लोक
	१०—२०; १३—३२
आत्मानम्	३—४३; ४—७; ६—५, ५, १०, १५, २०, २८, २९; ९—३४; १०—१५; ११—३, ४; १३—२४, २८, २९; १८—१६, ५१
आत्मौपम्येन	६—३२
आत्यन्तिकम्	६—२१
आदत्ते	५—१५
आदर्शः	३—३८
आदिकर्त्रे	११—३७
आदित्यगतम्	१५—१२
आदित्यवत्	५—१६
आदित्यवर्णम्	८—९
आदित्यानाम्	१०—२१
आदित्यान्	११—६
आदिदेवम्	१०—१२
आदिदेवः	११—३८
आदिम्	११—१६
आदिः	१०—२, २०, ३२; १५—३
आदौ	३—४१; ४—४
आद्यन्तवन्तः	५—२२
आद्यम्	८—२८; ११—३१, ४७; १५—४
आधत्स्व	१२—८
आधाय	५—१०; ८—१२
आधिपत्यम्	२—८
आपन्नम्	७—२४
आपन्नाः	१६—२०
आपः	२—२३, ७०; ७—४
आपूर्य	११—३०
आपूर्यमाणम्	२—७०
आप्तुम्	५—६; १२—९
आप्नुयाम्	३—२
आप्नुवन्ति	८—१५
आप्नोति	२—७०, ३—१९; ४—२१, ५—१२; १८—४७, ५०
आब्रह्मभुवनात्	८—१६
आयुधानाम्	१०—२८
आयुःसत्त्वबलारोग्य-सुखप्रीतिविवर्धनाः	१७—८
आरभते	३—७
आरभ्यते	१८—२५
आरम्भः	१४—१२
आराधनम्	७—२२
आरुरुक्षोः	६—३
आर्जवम्	१३—७; १६—१; १७—१४; १८—४२
आर्तः	७—१६
आवयोः	१८—७०
आवर्तते	८—२६
आविश्य	१५—१३, १७
आविष्टम्	२—१
आविष्टः	१—२८
आवृतम्	३—३८, ३९; ५—१५
आवृतः	३—३८
आवृता	१८—३२
आवृताः	१८—४८
आवृत्तिम्	८—२३
आवृत्य	३—४०; १३—१३; १४—९
आवेशितचेतसाम्	१२—७
आवेश्य	८—१०; १२—२
आव्रियते	३—३८
आशयात्	१५—८
आशापाशशतैः	१६—१२
आशु	२—६५
आश्चर्यवत्	२—२९; २९, २९
आश्चर्याणि	११—६
आश्रयेत्	१—३६
आश्रितम्	९—११

पदानि	अध्याय—श्लोक
आश्रितः	१२—११; १५—१४
आश्रिताः	७—१५; ९—१३
आश्रित्य	७—२९; १६—१०; १८—५९
आश्वासयामास	११—५०
आसक्तमनाः	७—१
आसने	६—१२
आसनम्	६—११
आसम्	२—१२
आसाद्य	९—२०
आसीत	२—५४, ६१; ६—१४
आसीनम्	९—९
आसीनः	१४—२३
आसुरनिश्चयान्	१७—६
आसुरम्	७—१५; १६—६
आसुरः	१६—६
आसुराः	१६—७
आसुरी	१६—५
आसुरीषु	१६—१९
आसुरीम्	९—१२; १६—४, २०
आस्तिक्यम्	१८—४२
आस्ते	३—६; ५—१३
आस्थाय	७—२०
आस्थितः	५—४; ६—३१; ७—१८; ८—१२
आस्थिताः	३—२०
आह	१—२१; ११—३५
आहवे	१—३१
आहारः	१७—७
आहाराः	१७—८, ९
आहुः	३—४२; ४—१९; ८—२१; १०—१३; १४—१६; १६—८
आहो	१७—१

इ

पदानि	अध्याय—श्लोक
इक्ष्वाकवे	४—१
इङ्गते	६—१९; १४—२३
इच्छ	१२—९
इच्छति	७—२१
इच्छन्तः	८—११
इच्छसि	११—७; १८—६०, ६३
इच्छा	१३—६
इच्छाद्वेषसमुत्थेन	७—२७
इच्छामि	१—३५; ११—३, ३१, ४६; १८—१
इज्यते	१७—११, १२
इज्यया	११—५३
इतरः	३—२१
इतः	७—५; १४—१
इति	१—२५; ४४; २—९, ४२; ३—२७, २८; ४—३, ४, १४, १६; ५—८, ९; ६—२, ८, १८, ३६; ७—४, ६, १२, १९; ८—१३, २१; ९—६; १०—८; ११—४, २१, ४१, ४१, ५०; १३—१, १, ११, १८, २२; १४—५, ११, २३; १५—१७, २०; १६—११, १५; १७—२, ११, १६, २०, २३, २४, २५, २६, २७, २७, २८; १८—३, ३, ६, ८, ९, ११, १८, ३२, ५९, ६३, ६४, ७०, ७४
इदम्	१—१०, २१, २८; २—१, २, १०, १७; ३—३१, ३८; ७—२, ५, ७, १३; ८—२२, २८; ९—१, २, ४; १०—४२; ११—१९,

पदानि अध्याय—श्लोक

२०, २०, ४१, ४७, ४९, ४९, ५१, ५२; १२—२०; १३—१; १४—२; १५—२०; १६—१३, १३, १३, २१; १८—४६, ६७,
इदानीम् ११—५१; १८—३६
इन्द्रियकर्माणि ४—२७
इन्द्रियगोचराः १३—५
इन्द्रियग्रामम् ६—२४; १२—४
इन्द्रियस्य ३—३४, ३४
इन्द्रियाग्निषु ४—२६
इन्द्रियाणाम् २—८, ६७; १०—२२
इन्द्रियाणि २—५८, ६०, ६१, ६८; ३—७, ४०, ४१, ४२; ४—२६; ५—९; १३—५; १५—७
इन्द्रियारामः ३—१६
इन्द्रियार्थान् ३—६
इन्द्रियार्थेभ्यः २—५८, ६८
इन्द्रियार्थेषु ५—९; ६—४; १३—८
इन्द्रियेभ्यः ३—४२
इन्द्रियैः २—६४; ५—११
इमम् १—२८; २—३३; ४—१, २; ९—८, ३३; १३—३३; १६—१३; १७—७; १८—६८, ७०, ७४, ७६
इमान् १०—१६; १८—१७
इमाम् २—३९, ४२
इमाः ३—२४; १०—६,
इमे १—३३; २—१२, १८; ३—२४
इमौ १५—१६
इयम् ७—४, ५
इव १—३०; २—१०; ५८, ६७; ३—२, २, ३६; ५—१०; ६—३४, ३८; ७—७; ११—४४, ४४; १३—१६; १५—८; १८—३७, ३८, ४८
इषुभिः २—४
इष्टकामधुक् ३—१०
इष्टम् १८—१२
इष्टः १८—६४, ७०
इष्टानिष्टोपपत्तिषु १३—९
इष्टान् ३—१२
इष्टाः १७—९
इष्ट्वा ९—२०
इह २—५, ५, ४०, ४१, ५०; ३—१६, १८, ३७, ४—२, १२, ३८; ५—१९, २३; ६—४०; ७—२; ११—७, ३२; १५—३; १६—२४; १७—१८, २८

ई

ईक्षते ६—२९; १८—२०
ईड्यम् ११—४४
ईदृक् ११—४९
ईदृशम् २—३२; ६—४२
ईशम् ११—१५, ४४
ईश्वरभावः १८—४३
ईश्वरम् १३—२८
ईश्वरः ४—६; १५—८, १७; १६—१४; १८—६१
ईहते ७—२२
ईहन्ते १६—१२

पदानि	अध्याय—श्लोक
उ	
उक्तम्	११—१, ४१; १२—२०; १३—१८; १५—२०
उक्तः	१—२४; ८—२१; १३—२२
उक्ताः	२—१८
उक्त्वा	१—४७; २—९, ९; ११—९, २१, ५०
उग्रकर्माणः	१६——९
उग्ररूपः	११—३१
उग्रम्	११—२०
उग्राः	११—३०
उग्रैः	११—४८
उच्चैः	१—१२
उच्चैःश्रवसम्	१०—२७
उच्छिष्टम्	१७—१०
उच्छोषणम्	२—८
उच्यते	२—२५, ४८, ५५, ५६; ३—६, ४०; ६—३, ३, ४, ८, १८; ८—१, ३; १३—१२, १७, २०, २०; १४—२५; १५—१६; १७—१४, १५, १६, २७, २८, १८—२३, २५, २६, २८
उत	१—४०; १४—९, ११
उत्क्रामति	१५—८
उत्क्रामन्तम्	१५—१०
उत्तमविदाम्	१४—१४
उत्तमम्	४—३; ६—२७; ९—२; १४—१; १८—६
उत्तमः	१५—१७, १८
उत्तमाङ्गैः	११—२७
उत्तमौजाः	१—६
उत्तरायणम्	८—२४
उत्तिष्ठ	२—३, ३७; ४—४२; ११—३३
उत्थिता	११—१२
उत्सन्नकुलधर्माणाम्	१—४४
उत्सादनार्थम्	१७—१९
उत्साद्यन्ते	१—४३
उत्सीदेयुः	३—२४
उत्सृजामि	९—१९
उत्सृज्य	१६—२३; १७—१
उदपाने	२—४६
उदाराः	७—१८
उदासीनवत्	९—९; १४—२३
उदासीनः	१२—१६
उदाहृतम्	१३—६; १७—१९, २२; १८—२२, २४, ३९
उदाहृतः	१५—१७
उदाहृत्य	१७—२४
उद्दिश्य	१७—२१
उद्देशतः	१०—४०
उद्धरेत्	६—५
उद्धवः	१०—३४
उद्यताः	१—४५
उद्यम्य	१—२०
उद्विजते	१२—१५, १५
उद्विजेत्	५—२०
उन्मिषन्	५—९
उपजायते	२—६२, ६५; १४—११
उपजायन्ते	१४—२
उपजुह्वति	४—२५
उपदेक्ष्यन्ति	४—३४
उपद्रष्टा	१३—२२
उपधारय	७—६; ९—६
उपपद्यते	२—३; ६—३९; १३—१८; १८—७
उपपन्नम्	२—३२
उपमा	६—१९
उपयान्ति	१०—१०

पदानि अध्याय—श्लोक

उपरतम् २—३५
उपरमते ६—२०
उपरमेत् ६—२५
उपलभ्यते १५—३
उपलिप्यते १३—३२, ३२
उपविश्य ६—१२
उपसङ्गम्य १—२
उपसेवते १५—९
उपहन्याम् ३—२४
उपायतः ६—३६
उपाविशत् १—४७
उपाश्रिताः ४—१०; १६—११
उपाश्रित्य १४—२; १८—५७
उपासते ९—१४, १५; १२—२, ६; १३—२५
उपेतः ६—३७
उपेताः १२—२
उपेत्य ८—१५, १६
उपैति ६—२७; ८—१०, २८
उपैष्यसि ९—२८
उभयविभ्रष्टः ६—३८
उभयोः १—२१, २४, २७; २—१०, १६; ५—४
उभे २—५०

पदानि अध्याय—श्लोक

उभौ २—१९; ५—२; ३—१९
उरगान् ११—१५
उल्बेन ३—३८
उवाच १—१, २, २१, २४, २५, २८, ४७; २—१, १, २, ४, ९, १०, ११, ५४, ५५; ३—१, ३, १०, ३६, ३७; ४—१, ४, ५; ५—१, २; ६—१, ३३, ३५, ३७, ४०; ७—१; ८—१, ३; ९—१; १०—१, १२, १९; ११—१, ५, ९, १५, ३२, ३५, ३६, ४७, ५०, ५१, ५२; १२—१ २; १३—१; १४—१, २१, २२; १५—१; १६—१; १७—१, २; १८—१, २, ७३, ७४
उशना १०—३७
उषित्वा ६—४१

ऊ

ऊर्जितम् १०—४१
ऊर्ध्वमूलम् १५—१

पदानि अध्याय—श्लोक

ऊर्ध्वम् १२—८; १४—१८; १५—२
ऊष्मपाः ११—२२

ऋ

ऋक् ९—१७
ऋच्छति २—७२; ५—२९
ऋतम् १०—१४; ५—२९
ऋतूनाम् १०—३५
ऋते ११—३२
ऋद्धम् २—८
ऋषयः ५—२५; १०—१३
ऋषिभिः १३—४
ऋषीन् ११—१५

ए

एकत्वम् ६—३१
एकत्वेन ९—१५
एकभक्तिः ७—१७
एकया ८—२६
एकस्थम् ११—७, १३; १३—३०
एकस्मिन् १८—२२
एकम् ३—२; ५—१, ४, ५; १०—२५; १३—५; १८—२०, ६६

पदानि	अध्याय—श्लोक
एकः	११—४२; १३—३३
एका	२—४१
एकाकी	६—१०
एकाक्षरम्	८—१३
एकाग्रम्	६—१२
एकाग्रेण	१८—७२
एकान्तम्	६—१६
एकांशेन	१०—४२
एकेन	११—२०
एके	१८—३
एतत्	२—३, ६; ३—३२; ४—३, ४; ६—२६, ३९, ४२; १०—१४; ११—३, ३५; १२—११; १३—१, ६, ११, १८; १५—२०; १६—२१; १७—१६, २६; १८—६३, ७२, ७५
एतद्योनीनि	७—६
एतयोः	५—१
एतस्य	६—३३
एतानि	१४—१२, १३, १५—८; १८—६; १३
एतान्	१—२२, २५, ३५, ३६; १४—२०, २१, २१, २६
एतावत्	१६—११
एताम्	१—३; ७—१४; १०—७; १६—९
एति	४—९, ९; ८—६; ११—५५
एते	१—२३, ३८; २—१५; ४—३०; ७—१८; ८—२६, २७; ११—३३; १८—१५
एतेन	३—३९; १०—४२
एतेषाम्	१—१०
एतैः	१—४३; ३—४०; १६—२२
एधांसि	४—३७
एनम्	२—१९, १९, २१, २३; २३, २३, २५, २६, २९, २९, २९; ३—३७, ४१; ४—४२; ६—२७; ११—५०; १५—३, ११, ११
एनाम्	२—७२
एभिः	७—१३; १८—४०
एभ्यः	३—१२; ७—१३
एव	१—१, ६, ८, ११, ११, १३, १४, १९, २७, ३०, ३४, ३६, ४२; २—५, ६, १२, १२, २४, २८, २९, २९, ४७, ५५; ३—४, १२, १७, १७, १८, २०, २०, २१, २२; ४—३, ११, १५, २०, २४, २५, २५, ३६; ५—८, १३, १५, १८, १९, २२, २३, २४, २७, २८; ६—३, ५, ५, ६, ६, १६, १८, २०, २१, २४, २६, ४०, ४२, ४४; ७—४, १२, १२, १४, १८, १८, १८, २१, २२; ८—४, ५, ६, ७, १०, १८, १९, २३, २८; ९—१२, १६, १७, १९, २३, २४, ३०, ३४; १०—१, ४, ५, ११, १३, १५,

पदानि अध्याय—श्लोक

२०, ३२, ३३, ३८, ४१, ४१; ११—८, २२, २५, २६, २८, २९, ३३, ३३, ३५, ४०, ४५, ४६, ४६, ४९; १२—४, ६, ८, ८, १३; १३—४, ५, ८, १४, १५, १९, १९, २५, २९, ३०; १४—१०, १३, १७, १७, २२, २३; १५—४, ७, ९, १५, १५, १६; १६—४, ६, १९, २०; १७—२, ३, ६, ११, १२, १५, १८, २७, २७; १८—५, ५, ८, ८, ९, ९, १४, १९, २९, ३१, ३५, ४२, ५०, ६२, ६५, ६८

एवम् १—२४, ४७, २—९, २५, २६, ३८; ३—१६, ४३; ४—२, ९, १५, ३२, ३२, ३५; ६—१५, २८; ९—२१, २८, ३४; ११—३, ९; १२—१ १३—२३, २५, ३४; १५—१९; १८—१६

एवंरूपः ११—४८

एवंविधः ११—५३, ५४

एषः ३—१०, ३७, ३७, ४०; १०—४०; १८—५९

एषा २—३९, ७२; ७—१४

एषाम् १—४२

एष्यति १८—६८

एष्यसि ८—७, ९—३४; १८—६५

ऐ

ऐकान्तिकस्य १४—२७

ऐश्वरम् ९—५; ११—३, ८, ९,

ऐरावतम् १०—२७

ओ

ओजसा १५—१३

ओषधीः १५—१३

ओम् ८—१३; १७—२३, २४

ओङ्कार ९—१७

औ

औषधम् ९—१६

क

कच्चित् ६—३८; १८—७२, ७२

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः १७—९

कतरत् २—६

कथय १०—१८

कथयतः १८—७५

कथयन्तः १०—९

कथयिष्यन्ति २—३४

कथयिष्यामि १०—१९

कथम् १—३७, ३९; २—४, २१; ४—४; ८—२, २; १०—१७; १४—२१

कदाचन २—४७; १८—६७

कदाचित् २—२०

कपिध्वजः १—२०

कपिलः १०—२६

कमलपत्राक्ष ११—२

कमलासनस्थम् ११—१५

करणम् १८—१४, १८

करिष्यति ३—३३

करिष्यसि २—३३; १८—६०

करिष्ये १८—७३

करुणः १२—१३

करोति ४—२०; ५—१०; ६—१; १३—३१

पदानि	अध्याय—श्लोक
करोमि	५—८
करोषि	९—२७
कर्णम्	११—३४
कर्णः	१—८
कर्तव्यम्	३—२२
कर्तव्यानि	१८—६
कर्ता	३—२४, २७; १८—१४, १८, १९, २६, २७, २८,
कर्तारम्	४—१३; १४—१९; १८—१६
कर्तुम्	१—४५; २—१७; ३—२०; ९—२; १२—११; १६—२४; १८—६०
कर्तृत्वम्	५—१४
कर्म	२—४९; ३—५, ८, ८, ९, १५, १९, १९, २४; ४—९, १५, १५, १६, १६, १८, २१, २३, ३३; ५—११; ६—१, ३; ७—२९; ८—१; १६—२४; १७—२७; १८—३, ८, ९, १०, १५, १८, १९, २३, २४, २५, ४३, ४४, ४७, ४८,
कर्मचोदना	१८—१८
कर्मजम्	२—५१
कर्मजा	४—१२
कर्मजान्	४—३२
कर्मणः	३—१, ९; ४—१७, १७; १४—१६; १८—७, १२
कर्मणा	३—२०; ८—६०
कर्मणाम्	३—४; ४—१२; ५—१; १४—१२; १८—२
कर्मणि	२—४७; ३—१, २२, २३, २५; ४—१८, २०; १४—९; १७—२६; १८—४५
कर्मफलत्यागः	१२—१२
कर्मफलत्यागी	१८—११
कर्मफलप्रेप्सुः	१८—२७
कर्मफलसंयोगम्	५—१४
कर्मफलहेतुः	२—४७
कर्मफलम्	५—१२; ६—१
कर्मफलासङ्गम्	४—२०
कर्मफले	४—१४
कर्मबन्धनः	३—९
कर्मबन्धम्	२—३९
कर्मबन्धनैः	९—२८
कर्मभिः	३—३१; ४—१४
कर्मयोगम्	३—७
कर्मयोगः	५—२, २
कर्मयोगेन	३—३; १३—२४
कर्मसङ्गिनाम्	३—२६
कर्मसङ्गिषु	१४—१५
कर्मसङ्गेन	१४—७
कर्मसमुद्भवः	३—१४
कर्मसङ्ग्रहः	१८—१८
कर्मसञ्ज्ञितः	८—३
कर्मसन्न्यासात्	५—२
कर्मसु	२—५०; ६—४, १७; ९—९
कर्माणि	२—४८; ३—२७, ३०; ४—१४, ४१; ५—१०, १४; ९—९; १२—६, १०; १३—२९; १८—६, ११, ४१
कर्मानुबन्धीनि	१५—२
कर्मिभ्यः	६—४६
कर्मेन्द्रियाणि	३—६
कर्मेन्द्रियैः	३—७

पदानि	अध्याय—श्लोक
कर्शयन्तः	१७—६
कर्षति	१५—७
कलयताम्	१०—३०
कलेवरम्	८—५, ६
कल्पक्षये	९—७
कल्पते	२—१५; १४—२६; १८—५३
कल्पादौ	९—७
कल्याणकृत्	६—४०
कवयः	४—१६; १८—२
कविम्	८—९
कविः	१०—३७
कवीनाम्	१०—३७
कश्चन	३—१८; ६—२; ७—२६; ८—२७
कश्चित्	२—१७, २९, २९; ३—५, १८; ६—४०, ७—३, ३; १८—६९
कश्मलम्	२—२
कस्मात्	११—३७
कस्यचित्	५—१५
कम्	२—२१, २१
कन्दर्पः	१०—२८
कः	८—२; ११—३१; १६—१५

पदानि	अध्याय—श्लोक
का	
का	१—३६; २—२८, ५४; १७—१
काङ्क्षति	५—३; १२—१७ १४—२२; १८—५४
काङ्क्षन्तः	४—१२
काङ्क्षितम्	१—३३
काङ्क्षे	१—३२
कामकामाः	९—२१
कामकामी	२—७०
कामकारतः	१६—२३
कामकारेण	५—१२
कामक्रोधपरायणाः	१६—१२
कामक्रोध-वियुक्तानाम्	५—२६
कामक्रोधोद्भवम्	५—२३
कामधुक्	१०—२८
कामभोगार्थम्	१६—१२
कामभोगेषु	१६—१६
कामरागबलान्विताः	१७—५
कामरागविवर्जितम्	७—११
कामरूपम्	३—४३
कामरूपेण	३—३९
कामसङ्कल्पवर्जिताः	४-१९

पदानि	अध्याय—श्लोक
कामहैतुकम्	१६—८
कामम्	१६—१०, १८; १८—५३
कामः	२—६२; ३—३७; ७—११; १६—२१
कामात्मानः	२—४३
कामात्	२—६२
कामान्	२—५५, ७१; ६—२४; ७—२२
कामाः	२—७०
कामेप्सुना	१८—२४
कामैः	७—२०
कामोपभोगपरमाः	१६-११
काम्यानाम्	१८—२
कायक्लेशभयात्	१८—८
कायशिरोग्रीवम्	६—१३
कायम्	११—४४
कायेन	५—११
कारणम्	६—३, ३; १३—२१
कारणानि	१८—१३
कारयन्	५—१३
कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः	२—७
कार्यकरणकर्तृत्वे	१३-२०
कार्यते	३—५
कार्यम्	३—१७, १९; ६—१; १८—५, ९, ३१

पदानि अध्याय—श्लोक

कार्याकार्यव्यवस्थितौ १६—२४
कार्याकार्ये १८—३०
कार्ये १८—२२
कालम् ८—२३
कालः १०—३०, ३३; ११—३२
कालानलसन्निभानि ११—२५
काले ८—२३; १७—२०
कालेन ४—२, ३८
कालेषु ८—७, २७
काशिराजः १—५
काश्यः १—१७
काम् ६—३७

कि

किम् १—१, ३२, ३२, ३५; २—३६, ५४, ५४, ५४; ३—१, ३३; ४—१६, १६; ८—१, १, १, १, १; ९—३३; १०—४२; १६—८
किमाचारः १४—२१
किञ्चन ३—२२
किञ्चित् ४—२०; ५—८; ६—२५; ७—७; १३—२६
किरीटी ११—३५
किरीटिनम् ११-१७, ४६
किल्बिषम् ४—२१; १८—४७

की

कीर्तयन्तः ९—१४
कीर्तिम् २—३३
कीर्तिः १०—३४

कु

कुतः २—२, ६६; ४—३१; ११—४३
कुन्तिभोजः १—५
कुन्तीपुत्रः १—१६
कुरु २—४८; ३—८; ४—१५; १२—११; १८—६३
कुरुक्षेत्रे १—१
कुरुते ३—२१; ४—३७, ३७
कुरुनन्दन २—४१; ६—४३; १४—१३
कुरुप्रवीर ११—४८
कुरुवृद्धः १—१२
कुरुश्रेष्ठ १०—१९
कुरुष्व ९—२७
कुरुसत्तम ४—३१
कुरून् १—२५
कुर्यात् ३—२५
कुर्याम् ३—२४
कुर्वन् ४—२१; ५—७, १३; १२—१०; १८—४७
कुर्वन्ति ३-२५; ५-११
कुर्वाणः १८—५६
कुलक्षयकृतम् १-३८, ३९
कुलक्षये १—४०
कुलघ्नानाम् १-४२, ४३
कुलधर्माः १—४०, ४३
कुलस्य १—४२
कुलस्त्रियः १—४१
कुलम् १—४०
कुले ६—४२
कुशले १८—१०
कुसुमाकरः १०—३५

कू

कूटस्थम् १२—३
कूटस्थः ६-८; १५-१६
कूर्मः २—५८

कृ

कृतकृत्यः १५—२०
कृतनिश्चयः २—३७
कृतम् ४—१५, १५; १७—२८; १८—२३
कृताञ्जलिः ११—१४, ३५
कृतान्ते १८—१३

पदानि	अध्याय—श्लोक
कृतेन	३—१८
कृत्वा	२—३८; ४—२२; ५—२७, २७; ६—१२, २५; १८—८, ६८
कृत्स्नकर्मकृत्	४—१८
कृत्स्नवत्	१८—२२
कृत्स्नवित्	३—२९
कृत्स्नस्य	७—६
कृत्स्नम्	१—४०; ७-२९; ९—८, १०—४२; ११—७, १३; १३—३३, ३३
कृपणाः	२—४९
कृपया	१—२८, २—१
कृपः	१—८
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यम्	१८—४४
कृष्ण	१—२८, ३२, ४१; ५—१; ६—३४, ३७, ३९; ११—४१; १७—१
कृष्णम्	११—३५
कृष्णः	८—२५, १८—७८
कृष्णात्	१८—७५
के	
के	१२—१
केचित्	११—२१, २७; १३—२४
केन	३—३६
केनचित्	१२—१९
केवलम्	४—२१; १८—१६
केवलैः	५—११
केशव	१—३१; २—५४; ३—१; १०—१४
केशवस्य	११—३५
केशवार्जुनयोः	१८—७६
केशिनिषूदन	१८—१
केषु	१०—१७, १७
कै	
कैः	१—२२; १४—२१
कौ	
कौन्तेय	२—१४, ३७, ६०; ३—९, ३९; ५—२२; ६—३५; ७—८; ८—६, १६; ९—७, १०, २३, २७, ३१; १३—१, ३१; १४—४, ७; १६—२०, २२; १८—४८, ५०, ६०
कौन्तेयः	१—२७
कौमारम्	२—१३
कौशलम्	२—५०
क्र	
क्रतुः	९—१६
क्रि	
क्रियते	१७—१८, १९; १८—९, २४
क्रियन्ते	१७—२५
क्रियमाणानि	३—२७; १३—२९
क्रियाभिः	११—४८
क्रियाविशेषबहुलाम्	२-४३
क्रू	
क्रूरान्	१६—१९
क्रो	
क्रोधम्	१६—१८; १८—५३
क्रोधः	२—६२; ३—३७; १६—४, २१
क्रोधात्	२—६३
क्ले	
क्लेदयन्ति	२—२३
क्लेशः	१२—५
क्लै	
क्लैब्यम्	२—३
क्व	
क्वचित्	१८—१२
क्ष	
क्षणम्	३—५

पदानि	अध्याय—श्लोक
क्षत्रियस्य	२—३१
क्षत्रियाः	२—३२
क्षमा	१०—४, ३४; १६—३
क्षमी	१२—१३
क्षयम्	१८—२५
क्षयाय	१६—९
क्षरम्	१५—१८
क्षरः	८—४; १५—१६, १६
क्षा	
क्षान्तिः	१३—७; १८—४२
क्षामये	११—४२
क्षात्रम्	१८—४३
क्षि	
क्षिपामि	१६—१९
क्षिप्रम्	४—१२; ९—३१
क्षी	
क्षीणकल्मषाः	५—२५
क्षीणे	९—२१
क्षु	
क्षुद्रम्	२—३
क्षे	
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः	१३—२, ३४
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्	१३—२६
क्षेत्रज्ञम्	१३—२
क्षेत्रज्ञः	१३—१
क्षेत्रम्	१३—१, ३, ६, १८, ३३
क्षेत्री	१३—३३
क्षेमतरम्	१—४६
ख	
खम्	७—४
खे	
खे	७—८
ग	
गच्छ	१८—६२
गच्छति	६—३७, ४०
गच्छन्	५—८
गच्छन्ति	२—५१; ५—१७; ८—२४; १४—१८, १८; १५—५
गजेन्द्राणाम्	१०—२७
गतरसम्	१७—१०
गतव्यथः	१२—१६
गतसङ्गस्य	४—२३
गतसन्देहः	१८—७३
गतः	११—५१
गतागतम्	९—२१
गतासून्	२—११
गताः	८—१५; १४—१; १५—४
गतिम्	६—३७, ४५; ७—१८; ८—१३, २१; ९—३२; १३—२८; १६—२०, २२, २३
गतिः	४—१७, ९—१८; १२—५
गती	८—२६
गत्वा	१४—१५; १५—६
गदिनम्	११—१७, ४६
गन्तव्यम्	४—२४
गन्तासि	२—५२
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घाः	११—२२
गन्धर्वाणाम्	१०—२६
गन्धः	७—९
गन्धान्	१५—८
गमः	२—३
गम्यते	५—५
गरीयसे	११—३७
गरीयः	२—६
गरीयान्	११—४३
गर्भम्	१४—३
गर्भः	३—३८
गवि	५—१८
गहना	४—१७
गा	
गाण्डीवम्	१—३०
गात्राणि	१—२९

पदानि	अध्याय—श्लोक
गायत्री	१०—३५
गाम्	१५—१३
गि	
गिराम्	१०—२५
गी	
गीतम्	१३—४
गु	
गुडाकेश	१०—२०; ११—७
गुडाकेशः	२—९
गुडाकेशेन	१—२४
गुणकर्मविभागयोः	३—२८
गुणकर्मविभागशः	४—१३
गुणकर्मसु	३—२९
गुणतः	१८—२९
गुणप्रवृद्धाः	१५—२
गुणभेदतः	१८—१९
गुणभोक्तृ	१३—१४
गुणमयी	७—१४
गुणमयैः	७—१३
गुणसङ्गः	१३—२१
गुणसम्मूढाः	३—२९
गुणसंख्याने	१८—१९
गुणातीतः	१४—२५
गुणान्	१३—१९, २१; १४—२०, २१, २१, २६
गुणान्वितम्	१५—१०
गुणाः	३—२८; १४—५, २३
गुणेषु	३—२८
गुणेभ्यः	१४—१९, १९
गुणैः	३—५, २७; १३—२३; १४—२३; १८—४०, ४१
गुरुणा	६—२२
गुरुः	११—४३
गुरुन्	२—५, ५
गुह्यतमम्	९—१, १५—२०
गुह्यतरम्	१८—६३
गुह्यम्	११—१; १८—६८, ७५
गुह्यात्	१८—६३
गुह्यानाम्	१०—३८
गृ	
गृणन्ति	११—२१
गृह्णन्	५—९
गृह्णाति	२—२२
गृहीत्वा	१५—८; १६—१०
गृह्यते	६—३५
गे	
गेहे	६—४१
गो	
गोविन्द	१—३२
गोविन्दम्	२—९
ग्र	
ग्रसमानः	११—३०
ग्रसिष्णु	१३—१६
ग्ला	
ग्लानिः	४—७
घा	
घातयति	२—२१
घो	
घोरम्	११—४९; १७—५
घोरे	३—१
घोषः	१—१९
घ्न	
घ्नतः	१—३५
घ्रा	
घ्राणम्	१५—९
च	
च	१—१, ४, ४, ५, ५, ५, ६, ६, ६, ८, ८, ८, ८, ८, ९, ११, १३, १३, १४, १६, १७, १७, १७, १७, १८, १८, १९, १९, २५, २७, २९, २९, २९, ३०, ३०, ३०, ३१,

पदानि अध्याय—श्लोक

३१, ३२, ३२, ३३, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३; २—४, ६, ८, ११, ११, १२, १९, २३, २४, २६, २७, २९, २९, २९, ३१, ३२, ३३, ३४, ३४, ३५, ३६, ४१, ५२, ५८, ६६, ६६; ३—४, ८, १७, १७, १८, २२, २४, ३८, ३९; ४—३, ५, ८, ९, १७, १७, १८, २२, २७, २८, ४०, ४०; ५—१, २, ५, ५, १५, १८, १८, २०, २७; ६—१, १, १, ९, १३, १६, १६, १६, २०, २१, २२, २९, ३०, ३०, ३५, ४३, ४६; ७—४, ९, ९, ९, ११, १२, १२, १६, १७, २२, २६, २६, २९, ३०, ३०; ८—१, २, ४, ५, ७, १०, १२, २३, २८, २८; ९—४, ५, ५, ९, १२, १४, १४, १५, १७, १९, १९, १९, १९, २४, २४, २९; १०—२, ३, ४, ४, ७, ९, ९, ९, १३, १७, १८, २०, २०, २०, २२, २३, २३, २४, २६, २७, २८, २९, २९, ३०, ३०, ३०, ३१, ३२, ३२, ३३, ३४, ३४, ३४, ३८, ३९; ११—२, ५, ७, १५, १५, १७, २०, २२, २२, २२, २२, २४, २५, २५, २६, ३४, ३४, ३४, ३६, ३६, ३७, ३८, ३८, ३९, ३९, ४२, ४३, ४५, ४८, ४९, ५०, ५३, ५४, ५४; १२—१, ३, १३, १५, १५, १८, १८; १३—२, ३, ३, ३, ३, ३, ४, ५, ५, ५, ८, ९, १०, १४, १४, १५, १५, १५, १५, १६, १६, १६, १६, १८, १९, १९, १९, २२, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, ३४; १४—२, ६, १०, १०, १३, १३, १७, १७, १९, २१, २२, २२; २२, २६, २७, २७, २७; १५—२, २, ३, ३, ४, ८, ९, ९, ९, ११, १२, १३, १३, १५, १५, १५, १५, १६, १६, १८, १८, २०; १६—१, १, ४, ४, ४, ६, ७, ७, ७, ११, १४, १८; १७—२, २, ४, ६, १०, १०, १२, १४, १५, १५, १८, २०, २०, २१, २२, २३, २३, २५, २६, २७, २७, २७, २८, २८; १८—१, ३, ५, ६, ९, १२, १४, १४, १४, १९, १९, २२, २५, २८, २९, ३०, ३०, ३०, ३१, ३१, ३१, ३२, ३५, ३६, ३९, ३९, ४१, ४२, ४३, ४३, ५१, ५१, ५५, ६७, ६७, ६९, ६९, ७०, ७१, ७४, ७६, ७७, ७७,

चक्रहस्तम् ११—४६
चक्रम् ३—१६
चक्रिणम् ११—१७
चक्षुः ५—२७; ११—८; १५—९
चञ्चलत्वात् ६—३३
चञ्चलम् ६—२६, ३४
चतुर्भुजेन ११—४६
चतुर्विधम् १५—१४
चतुर्विधाः ७—१६
चत्वारः १०—६
चन्द्रमसि १५—१२

पदानि	अध्याय—श्लोक
चमूम्	१—३
चरताम्	२—६७
चरति	२—७१; ३—३६
चरन्	२—६४
चरन्ति	८—११
चरम्	१३—१५
चराचरस्य	११—४३
चराचरम्	१०—३९
चलति	६—२१
चलम्	६-३५; १७-१८
चलितमानसः	६—३७
चा	
चातुर्वर्ण्यम्	४—१३
चान्द्रमसम्	८—२५
चापम्	१—४७
चि	
चिकीर्षुः	३—२५
चित्तम्	६—१८, २०; १२—९
चित्ररथः	१०—२६
चिन्तयन्तः	९—२२
चिन्तयेत्	६—२५
चिन्ताम्	१६—११
चिन्त्यः	१०—१७
चू	
चूर्णितैः	११—२७
चे	
चेकितानः	१—५
चेत्	२—३३; ३—१, २४; ४—३६; ९—३०; १८—५८
चेतना	१०—२२; १३—६
चेतसा	८—८; १८—५७, ७२
चेष्टते	३—३३
चेष्टाः	१८—१४
चै	
चैलाजिनकुशोत्तरम्	६-११
च्य	
च्यवन्ति	९—२४
छ	
छन्दसाम्	१०—३५
छन्दांसि	१५—१
छन्दोभिः	१३—४
छलयताम्	१०—३६
छि	
छित्त्वा	४—४२; १५—३
छिन्दन्ति	२—२३
छिन्नद्वैधाः	५—२५
छिन्नसंशयः	१८—१०
छिन्नाभ्रम्	६—३८
छे	
छेत्ता	६—३९
छेत्तुम्	६—३९
ज	
जगतः	७—६; ८—२६; ९—१७; १६—९
जगत्	७—५, १३, ९—४, १०; १०—४२; ११—७, १३, ३०, ३६; १५—१२; १६—८
जगत्पते	१०—१५
जगन्निवास	११—२५, ३७, ४५
जघन्यगुणवृत्तिस्थाः	१४—१८
जनकादयः	३—२०
जनयेत्	३—२६
जनसंसदि	१३—१०
जनः	३—२१
जनाधिपाः	२—१२
जनानाम्	७—२८
जनार्दन	१—३६, ३९, ४४; ३—१; १०—१८; ११—५१
जनाः	७—१६; ८—१७, २४; ९—२२; १६—७; १७—४, ५
जन्तवः	५—१५
जन्म	२—२७; ४—४, ४, ९, ९; ६—४२
जन्मकर्मफलप्रदाम्	२—४३

पदानि	अध्याय—श्लोक
जन्मनाम्	७—१९
जन्मनि	१६—२०, २०
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः	२—५१
जन्ममृत्युजरादुःखैः	१४—२०
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्	१३—८
जन्मानि	४—५
जपयज्ञः	१०—२५
जयद्रथम्	११—३४
जयः	१०—३६
जयाजयौ	२—३८
जयेम	२—६
जयेयुः	२—६
जरा	२—१३
जरामरणमोक्षाय	७—२९
जहाति	२—५०
जहि	३—४३; ११—३४
जा	
जागर्ति	२—६९
जाग्रतः	६—१६
जाग्रति	२—६९
जातस्य	२—२७
जाताः	१०—६
जातिधर्माः	१—४३
जातु	२-१२; ३-५, २३
जानन्	८—२७
जानाति	१५—१९
जाने	११—२५
जायते	१—२९, ४१; २-२०; १४-१५, १५
जायन्ते	१४—१२, १३
जाह्नवी	१०—३१
जि	
जिगीषताम्	१०—३८
जिघ्रन्	५—८
जिजीविषामः	२—६
जिज्ञासुः	६—४४; ७—१६
जितसङ्गदोषाः	१५—५
जितः	५—१९; ६—६
जितात्मनः	६—७
जितात्मा	१८—४९
जित्वा	२-३७; ११-३३
जितेन्द्रियः	५—७
जी	
जीर्णानि	२—२२, २२
जीवति	३—१६
जीवनम्	७—९
जीवभूतः	१५—७
जीवभूताम्	७—५
जीवलोके	१५—७
जीवितेन	१—३२
जु	
जुहोसि	९—२७
जुह्वति	४—२६, २६, २७, २९, ३०
जे	
जेतासि	११—३४
जो	
जोषयेत्	३—२६
ज्ञा	
ज्ञातव्यम्	७—२
ज्ञातुम्	११—५४
ज्ञातेन	१०—४२
ज्ञात्वा	४—१५, १६, ३२, ३५; ५—२९; ७—२; ९—१, १३; १३—१२; १४—१; १६—२४; १८—५५
ज्ञानगम्यम्	१३—१७
ज्ञानचक्षुषः	१५—१०
ज्ञानचक्षुषा	१३—३४
ज्ञानतपसा	४—१०
ज्ञानदीपिते	४—२७
ज्ञानदीपेन	१०—११
ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः	५—१७
ज्ञानप्लवेन	४—३६
ज्ञानयज्ञः	४—३३
ज्ञानयज्ञेन	९—१५; १८—७०
ज्ञानयोगव्यवस्थितिः	१६—१
ज्ञानयोगेन	३—३

पदानि अध्याय—श्लोक

ज्ञानवताम् १०—३८
ज्ञानवान् ३—३३; ७—१९
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा ६—८
ज्ञानविज्ञाननाशनम् ३-४१
ज्ञानसङ्गेन १४—६
ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम् ४—४१
ज्ञानस्य १८—५०
ज्ञानम् ३—३९, ४०; ४—३४, ३९, ३९; ५—१५, १६; ७—२; ९—१; १०—४, ३८; १२—१२; १३—२, २, ११, १७, १८; १४—१, २, ९, ११, १७; १५—१५; १८—१८, १९, २०, २१, २१, ४२, ६३
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम् ४—१९
ज्ञानाग्निः ४—३७
ज्ञानात् १२—१२
ज्ञानानाम् १४—१
ज्ञानावस्थितचेतसः ४—२३
ज्ञानासिना ४—४२
ज्ञानिनः ३—३९; ४—३४; ७—१७
ज्ञानिभ्यः ६—४६
ज्ञानी ७—१६, १७, १८
ज्ञाने ४—३३
ज्ञानेन ४—३८; ५—१६
ज्ञास्यसि ७—१

ज्ञे

ज्ञेयम् १—३९, १३—१२ १६, १७, १८; १८—१८
ज्ञेयः ५—३; ८—२

ज्या

ज्यायसी ३—१
ज्यायः ३—८

ज्यो

ज्योतिषाम् १०—२१; १३—१७
ज्योतिः ८—२४, २५; १३—१७

ज्व

ज्वलद्भिः ११—३०
ज्वलनम् ११—२९

झ

झषाणाम् १०—३१

त

ततम् २—१७; ८—२२; ९—४; ११—३८; १८—४६
ततः १—१३, १४; २—३३, ३६, ३८; ६—२२, २६, २६, ४३, ४५; ७—२२; ११—४, ९, १४, ४०; १२—९, ११; १३—२८, ३०; १४—३; १५—४; १६—२०, २२; १८—५५, ६४
तत् १—१०, ४६; २—७, १७, ५७, ५७, ६७; ३—१, २, २१, २१, २१; ४—१६, ३४, ३८; ५—१, ५, १६; ६—२१; ७—१, २३, २९; ८—१, ११, २१, २८; ९—२६, २७; १०—३९, ३९, ४१, ४१; ११—४, ४२, ४५, ४९; १३—२, ३, ३, १२, १२, १३, १५, १५, १६, १७, २६; १४—७, ८;

पदानि	अध्याय—श्लोक
	१५—४, ५, ६, ६, १२; १७—१७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, २८; १८—५, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३७, ३७, ३८, ३८, ३९, ४०, ४५, ६०, ७७
तत्परम्	५—१६; ११—३७
तत्परः	४—३९
तत्परायणाः	५—१७
तत्प्रसादात्	१८—६२
तत्समक्षम्	११—४२
तत्र	१—२६; २—१३, २८; ६—१२, ४३; ८—१८, २४, २५, ११—१३; १४—६; १८—४, १६, ७८
तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्	१३—११
तत्त्वतः	४—९; ६—२१; ७—३; १०—७; १८—५५, ५५
तत्त्वदर्शिनः	४—३४
तत्त्वदर्शिभिः	२—१६
तत्त्ववित्	३—२८; ५—८
तत्त्वम्	१८—१
तत्त्वेन	९—२४; ११—५४
तथा	१—८, २६, ३४, ३४; २—१, १३, २२, २९; ३—२५, ३८; ४—११, २८, २९, ३७; ५—२४; ६—७; ७—६; ८—२५; ९—६, ३२, ३३; १०—६, १३, ३५; ११—६, १५, २३, २६, २८, २९, ३४, ४६, ५०; १२—१८; १३—१८, २९, ३२, ३३; १४—१०, १५; १५—३; १६—२१; १७—७, २६; १८—१४, ५०, ६३
तथापि	२—२६
तदनन्तरम्	१८—५५
तदर्थम्	३—९
तदर्थीयम्	१७—२७
तदा	१—२, २१; २—५२, ५३, ५५; ४—७; ६—४, १८; ११—१३; १३—३०; १४—११, १४
तदात्मानः	५—१७
तद्बुद्धयः	५—१७
तद्भावभावितः	८—६
तद्वत्	२—७०
तद्विदः	१३—१
तनुम्	७—२१; ९—११
तन्निष्ठाः	५—१७
तपन्तम्	११—१९
तपसा	११—५३
तपसि	१७—२७
तपस्यसि	९—२७
तपस्विभ्यः	६—४६
तपस्विषु	७—९
तपः	७—९; १०—५; १६—१; १७—५, ७, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २८; १८—५, ४२
तपःसु	८—२८
तपामि	९—१९
तपोभिः	११—४८
तपोयज्ञाः	४—२८
तप्तम्	१७—१७, २८
तप्यन्ते	१७—५
तमसः	८—९; १३—१७; १४—१६, १७
तमसा	१८—३२
तमसि	१४—१३, १५

पदानि	अध्याय—श्लोक
तमः	१०—११; १४—५, ८, ९, १०, १०, १०; १७—१
तमोद्वारैः	१६—२२
तया	२—४४; ७—२२
तयोः	३—३४; ५—२
तरन्ति	७—१४
तरिष्यसि	१८—५८
तव	१—३; २—३६, ३६; ४—५; १०—४२; ११—१५, १६, २०, २८, २९, ३०, ३१, ३६, ४१, ४७, ५१; १८—७३
तस्मात्	१—३७; २—१८, २५, २७, ३०, ३७, ५०, ६८; ३—१५, १९, ४१; ४—१५, ४२; ५—१९; ६—४६; ८—७, २०, २७; ११—३३, ४४; १६—२१, २४; १७—२४; १८—६९, ६९
तस्मिन्	१४—३
तस्य	१—१२; २—५७, ५८, ६१, ६८; ३—१७, १८; ४—१३; ६—३, ६, ३०, ३४, ४०; ७—२१, २१, २२; ८—१४; ११—१२; १५—२; १८—७, १५
तस्याम्	२—६९
तस्याः	७—२२
तम्	२—१, १०; ४—१९; ६—२, २३, ४३; ७—२०, २०; ८—६, ६, १०, २१, २३; ९—२१; १०—१०; १३—१; १५-१, ४; १७-१२; १८—४६, ६२

ता

पदानि	अध्याय—श्लोक
तात	६—४०
तानि	२—६१; ४—५; ९—७, ९; १८—१९
तान्	१—७, ७, २७; २—१४; ३—२९, ३२; ४—११, ३२; ७—१२, २२; १६—१९; १७—६
ताम्	७—२१; १७—२
तामसप्रियम्	१७—१०
तामसम्	१७—१३, १९, २२; १८—२२, २५, ३९
तामसः	१८—७, २८;
तामसाः	७—१२; १४—१८; १७—४
तामसी	१७—२; १८—३२, ३५
तावान्	२—४६
तासाम्	१४—४

ति

पदानि	अध्याय—श्लोक
तितिक्षस्व	२—१४
तिष्ठति	३—५; १३—१३; १८—६१
तिष्ठन्तम्	१३—२७
तिष्ठन्ति	१४—१८
तिष्ठसि	१०—१६

तु

पदानि	अध्याय—श्लोक
तु	१—२, ७, १०; २—५, १२, १४, १६, १७, ३९, ६४; ३—७, १३, १७, २८, ३२, ४२, ४२; ५—२, ६, १४, १६; ६—६, १६, ३५, ३६, ४५; ७—५, १२, १८, २३, २६, २८; ८—१६, २०, २२, २३; ९—१, १३, २४, २९, १०—४०; ११—८,

पदानि	अध्याय—श्लोक
	५४; १२—३, ६, २०; १३—२५; १४—८, ९, १४, १६; १५—१७; १७—१, ७, १२, २१; १८—६, ७, ११, १२, १६, २१, २२, २४, ३४, ३६
तुमुलः	१—१३, १९
तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः	१४—२४
तुल्यनिन्दास्तुतिः	१२—१९
तुल्यप्रियाप्रियः	१४—२४
तुल्यः	१४—२५, २५
तुष्टः	२—५५
तुष्टिः	१०—५
तुष्यति	६—२०
तुष्यन्ति	१०—९

तू

पदानि	अध्याय—श्लोक
तूष्णीम्	२—९

तृ

पदानि	अध्याय—श्लोक
तृप्तिः	१०—१८
तृष्णासङ्गसमुद्भवम्	१४—७

ते

पदानि	अध्याय—श्लोक
ते	१—७, ३३; २—६, ७, ३४, ३९, ४७, ४७, ५२, ५३; ३—१, ८, ११, १३, ३१; ४—३, १६, ३४; ५—१९, २२; ७—२, १२, १४, २८, २९, ३०; ८—११, १७; ९—१, २०, २१, २३, २४, २९, ३२; १०—१, १०, १४, १९; ११—३, ८, २३, २५, २७, ३१, ३७, ३९, ३९, ४०, ४०, ४९; १२—२, ४, २०; १३—२५, ३४; १६—८, १७, २४; १८—५९, ६३, ६४, ६५, ६७, ७२
तेजस्विनाम्	७—१०; १०—३६
तेजः	७—९, १०; १०—३६; १५—१२, १२; १६—३; १८—४३
तेजोभिः	११—३०
तेजोमयम्	११—४७
तेजोराशिम्	११—१७
तेजोंऽशसम्भवम्	१०—४१
तेन	३—३८; ४—२४; ५—१५; ६—४४; ११—१; ४६; १७—२३; १८—७०
तेषाम्	५—१६; ७—१७, २३; ९—२२; १०—१०, ११; १२—१, ५, ७; १७—१, ७
तेषु	२—६२; ५—२२; ७—१२; ९—४, ९, २९; १६—७

तै

पदानि	अध्याय—श्लोक
तैः	३—१२; ५—१९; ७—२०, २०

तो

पदानि	अध्याय—श्लोक
तोयम्	९—२६

तौ

पदानि	अध्याय—श्लोक
तौ	२—१९; ३—३४

त्य

पदानि	अध्याय—श्लोक
त्यक्तजीविताः	१—९
त्यक्तसर्वपरिग्रहः	४—२१
त्यक्तुम्	१८—११
त्यक्त्वा	१—३३; २—३, ४८, ५१; ४—९, २०; ५—१०, ११, १२; ६—२४; १८—६, ९, ५१
त्यजति	८—६

पदानि	अध्याय—श्लोक
त्यजन्	८—१३
त्यजेत्	१६—२१; १८—८, ४८
त्यागफलम्	१८—८
त्यागस्य	१८—१
त्यागम्	१८—२, ८
त्यागः	१६—२, १८—४, ९
त्यागात्	१२—१२
त्यागी	१८—१०, ११
त्यागे	१८—४
त्याज्यम्	१८—३, ३, ५
त्र	
त्रयम्	१६—२१
त्रयीधर्मम्	९—२१
त्रा	
त्रायते	२—४०
त्रि	
त्रिधा	१८—१९
त्रिभिः	७—१३; १६—२२; १८—४०
त्रिविधम्	१६—२१; १७—१७; १८—१२, २९, ३६
त्रिविधः	१७—७, २३; १८—४, १८
त्रिविधा	१७—२; १८—१८
त्रिषु	३—२२
त्री	
त्रीन्	१४—२०, २१, २१
त्रै	
त्रैगुण्यविषयाः	२—४५
त्रैलोक्यराज्यस्य	१—३५
त्रैविद्या	९—२०
त्व	
त्वक्	१—३०
त्वत्तः	११—२
त्वत्प्रसादात्	१८—७३
त्वत्समः	११—४३
त्वदन्यः	६—३९
त्वदन्येन	११—४७, ४८
त्वया	६—३३; ११—१, २०, ३८; १८—७२
त्वयि	२—३
त्वरमाणाः	११—२७
त्वम्	२—११, १२, २६, २७, ३०, ३३, ३५; ३—८, ४१; ४—४, ५, १५;, १०—१५, १६, ४१; ११—३, ४, १८, १८, १८, १८, ३३, ३४, ३७, ३८, ३८, ३९, ४०, ४३, ४९; १८—५८
त्वा	
त्वा	२—२; १८—६६
त्वाम्	२—७, ७, ३५; १०—१३, १७; ११—१६, १७, १९, २१, २१, २२, २४, २६, ३२, ४२, ४४, ४६; १२—१; १८—५९
द	
दक्षः	१२—१६
दक्षिणायनम्	८—२५
दण्डः	१०—३८
दत्तम्	१७—२८
दत्तान्	३—१२
ददामि	१०—१०; ११—८
ददासि	९—२७
दधामि	१४—३
दध्मुः	१—१८
दध्मौ	१—१२, १५
दमयताम्	१०—३८
दमः	१०—४; १६—१, १८—४२
दम्भमानमदान्विताः	१६—१०
दम्भः	१६—४

पदानि	अध्याय—श्लोक
दम्भार्थम्	१७—१२
दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः	१७—५
दम्भेन	१६—१७, १७—१८
दया	१६—२
दर्पः	१६—४
दर्पम्	१६—१८; १८—५३
दर्शनकाङ्क्षिणः	११—५२
दर्शय	११—४, ४५
दर्शयामास	११—९, ५०
दर्शितम्	११—४७
दश	१३—५
दशनान्तरेषु	११—२७
दहति	२—२३
दंष्ट्राकरालानि	११—२५, २७
दा	
दाक्ष्यम्	१८—४३
दातव्यम्	१७—२०
दानक्रियाः	१७—२५
दानवाः	१०—१४
दानम्	१०—५; १६—१; १७—७, २०, २०, २१, २२; १८—५, ४३
दाने	१७—२७
दानेन	११—५३
दानेषु	८—२८
दानैः	११—४८
दास्यन्ते	३—१२
दास्यामि	१६—१५
दि	
दिवि	९—२०; ११—१२; १८—४०
दिव्यगन्धानुलेपनम्	११—११
दिव्यमाल्याम्बरधरम्	११—११
दिव्यम्	४—९; ८—८, १०; १०—१२; ११—८
दिव्यानाम्	१०—४०
दिव्यानि	११—५
दिव्यानेकोद्यतायुधम्	११—१०
दिव्यान्	९—२०; ११—१५
दिव्याः	१०—१६, १९
दिव्यौ	१—१४
दिशः	६—१३; ११—२०, २५, ३६
दी	
दीपः	६—१९
दीप्तविशालनेत्रम्	११—२४
दीप्तहुताशवक्त्रम्	११—१९
दीप्तम्	११—२४
दीप्तानलार्कद्युतिम्	११—१७
दीप्तिमन्तम्	११—१७
दीयते	१७—२०, २१, २२
दीर्घसूत्री	१८—२८
दु	
दुरत्यया	७—१४
दुरासदम्	३—४३
दुर्गतिम्	६—४०
दुर्निग्रहम्	६—३५
दुर्निरीक्ष्यम्	११—१७
दुर्बुद्धेः	१—२३
दुर्मतिः	१८—१६
दुर्मेधाः	१८—३५
दुर्योधनः	१—२
दुर्लभतरम्	६—४२
दुष्कृताम्	४—८
दुष्कृतिनः	७—१५
दुष्टासु	१—४१
दुष्पूरम्	१६—१०
दुष्पूरेण	३—३९
दुष्प्रापः	६—३६
दुःखतरम्	२—३६
दुःखयोनयः	५—२२

पदानि अध्याय—श्लोक

दुःखशोकामयप्रदाः १७—९
दुःखसंयोगवियोगम् ६—२३
दुःखहा ६—१७
दुःखम् ५—६; ६—३२; १०—४; १२—५; १३—६; १४—१६; १८—८
दुःखान्तम् १८—३६
दुःखालयम् ८—१५
दुःखेन ६—२२
दुःखेषु २—५६

दू

दूरस्थम् १३—१५
दूरेण २—४९

दृ

दृढनिश्चयः १२—१४
दृढव्रताः ७—२८; ९—१४
दृढम् ६—३४; १८—६४
दृढेन १५—३
दृष्टपूर्वम् ११—४७
दृष्टवान् ११—५२, ५३
दृष्टः २—१६
दृष्टिम् १६—९
दृष्ट्वा १—२, २०, २८; २—५९; ११—२०, २३, २४, २५, ४५, ४९, ५१

दे

देव ११—१५, ४४
देवताः ४—१२
देवदत्तम् १—१५
देवदेव १०—१५
देवदेवस्य ११—१३
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम् १७—१४
देवभोगान् ९—२०
देवयजः ७—२३
देवर्षिः १०—१३
देवर्षीणाम् १०—२६
देवरूपम् ११—४५
देवलः १०—१३
देववर ११—३१
देवव्रताः ९—२५
देवम् ११—११, १४
देवानाम् १०—२, २२
देवान् ३—११; ७—२३; ९—२५; ११—१५; १७—४
देवाः ३—११, १२; १०—१४; ११—५२
देवेश ११—२५, ३७, ४५
देवेषु १८—४०
देशे ६—११; १७—२०
देहभृता १८—११
देहभृताम् ८—४
देहभृत् १४—१४
देहवद्भिः १२—५
देहसमुद्भवान् १४—२०
देहम् ४—९; ८—१३; १५—१४
देहान्तरप्राप्तिः २—१३
देहाः २—१८
देहिनम् ३—४०; १४—५, ७
देहिनाम् १७—२
देहिनः २—१३, ५९
देही २—२२, ३०; ५—१३; १४—२०
देहे २—१३, ३०; ८—२, ४; ११—७, १५; १३—२२, ३२; १४—५, ११

दै

दैत्यानाम् १०—३०
दैवम् ४—२५; १८—१४
दैवः १६—६, ६
दैवी ७—१४; १६—५
दैवीम् ९—१३; १६—३, ५

पदानि अध्याय—श्लोक

दो

दोषवत् १८—३
दोषम् १—३८, ३९
दोषेण १८—४८
दोषैः १—४३

द्या

द्यावापृथिव्योः ११—२०

द्यु

द्यूतम् १०—३६

द्र

द्रक्ष्यसि ४—३५
द्रवन्ति ११—२८, ३६
द्रव्यमयात् ४—३३
द्रव्ययज्ञाः ४—२८
द्रष्टा १४—१९
द्रष्टुम् ११—३, ४, ७, ८, ४६, ४८, ५३, ५४

द्रु

द्रुपदपुत्रेण १—३
द्रुपदः १—४, १८

द्रो

द्रोणम् २—४; ११—३४
द्रोणः ११—२६

द्रौ

द्रौपदेयाः १—६, १८

द्व

द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ताः ७—२८
द्वन्द्वमोहेन ७—२७

पदानि अध्याय—श्लोक

द्वन्द्वः १०—३३
द्वन्द्वातीतः ४—२२
द्वन्द्वैः १५—५

द्वा

द्वारम् १६—२१

द्वि

द्विजोत्तम १—७
द्विविधा ३—३
द्विषतः १६—१९

द्वे

द्वेषः १३—६
द्वेष्टि २—५७; ५—३; १२—१७; १४—२२; १८—१०
द्वेष्यः ९—२९

द्वौ

द्वौ १५—१६; १६—६

ध

धनमानमदान्विताः १६—१७
धनम् १६—१३
धनञ्जय २—४८, ४९, ४—४१; ७—७; ९—९ १२—९; १८—२९, ७२
धनञ्जयः १—१५; १०—३७; ११—१४
धनानि १—३३

पदानि अध्याय—श्लोक

धनुर्धरः १८—७८
धनुः १—२०
धर्मकामार्थान् १८—३४
धर्मक्षेत्रे १—१
धर्मसम्मूढचेताः २—७
धर्मसंस्थापनार्थाय ४—८
धर्मस्य २—४०; ४—७; ९—३; १४—२७
धर्मम् १८—३१, ३२
धर्मात्मा ९—३१
धर्माविरुद्धः ७—११
धर्मे १—४०
धर्म्यम् २—३३; ९—२; १८—७०
धर्म्यात् २—३१
धर्म्यामृतम् १२—२०

धा

धाता ९—१७; १०—३३
धातारम् ८—९
धाम ८—२१; १०—१२; ११—३८; १५—६
धारयते १८—३३, ३४
धारयन् ५—९; ६—१३
धारयामि १५—१३
धार्तराष्ट्रस्य १—२३
धार्तराष्ट्राणाम् १—१९
धार्तराष्ट्रान् १—२०, ३६, ३७

पदानि	अध्याय—श्लोक
धार्तराष्ट्राः	१—४६; २—६
धार्यते	७—५
धी	
धीमता	१—३
धीमताम्	६—४२
धीरम्	२—१५
धीरः	२—१३; १४—२४
धू	
धूमः	८—२५
धूमेन	३—३८; १८—४८
धृ	
धृतराष्ट्रस्य	११—२६
धृतराष्ट्रः	१—१
धृतिगृहीतया	६—२५
धृतिम्	११—२४
धृतिः	१०—३४; १३—६; १६—३, १८—३३, ३४, ३५, ४३
धृतेः	१८—२९
धृत्या	१८—३३, ३४, ५१
धृत्युत्साहसमन्वितः	१८—२६
धृष्टकेतुः	१—५
धृष्टद्युम्नः	१—१७
धे	
धेनूनाम्	१०—२८
ध्या	
ध्यानयोगपरः	१८—५२
ध्यानम्	१२—१२
ध्यानात्	१२—१२
ध्यानेन	१३—२४
ध्यायतः	२—६२
ध्यायन्तः	१२—६
ध्रु	
ध्रुवम्	२—२७; १२—३
ध्रुवः	२—२७
ध्रुवा	१८—७८
न	
न	१—३०, ३१, ३२, ३२, ३५, ३७, ३८, ३९; २—३, ६, ६, ८, ९, ११, १२, १२, १२, १२, १२, १२, १३, १५, १६, १६, १७, १९, १९, १९, २०, २०, २०, २०, २३, २३, २३, २३, २५, २६, २७, २९, ३०, ३१, ३१, ३३, ३८, ४०, ४०, ४२, ४४, ५७, ५७, ६६, ६६, ६६, ७०, ७२; ३—४, ४, ५, ८, १६, १७, १८, १८, १८, २२, २२, २३, २४, २६, २८, २९, ३२, ३४; ४—५, ९, १४, १४, १४, २०, २१, २२, ३१, ३५, ३८, ४०, ४०, ४०, ४१; ५—३, ३, ४, ७, ८, १०, १३, १३, १४, १४, १४, १५, १५, २०, २०, २२; ६—१, १, २, ४, ४, ५, ११, ११, १६, १६, १६, १६, १९, २१, २२, २२, २५, ३०, ३०, ३३, ३८, ३९, ४०, ४०, ४०; ७—२, ७, १२, १३, १५, २५, २५, २६; ८—५, १५, १६, २०, २१, २७; ९—४, ५, ५, ९, २४, २९, २९, ३१; १०—२, २, ७, १४, १४, १८, १९, ३९, ४०; ११—८, १६, १६, १६, २४, २५, २५, ३१, ३२, ३७, ४३, ४७, ४८, ४८, ४८, ४८, ५३, ५३, ५३, ५३;

पदानि	अध्याय—श्लोक
	१२—८, ९, १५, १५, १७, १७, १७, १७; १३—१२, १२, २३, २८, ३१, ३१, ३२, ३२; १४—२, २, १९, २२, २२, २३, २३; १५—३, ३, ३, ३, ४, ६, ६, ६, ६, १०, ११; १६—३, ७, ७, ७, ७, २३, २३, २३; १७—२८; १८—३, ५, ७, ८, १०, १०, ११, १२, १६, १७, १७, १७, १७, ३५, ४०, ४७, ४८, ५४, ५४, ५८, ५९, ६०, ६७, ६७, ६७, ६७, ६९, ६९
नकुलः	१—१६
नचिरात्	१२—७
नचिरेण	५—६
नक्षत्राणाम्	१०—२१
नदीनाम्	११—२८
नभः	१—१९
नभःस्पृशम्	११—२४
नमस्कुरु	९—३४; १८—६५
नमस्यन्तः	९—१४
नमस्यन्ति	११—३६
नमः	११—३१, ३५, ३९, ३९, ३९, ३९, ४०, ४०
नमस्कृत्वा	११—३५
नमेरन्	११—३७
नयेत्	६—२६
नरकस्य	१६—२१
नरकाय	१—४२
नरके	१—४४; १६—१६
नरपुङ्गवः	१—५
नरलोकवीराः	११—२८
नरः	२—२२; ५—२३; १२—१९; १६—२२; १८—१५, ४५, ७१
नराणाम्	१०—२७
नराधमान्	१६—१९
नराधमाः	७—१५
नराधिपम्	१०—२७
नरैः	१७—१७
नवद्वारे	५—१३
नवानि	२—२२, २२
नश्यति	६—३८
नश्यत्सु	८—२०
नष्टः	४—२; १८—७३
नष्टात्मानः	१६—९
नष्टान्	३—३२
नष्टे	१—४०
नः	१—३२, ३३, ३६; २—६, ६
ना	
नागानाम्	१०—२९
नातिमानिता	१६—३
नानाभावान्	१८—२१
नानावर्णाकृतीनि	११—५
नानाविधानि	११—५
नानाशस्त्रप्रहरणाः	१—९
नान्यगामिना	८—८
नामयज्ञैः	१६—१७
नायकाः	१—७
नारदः	१०—१३, २६
नारीणाम्	१०—३४
नावम्	२—६७
नाशनम्	१६—२१
नाशयामि	१०—११
नाशाय	११—२९, २९
नाशितम्	५—१६
नासाभ्यन्तरचारिणौ	५—२७
नासिकाग्रम्	६—१३
नि	
निगच्छति	९—३१; १८—३६
निगृहीतानि	२—६८
निगृह्णामि	९—१९
निग्रहम्	६—३४

पदानि	अध्याय—श्लोक
निग्रहः	३—३३
नित्यजातम्	२—२६
नित्यतृप्तः	४—२०
नित्ययुक्तस्य	८—१४
नित्ययुक्तः	७—१७
नित्ययुक्ताः	९—१४; १२—२
नित्यवैरिणा	३—३९
नित्यशः	८—१४
नित्यसत्त्वस्थः	२—४५
नित्यसन्न्यासी	५—३
नित्यस्य	२—१८
नित्यम्	२—२१, २६, ३०; ३—१५, ३१; ९—६; १०—९; ११—५२; १३—९; १८—५२
नित्यः	२—२०, २४
नित्याभियुक्तानाम्	९—२२
निद्रालस्यप्रमादोत्थम्	१८—३९
निधनम्	३—३५
निधानम्	९—१८; ११—१८, ३८
निन्दन्तः	२—३६
निबद्धः	१८—६०
निबध्नन्ति	४—४१; ९—९; १४—५
निबध्नाति	१४—७, ८
निबन्धाय	१६—५
निबध्यते	४—२२; ५—१२; १८—१७
निबोध	१—७; १८—१३, ५०
निमित्तमात्रम्	११—३३
निमित्तानि	१—३१
निमिषन्	५—९
नियतमानसः	६—१५
नियतस्य	१८—७
नियतम्	३—८; १८—९, २३
नियतात्मभिः	८—२
नियताहाराः	४—३०
नियताः	७—२०
नियमम्	७—२०
नियम्य	३—७, ४१; ६—२६; १८—५१
नियोक्ष्यति	१८—५९
नियोजयसि	३—१
नियोजितः	३—३६
निरग्निः	६—१
निरहङ्कारः	२—७१; १२—१३
निराशीः	३—३०; ४—२१; ६—१०
निराश्रयः	४—२०
निराहारस्य	२—५९
निरीक्षे	१—२२
निरुद्धम्	६—२०
निरुध्य	८—१२
निर्गुणत्वात्	१३—३१
निर्गुणम्	१३—१४
निर्देशः	१७—२३
निर्दोषम्	५—१९
निर्द्वन्द्वः	२—४५; ५—३
निर्ममः	२—७१; ३-३०; १२—१३; १८—५३
निर्मलत्वात्	१४—६
निर्मलम्	१४—१६
निर्मानमोहाः	१५—५
निर्योगक्षेमः	२—४५
निर्वाणपरमाम्	६—१५
निर्विकारः	१८—२६
निर्वेदम्	२—५२
निर्वैरः	११—५५
निवर्तते	२—५९; ८-२५
निवर्तन्ति	१५—४
निवर्तन्ते	८—२१; ९—३; १५—६
निवर्तितुम्	१—३९
निवसिष्यसि	१२—८
निवातस्थः	६—१९
निवासः	९—१८

पदानि	अध्याय—श्लोक
निवृत्तानि	१४—२२
निवृत्तिम्	१६—७; १८—३०
निवेशय	१२—८
निशा	२—६९, ६९
निश्चयम्	१८—४
निश्चयेन	६—२३
निश्चरति	६—२६
निश्चला	२—५३
निश्चितम्	२-७; १८-६
निश्चिताः	१६—११
निश्चित्य	३—२
निष्ठा	३—३; १७—१; १८—५०
निस्त्रैगुण्यः	२—४५
निहताः	११—३३
निहत्य	१—३६
निःश्रेयसकरौ	५—२
निःस्पृहः	२—७१; ६—१८
नी	
नीतिः	१०—३८; १८—७८
नु	
नु	१—३५; २—३६
नृ	
नृलोके	११—४८
नृषु	७—८

पदानि	अध्याय—श्लोक
नै	
नैष्कर्म्यसिद्धिम्	१८—४९
नैष्कर्म्यम्	३—४
नैष्ठिकीम्	५—१२
नो	
नो	१७—२८
न्या	
न्याय्यम्	१८—१५
न्यासम्	१८—२
प	
पक्षिणाम्	१०—३०
पचन्ति	३—१३
पचामि	१५—१४
पञ्च	१३—५; १८—१३, १५
पञ्चमम्	१८—१४
पणवानकगोमुखाः	१—१३
पण्डितम्	४—१९
पण्डिताः	२—११; ५—४, १८
पतङ्गाः	११—२९
पतन्ति	१—४२; १६—१६
पत्रम्	९—२६
पथि	६—३८
पदम्	२—५१; ८—११; १५—४, ५; १८—५६
पद्मपत्रम्	५—१०

पदानि	अध्याय—श्लोक
परतरम्	७—७
परतः	३—४२
परधर्मः	३—३५
परधर्मात्	३—३५; १८—४७
परमम्	८—३, ८, २१; १०—१, १२; ११—१, ९, १८; १५—६; १८—६४, ६८
परमः	६—३२
परमात्मा	६—७, १३—२२, ३१; १५—१७
परमाम्	८—१३, १५, २१; १८—४९
परमेश्वर	११—३
परमेश्वरम्	१३—२७
परमेष्वासः	१—१७
परया	१—२८; १२—२; १७—१७
परस्तात्	८—९
परस्परम्	३—११; १०—९
परस्य	१७—१९
परम्	२—१२; ५९, ३—११, १९, ४२, ४३; ४-४; ७-१३,

पदानि अध्याय—श्लोक

३४; ८—१०, २८; ९—११; १०—१२, १२; ११—१८, ३८, ३८, ४७; १३—१२, १७, ३४; १४—१, १९; १८—७५
परन्तप २—३, ९; ४—२, ५, ३३; ७—२७; ९—३; १०—४०; ११—५४; १८—४१
परम्पराप्राप्तम् ४—२
परः ४—४०; ८—२०, २२; १३—२२
परा ३—४२; १८—५०
पराणि ३—४२
पराम् ४—३९; ६—४५; ७—५; ९—३२; १३—२८; १४—१; १६—२२, २३; १८—५४, ६२, ६८
परिकीर्तितः १८—७, २७
परिक्लिष्टम् १७—२१
परिग्रहम् १८—५३
परिचक्षते १७—१३; १७
परिचर्यात्मकम् १८—४४
परिचिन्तयन् १०—१७
परिज्ञाता १८—१८

पदानि अध्याय—श्लोक

परिणामे १८—३७, ३८
परित्यज्य १८—६६
परित्यागः १८—७
परित्राणाय ४—८
परिदह्यते १—३०
परिदेवना २—२८
परिपन्थिनौ ३—३४
परिप्रश्नेन ४—३४
परिमार्गितव्यम् १५—४
परिशुष्यति १—२९
परिसमाप्यते ४—३३
पर्जन्यः ३—१४
पर्जन्यात् ३—१४
पर्णानि १५—१
पर्यवतिष्ठते २—६५
पर्याप्तम् १—१०
पर्युपासते ४—२५; ९—२२; १२—१, ३, २०
पर्युषितम् १७—१०
पवताम् १०—३१
पवनः १०—३१
पवित्रम् ४—३८; ९—२, १७; १०—१२
पश्य १—३, २५; ९—५; ११—५, ६, ६, ७; ८
पश्यतः २—६९

पदानि अध्याय—श्लोक

पश्यति २—२९; ५—५, ५; ६—३०, ३०, ३२; १३—२७, २७, २९, २९; १८—१६, १६
पश्यन् ५—८; ६—२०; १३—२८
पश्यन्ति १—३८; १३—२४; १५—१०, ११, ११
पश्यामि १—३१; ६—३३; ११—१५, १६, १६, १७, १९
पश्येत् ४—१८

पा

पाञ्चजन्यम् १—१५
पाण्डव ४—३५; ६—२; ११—५५; १४—२२; १६—५
पाण्डवः १—१४, २०; ११—१३
पाण्डवानाम् १०—३७
पाण्डवानीकम् १—२
पाण्डवाः १—१
पाण्डुपुत्राणाम् १—३
पातकम् १—३८
पात्रे १७—२०
पापकृत्तमः ४—३६

पदानि	अध्याय—श्लोक
पापयोनयः	९—३२
पापम्	१—३६, ४५; २—३३, ३८; ३—३६; ५—१५, ७—२८
पापात्	१—३९
पापाः	३—१३
पापेन	५—१०
पापेभ्यः	४—३६
पापेषु	६—९
पाप्मानम्	३—४१
पारुष्यम्	१६—४
पार्थ	१—२५; २—३, २१, ३२, ३९, ४२, ५५, ७२; ३—१६, २२, २३; ४—११, ३३; ६—४०; ७—१, १०; ८—८, १४, १९, २२, २७; ९—१३, ३२; १०—२४; ११—५; १२—७; १६—४, ६; १७—२६, २८; १८-६, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ७२
पार्थः	१—२६; १८—७८
पार्थस्य	१८—७४
पार्थाय	११—९
पावकः	२—२३; १०—२३; १५—६
पावनानि	१८—५
पि	
पितरः	१—३४, ४२
पिता	९—१७; ११—४३, ४४; १४—४
पितामहः	१—१२; ९—१७
पितामहान्	१—२६
पितामहाः	१—३४
पितृव्रताः	९—२५
पितॄणाम्	१०—२९
पितॄन्	१—२६; ९—२५
पी	
पीडया	१७—१९
पु	
पुण्यकर्मणाम्	७—२८; १८—७१
पुण्यकृताम्	६—४१
पुण्यफलम्	८—२८
पुण्यम्	९—२०; १८—७६
पुण्यः	७—९
पुण्याः	९—३३
पुण्ये	९—२१
पुत्रदारगृहादिषु	१३—९
पुत्रस्य	११—४४
पुत्रान्	१—२६
पुत्राः	१-३४; ११-२६
पुनः	४—९, ३५; ५—१; ८—२६; ९—७, ८, ८, ३३; ११—१६, ३९, ४९, ५०; १६—१३; १७—२१; १८—२४, ४०, ७७, ७७
पुनर्जन्म	८—१५, १६
पुनरावर्तिनः	८—१६
पुमान्	२—७१
पुरस्तात्	११—४०
पुरा	३—३, १०; १७—२३
पुराणम्	८—९
पुराणः	२-२०; ११-३८
पुराणी	१५—४
पुरातनः	४—३
पुरुजित्	१—५
पुरुषर्षभ	२—१५
पुरुषव्याघ्र	१८—४
पुरुषस्य	२—६०
पुरुषम्	२—१५; ८—८, १०; १०—१२; १३—१९, २३; १५—४

पदानि	अध्याय—श्लोक
पुरुषः	२—२१; ३—४;
	८—४, २२;
	११—१८, ३८;
	१३—२०, २१, २२;
	१५—१७; १७—३
पुरुषाः	९—३
पुरुषोत्तम	८—१;
	१०—१५; ११—३
पुरुषोत्तमम्	१५—१९
पुरुषोत्तमः	१५—१८
पुरुषौ	१५—१६
पुरे	५—१३
पुरोधसाम्	१०—२४
पुष्कलाभिः	११—२१
पुष्णामि	१५—१३
पुष्पम्	९—२६
पुष्पिताम्	२—४२
पुंसः	२—६२

पू

पदानि	अध्याय—श्लोक
पूजार्हौ	२—४
पूज्यः	११—४३
पूतपापाः	९—२०
पूताः	४—१०
पूति	१७—१०
पूरुषः	३—१९, ३६
पूर्वतरम्	४—१५
पूर्वम्	११—३३
पूर्वाभ्यासेन	६—४४
पूर्वे	१०—६
पूर्वैः	४—१५, १५

पृ

पदानि	अध्याय—श्लोक
पृच्छामि	२—७
पृथक्	१—१८, १८;
	५—४; १३—४;
	१८—१, १४
पृथक्त्वेन	९—१५;
	१८—२१, २९
पृथग्विधम्	१८—१४
पृथग्विधान्	१८—२१
पृथग्विधाः	१०—५
पृथिवीपते	१—१८
पृथिवीम्	१—१९
पृथिव्याम्	७—९;
	१८—४०
पृष्ठतः	११—४०

पौ

पदानि	अध्याय—श्लोक
पौण्ड्रम्	१—१५
पौत्रान्	१—२६
पौत्राः	१—३४
पौरुषम्	७—८; १८—२५
पौर्वदेहिकम्	६—४३

प्र

पदानि	अध्याय—श्लोक
प्रकाशकम्	१४—६
प्रकाशयति	५—१६;
	१३—३३, ३३
प्रकाशम्	१४—२२
प्रकाशः	७—२५;
	१४—११
प्रकीर्त्या	११—३६
प्रकृतिजान्	१३—२१
प्रकृतिजैः	३—५;
	१८—४०
प्रकृतिसम्भवान्	१३-१९
प्रकृतिसम्भवाः	१४—५
प्रकृतिस्थः	१३—२१
प्रकृतिस्थानि	१५—७
प्रकृतिम्	३—३३; ४—६;
	७—५; ९—७, ८,
	१२, १३; ११—५१;
	१३—१९, २३
प्रकृतिः	७—४; ९—१०;
	१३—२०; १८—५९
प्रकृतेः	३—२७, २९,
	३३; ९—८
प्रकृत्या	७—२०;
	१३—२९
प्रजनः	१०—२८
प्रजहाति	२—५५
प्रजहि	३—४१
प्रजानाति	१८—३१
प्रजानामि	११—३१
प्रजापतिः	३—१०
प्रजाः	११—३९;
	३—१०, २४; १०—६

पदानि	अध्याय—श्लोक
प्रज्ञा	२—५७, ५८, ६१, ६८
प्रज्ञावादान्	२—११
प्रज्ञाम्	२—६७
प्रणम्य	११-१४, ३५, ४४
प्रणयेन	११—४१
प्रणवः	७—८
प्रणश्यति	२—६३; ६—३०; ९—३१
प्रणश्यन्ति	१—४०
प्रणश्यामि	६—३०
प्रणिधाय	११—४४
प्रणिपातेन	४—३४
प्रतपन्ति	११—३०
प्रतापवान्	१—१२
प्रति	२—४, ४३
प्रतिजानीहि	९—३१
प्रतिजाने	१८—६५
प्रतिपद्यते	१४—१४
प्रतिष्ठा	१४—२७
प्रतिष्ठाप्य	६—११
प्रतिष्ठितम्	३—१५
प्रतिष्ठिता	२—५७, ५८, ६१, ६८
प्रत्यक्षावगमम्	९—२
प्रत्यनीकेषु	११—३२
प्रत्यवायः	२—४०
प्रत्युपकारार्थम्	१७—२१

पदानि	अध्याय—श्लोक
प्रथितः	१५—१८
प्रदध्मतुः	१—१४
प्रदिष्टम्	८—२८
प्रदीप्तम्	११—२९
प्रदुष्यन्ति	१—४१
प्रद्विषन्तः	१६—१८
प्रनष्टः	१८—७२
प्रपद्यते	७—१९
प्रपद्ये	१५—४
प्रपद्यन्ते	४—११; ७—१४, १५, २०
प्रपन्नम्	२—७
प्रपश्य	११—४९
प्रपश्यद्भिः	१—३९
प्रपश्यामि	२—८
प्रपितामहः	११—३९
प्रभवति	८—१९
प्रभवन्ति	८—१८; १६—९
प्रभवम्	१०—२
प्रभवः	७—६; ९—१८; १०—८
प्रभविष्णु	१३—१६
प्रभा	७—८
प्रभाषेत	२—५४
प्रभुः	५—१४; ९—१८, २४
प्रभो	११-४; १४-२१

पदानि	अध्याय—श्लोक
प्रमाणम्	३—२१; १६—२४
प्रमाथि	६—३४
प्रमाथीनि	२—६०
प्रमादमोहौ	१४—१७
प्रमादः	१४—१३
प्रमादात्	११—४१
प्रमादालस्यनिद्राभिः	१४—८
प्रमादे	१४—९
प्रमुखे	२—६
प्रमुच्यते	५-३; १०-३
प्रयच्छति	९—२६
प्रयतात्मनः	९—२६
प्रयत्नात्	६—४५
प्रयाणकाले	७—३०; ८—२; १०
प्रयाताः	८—२३, २४
प्रयाति	८—५, १३
प्रयुक्तः	३—३६
प्रयुज्यते	१७—२६
प्रलपन्	५—९
प्रलयम्	१४—१४, १५
प्रलयः	७-६; ९-१८
प्रलयान्ताम्	१६—११
प्रलये	१४—२
प्रलीनः	१४—१५
प्रलीयते	८—१९

पदानि	अध्याय—श्लोक
प्रलीयन्ते	८—१८
प्रवक्ष्यामि	४-१६; ९-१; १३—१२; १४—१
प्रवक्ष्ये	८—११
प्रवदताम्	१०—३२
प्रवदन्ति	२-४२; ५-४
प्रवर्तते	५-१४; १०-८
प्रवर्तन्ते	१६—१०; १७—२४
प्रवर्तितम्	३—१६
प्रविभक्तम्	११—१३
प्रविभक्तानि	१८—४१
प्रविलीयते	४—२३
प्रविशन्ति	२—७०, ७०
प्रवृत्तः	११—३२
प्रवृत्तिम्	११—३१; १४—२२; १६—७, १८—३०
प्रवृत्तिः	१४—१२; १५—४; १८—४६
प्रवृत्ते	१—२०
प्रवृद्धः	११—३२
प्रवृद्धे	१४—१४
प्रवेष्टुम्	११—५४
प्रव्यथितम्	११-२०, ४५
प्रव्यथितान्तरात्मा	११-२४
प्रव्यथिताः	११—२३
प्रशस्ते	१७—२६
प्रशान्तमनसम्	६—२७
प्रशान्तस्य	६—७
प्रशान्तात्मा	६—१४
प्रसक्ताः	१६—१६
प्रसङ्गेन	१८—३४
प्रसन्नचेतसः	२—६५
प्रसन्नात्मा	१८—५४
प्रसन्नेन	११—४७
प्रसभम्	२—६०; ११—४१
प्रसविष्यध्वम्	३—१०
प्रसादये	११—४४
प्रसादम्	२—६४
प्रसादे	२—६५
प्रसिद्ध्येत्	३—८
प्रसीद	११-२५, ३१, ४५
प्रसृता	१५—४
प्रसृताः	१५—२
प्रहसन्	२—१०
प्रहास्यसि	२—३९
प्रहृष्यति	११—३६
प्रहृष्येत्	५—२०
प्रह्लादः	१०—३०
प्रा	
प्राकृतः	१८—२८
प्राक्	५—२३
प्राञ्जलयः	११—२१
प्राणकर्माणि	४—२७
प्राणम्	४—२९; ८—१०, १२
प्राणान्	१-३३; ४-३०
प्राणापानगती	४—२९
प्राणापानसमायुक्तः	१५—१४
प्राणापानौ	५—२७
प्राणायामपरायणाः	४-२९
प्राणिनाम्	१५—१४
प्राणे	४—२९
प्राणेषु	४—३०
प्राधान्यतः	१०—१९
प्राप्तः	१८—५०
प्राप्नुयात्	१८—७१
प्राप्नुवन्ति	१२—४
प्राप्य	२—५७, ७२; ५—२०, २०; ६—४१; ८—२१, २५, ९—३३
प्राप्यते	५—५
प्राप्स्यसि	२—३७; १८—६२
प्राप्स्ये	१६—१३
प्रारभते	१८—१५
प्रार्थयन्ते	९—२०
प्राह	४—१
प्राहुः	६—२; १३—१; १५—१; १८—२, ३

पदानि	अध्याय—श्लोक
प्रि	
प्रियचिकीर्षवः	१—२३
प्रियकृत्तमः	१८—६९
प्रियतरः	१८—६९
प्रियहितम्	१७—१५
प्रियम्	५—२०
प्रियः	७—१७, १७; ९—२९; ११—४४; १२—१४, १५, १६, १७, १९; १७—७; १८—६५
प्रियाः	१२—२०
प्रियायाः	११—४४
प्री	
प्रीतमनाः	११—४९
प्रीतिपूर्वकम्	१०—१०
प्रीतिः	१—३६
प्रीयमाणाय	१०—१
प्रे	
प्रेतान्	१७—४
प्रेत्य	१७—२८; १८—१२
प्रो	
प्रोक्तवान्	४—१, ४
प्रोक्तम्	८—१; १३—११; १७—१८; १८—३७
प्रोक्तः	४—३; ६—३३; १०—४०; १६—६
प्रोक्ता	३—३
प्रोक्तानि	१८—१३
प्रोच्यते	१८—१९
प्रोच्यमानम्	१८—२९
प्रोतम्	७—७
फ	
फलहेतवः	२—४९
फलम्	२—५१; ५—४; ७—२३; ९—२६; १४—१६, १६, १६; १७—१२, २१, २५; १८—९, १२
फलाकाङ्क्षी	१८—३४
फलानि	१८—६
फले	५—१२
फलेषु	२—४७
ब	
बत	१—४५
बद्धाः	१६—१२
बध्नाति	१४—६
बध्यते	४—१४
बन्धम्	१८—३०
बन्धात्	५—३
बन्धुः	६—५, ६
बन्धून्	१—२७
बभूव	२—९
बलवताम्	७—११
बलवत्	६—३४
बलवान्	१६—१४
बलम्	१—१०, १०; ७—११; १६—१८; १८—५३
बलात्	३—३६
बहवः	१—९; ४—१०; ११—२८
बहिः	५—२७; १३—१५
बहुदंष्ट्राकरालम्	११—२३
बहुधा	९—१५; १३—४
बहुना	१०—४२
बहुबाहूरुपादम्	११—२३
बहुमतः	२—३५
बहुलायासम्	१८—२४
बहुवक्त्रनेत्रम्	११—२३
बहुविधाः	४—३२
बहुशाखाः	२—४१
बहूदरम्	११—२३
बहूनाम्	७—१९
बहूनि	४—५; ११—६
बहून्	२—३६
बा	
बालाः	५—४
बाह्यस्पर्शेषु	५—२१
बाह्यान्	५—२७
बि	
बिभर्ति	१५—१७

पदानि	अध्याय—श्लोक
बी	
बीजप्रदः	१४—४
बीजम्	७—१०; ९—१८; १०—३९
बु	
बुद्धयः	२—४१
बुद्धिग्राह्यम्	६—२१
बुद्धिनाशः	२—६३
बुद्धिनाशात्	२—६३
बुद्धिभेदम्	३—२६
बुद्धिमताम्	७—१०
बुद्धिमान्	४—१८; १५—२०
बुद्धियुक्तः	२—५०
बुद्धियुक्ताः	२—५१
बुद्धियोगम्	१०—१०; १८—५७
बुद्धियोगात्	२—४९
बुद्धिसंयोगम्	६—४३
बुद्धिम्	३—२; १२—८
बुद्धिः	२—३९, ४१, ४४, ५२, ५३, ६५, ६६; ३—१, ४०, ४२; ७—४, १०; १०—४; १३—५; १८—१७, ३०, ३१, ३२
बुद्धेः	३—४२, ४३; १८—२९
बुद्धौ	२—४९
बुद्ध्या	२-३९; ५-११; ६—२५; १८—५१
बुद्ध्वा	३—४३; १५—२०
बुधः	५—२२
बुधाः	४—१९; १०—८
बृ	
बृहत्साम	१०—३५
बृहस्पतिम्	१०—२४
बो	
बोद्धव्यम्	४—१७, १७, १७
बोधयन्तः	१०—९
ब्र	
ब्रवीमि	१—७
ब्रवीषि	१०—१३
ब्रह्म	३—१५, १५; ४—२४, २४, २४, ३१; ५—६, १९; ७—२९; ८—१, ३, १३, २४; १०—१२; १३-१२, ३०; १४-३, ४; १८—५०
ब्रह्मकर्म	१८—४२
ब्रह्मकर्मसमाधिना	४—२४
ब्रह्मचर्यम्	८—११; १७—१४
ब्रह्मचारिव्रते	६—१४
ब्रह्मणः	४-३२; ६-३८; ८—१७; ११—३७; १४—२७; १७—२३
ब्रह्मणा	४—२४
ब्रह्मणि	५-१०, १९, २०
ब्रह्मनिर्वाणम्	२—७२; ५—२४, २५, २६
ब्रह्मभूतम्	६—२७
ब्रह्मभूतः	५—२४; १८—५४
ब्रह्मभूयाय	१४—२६; १८—५३
ब्रह्मयोगयुक्तात्मा	५—२१
ब्रह्मवादिनाम्	१७—२४
ब्रह्मवित्	५—२०
ब्रह्मविदः	८—२४
ब्रह्मसंस्पर्शम्	६—२८
ब्रह्मसूत्रपदैः	१३—४
ब्रह्माग्नौ	४—२४, २५
ब्रह्माणम्	११—१५
ब्रह्मोद्भवम्	३—१५
ब्रा	
ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्	१८—४१
ब्राह्मणस्य	२—४६
ब्राह्मणाः	९—३३; १७—२३

पदानि अध्याय—श्लोक
ब्राह्मणे ५—१८
ब्राह्मी २—७२

ब्रू

ब्रूहि २—७; ५—१

भ

भक्तः ४—३; ७—२१;
९—३१
भक्ताः ९—२३, ३३;
१२—१, २०
भक्तिमान् १२—१७, १९
भक्तियोगेन १४—२६
भक्तिम् १८—६८
भक्तिः १३—१०
भक्त्या ८—१०, २२;
९—१४ २६, २९;
११—५४; १८—५५
भक्त्युपहृतम् ९—२६
भगवन् १०—१४, १७
भजताम् १०—१०
भजति ६—३१;
१५—१९
भजते ६—४७; ९—३०
भजन्ति ९—१३, २९
भजन्ते ७—१६, २८;
१०—८
भजस्व ९—३३
भजामि ४—११
भयम् १०-४; १८-३५

पदानि अध्याय—श्लोक
भयात् २—३५, ४०
भयानकानि ११—२७
भयाभये १८—३०
भयावहः ३—३५
भयेन ११—४५
भरतर्षभ ३—४१;
७—११, १६;
८—२३; १३—२६;
१४—१२; १८—३६
भरतश्रेष्ठ १७—१२
भरतसत्तम १८—४
भर्ता ९—१८; १३—२२
भव २—४५; ६—४६;
८—२७; ९—३४;
११—३३, ४६;
१२—१०; १८—५७,
६५
भवतः ४—४; १४—१७
भवति १—४४;
२—६३; ३—१४;
४—७, १२; ६—२,
१७, ४२; ७—२३;
९—३१; १४—३,
१०, २१; १७—२,
३, ७, १८—१२
भवन्तम् ११—३१
भवन्तः १—११
भवन्ति ३—१४;

पदानि अध्याय—श्लोक
१०—५; १६—३
भवः १०—४
भवान् १—८;
१०—१२; ११—३१
भवाप्ययौ ११—२
भवामि १२—७
भविता २-२०; १८-६९
भविष्यताम् १०—३४
भविष्यति १६—१३
भविष्यन्ति ११—३२
भविष्याणि ७—२६
भविष्यामः २—१२
भवेत् १—४६; ११—१२
भस्मसात् ४—३७, ३७

भा

भारत १—२४;
२—१०, १४, १८,
२८, ३०; ३—२५,
४—७, ४२;
७—२७; ११—६;
१३—२, ३३;
१४—३, ८, ९, १०;
१५—१९, २०;
१६—३; १७—३;
१८—६२
भावना २—६६
भावयत ३—११
भावयन्तः ३—११

पदानि	अध्याय—श्लोक
भावयन्तु	३—११
भावसमन्विताः	१०—८
भावसंशुद्धिः	१७—१६
भावम्	७—१५, २४; ८—६; ९—११; १८—२०
भावः	२—१६, ८—४, २०; १८—१७
भावाः	७—१२; १०—५
भावेषु	१०—१७
भावैः	७—१३
भाषसे	२—११
भाषा	२—५४
भासयते	१५—६, १२
भासः	११—१२, ३०
भास्वता	१०—११
भाः	११—१२
भि	
भिन्ना	७—४
भी	
भीतभीतः	११—३५
भीतम्	११—५०
भीतानि	११—३६
भीताः	११—२१
भीमकर्मा	१—१५
भीमाभिरक्षितम्	१—१०
भीमार्जुनसमाः	१—४
भीष्मद्रोणप्रमुखतः	१-२५
भीष्मम्	१—११; २—४; ११—३४
भीष्मः	१—८; ११—२६
भीष्माभिरक्षितम्	१—१०
भु	
भुक्त्वा	९—२१
भुङ्क्ते	३-१२; १३-२१
भुङ्क्ष्व	११—३३
भुञ्जते	३—१३
भुञ्जानम्	१५—१०
भुञ्जीय	२—५
भुवि	१८—६९
भू	
भूतगणान्	१७—४
भूतग्रामम्	९-८; १७-६
भूतग्रामः	८—१९
भूतपृथग्भावम्	१३—३०
भूतप्रकृतिमोक्षम्	१३-३४
भूतभर्तृ	१३—१६
भूतभावन	१०—१५
भूतभावनः	९—५
भूतभावोद्भवकरः	८—३
भूतभृत्	९—५
भूतमहेश्वरम्	९—११
भूतविशेषसङ्घान्	११-१५
भूतसर्गौ	१६—६
भूतस्थः	९—५
भूतम्	१०—३९
भूतादिम्	९—१३
भूतानि	२—२८, ३०, ३४, ६९; ३—१४, ३३; ४-३५; ७-६, २६; ८-२२; ९-५, ६, २५; १५-१३, १६;
भूतानाम्	४—६; १०—५, २०, २२; ११—२, १३—१५; १८—४६
भूतिः	१८—७८
भूतेज्याः	९—२५
भूतेश	१०—१५
भूतेषु	७-११; ८-२०; १३-१६, २७; १६-२; १८—२१, ५४
भूत्वा	२—२०, ३५, ४८; ३-३०; ८-१९, १९; ११—५०; १५—१३, १४
भूमिः	७—४
भूमौ	२—८
भूयः	२—२०; ६—४३; ७—२; १०—१, १८; ११—३५, ३९, ५०; १३—२३; १४—१; १५—४; १८—६४

पदानि	अध्याय—श्लोक
भूः	२—४७
भृ	
भृगुः	१०—२५
भे	
भेदम्	१७-७; १८-२९
भेर्यः	१—१३
भै	
भैक्ष्यम्	२—५
भो	
भोक्ता	९—२४; १३—२२
भोक्तारम्	५—२९
भोक्तुम्	२—५
भोक्तृत्वे	१३—२०
भोक्ष्यसे	२—३७
भोगान्	२—५; ३—१२
भोगाः	१—३३; ५—२२
भोगी	१६—१४
भोगैश्वर्यगतिम्	२—४३
भोगैश्वर्यप्रसक्तानाम्	२—४४
भोगैः	१—३२
भोजनम्	१७—१०
भ्र	
भ्रमति	१—३०
भ्रा	
भ्रातॄन्	१—२६
भ्रामयन्	१८—६१
भ्रु	
भ्रुवोः	५—२७; ८—१०
म	
मकरः	१०—३१
मच्चित्तः	६—१४; १८—५७, ५८
मच्चित्ताः	१०—९
मणिगणाः	७—७
मतम्	३—३१, ३२; ७—१८; १३—२; १८—६
मतः	६—३२, ४६, ४७; ११—१८; १८—९
मता	३—१, १६—५
मताः	१२—२
मतिः	६—३६; १८—७०, ७८
मते	८—२६
मत्कर्मकृत्	११—५५
मत्कर्मपरमः	१२—१०
मत्तः	७—७, १२; १०—५, ८; १५—१५
मत्परमः	११—५५
मत्परमाः	१२—२०
मत्परः	२—६१; ६—१४; १८—५७
मत्परायणः	९—३४
मत्पराः	१२—६
मत्प्रसादात्	१८-५६, ५८
मत्वा	३—२८; १०—८; ११—४१
मत्संस्थाम्	६—१५
मत्स्थानि	९—४, ५, ६
मदनुग्रहाय	११—१
मदर्थम्	१२—१०
मदर्थे	१—९
मदर्पणम्	९—२७
मदम्	१८—३५
मदाश्रयः	७—१
मद्गतप्राणाः	१०—९
मद्गतेन	६—४७
मद्भक्तः	९—३४; ११—५५; १२—१४, १६; १३—१८; १८—६५
मद्भक्ताः	७—२३
मद्भक्तिम्	१८—५४
मद्भक्तेषु	१८—६८
मद्भावम्	४—१०; ८—५; १४—१९
मद्भावाय	१३—१८
मद्भावाः	१०—६
मद्याजिनः	९—२५
मद्याजी	९—३४; १८—६५
मद्योगम्	१२—११

पदानि अध्याय—श्लोक

मद्व्यपाश्रयः १८—५६
मधुसूदन १—३५; २-४; ६-३३; ८-२
मधुसूदनः २—१
मध्यम् १०—२०, ३२; ११—१६
मध्ये १—२१, २४; २—१०; ८—१०; १४—१८
मनवः १०—६
मनवे ४—१
मनसा ३—६, ७; ५—११, १३; ६—२४; ८—१०
मनसः ३—४२
मनः १—३०; २—६०, ६७; ३—४०, ४२; ५—१९; ६—१२, १४, २५, २६, ३४, ३५; ७-४; ८-१२; १०—२२; ११—४५; १२—२, ८; १५—९; १७—११
मनःप्रसादः १७—१६
मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः १८—३३
मनःषष्ठानि १५—७
मनीषिणः २—५१; १८—३
मनीषिणाम् १८—५
मनुष्यलोके १५—२
मनुष्याणाम् १—४४; ७—३
मनुष्याः ३—२३; ४—११
मनुष्येषु ४—१८; १८—६९
मनुः ४—१
मनोगतान् २—५५
मनोरथम् १६—१३
मन्तव्यः ९—३०
मन्त्रहीनम् १७—१३
मन्त्रः ९—१६
मन्दान् ३—२९
मन्मनाः ९—३४; १८—६५
मन्मयाः ४—१०
मन्यते २-१९; ३-२७; ६—२२; १८—३२
मन्यन्ते ७—२४
मन्यसे २—२६; ११—४; १८—५९
मन्ये ६-३४; १०-१४
मन्येत ५—८
मम १-७, २९; २-८; ३—२३; ४—११; ७—१४, १७, २४; ८—२१; ९—५, ११; १०—७, ४०, ४१; ११—१, ७, ४९, ५२; १३—२; १४-२, ३; १५-६, ७; १८—७८
मया १—२२; ३—३; ४—३, १३; ७—२२; ९—४, १०; १०—१७, ३९, ४०; ११—२, ४, ३३, ३४, ४१, ४७; १५—२०; १६—१३, १४, १५; १८-६३, ७३
मयि ३—३०; ४—३५; ६—३०, ३१; ७—१, ७, १२; ८—७; ९—२९; १२—२, ६, ७, ८, ८, ८, ९, १४; १३—१०; १८—५७, ६८
मरणात् २—३४
मरीचिः १०—२१
मरुतः ११—६, २२
मरुताम् १०—२१
मर्त्यलोकम् ९—२१

पदानि	अध्याय—श्लोक
मर्त्येषु	१०—३
मलेन	३—३८
महतः	२—४०
महता	४—२
महति	१—१४
महतीम्	१—३
महत्	१—४५; ११—२३; १४—३, ४
महर्षयः	१०—२, ६
महर्षिसिद्धसङ्घाः	११—२१
महर्षीणाम्	१०—२, २५
महात्मनः	११—१२; १८—७४
महात्मन्	११—२०, ३७
महात्मा	७—१९; ११—५०
महात्मानः	८—१५; ९—१३
महानुभावान्	२—५
महान्	९-६; १८-७७
महापाप्मा	३—३७
महाबाहुः	१—१८
महाबाहो	२—२६, ६८; ३—२८, ४३; ५—३, ६; ६—३५, ३८; ७-५; १०-१; ११—२३; १४—५; १८—१, १३

पदानि	अध्याय—श्लोक
महाभूतानि	१३—५
महायोगेश्वरः	११—९
महारथः	१—४, १७
महारथाः	१—६; २—३५
महाशङ्खम्	१—१५
महाशनः	३—३७
महिमानम्	११—४१
महीकृते	१—३५
महीक्षिताम्	१—२५
महीपते	१—२१
महीम्	२—३७
महेश्वरः	१३—२२
महेष्वासाः	१—४
मंस्यन्ते	२—३५
मा	
मा	२—३, ४७, ४७, ४७; ११—३४, ४९, ४९; १६—५; १८—६६
माता	९—१७
मातुलान्	१—२६
मातुलाः	१—३४
मात्रास्पर्शाः	२—१४
माधव	१—३७
माधवः	१—१४
मानवः	३—१७; १८—४६
मानवाः	३—३१

पदानि	अध्याय—श्लोक
मानसम्	१७—१६
मानसाः	१०—६
मानापमानयोः	६—७; १२—१८; १४—२५
मानुषम्	११—५१
मानुषीम्	९—११
मानुषे	४—१२
मामकम्	१५—१२
मामकाः	१—१
मामिकाम्	९—७
मायया	७—१५; १८—६१
माया	७—१४
मायाम्	७—१४
मारुतः	२—२३
मार्गशीर्षः	१०—३५
मार्दवम्	१६—२
मासानाम्	१०—३५
माहात्म्यम्	११—२
माम्	१—४६; २—७; ३—१; ४—९, १०, ११, १३, १४, १४; ५—२९; ६—३०, ३१, ४७; ७—१, ३, १०, १३, १४, १५, १६, १८, १९, २३, २४, २५, २६, २८, २९, ३०, ३०; ८—५, ७, ७, १३,

पदानि	अध्याय—श्लोक
	१४, १५, १६; ९—३, ९, ११, १३, १४, १४, १५, २०, २२, २३, २४, २५, २८, २९, ३०, ३२, ३३, ३४, ३४; १०—३, ८, ९, १०, १४, २४, २७; ११—८, ५३, ५५; १२—२, ४, ६, ९; १३—२; १४—२६; १५—१९, १९; १६—१८, २०; १७—६; १८—५५, ५५, ६५, ६५, ६६, ६७, ६८
मि	
मित्रद्रोहे	१—३८
मित्रारिपक्षयोः	१४—२५
मित्रे	१२—१८
मिथ्या	१८—५९
मिथ्याचारः	३—६
मिश्रम्	१८—१२
मु	
मुक्तसङ्गः	३—९; १८—२६
मुक्तस्य	४—२३
मुक्तम्	१८—४०
मुक्तः	५—२८; १२—१५; १८—७१
मुक्त्वा	८—५
मुखम्	१—२९
मुखानि	११—२५
मुखे	४—३२
मुख्यम्	१०—२४
मुच्यन्ते	३—१३, ३१
मुनयः	१४—१
मुनिः	२—५६; ५—६, २८; १०—२६
मुनीनाम्	१०—३७
मुनेः	२—६९; ६—३
मुमुक्षुभिः	४—१५
मुहुर्मुहुः	१८—७६,
मुह्यति	२—१३; ८—२७
मुह्यन्ति	५—१५
मू	
मूढग्राहेण	१७—१९
मूढयोनिषु	१४—१५
मूढः	७—२५
मूढाः	७—१५; ९—११; १६—२०
मूर्तयः	१४—४
मूर्ध्नि	८—१२
मूलानि	१५—२
मृ	
मृगाणाम्	१०—३०
मृगेन्द्रः	१०—३०
मृतस्य	२—२७
मृतम्	२—२६
मृत्युसंसारवर्त्मनि	९—३
मृत्युसंसारसागरात्	१२—७
मृत्युम्	१३—२५
मृत्युः	२—२७; ९—१९; १०—३४
मे	
मे	१—२१, २९, ३०, ४६; २—७; ३—२, २२, ३१, ३२; ४—३, ५, ९, १४; ५—१; ६—३०, ३६, ३९, ४७; ७—४, ५, १८; ९—५, २६, २९, ३१; १०—१, २, १३, १८, १९; ११—४, ५, ८, १८, ३१, ४५, ४५, ४७, ४९; १२—२, १४; १५, १६, १७, १९, २०, १३—३; १६—६, १३; १८—४, ६, १३, ३६, ५०, ६४, ६४, ६५, ६९, ६९, ७०, ७७
मेधाः	१०—३४

पदानि	अध्याय—श्लोक
मेधावी	१८—१०
मेरुः	१०—२३
मै	
मैत्रः	१२—१३
मो	
मोक्षकाङ्क्षिभिः	१७—२५
मोक्षपरायणः	५—२८
मोक्षयिष्यामि	१८—६६
मोक्षम्	१८—३०
मोक्ष्यसे	४—१६; ९—१, २८
मोघकर्माणः	९—१२
मोघज्ञानाः	९—१२
मोघम्	३—१६
मोघाशाः	९—१२
मोदिष्ये	१६—१५
मोहकलिलम्	२—५२
मोहजालसमावृताः	१६—१६
मोहनम्	१४—८; १८—३९
मोहयसि	३—२
मोहम्	४—३५; १४—२२
मोहः	११—१; १४—१३; १८—७३
मोहात्	१६—१०; १८—७, २५, ६०
मोहितम्	७—१३
मोहिताः	४—१६
मोहिनीम्	९—१२
मौ	
मौनम्	१०—३८; १७—१६
मौनी	१२—१९
म्रि	
म्रियते	२—२०
य	
यक्षरक्षसाम्	१०—२३
यक्षरक्षांसि	१७—४
यक्ष्ये	१६—१५
यच्छ्रद्धः	१७—३
यजन्तः	९—१५
यजन्ति	९—२३
यजन्ते	४-१२; ९-२३; १६—१७; १७—१, ४, ४
यजुः	९—१७
यज्ञक्षपितकल्मषाः	४—३०
यज्ञतपसाम्	५—२९
यज्ञतपःक्रियाः	१७—२५
यज्ञदानतपःकर्म	१८—३, ५
यज्ञदानतपःक्रियाः	१७—२४
यज्ञभाविताः	३—१२
यज्ञविदः	४—३०
यज्ञशिष्टामृतभुजः	४—३१
यज्ञशिष्टाशिनः	३—१३
यज्ञम्	४—२५, २५; १७—१२, १३
यज्ञः	३—१४; ९—१६; १६—१; १७—७, ११; १८—५
यज्ञात्	३—१४; ४—३३
यज्ञानाम्	१०—२५
यज्ञाय	४—२३
यज्ञार्थात्	३—९
यज्ञाः	४—३२; १७—२३
यज्ञे	३—१५; १७—२७
यज्ञेन	४—२५
यज्ञेषु	८—२८
यज्ञैः	९—२०
यतचित्तस्य	६—१९
यतचित्तात्मा	४—२१; ६—१०
यतचित्तेन्द्रियक्रियः	६—१२
यतचेतसाम्	५—२६
यततः	२—६०
यतता	६—३६
यतताम्	७—३
यतति	७—३

पदानि अध्याय—श्लोक
यतते ६—४३
यतवाक्कायमानसः १८—५२
यतन्तः ९—१४; १५—११, ११
यतन्ति ७—२९
यतमानः ६—४५
यतयः ४—२८; ८—११
यतः ६—२६, २६; १३—३; १५—४; १८—४६
यतात्मवान् १२—११
यतात्मा १२—१४
यतात्मानः ५—२५
यतीनाम् ५—२६
यतेन्द्रियमनोबुद्धिः ५—२८
यत् १—४५; २—६, ७, ८, ६७; ३—२१, २१, २१; ४—१६, ३५; ५—१, ५, २१; ६—२१, ४२; ७—२; ८—११, ११, ११, १७, २८; ९—१, २७, २७, २७, २७, २७; १०—१, १४, ३९, ३९, ४१, ४१; ११—१, ७, ३७, ४१, ४२, ४७, ५२; १३—२, ३, ३, ११, १२, १२; १४—१; १५—६, ८, ८, १२, १२, १२; १७—१०, १२, १५, १८, १९, २०, २१, २२, २८; १८—८, ९, १५, २१, २२, २३, २४, २५, ३७, ३८, ३९, ४०, ५९, ६०
यत्प्रभावः १३—३
यत्र ६—२०, २०, २१; ८—२३; १८—३६, ७८, ७८
यथा २—१३, २२; ३—२५, ३८, ३८; ४—११, ३७; ६—१९; ७—१; ९—६; ११—३, २८, २९, ५३; १२—२०; १३—३२, ३३; १८—४५, ५०, ६३
यथाभागम् १—११
यथावत् १८—१९
यदा २—५२, ५३, ५५, ५८; ४—७, ७; ६—४, १८; १३—३०; १४—११, १४, १९
यद्यपि १—३८
यदि १—४६; २—६; ३—२३; ६—३२; ११—४, १२
यदृच्छया २—३२
यदृच्छालाभसन्तुष्टः ४—२२
यद्वत् २—७०
यद्विकारि १३—३
यन्त्रारूढानि १८—६१
यमः १०—२९; ११—३९
यया २—३९; ७—५; १८—३१, ३३, ३४, ३५
यशः १०—५; ११—३३
यष्टव्यम् १७—११
यस्मात् १२—१५; १५—१८
यस्मिन् ६—२२; १४—४
यस्य २—६१, ६८; ४—१९; ८—२२; १५—१; १८—१७, १७
यस्याम् २—६९

पदानि अध्याय—श्लोक

यम् २—१५, ७०; ६—२, २२; ८—६, ६, २१
यः २—१९, १९, २१, ५७, ७१; ३—६, ७, १२, १६, १७, ४२; ४—९, १४, १८, १८; ५—३, ५, १०, २३, २४, २४, २८; ६-१, ३०, ३१, ३२, ३३, ४७; ७—२१, २१; ८—५, ९, १३, १४, २०; ९—२६; १०—३, ७; ११—५५; १२—१४, १५, १५, १६, १७, १७; १३-१, ३, २३, २७, २९; १४—२३, २३, २६; १५—१, १७, १९; १६—२३; १७—३, ११; १८—११, १६, ५५, ६७, ६८, ७०, ७१

या

या २—६९; १८—३०, ३२, ५०
यातयामम् १७—१०

पदानि अध्याय—श्लोक

याति ६—४५; ८—५, ८, १३, २६; १३—२८; १४—१४; १६—२२
यादव ११—४१
यादसाम् १०—२९
यादृक् १३—३
यान् २—६
यान्ति ३—३३; ४—३१; ७—२३, २३, २७; ८-२३; ९—७, २५, २५, २५, २५, ३२; १३—३४; १६—२०
याभिः १०—१६
यावत् १—२२; १३—२६
यावान् २—४६; १८—५५
यास्यसि २—३५; ४—३५
याम् २—४२; ७—२१, २१
याः १४—४

यु

युक्तचेतसः ७—३०
युक्तचेष्टस्य ६—१७
युक्ततमः ६—४७
युक्ततमाः १२—२

पदानि अध्याय—श्लोक

युक्तस्वप्नावबोधस्य ६-१७
युक्तः २—३९, ६१; ३—२६; ४—१८; ५—८, १२, २३; ६—८, १४, १८; ७—२२; ८—१०; १८—५१
युक्तात्मा ७—१८
युक्ताहारविहारस्य ६—१७
युक्ते १—१४
युक्तैः १७—१७
युक्त्वा ९—३४
युगपत् ११—१२
युगसहस्रान्ताम् ८—१७
युगे ४—८, ८
युज्यते १०—७; १७—२६
युज्यस्व २—३८, ५०
युञ्जतः ६—१९
युञ्जन् ६—१५, २८; ७—१
युञ्जीत ६—१०
युञ्ज्यात् ६—१२
युद्धविशारदाः १—९
युद्धम् २—३२
युद्धात् २—३१
युद्धाय २—३७, ३८
युद्धे १-२३, ३३; १८-४३

पदानि	अध्याय—श्लोक
युधामन्युः	१—६
युधि	१—४
युधिष्ठिरः	१—१६
युध्य	८—७
युध्यस्व	२—१८; ३—३०; ११—३४
युयुधानः	१—४
युयुत्सवः	१—१
युयुत्सुम्	१—२८
ये	
ये	१—७, २३; ३—१३, ३१, ३२; ४—११; ५—२२; ७—१२, १२, १४, २९, ३०; ९—२२, २३, २९, ३२; ११—२२, ३२; १२—१, १, २, ३, ६, २०; १३—३४; १७—१, ५
येन	२—१७; ३—२; ४—३५; ६—६; ८—२२; १०—१०; ११—१९; १८—२०, ४६
येषाम्	१—३३; २—३५; ५—१६, १९; ७—२८; १०—६
यो	
योक्तव्यः	६—२३
योगक्षेमम्	९—२२
योगधारणाम्	८—१२
योगबलेन	८—१०
योगभ्रष्टः	६—४१
योगमायासमावृताः	७—२५
योगयज्ञाः	४—२८
योगयुक्तः	५—६, ७; ८—२७
योगयुक्तात्मा	६—२९
योगवित्तमाः	१२—१
योगसञ्ज्ञितम्	६—२३
योगसन्न्यस्तकर्माणम्	४—४१
योगसंसिद्धः	४—३८
योगसंसिद्धिम्	६—३७
योगसेवया	६—२०
योगस्थः	२—४८
योगस्य	६—४४
योगम्	२—५३; ४—१, ४२; ५—१, ५; ६—२, ३, १२, १९; ७—१; ९—५; १०—७, १८; ११—८; १८—७५
योगः	२—४८, ५०; ४—२, ३; ६—१६, १७, २३, ३३, ३६
योगात्	६—३७
योगाय	२—५०
योगारूढस्य	६—३
योगारूढः	६—४
योगिनम्	६—२७
योगिनः	४—२५; ५—११; ६—१९; ८—१४, २३; १५—११
योगिनाम्	३—३; ६—४२, ४७
योगिन्	१०—१७
योगी	५—२४; ६—१, २, ८, १०, १५, २८, ३१, ३२, ४५, ४६, ४६, ४६, ८—२५, २७, २८; १२—१४
योगे	२—३९
योगेन	१०—७; १२—६; १३—२४; १८—३३
योगेश्वर	११—४
योगेश्वरः	१८—७८
योगेश्वरात्	१८—७५
योगैः	५—५
योत्स्यमानान्	१—२३

पदानि	अध्याय—श्लोक
योत्स्यामि	२—४
योत्स्ये	२—९; १८—५९
योद्धव्यम्	१—२२
योद्धुकामान्	१—२२
योधमुख्यैः	११—२६
योधवीरान्	११—३४
योधाः	११—३२
योनिषु	१६—१९
योनिम्	१६—२०
योनिः	१४—३, ४
यौ	
यौवनम्	२—१३
र	
रक्षांसि	११—३६
रजसः	१४—१६, १७
रजसि	१४—१२, १५
रजः	१४—५, ७, ९, १०, १०, १०; १७—१
रजोगुणसमुद्भवः	३—३७
रणसमुद्यमे	१—२२
रणात्	२—३५
रणे	१—४६; ११—३४
रताः	५—२५; १२—४
रथम्	१—२१
रथोत्तमम्	१—२४
रथोपस्थे	१—४७
रमते	५—२२; १८—३६
रमन्ति	१०—९
रविः	१०—२१; १३—३३
रसनम्	१५—९
रसवर्जम्	२—५९
रसः	२—५९; ७—८
रसात्मकः	१५—१३
रस्याः	१७—८
रहसि	६—१०
रहस्यम्	४—३
रा	
राक्षसीम्	९—१२
रागद्वेषवियुक्तैः	२—६४
रागद्वेषौ	३—३४; १८—५१
रागात्मकम्	१४—७
रागी	१८—२७
राजगुह्यम्	९—२
राजन्	११—९; १८—७६, ७७
राजर्षयः	४—२; ९—३३
राजविद्या	९—२
राजसस्य	१७—९
राजसम्	१७—१२, १८, २१; १८—८, २१, २४, ३८
राजसः	१८—२७
राजसाः	७—१२; १४—१८; १७—४
राजसी	१७—२; १८—३१, ३४
राजा	१—२, १६
राज्यसुखलोभेन	१—४५
राज्यम्	१—३२, ३३; २—८; ११—३३
राज्येन	१—३२
रात्रिम्	८—१७
रात्रिः	८—२५
रात्र्यागमे	८—१८, १९
रामः	१०—३१
रि	
रिपुः	६—५
रु	
रुद्राणाम्	१०—२३
रुद्रादित्याः	११—२२
रुद्रान्	११—६
रुद्ध्वा	४—२९
रुधिरप्रदिग्धान्	२—५
रू	
रूपस्य	११—५२
रूपम्	११—३, ९, २०, २३, ४७, ४९, ४९, ५०, ५१, ५२; १५—३; १८—७७
रूपाणि	११—५

पदानि	अध्याय—श्लोक
रूपेण	११—४६
रो	
रोमहर्षणम्	१८—७४
रोमहर्षः	१—२९
ल	
लघ्वाशी	१८—५२
लब्धम्	१६—१३
लब्ध्वा	४-३९; ६-२२
लब्धा	१८—७३
लभते	४-३९; ६-४३;
	७-२२; १८-४५, ५४
लभन्ते	२—३२;
	५—२५; ९—२१
लभस्व	११—३३
लभे	११—२५
लभेत्	१८—८
लभ्यः	८—२२
ला	
लाघवम्	२—३५
लाभम्	६—२२
लाभालाभौ	२—३८
लि	
लिङ्गैः	१४—२१
लिप्यते	५—७, १०;
	१३—३१; १८—१७
लिम्पन्ति	४—१४
लु	
लुप्तपिण्डोदकक्रियाः	१-४२

पदानि	अध्याय—श्लोक
लुब्धः	१८—२७
ले	
लेलिह्यसे	११—३०
लो	
लोकक्षयकृत्	११—३२
लोकत्रयम्	११—२०;
	१५—१७
लोकत्रये	११—४३
लोकमहेश्वरम्	१०—३
लोकसङ्ग्रहम्	३-२०, २५
लोकस्य	५—१४;
	११—४३
लोकम्	९-३३; १३-३३
लोकः	३—९, २१;
	४—३१, ४०;
	७—२५; १२—१५
लोकात्	१२—१५
लोकान्	६—४१;
	१०—१६; ११—३०,
	३२; १४—१४;
	१८—१७, ७१
लोकाः	३-२४; ८-१६;
	११—२३, २९
लोके	२—५; ३—३;
	४—१२; ६—४२;
	१०—६; १३—१३;
	१५—१६, १८;
	१६—६

पदानि	अध्याय—श्लोक
लोकेषु	३—२२
लोभः	१४—१२, १७;
	१६—२१
लोभोपहतचेतसः	१-३८
व	
वक्तुम्	१०—१६
वक्त्राणि	११—२७,
	२८, २९
वक्ष्यामि	७-२; ८-२३;
	१०—१; १८—६४
वचनम्	१—२;
	११—३५; १८—७३
वचः	२—१०; १०—१,
	११—१; १८—६४
वज्रम्	१०—२८
वद	३—२
वदति	२—२९
वदनैः	११—३०
वदन्ति	८—११
वदसि	१०—१४
वदिष्यन्ति	२—३६
वयम्	१—३७, ४५;
	२—१२
वर	८—४
वरुणः	१०—२९;
	११—३९
वर्णसङ्करकारकैः	१—४३
वर्णसङ्करः	१—४१

पदानि	अध्याय—श्लोक
वर्तते	५—२६; ६—३१; १६—२३
वर्तन्ते	३—२८; ५—९; १४—२३
वर्तमानः	६—३१; १३—२३
वर्तमानानि	७—२६
वर्ते	३—२२
वर्तेत	६—६
वर्तेयम्	३—२३
वर्त्म	३—२३; ४—११
वर्षम्	९—१९; ११—४१; १५—१०, १०; १७—१९, २१; १८—१५, १५, २४, ४०, ४०
वशम्	३—३४; ६—२६
वशात्	९—८
वशी	५—१३
वशे	२—६१
वश्यात्मना	६—३६
वसवः	११—२२
वसूनाम्	१०—२३
वसून्	११—६
वहामि	९—२२
वह्निः	३—३८
वः	३—१०, ११, १२
वा	
वा	१—३२, २—६, ६, २०, २०, २६, ३७, ३७; ६—३२, ३२; ८—६; १०—४१;
वाक्	१०—३४
वाक्यम्	१—२१; २—१; १७—१५
वाक्येन	३—२
वाङ्मयम्	१७—१५
वाचम्	२—४२
वाच्यम्	१८—६७
वादः	१०—३२
वादिनः	२—४२
वायुः	२—६७; ७—४; ९—६; ११—३९; १५—८
वायोः	६—३४
वार्ष्णेय	१-४१; ३-३६
वासवः	१०—२२
वासः	१—४४
वासांसि	२—२२
वासुकिः	१०—२८
वासुदेवस्य	१८—७४
वासुदेवः	७—१९; १०—३७; ११—५०
वि	
विकम्पितुम्	२—३१
विकर्णः	१—८
विकर्मणः	४—१७
विकारान्	१३—१९
विक्रान्तः	१—६
विगतकल्मषः	६—२८
विगतज्वरः	३—३०
विगतभीः	६—१४
विगतस्पृहः	२—५६; १८—४९
विगतः	११—१
विगतेच्छाभयक्रोधः	५—२८
विगुणः	३—३५; १८—४७
विचक्षणाः	१८—२
विचालयेत्	३—२९
विचाल्यते	६—२२; १४—२३
विचेतसः	९—१२
विजयम्	१—३२
विजयः	१८—७८
विजानतः	२—४६
विजानीतः	२—१९
विजानीयाम्	४—४
विजितात्मा	५—७
विजितेन्द्रियः	६—८
विज्ञातुम्	११—३१
विज्ञानसहितम्	९—१
विज्ञानम्	१८—४२

पदानि	अध्याय—श्लोक
विज्ञाय	१३—१८
वितताः	४—३२
वित्तेशः	१०—२३
विदधामि	७—२१
विदितात्मनाम्	५—२६
विदित्वा	२—२५; ८—२८
विदुः	४—२; ७—२९, ३०, ३०; ८—१७; १०—२, १४; १३—३४; १६—७; १८—२
विद्धि	२—१७; ३—१५, ३२, ३७; ४—१३, ३२, ३४; ६—२; ७—५, १०, १२; १०—२४, २७; १३—२, १९, १९, २६; १४—७, ८; १५—१२; १७—६, १२; १८—२०, २१
विद्मः	२—६
विद्यते	२—१६, १६, ३१, ४०; ३—१७; ४—३८; ६—४०; ८—१६; १६—७
विद्यात्	६—२३; १४—११
विद्यानाम्	१०—३२
विद्याविनयसम्पन्ने	५—१८
विद्याम्	१०—१७
विद्वान्	३—२५, २६
विधानोक्ताः	१७—२४
विधिदृष्टः	१७—११
विधिहीनम्	१७—१३
विधीयते	२—४४,
विधेयात्मा	२—६४
विनङ्क्ष्यसि	१८—५८
विनद्य	१—१२
विनश्यति	४—४०; ८—२०
विनश्यत्सु	१३—२७
विना	१०—३९
विनाशम्	२—१७
विनाशः	६—४०
विनाशाय	४—८
विनियतम्	६—१८
विनियम्य	६—२४
विनिवर्तन्ते	२—५९
विनिवृत्तकामाः	१५—५
विनिश्चितैः	१३—४
विन्दति	४—३८; ५—२१, १८—४५, ४६
विन्दते	५—४
विन्दामि	११—२४
विपरिवर्तते	९—१०
विपरीतम्	१८—१५
विपरीतानि	१—३१
विपरीतान्	१८—३२
विपश्चितः	२—६०
विभक्तम्	१३—१६
विभक्तेषु	१८—२०
विभावसौ	७—९
विभुम्	१०—१२
विभुः	५—१५
विभूतिभिः	१०—१६
विभूतिमत्	१०—४१
विभूतिम्	१०—७, १८
विभूतीनाम्	१०—४०
विभूतेः	१०—४०
विमत्सरः	४—२२
विमुक्तः	९—२८; १४—२०; १६—२२
विमुक्ताः	१५—५
विमुच्य	१८—५३
विमुञ्चति	१८—३५
विमुह्यति	२—७२
विमूढः	६—३८
विमूढभावः	११—४९
विमूढात्मा	३—६
विमूढाः	१५—१०
विमृश्य	१८—६३
विमोक्षाय	१६—५
विमोक्ष्यसे	४—३२

पदानि	अध्याय—श्लोक
विमोहयति	३—४०
विराटः	१—४, १७
विलग्नाः	११—२७
विवस्वतः	४—४
विवस्वते	४—१
विवस्वान्	४—१
विविक्तदेशसेवित्वम्	१३—१०
विविक्तसेवी	१८—५२
विविधाः	१७—२५; १८—१४
विविधैः	१३—४
विवृद्धम्	१४—११
विवृद्धे	१४—१२, १३
विशते	१८—५५
विशन्ति	८—११; ९—२१ ११—२१, २७, २८, २९, २९
विशालम्	९—२१
विशिष्टाः	१—७
विशिष्यते	३-७; ५-२; ६—९; ७—१७; १२—१२
विशुद्धया	१८—५१
विशुद्धात्मा	५—७
विश्वतोमुखम्	९—१५; ११—११
विश्वतोमुखः	१०—३३

पदानि	अध्याय—श्लोक
विश्वमूर्ते	११—४६
विश्वरूप	११—१६
विश्वस्य	११—१८, ३८
विश्वम्	११-१९, ३८, ४७
विश्वे	११—२२
विश्वेश्वर	११—१६
विषमे	२—२
विषयप्रवालाः	१५—२
विषयान्	२—६२, ६४; ४—२६; १५—९; १८—५१
विषयाः	२—५९
विषयेन्द्रियसंयोगात्	१८—३८
विषम्	१८—३७, ३८
विषादम्	१८—३५
विषादी	१८—२८
विषीदन्	१—२८
विषीदन्तम्	२—१, १०
विष्टभ्य	१०—४२
विष्ठितम्	१३—१७
विष्णुः	१०—२१
विष्णो	११—२४, ३०
विसर्गः	८—३
विसृजन्	५—९
विसृजामि	९—७, ८
विसृज्य	१—४७
विस्तरशः	११-२; १६-६

पदानि	अध्याय—श्लोक
विस्तरस्य	१०—१९
विस्तरः	१०—४०
विस्तरेण	१०—१८
विस्तारम्	१३—३०
विस्मयः	१८—७७
विस्मयाविष्टः	११—१४
विस्मिताः	११—२२
विहाय	२—२२, २२, ७१
विहारशय्यासनभोजनेषु	११—४२
विहितान्	७—२२
विहिताः	१७—२३
वी	
वीक्षन्ते	११—२२
वीतरागभयक्रोधः	२—५६
वीतरागभयक्रोधाः	४—१०
वीतरागाः	८—११
वीर्यवान्	१—५, ६
वृ	
वृकोदरः	१—१५
वृजिनम्	४—३६
वृष्णीनाम्	१०—३७
वे	
वेगम्	५—२३
वेत्ता	११—३८
वेत्ति	२—१९; ४—९; ६—२१; ७—३; १०—३, ७;

पदानि	अध्याय—श्लोक
	१३—१, २३; १४—१९; १८—२१, ३०
वेत्थ	४—५; १०—१५
वेद	२—२१, २९; ४—५; ७—२६, २६; १५—१
वेदयज्ञाध्ययनैः	११—४८
वेदवादरताः	२—४२
वेदवित्	१५—१, १५
वेदविदः	८—११
वेदानाम्	१०—२२
वेदान्तकृत्	१५—१५
वेदाः	२—४५; १७—२३
वेदितव्यम्	११—१८
वेदितुम्	१८—१
वेदेषु	२—४६; ८—२८
वेदे	१५—१८
वेदैः	११-५३; १५-१५
वेद्यम्	९-१७; ११-३८
वेद्यः	१५—१५
वेपथुः	१—२९
वेपमानः	११—३५
वै	
वैनतेयः	१०—३०
वैराग्यम्	१३—८; १८—५२
वैराग्येण	६—३५
वैरिणम्	३—३७
वैश्यकर्म	१८—४४
वैश्याः	९—३२
वैश्वानरः	१५—१४
व्य	
व्यक्तमध्यानि	२—२८
व्यक्तयः	८—१८
व्यक्तिम्	७—२४; १०—१४
व्यतितरिष्यति	२—५२
व्यतीतानि	४—५
व्यथन्ति	१४—२
व्यथयन्ति	२—१५
व्यथा	११—४९
व्यथिष्ठाः	११—३४
व्यदारयत्	१—१९
व्यनुनादयन्	१—१९
व्यपाश्रित्य	९—३२
व्यपेतभीः	११—४९
व्यवसायः	१०—३६; १८—५९
व्यवसायात्मिका	२—४१, ४४
व्यवसितः	९—३०
व्यवसिताः	१—४५
व्यवस्थितान्	१—२०
व्यवस्थितौ	३—३४
व्या	
व्यात्ताननम्	११—२४
व्याप्तम्	११—२०
व्यामिश्रेण	३—२
व्याप्य	१०—१६
व्यासप्रसादात्	१८—७५
व्यासः	१०—१३, ३७
व्याहरन्	८—१३
व्यु	
व्युदस्य	१८—५१
व्यू	
व्यूढम्	१—२
व्यूढाम्	१—३
व्र	
व्रज	१८—६६
व्रजेत	२—५४
श	
शक्नोति	५—२३
शक्नोमि	१—३०
शक्नोषि	१२—९
शक्यसे	११—८
शक्यम्	११—४; १८—११
शक्यः	६—३६; ११—४८, ५३, ५४
शङ्खम्	१—१२
शङ्खाः	१—१३
शङ्खान्	१—१८

पदानि	अध्याय—श्लोक
शङ्खौ	१—१४
शठः	१८—२८
शतशः	११—५
शत्रुत्वे	६—६
शत्रुवत्	६—६
शत्रुम्	३—४३
शत्रुः	१६—१४
शत्रून्	११—३३
शत्रौ	१२—१८
शनैः	६—२५, २५
शब्दब्रह्म	६—४४
शब्दः	१—१३; ७—८; १७—२६
शब्दादीन्	४—२६; १८—५१
शमम्	११—२४
शमः	६—३; १०—४; १८—४२
शरणम्	२-४९; ९-१८; १८—६२, ६६
शरीरयात्रा	३—८
शरीरवाङ्मनोभिः	१८—१५
शरीरविमोक्षणात्	५—२३
शरीरस्थम्	१७—६
शरीरस्थः	१३—३१
शरीरम्	१३-१; १५-८
शरीराणि	२—२२
शरीरिणः	२—१८
शरीरे	१—२९; २—२०; ११—१३
शर्म	११—२५
शशाङ्कः	११—३९; १५—६
शशिसूर्यनेत्रम्	११—१९
शशिसूर्ययोः	७—८
शशी	१०—२१
शश्वत्	९—३१
शस्त्रपाणयः	१—४६
शस्त्रभृताम्	१०—३१
शस्त्रसम्पाते	१—२०
शस्त्राणि	२—२३
शङ्करः	१०—२३
शंससि	५—१
शा	
शाखाः	१५—२
शाधि	२—७
शान्तरजसम्	६—२७
शान्तः	१८—५३
शान्तिम्	२—७०, ७१; ४—३९; ५—१२, २९; ६—१५; ९—३१; १८—६२
शान्तिः	२—६६; १२—१२; १६—२
शारीरम्	४—२१; १७—१४
शाश्वतधर्मगोप्ता	११—१८
शाश्वतस्य	१४—२७
शाश्वतम्	१०—१२; १८—५६, ६२
शाश्वतः	२—२०
शाश्वताः	१—४३
शाश्वतीः	६—४१
शाश्वते	८—२६
शास्त्रविधानोक्तम्	१६—२४
शास्त्रविधिम्	१६—२३; १७—१
शास्त्रम्	१५—२०; १६—२४
शि	
शिखण्डी	१—१७
शिखरिणाम्	१०—२३
शिरसा	११—१४
शिष्यः	२—७
शिष्येण	१—३
शी	
शीतोष्णसुखदुःखदाः	२—१४
शीतोष्णसुखदुःखेषु	६—७; १२—१८
शु	
शुक्लकृष्णे	८—२६
शुक्लः	८—२४

पदानि अध्याय—श्लोक

शुचः १६—५; १८—६६
शुचिः १२—१६
शुचीनाम् ६—४१
शुचौ ६—११
शुनि ५—१८
शुभान् १८—७१
शुभाशुभपरित्यागी १२—१७
शुभाशुभफलैः ९—२८
शुभाशुभम् २—५७

शू

शूद्रस्य १८—४४
शूद्राणाम् १८—४१
शूद्राः ९—३२
शूराः १—४, ९

शृ

शृणु २—३९; ७—१; १०—१; १३—३; १६—६; १७—२, ७; १८—४, १९, २९, ३६, ४५, ६४
शृणुयात् १८—७१
शृणोति २—२९
शृण्वतः १०—१८
शृण्वन् ५—८

शै

शैब्यः १—५

शो

शोकसंविग्नमानसः १—४७
शोकम् २—८; १८—३५
शोचति १२—१७; १८—५४
शोचितुम् २—२६, २७, ३०
शोषयति २—२३

शौ

शौचम् १३—७; १६—३, ७; १७—१४; १८—४२
शौर्यम् १८—४३

श्या

श्यालाः १—३४

श्र

श्रद्दधानाः १२—२०
श्रद्धया ६—३७; ७—२१, २२; ९—२३; १२—२; १७—१, १७
श्रद्धा १७—२, ३
श्रद्धामयः १७—३
श्रद्धावन्तः ३—३१
श्रद्धावान् ४—३९; ६—४७; १८—७१
श्रद्धाविरहितम् १७—१३
श्रद्धाम् ७—२१

श्रि

श्रिताः ९—१२

श्री

श्रीभगवान् २—२, ११, ५५; ३—३, ३७; ४—१, ५; ५—२; ६—१, ३५, ४०; ७—१; ८—३; ९—१; १०—१, १९; ११—५, ३२, ४७, ५२; १२—२; १३—१; १४—१, २२; १५—१; १६—१; १७—२; १८—२
श्रीमताम् ६—४१
श्रीमत् १०—४१
श्रीः १०—३४; १८—७८

श्रु

श्रुतवान् १८—७५
श्रुतस्य २—५२
श्रुतम् १८—७२
श्रुतिपरायणाः १३—२५
श्रुतिविप्रतिपन्ना २—५३
श्रुतौ ११—२
श्रुत्वा २—२९, ११—३५; १३—२५

पदानि	अध्याय—श्लोक
श्रे	
श्रेयः	१—३१; २—५, ७, ३१; ३—२, ११, ३५; ५—१; १२—१२; १६—२२
श्रेयान्	३—३५; ४—३३; १८—४७
श्रेष्ठः	३—२१
श्रो	
श्रोतव्यस्य	२—५२
श्रोत्रम्	१५—९
श्रोत्रादीनि	४—२६
श्रोष्यसि	१८—५८
श्व	
श्वपाके	५—१८
श्वशुरान्	१—२७
श्वशुराः	१—३४
श्वसन्	५—९
श्वे	
श्वेतैः	१—१४
ष	
षण्मासाः	८—२४, २५
स	
सकम्	१८—२२
सक्तः	५—१२
सक्ताः	३—२५
सखा	४—३; ११—४१, ४४
सखीन्	१—२६
सखे	११—४१
सख्युः	११—४४
सगद्गदम्	११—३५
सङ्गरहितम्	१८—२३
सङ्गवर्जितः	११—५५
सङ्गविवर्जितः	१२—१८
सङ्गम्	२-४८; ५-१०, ११; १८—६, ९
सङ्गः	२—४७; ६२
सङ्गात्	२—६२
सङ्ग्रामम्	२—३३
सचराचरम्	९—१०; ११—७
सचेताः	११—५१
सज्जते	३—२८
सज्जन्ते	३—२९
सततयुक्तानाम्	१०—१०
सततयुक्ताः	१२—१
सततम्	३—१९; ६—१०; ८—१४; ९—१४; १२—१४; १७—२४; १८—५७
सतः	२—१६
सति	१८—१६
सत्	९-१९; ११-३७; १३—१२; १७—२३, २६, २६, २७,२७
सत्कारमानपूजार्थम्	१७—१८
सत्यम्	१०—४; १६—२, ७, १७—१५; १८—६५
सत्त्ववताम्	१०—३६
सत्त्वसमाविष्टः	१८—१०
सत्त्वसंशुद्धिः	१६—१
सत्त्वस्थाः	१४—१८
सत्त्वम्	१०—३६, ४१; १३—२६; १४—५, ६, ९, १०, १०, १०, ११; १७—१; १८—४०
सत्त्वात्	१४—१७
सत्त्वानुरूपा	१७—३
सत्त्वे	१४—१४
सदसद्योनिजन्मसु	१३—२१
सदा	५—२८; ६—१५, २८; ८—६; १०—१७; १८—५६
सदृशम्	३-३३; ४-३८
सदृशः	१६—१५
सदृशी	११—१२
सदोषम्	१८—४८
सद्भावे	१७—२६
सनातनम्	४-३१; ७-१०

पदानि	अध्याय—श्लोक

पदानि	अध्याय—श्लोक
सनातनः	२—२४; ८—२०; ११—१८; १५—७
सनातनाः	१—४०
सन्	४—६, ६
सन्तः	३—१३
सपत्नान्	११—३४
सप्त	१०—६
समग्रम्	४—२३; ७—१; ११—३०
समग्रान्	११—३०
समचित्तत्वम्	१३—९
समता	१०—५
समतीतानि	७—२६
समतीत्य	१४—२६
समत्वम्	२—४८
समदर्शनः	६—२९
समदर्शिनः	५—१८
समदुःखसुखम्	२—१५
समदुःखसुखः	१२—१३; १४—२४
समधिगच्छति	३—४
समबुद्धयः	१२—४
समबुद्धिः	६—९
समलोष्टाश्मकाञ्चनः	६—८; १४—२४
समवस्थितम्	१३—२८
समवेतान्	१—२५
समवेताः	१—१
समम्	५—१९; ६—१३, ३२; १३—२७, २८
समन्ततः	६—२४
समन्तात्	११—१७, ३०
समः	२—४८; ४—२२; ९—२९; १२—१८, १८; १८—५४
समागताः	१—२३
समाचर	३—९, १९
समाचरन्	३—२६
समाधातुम्	१२—९
समाधाय	१७—११
समाधिस्थस्य	२—५४
समाधौ	२—४४, ५३
समाप्नोषि	११—४०
समारम्भाः	४—१९
समासतः	१३—१८
समासेन	१३—३, ६; १८—५०
समाहर्तुम्	११—३२
समाहितः	६—७
समाः	६—४१
समितिञ्जयः	१—८
समिद्धः	४—३७
समीक्ष्य	१—२७
समुद्रम्	२—७०; ११—२८
समुद्धर्ता	१२—७
समुपस्थितम्	१—२८; २—२
समुपाश्रितः	१८—५२
समृद्धवेगाः	११-२९, २९
समृद्धम्	११—३३
समे	२—३८
समौ	५—२७
सम्यक्	५—४; ८—१०; ९—३०
सरसाम्	१०—२४
सर्गः	५—१९
सर्गाणाम्	१०—३२
सर्गे	७—२७; १४—२
सर्पाणाम्	१०—२८
सर्व	११—४०
सर्वकर्मणाम्	१८—१३
सर्वकर्मफलत्यागम्	१२—११; १८—२
सर्वकर्माणि	३—२६; ४—३७; ५—१३; १८—५६, ५७
सर्वकामेभ्यः	६—१८
सर्वकिल्बिषैः	३—१३
सर्वक्षेत्रेषु	१३—२
सर्वगतम्	३—१५; १३—३२
सर्वगतः	२—२४

पदानि	अध्याय—श्लोक
सर्वगुह्यतमम्	१८—६४
सर्वज्ञानविमूढान्	३—३२
सर्वत:	२—४६; ११—१६, १७, ४०
सर्वत:पाणिपादम्	१३-१३
सर्वत:श्रुतिमत्	१३—१३
सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्	१३—१३
सर्वत्र	२—५७; ६—२९, ३०, ३२; १२—४; १३—२८ ३२; १८—४९
सर्वत्रगम्	१२—३
सर्वत्रग:	९—६
सर्वथा	६—३१; १३—२३
सर्वदुर्गाणि	१८—५८
सर्वदु:खानाम्	२—६५
सर्वदेहिनाम्	१४—८
सर्वद्वाराणि	८—१२
सर्वद्वारेषु	१४—११
सर्वधर्मान्	१८—६६
सर्वपापेभ्य:	१८—६६
सर्वपापै:	१०—३
सर्वभावेन	१५—१९; १८—६२
सर्वभूतस्थम्	६—२९
सर्वभूतस्थितम्	६—३१
सर्वभूतहिते	५—२५; १२—४
सर्वभूतात्मभूतात्मा	५—७
सर्वभूतानाम्	२—६९; ५—२९; ७—१०; १०—३९; १२—१३; १४—३; १८—६१
सर्वभूतानि	६—२९; ७—२७; ९—४, ७; १८—६१
सर्वभूताशयस्थित:	१०—२०
सर्वभूतेषु	३—१८; ७—९; ९—२९; ११—५५; १८—२०
सर्वभृत्	१३—१४
सर्वयज्ञानाम्	९—२४
सर्वयोनिषु	१४—४
सर्वलोकमहेश्वरम्	५—२९
सर्ववित्	१५—१९
सर्ववृक्षाणाम्	१०—२६
सर्ववेदेषु	७—८
सर्वश:	१—१८; २—५८, ६८; ३—२३, २७; ४—११; १०—२; १३—२९
सर्वसङ्कल्पसन्न्यासी	६—४
सर्वस्य	२—३०; ७—२५; ८—९; १०—८; १३—१७; १५-१५ १७-३, ७
सर्वहर:	१०—३४
सर्वम्	२-१७; ४-३३, ३६; ६—३०; ७—७, १३, १९; ८—२२, २८; ९—४; १०—८, १४; ११—४०; १३—१३; १८—४६
सर्व:	३—५; ११—४०
सर्वाणि	२—३०, ६१; ३—३०; ४—५, २७; ७—६; ९—६; १२—६; १५—१६
सर्वान्	१-२७; २-५५, ७१; ४-३२; ६-२४; ११—१५, १५
सर्वारम्भपरित्यागी	१२—१६; १४—२५
सर्वारम्भा:	१८—४८
सर्वार्थान्	१८—३२
सर्वाश्चर्यमयम्	११—११
सर्वा:	८—१८; ११—२०; १५—१३
सर्वे	१—६, ९, ११;

पदानि	अध्याय—श्लोक
	२—१२, ७०;
	४—१९, ३०;
	७—१८; १०—१३;
	११—२२, २६, ३२,
	३६; १४—१
सर्वेन्द्रियगुणाभासम्	१३—१४
सर्वेन्द्रियविवर्जितम्	१३—१४
सर्वेभ्यः	४—३६
सर्वेषाम्	१—२५;
	६—४७
सर्वेषु	१—११; २—४६;
	८—७; २०, २७;
	१३—२७; १८—२१,
	५४
सर्वैः	१५—१५
सविकारम्	१३—६
सविज्ञानम्	७—२
सव्यसाचिन्	११—३३
सशरम्	१—४७
सह	१—२२; ११—२६,
	२६; १३—२३
सहजम्	१८—४८
सहदेवः	१—१६
सहयज्ञाः	३—१०
सहसा	१—१३
सहस्रकृत्वः	११—३९

पदानि	अध्याय—श्लोक
सहस्रबाहो	११—४६
सहस्रयुगपर्यन्तम्	८—१७
सहस्रशः	११—५
सहस्रेषु	७—३
सङ्करस्य	३—२४
सङ्करः	१—४२
सङ्कल्पप्रभवान्	६—२४
सङ्ख्ये	१—४७; २—४
सङ्ग्रहेण	८—११
सङ्घातः	१३—६
सञ्जय	१—१
सञ्जयः	१—२, २४, ४७;
	२—१, ९; ११—९,
	३५, ५०; १८—७४
सञ्जनयन्	१—१२
सञ्जयति	१४—९, ९
सञ्जायते	२—६२;
	१३—२६; १४—१७
सञ्ज्ञार्थम्	१—७
सन्तरिष्यसि	४—३६
सन्तुष्टः	३—१७;
	१२—१४, १९
सन्दृश्यन्ते	११—२७
सन्नियम्य	१२—४
सन्निविष्टः	१५—१५
सन्न्यसनात्	३—४
सन्न्यस्य	३-३०; ५-१३;
	१२—६; १८—५७

पदानि	अध्याय—श्लोक
सन्न्यासयोगयुक्तात्मा	९—२८
सन्न्यासस्य	१८—१
सन्न्यासम्	५—१;
	६—२; १८—२
सन्न्यासः	५—२, ६;
	१८—७
सन्न्यासिनाम्	१८—१२
सन्न्यासी	६—१
सन्न्यासेन	१८—४९
सम्पत्	१६—५
सम्पदम्	१६—३, ४, ५
सम्पद्यते	१३—३०
सम्पश्यन्	३—२०
सम्प्रकीर्तितः	१८—४
सम्प्रतिष्ठा	१५—३
सम्प्रवृत्तानि	१४—२२
सम्प्रेक्ष्य	६—१३
सम्प्लुतोदके	२—४६
सम्बन्धिनः	१—३४
सम्भवन्ति	१४—४
सम्भवः	१४—३
सम्भवामि	४—६, ८
सम्भावितस्य	२—३४
सम्मोहम्	७—२७
सम्मोहः	२—६३
सम्मोहात्	२—६३
संयतेन्द्रियः	४—३९

पदानि	अध्याय—श्लोक
संयमताम्	१०—२९
संयमाग्निषु	४—२६
संयमी	२—६९
संयम्य	२—६१; ३—६; ६—१४; ८—१२
संयाति	२—२२; १५—८
संवादम्	१८—७०, ७४, ७६
संवृत्तः	११—५१
संशयस्य	६—३९
संशयम्	४—४२; ६—३९
संशयः	८—५; १०—७; १२—८
संशयात्मनः	४—४०
संशयात्मा	४—४०
संशितव्रताः	४—२८
संशुद्धकिल्बिषः	६—४५
संश्रिताः	१६—१८
संसारेषु	१६—१९
संसिद्धिम्	३—२०; ८—१५; १८—४५
संसिद्धौ	६—४३
संस्तभ्य	३—४३
संस्पर्शजाः	५—२२
संस्मृत्य	१८—७६, ७६, ७७, ७७
संहरते	२—५८
सः	१—१३, १९, २७; २—१५, २१, ७०, ७१; ३—६, ७, १२, १६, २१, ४२; ४—२, ३, ९, १४, १८, १८, २०; ५—३, ५, १०, २१, २३, २३, २४, २८; ६—१, २३, ३०, ३१, ३२, ४४, ४७; ७—१७, १८, १९, २२; ८—५, १०, १३, १९, २०, २२; ९—३०, ३०; १०—३, ७; ११—१४, ५५; १२—१४, १५, १६, १७; १३—३, २३, २७, २९; १४—१९, २५, २६; १५—१, १९; १६—२३; १७—३, ३, ११; १८—८, ९, ११, १६, १७, ७१
सा	
सा	२—६९; ६—१९; ११—१२; १७—२; १८—३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५
साक्षात्	१८—७५
साक्षी	९—१८
सागरः	१०—२४
सात्यकिः	१—१७
सात्त्विकप्रियाः	१७—८
सात्त्विकम्	१४—१६; १७—१७, २०; १८—२०, २३, ३७
सात्त्विकः	१७—११; १८—९, २६
सात्त्विकाः	७—१२; १७—४
सात्त्विकी	१७—२; १८—३०, ३३
साधर्म्यम्	१४—२
साधिभूताधिदैवम्	७—३०
साधियज्ञम्	७—३०
साधुभावे	१७—२६
साधुषु	६—९
साधुः	९—३०
साधूनाम्	४—८
साध्याः	११—२२
साम	९—१७
सामर्थ्यम्	२—३६
सामवेदः	१०—२२
सामासिकस्य	१०—३३

पदानि	अध्याय—श्लोक
साम्नाम्	१०—३५
साम्ये	५—१९
साम्येन	६—३३
साहङ्कारेण	१८—२४
साङ्ख्ययोगौ	५—४
साङ्ख्यम्	५—५
साङ्ख्यानाम्	३—३
साङ्ख्ये	२—३९; १८—१३
साङ्ख्येन	१३—२४
साङ्ख्यैः	५—५
सि	
सिद्धये	७—३; १८—१३
सिद्धसङ्घाः	११—३६
सिद्धः	१६—१४
सिद्धानाम्	७—३; १०—२६
सिद्धिम्	३—४; ४—१२; १२—१०; १४—१; १६—२३; १८—४५, ४६, ५०
सिद्धिः	४—१२
सिद्धौ	४—२२
सिद्ध्यसिद्ध्योः	२—४८; १८—२६
सिंहनादम्	१—१२
सी	
सीदन्ति	१—२९

पदानि	अध्याय—श्लोक
सु	
सुकृतदुष्कृते	२—५०
सुकृतस्य	१४—१६
सुकृतम्	५—१५
सुकृतिनः	७—१६
सुखदुःखे	२—३८
सुखदुःखसञ्ज्ञैः	१५—५
सुखदुःखानाम्	१३—२०
सुखसङ्गेन	१४—६
सुखस्य	१४—२७
सुखम्	२-६६; ४-४०; ५—३, १३, २१, २१; ६—२१, २७, २८, ३२; १०—४; १३—६; १६—२३; १८—३६; ३७, ३८, ३९
सुखानि	१—३२, ३३
सुखिनः	१-३७; २-३२
सुखी	५-२३; १६-१४
सुखे	१४—९
सुखेन	६—२८
सुखेषु	२—५६
सुघोषमणिपुष्पकौ	१-१६
सुदुराचारः	९—३०
सुदुर्दर्शम्	११—५२
सुदुर्लभः	७—१९
सुदुष्करम्	६—३४

पदानि	अध्याय—श्लोक
सुनिश्चितम्	५—१
सुरगणाः	१०—२
सुरसङ्घाः	११—२१
सुराणाम्	२—८
सुरेन्द्रलोकम्	९—२०
सुलभः	८—१४
सुविरूढमूलम्	१५—३
सुसुखम्	९—२
सुहृत्	९—१८
सुहृदम्	५—२९
सुहृदः	१—२७
सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु	६—९
सू	
सूक्ष्मत्वात्	१३—१५
सूतपुत्रः	११—२६
सूत्रे	७—७
सूयते	९—१०
सूर्यसहस्रस्य	११—१२
सूर्यः	१५—६
सृ	
सृजति	५—१४
सृजामि	४—७
सृती	८—२७
सृष्टम्	४—१३
सृष्ट्वा	३—१०
से	
सेनयोः	१—२१, २४, २७; २—१०

पदानि	अध्याय—श्लोक
सेनानीनाम्	१०—२४
सेवते	१४—२६
सेवया	४—३४
सै	
सैन्यस्य	१—७
सो	
सोढुम्	५-२३; ११-४४
सोमपाः	९—२०
सोमः	१५—१३
सौ	
सौक्ष्म्यात्	१३—३२
सौभद्रः	१—६, १८
सौमदत्तिः	१—८
सौम्यत्वम्	१७—१६
सौम्यवपुः	११—५०
सौम्यम्	११—५१
स्क	
स्कन्दः	१०—२४
स्त	
स्तब्धः	१८—२८
स्तब्धाः	१६—१७
स्तु	
स्तुतिभिः	११—२१
स्तुवन्ति	११—२१
स्ते	
स्तेनः	३—१२
स्त्रि	
स्त्रियः	९—३२
स्त्री	
स्त्रीषु	१—४१
स्था	
स्थाणुः	२—२४
स्थानम्	५—५; ८—२८; ९—१८; १८—६२
स्थाने	११—३६
स्थापय	१—२१
स्थापयित्वा	१—२४
स्थावरजङ्गमम्	१३—२६
स्थावराणाम्	१०—२५
स्थास्यति	२—५३
स्थि	
स्थितप्रज्ञस्य	२—५४
स्थितप्रज्ञः	२—५५
स्थित्वा	२—७२
स्थितधीः	२—५४, ५६
स्थितम्	५—१९; १३—१६; १५—१०
स्थितः	५-२०; ६-१०, १४, २१, २२; १०—४२; १८—७३
स्थितान्	१—२६
स्थिताः	५—१९
स्थितिम्	६—३३
स्थितिः	२-७२; १७-२७
स्थितौ	१—१४
स्थिरबुद्धिः	५—२०
स्थिरमतिः	१२—१९
स्थिरम्	६-११; १२-९
स्थिरः	६—१३
स्थिराम्	६—३३
स्थिराः	१७—८
स्थै	
स्थैर्यम्	१३—७
स्नि	
स्निग्धाः	१७—८
स्प	
स्पर्शनम्	१५—९
स्पर्शान्	५—२७
स्पृ	
स्पृशन्	५—८
स्पृहा	४-१४; १४-१२
स्म	
स्म	२—३
स्मरति	८—१४
स्मरन्	३—६; ८—५, ६
स्मृ	
स्मृतम्	१७—२०, २१; १८—३८
स्मृतः	१७—२३
स्मृता	६—१९
स्मृतिभ्रंशात्	२—६३
स्मृतिविभ्रमः	२—६३
स्मृतिः	१०—३४; १५—१५; १८—७३

पदानि अध्याय—श्लोक

स्य

स्यन्दने १—१४

स्या

स्यात् १—३६; २—७; ३—१७; १०—३९; ११—१२; १५—२०; १८—४०

स्याम १—३७

स्याम् ३—२४; १८—७०

स्यु

स्युः ९—३२

स्रं

स्रंसते १—३०

स्रो

स्रोतसाम् १०—३१

स्व

स्वकर्मणा १८—४६

स्वकर्मनिरतः १८—४५

स्वकम् ११—५०

स्वचक्षुषा ११—८

स्वजनम् १—२८, ३१, ३७, ४५

स्वतेजसा ११—१९

स्वधर्मम् २—३१, ३३

स्वधर्मः ३—३५; १८—४७

स्वधर्मे ३—३५

स्वधा ९—१६

पदानि अध्याय—श्लोक

स्वनुष्ठितात् ३—३५; १८—४७

स्वप्नशीलस्य ६—१६

स्वपन् ५—८

स्वप्नम् १८—३५

स्वबान्धवान् १—३७

स्वभावजम् १८—४२, ४३, ४४, ४४

स्वभावजा १७—२

स्वभावजेन १८—६०

स्वभावनियतम् १८—४७

स्वभावप्रभवैः १८—४१

स्वभावः ५—१४; ८—३

स्वयम् ४—३८; १०-१३, १५; १८-७५

स्वया ७—२०

स्वर्गतिम् ९—२०

स्वर्गद्वारम् २—३२

स्वर्गपराः २—४३

स्वर्गलोकम् ९—२१

स्वर्गम् २—३७

स्वल्पम् २—४०

स्वस्ति ११—२१

स्वस्थः १४—२४

स्वस्याः ३—३३

स्वम् ६—१३

स्वा

स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः ४-२८

पदानि अध्याय—श्लोक

स्वाध्यायः १६—१

स्वाध्यायाभ्यसनम् १७—१५

स्वाम् ४—६; ९—८

स्वे

स्वे १८—४५, ४५

स्वेन १८—६०

ह

ह २—९

हतम् २—१९

हतः २-३७; १६-१४

हतान् ११—३४

हत्वा १—३१, ३६, ३७; २—५, ६; १८—१७

हनिष्ये १६—१४

हन्त १०—१९

हन्तारम् २—१९

हन्ति २—१९, २१; १८—१७

हन्तुम् १—३५, ३७, ४५

हन्यते २—१९, २०

हन्यमाने २—२०

हन्युः १—४६

हयैः १—१४

हरति २—६७

हरन्ति २—६०

पदानि	अध्याय—श्लोक
हरिः	११—९
हरेः	१८—७७
हर्षशोकान्वितः	१८—२७
हर्षम्	१—१२
हर्षामर्षभयोद्वेगैः	१२-१५
हविः	४—२४
हस्तात्	१—३०
हस्तिनि	५—१८
हा	
हानिः	२—६५
हि	
हि	१—११, ३७, ४२; २—५, ८, १५, २७, ३१, ४१, ४९, ५१, ६०, ६१, ६५, ६७; ३—५, ५, ८, १२, १९, २०, २३, ३४, ४१; ४—३, ७, १२, १७, ३८; ५—३, १९, २२; ६—२, ४, ५, २७, ३४, ३९, ४०, ४२, ४४; ७—१४, १७, १८, २२; ८—२६; ९—२४, ३०, ३२; १०—२, १४, १६, १८, १९; ११—२, २०, २१, २४, ३१; १२—५, १२; १३—२१, २८; १४—२७; १८—४, ११, ४८
हितकाम्यया	१०—१
हितम्	१८—६४
हित्वा	२—३३
हिनस्ति	१३—२८
हिमालयः	१०—२५
हिंसात्मकः	१८—२७
हिंसाम्	१८—२५
हु	
हुतम्	४—२४; ९—१६; १७—२८
[illegible]	
हृतज्ञानाः	७—२०
हृत्स्थम्	४—४२
हृदयदौर्बल्यम्	२—३
हृदयानि	१—१९
हृदि	८—१२; १३—१७; १५—१५
हृद्देशे	१८—६१
हृद्याः	१७—८
हृषितः	११—४५
हृषीकेश	११—३६; १८—१
हृषीकेशम्	१—२१; २—९
हृषीकेशः	१—१५, २४; २—१०
हृष्टरोमा	११—१४
हृष्यति	१२—१७
हृष्यामि	१८—७६, ७७
हे	
हे	११—४१, ४१, ४१
हेतवः	१८—१५
हेतुना	९—१०
हेतुमद्भिः	१३—४
हेतुः	१३—२०, २०
हेतोः	१—३५
ह्रि	
ह्रियते	६—४४
ह्री	
ह्रीः	१६—२

समाप्तिमगमदयं श्रीमद्भगवद्गीताश्लोकान्तर्गतपदानां वर्णानुक्रमः।

श्रीमद्भगवद्गीतान्तर्गत श्लोकोंकी अकारादिवर्णानुक्रम-सूची

श्लोक	अ०	श्लो०
[अ]		
अकीर्तिं चापि भूतानि	२	३४
अक्षराणामकारोऽस्मि	१०	३३
अक्षरं ब्रह्म परमम्	८	३
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः	८	२४
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयम्	२	२४
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा	४	६
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च	४	४०
अत्र शूरा महेष्वासाः	१	४
अथ केन प्रयुक्तोऽयम्	३	३६
अथ चित्तं समाधातुम्	१२	९
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यम्	२	३३
अथ चैनं नित्यजातम्	२	२६
अथवा बहुनैतेन	१०	४२
अथवा योगिनामेव	६	४२
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा	१	२०
अथैतदप्यशक्तोऽसि	१२	११
अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा	११	४५
अदेशकाले यद्दानम्	१७	२२
अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्	१२	१३
अधर्माभिभवात्कृष्ण	१	४१
अधर्मं धर्ममिति या	१८	३२
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य	१५	२
अधिभूतं क्षरो भावः	८	४
अधियज्ञः कथं कोऽत्र	८	२
अधिष्ठानं तथा कर्ता	१८	१४
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम्	१३	११
अध्येष्यते च य इमम्	१८	७०
अनन्तविजयं राजा	१	१६
अनन्तश्चास्मि नागानाम्	१०	२९
अनन्यचेताः सततम्	८	१४
अनन्याश्चिन्तयन्तो माम्	९	२२
अनपेक्षः शुचिर्दक्षः	१२	१६
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्	१३	३१
अनादिमध्यान्त-मनन्तवीर्यम्	११	१९
अनाश्रितः कर्मफलम्	६	१
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च	१८	१२
अनुद्वेगकरं वाक्यम्	१७	१५
अनुबन्धं क्षयं हिंसाम्	१८	२५
अनेकचित्तविभ्रान्ताः	१६	१६
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रम्	११	१६
अनेकवक्त्रनयनम्	११	१०

श्लोक	अ०	श्लो०
अन्तकाले च मामेव	८	५
अन्तवत्तु फलं तेषाम्	७	२३
अन्तवन्त इमे देहाः	२	१८
अन्नाद्भवन्ति भूतानि	३	१४
अन्ये च बहवः शूराः	१	९
अन्ये त्वेवमजानन्तः	१३	२५
अपरे नियताहाराः	४	३०
अपरेयमितस्त्वन्याम्	७	५
अपरं भवतो जन्म	४	४
अपर्याप्तं तदस्माकम्	१	१०
अपाने जुह्वति प्राणम्	४	२९
अपि चेत्सुदुराचारः	९	३०
अपि चेदसि पापेभ्यः	४	३६
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च	१४	१३
अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञः	१७	११
अभयं सत्त्वसंशुद्धिः	१६	१
अभिसन्धाय तु फलम्	१७	१२
अभ्यासयोगयुक्तेन	८	८
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि	१२	१०
अमानित्वमदम्भित्वम्	१३	७
अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य	११	२६
अमी हि त्वां सुरसङ्घाः	११	२१
अयतिः श्रद्धयोपेतः	६	३७
अयनेषु च सर्वेषु	१	११
अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः	१८	२८
अवजानन्ति मां मूढाः	९	११
अवाच्यवादांश्च बहून्	२	३६
अविनाशि तु तद्विद्धि	२	१७
अविभक्तं च भूतेषु	१३	१६
अव्यक्तादीनि भूतानि	२	२८
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः	८	१८
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तः	८	२१
अव्यक्तोऽय-		
मचिन्त्योऽयम्	२	२५
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नम्	७	२४
अशास्त्रविहितं घोरम्	१७	५
अशोच्यानन्वशोचस्त्वम्	२	११
अश्रद्दधानाः पुरुषाः	९	३
अश्रद्धया हुतं दत्तम्	१७	२८
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्	१०	२६
असक्तबुद्धिः सर्वत्र	१८	४९
असक्तिरनभिष्वङ्गः	१३	९
असत्यमप्रतिष्ठं ते	१६	८
असौ मया हतः शत्रुः	१६	१४
असंयतात्मना योगः	६	३६
असंशयं महाबाहो	६	३५
अस्माकं तु विशिष्टा ये	१	७
अहमात्मा गुडाकेश	१०	२०
अहंकारं बलं दर्पम्	१६	१८
अहंकारं बलं दर्पम्	१८	५३

श्लोक	अ०	श्लोक०
अहं क्रतुरहं यज्ञः	९	१६
अहं वैश्वानरो भूत्वा	१५	१४
अहं सर्वस्य प्रभवः	१०	८
अहं हि सर्वयज्ञानाम्	९	२४
अहिंसा सत्यमक्रोधः	१६	२
अहिंसा समता तुष्टिः	१०	५
अहो बत महत्पापम्	१	४५
[आ]		
आख्याहि मे को भवानुग्ररूपः	११	३१
आचार्याः पितरः पुत्राः	१	३४
आढ्योऽभिजनवानस्मि	१६	१५
आत्मसम्भाविताः स्तब्धाः	१६	१७
आत्मौपम्येन सर्वत्र	६	३२
आदित्यानामहं विष्णुः	१०	२१
आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठम्	२	७०
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः	८	१६
आयुधानामहं वज्रम्	१०	२८
आयुः सत्त्वबलारोग्य-	१७	८
आरुरुक्षोर्मुनेर्योगम्	६	३
आवृतं ज्ञानमेतेन	३	३९
आशापाशशतैर्बद्धाः	१६	१२
आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनम्	२	२९
आसुरीं योनिमापन्नाः	१६	२०

श्लोक	अ०	श्लोक०
आहारस्त्वपि सर्वस्य	१७	७
आहुस्त्वामृषयः सर्वे	१०	१३
[इ]		
इच्छाद्वेषसमुत्थेन	७	२७
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखम्	१३	६
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानम्	१३	१८
इति गुह्यतमं शास्त्रम्	१५	२०
इति ते ज्ञानमाख्यातम्	१८	६३
इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा	११	५०
इत्यहं वासुदेवस्य	१८	७४
इदमद्य मया लब्धम्	१६	१३
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य	१४	२
इदं तु ते गुह्यतमम्	९	१
इदं ते नातपस्काय	१८	६७
इदं शरीरं कौन्तेय	१३	१
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे	३	३४
इन्द्रियाणां हि चरताम्	२	६७
इन्द्रियाणि पराण्याहुः	३	४२
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः	३	४०
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम्	१३	८
इमं विवस्वते योगम्	४	१
इष्टान्भोगान्हि वो देवाः	३	१२
इहैकस्थं जगत्कृत्स्नम्	११	७

श्लोक	अ०	श्लो०
इहैव तैर्जितः सर्गः	५	१९
[ई]		
ईश्वरः सर्वभूतानाम्	१८	६१
[उ]		
उच्चैःश्रवसमश्वानाम्	१०	२७
उत्क्रामन्तं स्थितं वापि	१५	१०
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः	१५	१७
उत्सन्नकुलधर्माणाम्	१	४४
उत्सीदेयुरिमे लोकाः	३	२४
उदाराः सर्व एवैते	७	१८
उदासीनवदासीनः	१४	२३
उद्धरेदात्मनात्मानम्	६	५
उपद्रष्टानुमन्ता च	१३	२२
[ऊ]		
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्थाः	१४	१८
ऊर्ध्वमूलमधःशाखम्	१५	१
[ऋ]		
ऋषिभिर्बहुधा गीतम्	१३	४
[ए]		
एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य	११	३५
एतद्योनीनि भूतानि	७	६
एतन्मे संशयं कृष्ण	६	३९
एतान्न हन्तुमिच्छामि	१	३५
एतान्यपि तु कर्माणि	१८	६

श्लोक	अ०	श्लो०
एतां दृष्टिमवष्टभ्य	१६	९
एतां विभूतिं योगं च	१०	७
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय	१६	२२
एवमुक्तो हृषीकेशः	१	२४
एवमुक्त्वा ततो राजन्	११	९
एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये	१	४७
एवमुक्त्वा हृषीकेशम्	२	९
एवमेतद्यथात्थ त्वम्	११	३
एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म	४	१५
एवं परम्पराप्राप्तम्	४	२
एवं प्रवर्तितं चक्रम्	३	१६
एवं बहुविधा यज्ञाः	४	३२
एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा	३	४३
एवं सततयुक्ता ये	१२	१
एषा तेऽभिहिता सांख्ये	२	३९
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ	२	७२
[ओ]		
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म	८	१३
ॐ तत्सदिति निर्देशः	१७	२३
[क]		
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ	१८	७२
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टः	६	३८
कट्वम्ललवणात्युष्ण:	१७	९
कथं न ज्ञेयमस्माभिः	१	३९

श्लोक	अ०	श्लो०
कथं भीष्ममहं संख्ये	२	४
कथं विद्यामहं योगिन्	१०	१७
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि	२	५१
कर्मणैव हि संसिद्धिम्	३	२०
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यम्	४	१७
कर्मणः सुकृतस्याहुः	१४	१६
कर्मण्यकर्म यः पश्येत्	४	१८
कर्मण्येवाधिकारस्ते	२	४७
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि	३	१५
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य	३	६
कर्शयन्तः शरीरस्थम्	१७	६
कविं पुराणमनुशासितारम्	८	९
कस्माच्च ते न नमेरन् महात्मन्	११	३७
कांक्षन्तः कर्मणां सिद्धिम्	४	१२
काम एष क्रोध एष	३	३७
कामक्रोधवियुक्तानाम्	५	२६
काममाश्रित्य दुष्पूरम्	१६	१०
कामात्मानः स्वर्गपराः	२	४३
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः	७	२०
काम्यानां कर्मणां न्यासम्	१८	२
कायेन मनसा बुद्ध्या	५	११
कार्पण्यदोषोपहत-स्वभावः	२	७
कार्यकरणकर्तृत्वे	१३	२०
कार्यमित्येव यत्कर्म	१८	९
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्	११	३२
काश्यश्च परमेष्वासः	१	१७
किं कर्म किमकर्मेति	४	१६
किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मम्	८	१
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः	९	३३
किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तम्	११	४६
किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च	११	१७
कुतस्त्वा कश्मलमिदम्	२	२
कुलक्षये प्रणश्यन्ति	१	४०
कृपया परयाविष्टः	१	२८
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यम्	१८	४४
कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेतान्	१४	२१
क्रोधाद्भवति सम्मोहः	२	६३
क्लेशोऽधिकतरस्तेषाम्	१२	५
क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ	२	३
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा	९	३१
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवम्	१३	३४
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि	१३	२
[ग]		
गतसंगस्य मुक्तस्य	४	२३
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी	९	१८

श्लोक	अ०	श्लो०
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्	१	३०
ग्रामाविश्य च भूतानि	१५	१३
गुणानेतानतीत्य त्रीन्	१४	२०
गुरूनहत्वा हि		
महानुभावान्	२	५
[च]		
चञ्चलं हि मनः कृष्ण	६	३४
चतुर्विधा भजन्ते माम्	७	१६
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टम्	४	१३
चिन्तामपरिमेयां च	१६	११
चेतसा सर्वकर्माणि	१८	५७
[ज]		
जन्म कर्म च मे दिव्यम्	४	९
जरामरणमोक्षाय	७	२९
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः	२	२७
जितात्मनः प्रशान्तस्य	६	७
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये	९	१५
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा	६	८
ज्ञानेन तु तदज्ञानम्	५	१६
ज्ञानं कर्म च कर्ता च	१८	१९
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता	१८	१८
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानम्	७	२
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि	१३	१२
ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी	५	३
ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते	३	१

श्लोक	अ०	श्लो०
ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः	१३	१७
[त]		
तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य	१८	७७
ततः पदं		
तत्परिमार्गितव्यम्	१५	४
ततः शंखाश्च भेर्यश्च	१	१३
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते	१	१४
ततः स विस्मयाविष्टः	११	१४
तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च	१३	३
तत्त्ववित्तु महाबाहो	३	२८
तत्र तं बुद्धिसंयोगम्	६	४३
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्	१४	६
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः	१	२६
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नम्	११	१३
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा	६	१२
तत्रैवं सति कर्तारम्	१८	१६
तदित्यनभिसन्धाय	१७	२५
तद्बुद्धयस्तदात्मानः	५	१७
तद्विद्धि प्रणिपातेन	४	३४
तपस्विभ्योऽधिको योगी	६	४६
तपाम्यहमहं वर्षम्	९	१९
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि	१४	८
तमुवाच हृषीकेशः	२	१०
तमेव शरणं गच्छ	१८	६२
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते	१६	२४

श्लोक	अ०	श्लो०
तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ	३	४१
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व	११	३३
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय	११	४४
तस्मात्सर्वेषु कालेषु	८	७
तस्मादज्ञानसम्भूतम्	४	४२
तस्मादसक्तः सततम्	३	१९
तस्मादोमित्युदाहृत्य	१७	२४
तस्माद्यस्य महाबाहो	२	६८
तस्मान्नार्हा वयं हन्तुम्	१	३७
तस्य सञ्जनयन्हर्षम्	१	१२
तानहं द्विषतः क्रूरान्	१६	१९
तानि सर्वाणि संयम्य	२	६१
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी	१२	१९
तेजः क्षमा धृतिः शौचम्	१६	३
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकम्	९	२१
तेषामहं समुद्धर्ता	१२	७
तेषामेवानुकम्पार्थम्	१०	११
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्तः	७	१७
तेषां सततयुक्तानाम्	१०	१०
तं तथा कृपयाविष्टम्	२	१
तं विद्याद्दुःखसंयोग-	६	२३
त्यक्त्वा कर्मफलासंगम्	४	२०
त्याज्यं दोषवदित्येके	१८	३

श्लोक	अ०	श्लो०
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः	७	१३
त्रिविधा भवति श्रद्धा	१७	२
त्रिविधं नरकस्येदम्	१६	२१
त्रैगुण्यविषया वेदाः	२	४५
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापाः	९	२०
त्वमक्षरं परमं वेदितव्यम्	११	१८
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः	११	३८
[द]		
दण्डो दमयतामस्मि	१०	३८
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च	१६	४
दातव्यमिति यद्दानम्	१७	२०
दिवि सूर्यसहस्रस्य	११	१२
दिव्यमाल्याम्बरधरम्	११	११
दुःखमित्येव यत्कर्म	१८	८
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः	२	५६
दूरेण ह्यवरं कर्म	२	४९
दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकम्	१	२
दृष्ट्वेदं मानुषं रूपम्	११	५१
देवद्विजगुरुप्राज्ञ-	१७	१४
देवान्भावयतानेन	३	११
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे	२	१३

श्लोक	अ०	श्लोो०
देही नित्यमवध्योऽयम्	२	३०
दैवमेवापरे यज्ञम्	४	२५
दैवी सम्पद्विमोक्षाय	१६	५
दैवी ह्येषा गुणमयी	७	१४
दोषैरेतैः कुलघ्नानाम्	१	४३
दंष्ट्राकरालानि च ते	११	२५
द्यावापृथिव्योरि- दमन्तरं हि	११	२०
द्यूतं छलयतामस्मि	१०	३६
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञाः	४	२८
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च	१	१८
द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च	११	३४
द्वाविमौ पुरुषौ लोके	१५	१६
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्	१६	६
[ध]		
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे	१	१
धूमेनाव्रियते वह्निः	३	३८
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः	८	२५
धृत्या यया धारयते	१८	३३
धृष्टकेतुश्चेकितानः	१	५
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति	१३	२४
ध्यायतो विषयान्पुंसः	२	६२
[न]		
न कर्तृत्वं न कर्माणि	५	१४
न कर्मणामनारम्भात्	३	४

श्लोक	अ०	श्लोो०
न कांक्षे विजयं कृष्ण	१	३२
न च तस्मान्मनुष्येषु	१८	६९
न च मत्स्थानि भूतानि	९	५
न च मां तानि कर्माणि	९	९
न चैतद्विद्मः कतरन्नः	२	६
न जायते म्रियते वा	२	२०
न तदस्ति पृथिव्यां वा	१८	४०
न तद्भासयते सूर्यः	१५	६
न तु मां शक्यसे द्रष्टुम्	११	८
न त्वेवाहं जातु नासम्	२	१२
न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म	१८	१०
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य	५	२०
न बुद्धिभेदं जनयेत्	३	२६
नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णम्	११	२४
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते	११	४०
न मां कर्माणि लिम्पन्ति	४	१४
न मां दुष्कृतिनो मूढाः	७	१५
न मे पार्थास्ति कर्तव्यम्	३	२२
न मे विदुः सुरगणाः	१०	२
न रूपमस्येह तथोपलभ्यते	१५	३
न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैः	११	४८
नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा	१८	७३
न हि कश्चित्क्षणमपि	३	५
न हि ज्ञानेन सदृशम्	४	३८

श्लोक	अ०	श्लो०
न हि देहभृता शक्यम्	१८	११
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्यात्	२	८
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति	६	१६
नादत्ते कस्यचित्पापम्	५	१५
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानाम्	१०	४०
नान्यं गुणेभ्यः कर्तारम्	१४	१९
नासतो विद्यते भावः	२	१६
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य	२	६६
नाहं प्रकाशः सर्वस्य	७	२५
नाहं वेदैर्न तपसा	११	५३
निमित्तानि च पश्यामि	१	३१
नियतं कुरु कर्म त्वम्	३	८
नियतं संगरहितम्	१८	२३
नियतस्य तु सन्न्यासः	१८	७
निराशीर्यतचित्तात्मा	४	२१
निर्मानमोहा जितसंगदोषाः	१५	५
निश्चयं शृणु मे तत्र	१८	४
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः	१	३६
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति	२	४०
नैते सृती पार्थ जानन्	८	२७
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि	२	२३
नैव किञ्चित्करोमीति	५	८

श्लोक	अ०	श्लो०
नैव तस्य कृतेनार्थः	३	१८
[प]		
पञ्चैतानि महाबाहो	१८	१३
पत्रं पुष्पं फलं तोयम्	९	२६
परस्तस्मात्तु भावोऽन्यः	८	२०
परित्राणाय साधूनाम्	४	८
परं ब्रह्म परं धाम	१०	१२
परं भूयः प्रवक्ष्यामि	१४	१
पवनः पवतामस्मि	१०	३१
पश्य मे पार्थ रूपाणि	११	५
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रान्	११	६
पश्यामि देवांस्तव देव देहे	११	१५
पश्यैतां पाण्डुपुत्राणाम्	१	३
पाञ्चजन्यं हृषीकेशः	१	१५
पार्थ नैवेह नामुत्र	६	४०
पितासि लोकस्य चराचरस्य	११	४३
पिताहमस्य जगतः	९	१७
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च	७	९
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि	१३	२१
पुरुषः स परः पार्थ	८	२२
पुरोधसां च मुख्यं माम्	१०	२४
पूर्वाभ्यासेन तेनैव	६	४४

श्लोक	अ०	श्लो०
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानम्	१८	२१
प्रकाशं च प्रवृत्तिं च	१४	२२
प्रकृतिं पुरुषं चैव	१३	१९
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य	९	८
प्रकृतेः क्रियमाणानि	३	२७
प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः	३	२९
प्रकृत्यैव च कर्माणि	१३	२९
प्रजहाति यदा कामान्	२	५५
प्रयत्नाद्यतमानस्तु	६	४५
प्रयाणकाले मनसाचलेन	८	१०
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्	५	९
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च	१६	७
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च	१८	३०
प्रशान्तमनसं ह्येनम्	६	२७
प्रशान्तात्मा विगतभीः	६	१४
प्रसादे सर्वदुःखानाम्	२	६५
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानाम्	१०	३०
प्राप्य पुण्यकृतां लोकान्	६	४१
[ब]		
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य	६	६
बलं बलवतां चाहम्	७	११
बहिरन्तश्च भूतानाम्	१३	१५
बहूनां जन्मनामन्ते	७	१९
बहूनि मे व्यतीतानि	४	५
बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा	५	२१
बीजं मां सर्वभूतानाम्	७	१०
बुद्धियुक्तो जहातीह	२	५०
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः	१०	४
बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव	१८	२९
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तः	१८	५१
बृहत्साम तथा साम्नाम्	१०	३५
ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम्	१४	२७
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि	५	१०
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा	१८	५४
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः	४	२४
ब्राह्मणक्षत्रियविशाम्	१८	४१
[भ]		
भक्त्या त्वनन्यया शक्यः	११	५४
भक्त्या मामभिजानाति	१८	५५
भयाद्रणादुपरतम्	२	३५
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च	१	८
भवाप्ययौ हि भूतानाम्	११	२
भीष्मद्रोणप्रमुखतः	१	२५
भूतग्रामः स एवायम्	८	१९
भूमिरापोऽनलो वायुः	७	४
भूय एव महाबाहो	१०	१
भोक्तारं यज्ञतपसाम्	५	२९
भोगैश्वर्यप्रसक्तानाम्	२	४४
[म]		
मच्चित्ता मद्गतप्राणाः	१०	९

श्लोक	अ०	श्लो०
मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि	१८	५८
मत्कर्मकृन्मत्परमः	११	५५
मत्तः परतरं नान्यत्	७	७
मदनुग्रहाय परमम्	११	१
मनःप्रसादः सौम्यत्वम्	१७	१६
मनुष्याणां सहस्रेषु	७	३
मन्मना भव मद्भक्तः	९	३४
मन्मना भव मद्भक्तः	१८	६५
मन्यसे यदि तच्छक्यम्	११	४
मम योनिर्महद्ब्रह्म	१४	३
ममैवांशो जीवलोके	१५	७
मया ततमिदं सर्वम्	९	४
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः	९	१०
मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदम्	११	४७
मयि चानन्ययोगेन	१३	१०
मयि सर्वाणि कर्माणि	३	३०
मय्यावेश्य मनो ये माम्	१२	२
मय्यासक्तमनाः पार्थ	७	१
मय्येव मन आधत्स्व	१२	८
महर्षयः सप्त पूर्वे	१०	६
महर्षीणां भृगुरहम्	१०	२५
महात्मानस्तु मां पार्थ	९	१३
महाभूतान्यहंकारः	१३	५
मा ते व्यथा मा च	११	४९
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय	२	१४

श्लोक	अ०	श्लो०
मानापमानयोस्तुल्यः	१४	२५
मामुपेत्य पुनर्जन्म	८	१५
मां च योऽव्यभिचारेण	१४	२६
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य	९	३२
मुक्तसंगोऽनहंवादी	१८	२६
मूढग्राहेणात्मनो यत्	१७	१९
मृत्युः सर्वहरश्चाहम्	१०	३४
मोघाशा मोघकर्माणः	९	१२
[य]		
य इमं परमं गुह्यम्	१८	६८
य एनं वेत्ति हन्तारम्	२	१९
य एवं वेत्ति पुरुषम्	१३	२३
यच्चापि सर्वभूतानाम्	१०	३९
यच्चावहासार्थ-मसत्कृतोऽसि	११	४२
यजन्ते सात्त्विका देवान्	१७	४
यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहम्	४	३५
यज्ञदानतपःकर्म	१८	५
यज्ञशिष्टामृतभुजः	४	३१
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः	३	१३
यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र	३	९
यज्ञे तपसि दाने च	१७	२७
यततो ह्यपि कौन्तेय	२	६०
यतन्तो योगिनश्चैनम्	१५	११

श्लोक	अ०	श्लो०	श्लोक	अ०	श्लो०
यतेन्द्रियमनोबुद्धिः	५	२८	यदा भूतपृथग्भावम्	१३	३०
यतो यतो निश्चरति	६	२६	यदा यदा हि धर्मस्य	४	७
यतः प्रवृत्तिर्भूतानाम्	१८	४६	यदा विनियतं चित्तम्	६	१८
यत्करोषि यदश्नासि	९	२७	यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु	१४	१४
यत्तदग्रे विषमिव	१८	३७	यदा संहरते चायम्	२	५८
यत्तु कामेप्सुना कर्म	१८	२४	यदा हि नेन्द्रियार्थेषु	६	४
यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्	१८	२२	यदि मामप्रतीकारम्	१	४६
यत्तु प्रत्युपकारार्थम्	१७	२१	यदि ह्यहं न वर्तेयम्	३	२३
यत्र काले त्वनावृत्तिम्	८	२३	यदृच्छया चोपपन्नम्	२	३२
यत्र योगेश्वरः कृष्णः	१८	७८	यदृच्छालाभसन्तुष्टः	४	२२
यत्रोपरमते चित्तम्	६	२०	यद्यदाचरति श्रेष्ठः	३	२१
यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानम्	५	५	यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वम्	१०	४१
यथाकाशस्थितो नित्यम्	९	६	यद्यप्येते न पश्यन्ति	१	३८
यथा दीपो निवातस्थः	६	१९	यया तु धर्मकामार्थान्	१८	३४
यथा नदीनां			यया धर्ममधर्मं च	१८	३१
बहवोऽम्बुवेगाः	११	२८	यया स्वप्नं भयं शोकम्	१८	३५
यथा प्रकाशयत्येकः	१३	३३	यस्त्वात्मरतिरेव स्यात्	३	१७
यथा प्रदीप्तं ज्वलनं			यस्त्विन्द्रियाणि मनसा	३	७
पतंगाः	११	२९	यस्मात्क्षरमतीतोऽहम्	१५	१८
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यात्	१३	३२	यस्मान्नोद्विजते लोकः	१२	१५
यथैधांसि समिद्धोऽग्निः	४	३७	यस्य नाहंकृतो भावः	१८	१७
यदक्षरं वेदविदो वदन्ति	८	११	यस्य सर्वे समारम्भाः	४	१९
यदग्रे चानुबन्धे च	१८	३९	यातयामं गतरसम्	१७	१०
यदहंकारमाश्रित्य	१८	५९	या निशा सर्वभूतानाम्	२	६९
यदा ते मोहकलिलम्	२	५२	यान्ति देवव्रता देवान्	९	२५
यदादित्यगतं तेजः	१५	१२	यामिमां पुष्पितां वाचम्	२	४२

श्लोक	अ०	श्लो०
यावत्सञ्जायते किञ्चित्	१३	२६
यावदेतान्निरीक्षेऽहम्	१	२२
यावानर्थ उदपाने	२	४६
युक्ताहारविहारस्य	६	१७
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा	५	१२
युञ्जन्नेवं सदात्मानम्	६	१५
युञ्जन्नेवं सदात्मानम्	६	२८
युधामन्युश्च विक्रान्तः	१	६
ये चैव सात्त्विका भावाः	७	१२
ये तु धर्म्यामृतमिदम्	१२	२०
ये तु सर्वाणि कर्माणि	१२	६
ये त्वक्षरमनिर्देश्यम्	१२	३
ये त्वेतदभ्यसूयन्तः	३	३२
येऽप्यन्यदेवता भक्ताः	९	२३
ये मे मतमिदं नित्यम्	३	३१
ये यथा मां प्रपद्यन्ते	४	११
ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य	१७	१
येषामर्थे कांक्षितं नः	१	३३
येषां त्वन्तगतं पापम्	७	२८
ये हि संस्पर्शजा भोगाः	५	२२
योगयुक्तो विशुद्धात्मा	५	७
योगसन्न्यस्तकर्माणम्	४	४१
योगस्थः कुरु कर्माणि	२	४८
योगिनामपि सर्वेषाम्	६	४७
योगी युञ्जीत सततम्	६	१०
योत्स्यमानानवेक्षेऽहम्	१	२३
यो न हृष्यति न द्वेष्टि	१२	१७
योऽन्तः सुखोऽन्तरारामः	५	२४
यो मामजमनादिं च	१०	३
यो मामेवमसम्मूढः	१५	१९
यो मां पश्यति सर्वत्र	६	३०
योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः	६	३३
यो यो यां यां तनुं भक्तः	७	२१
यं यं वापि स्मरन्भावम्	८	६
यं लब्ध्वा चापरं लाभम्	६	२२
यं सन्न्यासमिति प्राहुः	६	२
यं हि न व्यथयन्त्येते	२	१५
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य	१६	२३
यः सर्वत्रानभिस्नेहः	२	५७
[र]		
रजसि प्रलयं गत्वा	१४	१५
रजस्तमश्चाभिभूय	१४	१०
रजो रागात्मकं विद्धि	१४	७
रसोऽहमप्सु कौन्तेय	७	८
रागद्वेषवियुक्तैस्तु	२	६४
रागी कर्मफलप्रेप्सुः	१८	२७
राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य	१८	७६
राजविद्या राजगुह्यम्	९	२

श्लोक	अ०	श्लो०
रुद्राणां शंकरश्चास्मि	१०	२३
रुद्रादित्या वसवो ये	११	२२
रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रम्	११	२३
[ल]		
लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणम्	५	२५
लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्तात्	११	३०
लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा	३	३
लोभः प्रवृत्तिरारम्भः	१४	१२
[व]		
वक्तुमर्हस्यशेषेण	१०	१६
वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति	११	२७
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः	११	३९
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय	२	२२
विद्याविनयसम्पन्ने	५	१८
विधिहीनमसृष्टान्नम्	१७	१३
विविक्तसेवी लघ्वाशी	१८	५२
विषया विनिवर्तन्ते	२	५९
विषयेन्द्रियसंयोगात्	१८	३८
विस्तरेणात्मनो योगम्	१०	१८
विहाय कामान्यः सर्वान्	२	७१
वीतरागभयक्रोधाः	४	१०
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि	१०	३७
वेदानां सामवेदोऽस्मि	१०	२२
वेदाविनाशिनं नित्यम्	२	२१
वेदाहं समतीतानि	७	२६
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव	८	२८
व्यवसायात्मिका बुद्धिः	२	४१
व्यामिश्रेणेव वाक्येन	३	२
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान्	१८	७५
[श]		
शक्नोतीहैव यः सोढुम्	५	२३
शनैः शनैरुपरमेत्	६	२५
शमो दमस्तपः शौचम्	१८	४२
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्	१८	१५
शरीरं यदवाप्नोति	१५	८
शुक्लकृष्णे गती ह्येते	८	२६
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य	६	११
शुभाशुभफलैरेवम्	९	२८
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यम्	१८	४३
श्रद्धया परया तप्तम्	१७	१७
श्रद्धावाननसूयश्च	१८	७१
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्	४	३९

श्लोक	अ०	श्लो०
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते	२	५३
श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञात्	४	३३
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः	३	३५
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः	१८	४७
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात्	१२	१२
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये	४	२६
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च	१५	९
श्वशुरान्सुहृदश्चैव	१	२७
[स]		
स एवायं मया तेऽद्य	४	३
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसः	३	२५
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तम्	११	४१
स घोषो धार्तराष्ट्राणाम्	१	१९
सततं कीर्तयन्तो माम्	९	१४
स तया श्रद्धया युक्तः	७	२२
सत्कारमानपूजार्थम्	१७	१८
सत्त्वं रजस्तम इति	१४	५
सत्त्वं सुखे सञ्जयति	१४	९
सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानम्	१४	१७
सत्त्वानुरूपा सर्वस्य	१७	३
सदृशं चेष्टते स्वस्याः	३	३३
सद्भावे साधुभावे च	१७	२६
समं कायशिरोग्रीवम्	६	१३
समं पश्यन्हि सर्वत्र	१३	२८

श्लोक	अ०	श्लो०
समं सर्वेषु भूतेषु	१३	२७
समः शत्रौ च मित्रे च	१२	१८
समदुःखसुखः स्वस्थः	१४	२४
समोऽहं सर्वभूतेषु	९	२९
सर्गाणामादिरन्तश्च	१०	३२
सर्वकर्माणि मनसा	५	१३
सर्वकर्माण्यपि सदा	१८	५६
सर्वगुह्यतमं भूयः	१८	६४
सर्वतः पाणिपादं तत्	१३	१३
सर्वद्वाराणि संयम्य	८	१२
सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्	१४	११
सर्वधर्मान्परित्यज्य	१८	६६
सर्वभूतस्थमात्मानम्	६	२९
सर्वभूतस्थितं यो माम्	६	३१
सर्वभूतानि कौन्तेय	९	७
सर्वभूतेषु येनैकम्	१८	२०
सर्वमेतदृतं मन्ये	१०	१४
सर्वयोनिषु कौन्तेय	१४	४
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः	१५	१५
सर्वाणीन्द्रियकर्माणि	४	२७
सर्वेन्द्रियगुणाभासम्	१३	१४
सहजं कर्म कौन्तेय	१८	४८
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा	३	१०
सहस्रयुगपर्यन्तम्	८	१७
साधिभूताधिदैवं माम्	७	३०

श्लोक	अ०	श्लो०
सांख्ययोगौ पृथग्बाला:	५	४
सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म	१८	५०
सीदन्ति मम गात्राणि	१	२९
सुखदु:खे समे कृत्वा	२	३८
सुखमात्यन्तिकं यत्तत्	६	२१
सुखं त्विदानीं त्रिविधम्	१८	३६
सुदुर्दर्शमिदं रूपम्	११	५२
सुहृन्मित्रार्युदासीन-	६	९
संकरो नरकायैव	१	४२
संकल्पप्रभवान्कामान्	६	२४
सन्तुष्ट: सततं योगी	१२	१४
सन्नियम्येन्द्रियग्रामं	१२	४
सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण	५	१
सन्न्यास: कर्मयोगश्च	५	२
सन्न्यासस्तु महाबाहो	५	६
सन्न्यासस्य महाबाहो	१८	१
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या	११	३६
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा	२	५४
स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यान्	५	२७
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य	२	३१
स्वभावजेन कौन्तेय	१८	६०
स्वयमेवात्मनात्मानम्	१०	१५
स्वे स्वे कर्मण्यभिरत:	१८	४५
[ह]		
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गम्	२	३७
हन्त ते कथयिष्यामि	१०	१९
हृषीकेशं तदा वाक्यम्	१	२१



पृष्ठ ११५ पर दिये गीता-सम्बन्धी प्रश्नोंके उत्तर

१	इसी पुस्तकमें तालिका देखें
२	इसी पुस्तकमें तालिका देखें
३	सात सौ
४	देखें—गीता-दर्पण-८६
५	इसी पुस्तकमें तालिका देखें
६	इसी पुस्तकमें तालिका देखें
७	देखें—साधक-संजीवनी
८	पन्द्रहवाँ अध्याय
९	१०।१५ में पाँच सम्बोधन
१०	१८।६६
११	२।११ से १८।६६
१२	१।२० से १८।७४
१३	देखें—गीता-दर्पण-३७
१४	४।२१
१५	१३।१७, १५।१५, १८।६१
१६	१८।१४
१७	११।६
१८	देखें—गीता-दर्पण-२५
१९	देखें—गीता-दर्पण-५८
२०	१६।१—३ में दैवी सम्पदा और १६।४, ७—२३ में आसुरी सम्पदाका वर्णन आया है।
२१	३।१४-१५
२२	देखें—गीता-दर्पण-५१
२३	४।९, १३-१४
२४	६।२४—२८ में निर्गुण-निराकार-का ध्यान और ६।१४-१५ में सगुण-साकारका ध्यान बताया है।
२५	८।१४ और ७।३
२६	६।३८—४५
२७	७।८—१२ में सत्रह, ९।१६—१९ में सैंतीस, १०।४-६, २०—३९ में एक सौ सत्ताईस और १५।१२—१५ में तेरह (कुल एक सौ चौरानबे) विभूतियोंका वर्णन हुआ है।
२८	देखें—गीता-दर्पण-२४
२९	देखें—गीता-दर्पण-५७
३०	१३।२९ में प्रकृतिको, ३।२७-२८, १४।१९, २३ में गुणोंको, ५।९ में इन्द्रियोंको और ५।१४ में स्वभावको कर्ता बताया है।
३१	१५।१—३
३२	देखें—गीता-दर्पण-६७
३३	३।४१—४३
३४	स्वचक्षु अर्थात् चर्मचक्षु (११।८), दिव्यचक्षु (११।८) और ज्ञानचक्षु (१३।३४, १५।१०)
३५	देखें—गीता-दर्पण-७६
३६	११।१५—१८ में देवरूपका, ११।१९—२२ में उग्ररूपका और ११।२३—३०में अत्युग्ररूपका वर्णन आया है।
३७	२।४७-४८, ६।१—४
३८	१३।७—११
३९	११।५५, १६।१—३

४०	२।५५—७२, ६।७—९
४१	१४।२२—२५
४२	१२।१३—१९
४३	४।३८, ५।४-५
४४	२।७१-७२ (कर्मयोग), ५।२४—२६ (ज्ञानयोग), ६।१४-१५ (भक्तियोग)
४५	४।२३ (कर्मयोग), ४।३६-३७ (ज्ञानयोग), १८।६६ (भक्तियोग)
४६	२।७१, २।१२ (कर्मयोग), ४।३९ (ज्ञानयोग), ६।१५, ९।३१ (भक्तियोग)
४७	२।७१ (कर्मयोग), १८।५३ (ज्ञानयोग), १२।१३ (भक्तियोग)
४८	५।३, ६।१
४९	७।१३
५०	१३।२२, १५।८
५१	४।२१, ५।७, ६।१०, ३२, १८।४९
५२	५।१०, १०।१२
५३	२।४६
५४	वैशम्पायनके वचन (जनमेजयके प्रति)
५५	५।२
५६	६।४७, १२।२
५७	९।१४, २६, १७।१४
५८	७।८, ८।१३-१४, ९।१४, १०।२५, १७।२३
५९	१३।१०, १४।२६
६०	१८।५४
६१	४।२८, १७।१५, १८।७०
६२	६।१४, ८।११, १७।१४
६३	१०।५, १३।७, १६।२, १७।१४
६४	देखें—गीता-दर्पण—४२
६५	९।१६ में आठ बार

